॥ श्री राधारमणोजयति ॥

* श्री गौर चन्द्रायनमः *

श्री ललित किशोरी विरचित

अभिलाष माधुरी

फ़ारसी की ग़ज़लों सहित ।

प्रकाशक :—

साह गौर शरण गुप्त,

साहजी साहिब का मन्दिर, वृन्दावन ।

मुद्रक :—

त्रैलोक्यनाथ शर्मा,

जमुना प्रिन्टिंग वर्क्स, मथुरा ।

श्री भगवच्चरणारविंद में जिनकी शुद्ध भक्ति हो जाती है, जिनका श्री भगवान की ओर पूरा झुकाव हो जाता है, उनका भाव, अनुपमेय है हम किसी सांसारिक उदाहरण से उनके उस भाव को प्रकट नहीं कर सकते यदि कुछ अशों में उस भावकी उपमा दे सकते हैं तो कुलटा नारी से किसी स्त्री का जब किसी अन्य पुरुष से प्रेम हो जाता है तब उसकी जो अवस्था होती है, कृष्ण भक्त की भी वही दशा होती है, जैसे वो अपने घर का सब काम काज करती हुई भी हर समय उसी अपने प्रेमी का ध्यान रखती है प्रति क्षण उससे ही मिलने को मौक़ा ढूंढती रहती है एसे ही कृष्ण भक्त संसार बंधन में जकड़ा हुआ भी निरन्तर श्री कृष्ण चरणारविंद का ही ध्यान रखता है अवकाश का प्रत्येक क्षण भगवदुपासना में ही व्यतीत करता है, संसारत्रस्त कृष्णभक्त का वही समय अत्यानन्द में बीतता है जितना वह भगवद्विषय में बिताता है। श्री महाप्रभु की कृपा से शीघ्र ही दोनों मुक्त होकर काशी में प्रभु से मिले वहां से प्रभु के अमूल्य उपदेश ग्रहण कर उन्हीं की आज्ञा से श्री वृन्दावन आये और वे ही दोनों वृन्दावन के प्रसिद्ध महात्मा श्री रूप गोस्वामी श्री सनातन गोस्वामी हुये।

अस्तु हम जिस अभिलाष माधुरी नामक ग्रन्थ को लेकर उपस्थित हुए हैं यह भी ठीक उसी भाव से पूर्ण है श्री ललितकिशोरीजी व ललितमाधुरीजी भगवान के पूर्ण कृपापात्र और भगवान के एकान्त भक्त थे, आपकी भक्ति ने अवश्य ही वह रूप धारण कर लिया था जो कृष्ण भक्त को होना चाहिये। इस ग्रन्थ में पहिले विनयशृंगारशतक सरस कवितामें वर्णित किया गया है इसके बाद दो वृन्दावन शतक दो युगल विहार शतक दो बाराखरी दो बारहमासी आपने बड़ी निपुणता से लिखीं इन कविताओं से आपके हृदय की भावुकता का बहुत सा आभास मिलता है। भगवद्भक्त में विनय अजाना तो अत्यन्त स्वाभाविक है ही इसके बाद आपने विनय और विनय शृंगार अत्यन्त मार्मिक शब्दों में वर्णन किया है, यह वर्णन कर आपने जो शिक्षा मनः शिक्षा रचना की है वह मनुष्य मात्र के लिये अत्यन्त उपयोगी है फुटकर पदों में आपने बहुत सी तत्व की सैद्धान्तिक बातों का वर्णन किया है आप की निर्मित मुकरी, जमक जंत्री, और ग़ज़लों से आपके पांडित्य कवित्वसामर्थ्य विचित्र प्रकार के भाव, और रस वैविध्य का पता चलता है अभिलाष माधुरी यहीं ग़ज़लों के बाद समाप्त होती है। श्री ललितकिशोरीजी श्री ललितमाधुरीजी का जीवन चरित भी दबीर खास और साकर मलिक की तरह विशेषता रखता है आपका जन्म लखनऊ में मिती कार्तिक कृष्णा २ संवत १८८२ में हुआ था आपके पितामह साह बिहारीलालजी उस समय लखनऊ में प्रसिद्ध धनाढ्य थे नवाबी से उनको "साह" उपाधि प्राप्त थी उनके ज्येष्ठ पुत्र साह गोविंदलालजी की द्वितीय पत्नी के गर्भ से आपका जन्म हुआ आप दोनों भाइयों का नाम साह कुंदनलाल साह फुंदनलाल हुआ बाल्य काल में आप दोनों भाईयों को फारसी की शिक्षा दी गई दोनों तीक्ष्ण धी सम्पन्न थे अत: शीघ्र ही फ़ारसी में अच्छे प्रवीण होगये कुछ दिन तक आप हिन्दी पंजाबी गुजराती [illegible]

आपकी इच्छा संस्कृत पढ़ने को हुई उस समय ऐसा अनौदार्य संस्कृत विद्वानों में था कि वैश्यों को भी संस्कृत नहीं पढ़ाते थे इससे आपके मन में बड़ा कष्ट हुआ अतएव आपने कुछ विद्वानों की सहायता से "चातुर्वर्ण्य विवेक" नाम की बड़ी उपयोगी पुस्तक लिखी। कविता का आपको प्रारंभ से शौक़ था पत्र भी कविता ही में लिखे जाते थे आपने उस समय दो तीन छोटे २. ग्रन्थ कविता में लिखे किन्तु वाह्याडम्बर के उपासक न होने के कारण वे किताबें सावधानी से न रखी गईं अतः नष्टभ्रष्ट होगईं।

श्री ललितकिशोरीजी संवत १९०६ के लगभग श्रीधाम दर्शनों को आये थे आपके पितामह साह बिहारी लाल जी ने अपने इष्टदेव श्री राधारमण जी का नूतन मंदिर बनवाया था। जब से मंदिर बना आप उसे देखने को वृन्दावन नहीं आये थे ये दोनों भाई बाल्यकाल से ही बड़े भक्त थे इन सब विषयों में आप की बड़ी अभिरुचि थी अतः आपही को मंदिर देखने वृन्दावन भेजा गया। आप श्री राधारमण जी के लिये एक सुवर्ण सिंहासन बनवाकर लाये थे आपको वृन्दावन स्थान बड़ा सुन्दर लगा आपकी इच्छा यहीं रहने की हुई किन्तु उस समय ऐसा असंभव था, उस समय तक आपके पितामह इत्यादि जीवित थे आपने भी अवसर न समझ कर इस की चेष्टा न की; आप लगभग एक मास समस्त व्रजभर में भ्रमण कर लखनऊ लौट गये। चले तो गये किन्तु वहां जाकर बराबर मौक़ा ढूंडने लगे कि कब वृन्दावन जांय। कुछ दिन बाद आपके पितामह और उनके एक वर्ष बाद ही इनके पिता का भी देहांत हो गया पिता की मृत्यु के दो तीन मास बाद ही आप की पुत्रवत्सला माता स्वर्ग को सिधार गईं इन आकस्मिक तीन तीन घटनाओं से आपका मन बड़ा अशान्त रहने लगा, आपके पिता और पितामह के अभाव से आपका परिवार बड़ा उच्छृंकल सा हो गया परिवार की ओर से आपको अनेक कष्ट दिये जाने लगे। यहां तक कि असह्य हो उठा किन्तु आप बाल्य काल से ही बड़े सहनशील थे श्रीजी की सेवा करते थे सारा दिन सेवा और भगवद् भजन में व्यतीत करते थे इन कारणों से आप उन सब कष्टों की कुछ पर्वाह नहीं करते थे इसी समय वृन्दावन से आपके गुरु श्री राधा गोविंद गोस्वामी लखनऊ पधारे उनके आने से आप की चित्त वृत्तियां दूसरी ओर लग गईं, उनसे आपने बहुत सी शिक्षायें ग्रहण कीं और श्री गोपाल चम्पू ग्रन्थ श्रवण किया जब वे वृन्दावन वापिस जाने लगे तो आपने निजसेव्य श्री राधारमण जी का विग्रह उनके साथ वृन्दावन भेज दिया और कहा कि अपनी देख रेख में इन की सेवा पूजा का प्रबंध करा दीजियेगा हम शीघ्र वृन्दावन आकर अपना निवास स्थान निर्माण करेंगे। हमारे इस ग्रन्थ का प्रणयन काल यही है। एक दिन आपके श्री विग्रह ने आपको आदेश किया कि तुम श्री वृन्दावन शीघ्र आओ और निधवन के पास ही निवास करना साहजी साहब ने उसी समय एक पद* रचना की। आपके भ्राता

* देखो पद नं० १८२ पत्र नं० २८८।

साह कुंदन लाल जी आप के निर्मित पद संग्रह करते जाते थे आपका मन जब वृन्दावन जाने को अत्यन्त विचलित हुआ तो आपने न्यायालय की शरण लेकर सब संपत्ति बांटली इस झगड़े में आपको कई बार कलकत्ते कानपुर आदि स्थानों पर जाना पड़ा था किन्तु आपका काम बराबर जारी था आप बराबर नित्य प्रति अभिलाष माधुरी की रचना करते थे अंत में संवत १९१२ चैत्र कृष्णा में सस्त्रीक आप—दोनों भाइयों ने वृन्दावन को प्रयाण किया. सं० १९१३ वैशाख शु० १३ को आप वृन्दावन आ गये आप के साथ ४००० भृत्य लखनऊ से आये थे आपने श्री राधारमण जी के मंदिर के समीप पटनीमल वाली कुंज में निवास करना प्रारंभ किया। आप के साथ के भृत्य कुछ आप के पास रहे बाकी सब भृत्यों के लिये जमुना किनारे बड़े २ तम्बुओं में रहने का प्रबंध कर दिया गया। यहां से आपका नैष्ठिक जीवन प्रारंभ हुआ आप वृन्दावन में कभी जूता या चट्टी कुछ नहीं पहिरते थे आराम की कोई चीज़ पास नहीं रखते थे। लखनऊ में आप हुक्का पीते थे जब आप वृन्दावन आये तब व्रज की सीमा के बाहर कहीं आपने डेरा डाला वहां आप के लिये हुका लगाया गया उसे देख कर आपने उस में एक लात मारी और व्रज की सीमा को प्रणाम कर नंगे पांव व्रज में घुसे तब से आप ने कभी हुक्के का नाम भी नहीं लिया। श्री धाम में आप की ऐसी अप्रतिम निष्ठा थी कि वृन्दावन आने के बाद आप कभी वृन्दावन की सीमा के बाहर न गये यहां तक आपकी आज्ञा थी कि हमारा चित्र भी कभी वृन्दावन के बाहर न भेजा जाय इसी से इस पुस्तक में आपका चित्र नहीं छपाया गया किन्तु आपको एक बार वृन्दावन बाहर जाना पड़ा था व्रज की सीमा के बाहर तब भी नही गये यह भी बड़ी विचित्र कथा है, संवत १९१४ में जब देश व्यापी राष्ट्र विप्लव हुआ तब वृन्दावन भी इस आपत्ति से न बच सका, ठाकुर हीरासिंह की अध्यक्षता में विप्लवकारियों का एक दल वृन्दावन को लूटने आया, आप के पास पर्याप्त सैना और अस्त्र शस्त्र थे आप अपना सैन्य बल लेकर वृन्दावन की रक्षा के निमित्त आ डटे इधर आपके अंत:पुर से पुत्र जन्म का शुभ संदेश आया सेना ने बन्दूक शेर बबा दागने आरंभ कर दिये आपका असाधारण सैन्यबल देखकर विप्लवकारियों की हिम्मत टूट गई वे सब कई दिन के भूखे भी थे अत: उन्होंने साहजी की शरण ली साहजी ने भी शरणागत वत्सलता का परिचय देकर तीन दिन तक भोजनादि से उन सब का पालन किया चलते समय हीरासिंह ने कहा कि साहजी आपके पास जो कुछ बहु मूल्य वस्तु हो हमें दे दीजिये हम व्रज में कहीं भी लूट मार नहीं करेंगे साहजी साहब ने अच्छा कहकर अपना संदूक मंगाया उसमें श्री राधाकृष्ण का अत्यन्त सुन्दर एक चित्र और चरणामृत की गोली रहती थी आपने वह निकाल कर हीरासिंह को दीं और कहा कि इन दोनों चीज़ों से बढ़कर अमूल्य वस्तु हमारे पास कुछ नहीं है। वह चित्र ऐसा सुन्दर और भाव पूर्ण था कि लुटेरे का हृदय भी गद्‌गद् होगया सत्य है। श्री चैतन्य चरितामृत

हय" यदि अच्छे सत्पुरुष का एक क्षण भी सङ्ग हो जाय तो मनुष्य को कृष्ण भक्ति हो जाती है हीरासिंह तो तीन दिन तक भक्तशिरोमणि साहजी साहब के आश्रय रहे यदि इनके मनमें ऐसा भाव आगया तो क्या आश्चर्य है । हीरासिंह की आंखों में आंसू आगये और साहजी साहब से कहा कि यह चित्र हमको दे दिया जाय साहजी साहब ने वह चित्र उन्हें दे दिया वे चुपचाप दोनों चीज़ लेकर चले गये इस प्रकार आपने वृज की रक्षा करदी, इधर जब पुनः शांति स्थापन होगई तब सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) से आपके नाम वारण्ट निकला, यह सुनकर आप किंचित् भी विचलित न हुए जब मैजिस्ट्रेट के यहां तलब किये गये अदालत के नियमानुसार हलफ़ इत्यादि होने के बाद आपकी इस प्रकार बातें प्रारंभ हुईं ।

मैजि०—कुछ बाग़ी तुम्हारे घर रहा था ?

साह०—जी नहीं, व्रज में रहे ।

मैजि०—कितना रोज़ ?

साह०— तीन दिन ।

मैजि०—तुमने सरकार के बागियों को इम्दाद क्यों दी ?

साह०—जी नहीं इसको इम्दाद नहीं कहते मैंने व्रज की रक्षा के लिये और मार काट न हो इसलिये उन्हें सामदाम से ही वशकर लेने की इच्छा की थी जब वे मेरी शरण स्वयं आये थे तो मेरा धर्म था कि मैं उन्हें किसी प्रकार कष्ट न दूं मैंने व्रज की रक्षा कर आपही के कर्त्तव्य का पालन किया जो कार्य आप करते वह मैंने किया ।

मैजि०—वैल, कुंदनलाल तुम जानता है कि बाग़ियों को इम्दाद देने वाले को क्या सज़ा दी जाती है ?

साह०—आप शक्तिशाली हैं सभी सज़ा दे सकते हैं मृत्यु पर्यन्त की सज़ा दे सकते हैं इससे ज्यादा नहीं ।

मैजि०—(झुंझलाकर) अच्छा तुमको यही सज़ा देगा तुमको फांसी दिया जायगा ।

साह०—जो आज्ञा किन्तु एक प्रार्थना है मनुष्यत्व के नाते हम आपसे एक अनुरोध करते हैं कि हमको फांसी वृन्दावन में दी जाय और फांसी के समय हमारे चारों ओर श्री हरिनाम संकीर्तन हो भगवान के नाम के सिवाय हम और कुछ नहीं सुनना चाहते हैं ऐसी फांसी हमको सज़ा नहीं इनाम होगी ।

मैजि०—मालुम होता है तुम एक Religious man (धार्मिक मनुष्य) है ? हम जानता है तुम्हारे धरम की किताब में लिखा है कि राजा रैयत का बाप होता है रैयत को भी उसे बाप की बराबर मानना चाहिये ।

साह० — हां, मैं राजा को बराबर पिता के तुल्य मानता था, मानता हूं और आगे

मैजि० —टुम को टो अभी फांसी होगा आगे कैसे मानता रहेगा। क्या हुम आगे जीटा रहेगा।

साह०—जब तक राजा अपने कर्त्तव्य से नावाकिफ़ थे तब तक मुझे आपसे भय था, जब राजा अपने कर्त्तव्य समझ गये अर्थात् प्रजा को पुत्र की तरह मानने लगे तो मुझे आपसे कोई डर नहीं है। अगर पिता नाराज़ होकर संतान को कोई दण्ड भी दे तो उसके अच्छे के ही लिये दण्ड देता है। पिता की ओर से पुत्र का कोई नुक़सान नहीं हो सकता।

इनके इन बुद्धिमत्ता पूर्ण वचनों को सुनकर मैजिस्ट्रेट द्विविधा में पड़गया कुछ देर विचार करने पर इनको छोड़ देना ही उचित समझा अतः मैजिस्ट्रेट ने आपको बरी कर दिया आप संकीर्तन करते करते नाव द्वारा फिर वृन्दावन वापस आगये।

प्रिय पाठक! साहजी साहब ने सत्य विद्वत्ता साहस और आत्मबल से अपनी आने वाली आपत्ति को बात की बात में दूर कर दिया अदालत का अभि-प्राय था कि इनको राजद्रोही और धर्मद्रोही दोनों ठहराया जाय किन्तु आपने उन की ही बातों से कैसी जल्दी दोनों अपराधों से मुक्ती पाली।

वृन्दावन को आप अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे वृज रज में आप कभी मलमूत्र त्याग नहीं करते थे आपके मलमूत्र त्याग करने के स्थान पर आगरे से मिट्टी मंगवाकर बिछाई जाती थी आगरे के ही बने कुंडे में मलमूत्र त्याग करते थे वे कुंडे वृज की सीमा के बाहर फेंके जाते थे। ग़दर के पश्चात् आपने श्री राधाकृष्ण की लीलायें पद्य में प्रणयन की आपकी इच्छा उन लीलाओं के प्रत्यक्ष दर्शन करने की हुई एतदर्थ आपने प्रायः ३-४ लाख रुपया व्यय किया रासलीला का वृत्तान्त हम "लघुरस कलिका" नामक ग्रन्थ में पाठकों को अवगत करायेंगे संवत १९१७ माघ शुक्ला ५ से स्वनिवास स्थान निर्माण का कार्य प्रारंभ कराया यह संगमरमर का अत्यन्त विशाल भवन आठ वर्ष में बनकर तयार हुआ आपने अपने उस भजन कुटीर का नाम "श्री ललित निकुंज" रखा। ललित निकुंज का चित्र हम इसके साथ ही दे रहे हैं सं० १९२५ माघ शु० ५ को अत्यन्त सामारोह के साथ आप नित्य निज सेव्य श्री राधारमणजी का विग्रह इस नूतनभवन में ले गये। आपका शेष जीवन बड़ी शांति और आनंद से व्यतीत हुआ सं० १९३० में दशहरे के बाद से आपको फ़सली बुख़ार हुआ दस बारह दिन में कमज़ोरी के सिवाय आपके शरीर में कुछ रोग शेष नहीं रहा कार्तिक शु० १ के दिन आपको ज्ञात होगया कि हमारी जो बहुत दिन से अभिलाषा थी कि श्री वृन्दावन की रज में श्री युगलनाम संकीर्तन करते २ हम इस नश्वर देह को त्याग करें उसके पूर्ण होने का समय निकट है अतएव आपने उस दिन आतुर सन्यास लिया और परमार्थ विषय के बहुत से उपदेश याद किये उस दिन से कमज़ोरी कुछ कुछ बढ़ने लगी सबेरे वृहस्पतिवार [illegible] को आपके लघुभ्राता साह कुन्दनलालजी ने आपकी [illegible] देखकर आपसे निवेदन किया कि समय निकट है आप यह आनंदित होकर बोले कि [illegible]

बात है रज का चबूतरा तैयार कराओ यह कहकर आप अपने नित्य नियम में लग गये इधर छोटे साहजी ने यमुनाजी की कोमल स्वच्छ बालू को छनवाकर एक चबूतरा तैयार कराया और आपका पलंग उसके समीप लेगये आप चबूतरा देखकर अत्यन्त हर्षित हुये मानों चक्रवर्ती राज्य का सिंहासन मिलगया हो झट उसपर विराजमान होकर आपने आज्ञा की कि संकीर्तन प्रारंभ करो और हमारे परिचर्या के ९ आदमियों के सिवाय किसी को यहां मत आने दो छोटे साहजी साहब ने आपकी आज्ञानुसार संकीर्तन प्रारंभ किया, इस समय छोटे साहजी का धैर्य प्रशंसनीय था आप स्वयं तो धीर थे ही औरों को भी धैर्य बँधाते जाते थे और साहजी साहब को श्री राधेश्याम नाम सुना रहे थे, साहजी साहब के तीन ओर तीन चित्र श्री राधारमण जी के लगाये गये एक दाहिनी ओर एक बाईं ओर और एक सामने जिधर दृष्टि जाय श्रीजी के ही दर्शन हों, साहजी साहब भी धीरे धीरे महीन स्वर में नाम ले रहे थे दिन के २॥ बजे आपने एक पद रचना कर पढ़ा।

कुण्डलियां।

वृन्दावन अवनी अली करो राधिका सोर।
गली गली हुइ राधिका नाम न दूजौ घोर॥
नाम न दूजौ घोर ओर दश हूं रँग रांचै।
जल थल पातन पात सोर राधा धुनि माचै॥
एसौ बनै समाज सदा रहिहों जग जिन्दा।
ललितकिशोरी प्रान जाउंगे बन बिन्दा॥

इस समय आपका देह और बदन एक दम प्रफुल्लित हो उठा आपका ऐसा गुलाब का सा चहरा कभी निरोग अवस्था में भी नहीं देखा गया था आप कभी चित्रों के चरण छूकर माथे से लगाते थे कभी नृत्य का भाव करते थे कभी हाथ उठाकर कीर्तन करते थे कभी हाथ फैलाकर चित्रों की ओर इस प्रकार बढ़ते थे मानों श्रीजी की छवि को अपने हृदय में ले लेंगे या आप ही इन चित्रों में लीन हो जायंगे करीब ३। बजे दिन आपने मुस्कराकर चार बार जल्दी जल्दी राधेश्याम नाम लिया और एक टक लगाकर चित्रों के दर्शन करते करते इस नश्वर देह को त्याग कर श्रीजी के चरणों में लीन होगये, आपका वियोग समाचार बिजली की तरह चारों ओर फैल गया दूर दूर से लोग आने लगे आपकी देह यात्रा बड़ी विचित्र प्रकार से हुई। वृन्दावन की सड़कों पर कोमल बालू श्री यमुनाजी की बिछाई गई उस परसे आपको लेजाया गया आपके शरीर पर सिंदूरी रंग की गाथी बंधी हुई थी मानों कोई युवती सन्यासनी हो चहरे पर वही अंतिम समय की मुसक्यान थी चरणों में कोमल कपड़े बांध कर हज़ारों आदमी आपको ठहरते ठहरते लेजारहे थे पीछे पीछे हजारों आदमी रज में लोटते नाचते कीर्तन करते आरहे थे सब लोग उनके चरण छूकर अपने बालकों के माथे से लगाते थे प्रधान प्रधान मंदिरों के

श्रीजी की ओर से प्रसादी दुपट्टा माला और प्रसाद से आपका सम्मान हुआ प्रसाद आपके मुख में दिया गया दुपट्टा उढ़ा दिया गया वहां से चलकर श्री युगल वाटिका में आपको समाधिस्थ किया गया यह स्थान निधवन से कुछ दूर था किन्तु आप अपना स्थान निधवन के पास ही निर्दिष्ट कर चुके थे इसलिये कुछ दिन बाद आपकी समाधि वहां से लेजा कर नये भवन के चंद्रपोल नामक द्वार पर जो निधवन के अति समीप है लगाई गई आज भी दोनों भ्राता द्वार के दोनों ओर जय विजय की तरह समाधिस्थ हैं।

चरित्र पर प्रकाश।

श्री ललित किशोरी के जीवन से हमको अनेक अमूल्य शिक्षायें अनुकरणीय गुण तथा स्मरणीय उपदेश मिलते हैं। हमने स्वबुद्ध्यनुसार उनके चरित्र पर प्रकाश डालकर संक्षेप में उनको प्रकाशित करने की चेष्टा की है आशा है सहृदय पाठक उनसे कुछ लाभ उठायेंगे यदि श्री ललितकिशोरी जी के चरित्र से किसी भी व्यक्ति को कुछ लाभ हुआ तो हम अपने श्रम को सफल समझेंगे।

शिक्षायें

श्री भगवत्प्रेम।

आपके जीवन से सबसे बड़ी शिक्षा श्रीभगवत्प्रेम है आपका भगवान में बड़ा विचित्र प्रेम था अभिलाष माधुरी ग्रन्थ पढ़ने से आपको उसका बहुत सा आभास समझ में आजायगा—श्री श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने अपनी शिक्षा का तत्व जो जीवों को उपदेश किया था किसी ने इस प्रकार वर्णन किया है।

आराध्यो भगवान् वृजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावनम्
रम्या काचिदुपासना व्रजवधूवर्गेण या कल्पिता
श्री मद्भागवतं प्रमाणममलं प्रेमापुमर्थो महान्
श्री चैतन्यमहाप्रभोर्मतमिदं तत्रा ग्रहो नः परः

अर्थ—भगवान वृजेश तनय (नंदनंदन) हमारे आराध्य हैं जीव मात्र को उन्हीं की आराधना करनी चाहिये वृन्दावन उनके रहने का स्थान है उपासना उनके लिये सर्वोत्तम वही है जो वृज वधुओं ने (गोपियों ने) की थी श्री मद्भागवत इसका विशद प्रमाण है, और श्री भगवत प्रेम ही जीवका परम प्राप्तव्य अर्थ है तात्पर्य यह है कि यदि जीव को कदाचित् भगवान मिल भी जांय और उसका श्री भगवान के प्रति प्रेम न हो तो उनका मिलना व्यर्थ है क्यों कि भगवान के मिलन का रसास्वादन जीव को तभी हो सकता है जब उसका उनके प्रति प्रगाढ़ प्रेम भक्ति और श्रद्धा हो पाठक इस पुस्तक से उनके विचित्र प्रेम का स्वरूप स्वयं जान जांयगे हमको कुछ शेष कहना नहीं है इतना अवश्य कहेंगे कि श्री ललित-किशोरीजी की भक्ति सबको सर्वथा अनुकरणीय और आलोचनीय है। शास्त्रों में कहा है कि पित्त रोगी को मिसरी भी कड़वी लगने लगती है किन्तु निरन्तर

सेवन करते रहने से पित्त भी शान्ति हो जाता है और धीरे धीरे मिसरी भी मीठी लगने लगती है इसी प्रकार भगवद्विमुख जीवो का मन श्रीकृष्ण कथादि श्री भगवद्विषयों में नहीं लगता किन्तु उनको भी उसकी आलोचना करते रहना चाहिये इससे उनका वैमुख्य दूर होकर उनकी भगवान में शुद्धि मति हो जाती है।

श्री वृन्दावन में निष्ठा।

आपकी वृन्दावन में भक्ति का वर्णन हम उनके चरित्र में करही चुके हैं विशेषतः इस ग्रन्थ से भी पाठकों को इसका पता मिल जायगा आप यहां कभी चट्टी जूता इत्यादि नहीं पहनते थे किसी सवारी में भी नहीं बैठते थे जबसे आप यहां आये कभी वृन्दावन की सीमा के बाहर नहीं गये यहां आप कभी मलमूत्र त्याग नहीं करते थे आप वृन्दावन से बाहर न जाने की प्रतिज्ञा कर चुके थे इसलिये आपके लिये आगरे से कुंडे मंगवाये जाते थे और मल मूत्र व्रज ८४ कोस की सीमा के बाहर बहुत दूर फेंके जाते थे हम निरंतर वृन्दावन में वास करने की प्रतिज्ञा करने वालों के सिवाय सबसे प्रार्थना करेंगे कि सबको साहजी साहब के इस चरित्र का अनुकरण अवश्य करना चाहिये एक तो वृन्दावन बहुत छोटी सी जगह दूसरे हर साल हजारों लाखों यात्रि बाहर से आते हैं यदि सब व्रज से बाहर मलमूत्रादि त्याग करते तो आज वृन्दावन का जल वायु नष्ट (Malarious and choleric) न हो जाता।

महाप्रसाद में श्रद्धा।

महा प्रसाद को आप बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे एक तिनका भी महाप्रसाद न कभी नष्ट जाने देते थे। न कभी फैंकते थे यहां तक कि जब प्रसाद पा चुकते थे तब पत्ते दोनों सबकी सींक खोल कर पत्तों में से प्रसाद को निकाल लेते थे उनमें किंचित भी महा प्रसाद का अंश फैंका न जाता था। साहजी साहब का यह आचरण भी सबको अवश्य आचरणीय है प्रसाद महिमा के सिवाय यह एक प्राकृत विज्ञान से भी संबन्ध रखता है। लार्ड ग्लाडस्टोन कहा करते थे कि हम खाना खाकर यदि बची हुई दो रोटी व्यर्थ फैंक दें तो संसार के किसी मनुष्य को उन दो रोटियों का भूखा अवश्य रहना पड़ेगा आज कल हम देखते हैं कि बहुत से बड़े आदमी अपने भोजन में से बचा हुआ बड़ा हिस्सा नष्ट कर देते हैं फल स्वरूप भूमण्डल पर लाखों मनुष्यों को नित्य भूखा रहना पड़ता है यदि सब मनुष्य अपनी खूराक का कुछ भी अंश व्यर्थ न जाने दें तो पृथ्वी पर किसी को उपवास न करना पड़े।

गुण।

आप दोनों भाई अत्यन्त सुन्दर हृष्ट पुष्ट बलिष्ट निरोग और हंसमुख थे आप दोनों में केवल यही विभेद था कि ललितकिशोरी जी गौरवर्ण और ललितमाधुरी जी श्यामवर्ण थे आप दोनों कई भाषाओं के (फ़ारसी, खड़ी बोली, वृज

भाषा पंजाबी गुजराती बंगला इत्यादि के) उत्कृष्ट ज्ञाता थे बड़े प्रवीण गवैया थे आप रास के स्वरूपों को स्वयं गान की शिक्षा देते थे आप हरेक तरह के बाजे बजा सकते थे जवाहरात के आप बड़े अच्छे पारखी थे नृत्य कला के भी अच्छे ज्ञाता थे रास अभिनेताओं को स्वयं शिक्षा भी देते थे। प्रायः सभी प्रकार के शिल्प आप भली प्रकार जानते थे इतना बड़ा ललितनिकुंज आपने अपने ही आइडिया (Idea) से तयार कराया इसके चित्र भी आपने स्वयं ही तयार किये हैं हिकमत में आपका बहुत अच्छा प्रवेश था आपके पढ़ाये हुये बड़े अच्छे २ हकीम कई नवाबों राजाओं के यहां नौकरी करते थे फ़ारसी के आप बड़े सुन्दर खुशखत लेखक थे आपके पास दूर दूर से लोग लिखना सीखने आते थे आप केवल धोती पहिरते दुपट्टा ओढ़ते थे जाड़े में बगलबन्दी इत्यादि पहिन लेते थे रहन सहन भी साधारण था अभिमान छू तक नहीं गया था हरेक प्रकार के मनुष्यों से बिलकुल घर का सा बर्ताव करते थे दिनचर्या आपकी बड़ी सुन्दर थी ४ बजे प्रातः उठते थे शौच स्नान से निवृत्त हो श्रीजी की मंगला का पूजन करते थे बाल भोग रखकर आप नित्य नियम भजन आदि करते थे शृंगार आरती बाद जब ठाकुरजी राज भोग में विराजते तब आप अपने सब अमले के साथ संकीर्तन करते करते श्रीराधारमणजी के दर्शन करने जाते दर्शन कर अपने गुरुजी श्रीराधागोविंदजी महाराज के यहां कुछ देर शिक्षा ग्रहण करते पुनः कीर्तन करते करते लौट आते थे दोपहर को प्रसाद पाने के बाद आप कुछ विश्राम करते थे क्यों कि रात में प्रायः आप भजन में लगे रहते थे इसलिये बहुत कम सो सकते थे दोपहर को कुछ विश्राम कर कुछ काव्य शास्त्र विनोद रचना इत्यादि करते रहते थे संध्या को स्नान कर एक बार श्रीजी की सेवा में जाते थे संध्या की सेवा प्रायः छोटे साहजी साहब करते थे इसलिये आप योगाभ्यास करने के लिये यमुना किनारे वाली बारह द्वारी में आजाते थे ढाई तीन घंटे योगाभ्यास करने के बाद ब्यालू कर आप भजन में बैठ जाते थे प्रायः बारह एक बजे तक आप भजन में रहते थे रात को केवल तीन चार घंटा सो सकते थे।

उपदेश।

आपके अमूल्य उपदेश इस ग्रन्थ और अन्यान्य ग्रन्थों द्वारा पाठकों के दृष्टि गोचर होते रहेंगे इस विषय में हम विशेष कुछ न कह सकेंगे किन्तु इसी ग्रन्थ में एक जगह आपने अपने उपदेश सूत्र रूप में वर्णित किये हैं हमें वे बहुत ही रुचे हैं पाठकों को जानने के लिये नीचे लिखे देते हैं।

श्री वनवास की आस करौ विश्वास करौ जुगनाम के मांहीं।
सन्तन को सत्संग करौ अँगरंग रँगो जिहि जुगल मिलाहीं॥
गौर श्याम मद मत्त रहौ दृग छिन छिन दर्शन को ललचाहीं।
बाल गोविन्द छको छविसों तय ललितकिशोरी नैन सिराहीं

धार्मिक संसार के प्राय सभी उपदेश इनके अन्तर्गत है पाठक इन पर ध्यान दें

श्री ललितमाधुरी जी।

आपका जन्म सं० १८८९ मिती माघ शु० १४ को हुआ आपका नाम साह फुन्दन लाल था आप अपने बड़े भ्राता साह कुन्दन लाल जी से बहुत प्रेम करते थे दोनों भ्राताओं में राम लक्ष्मण जैसी प्रीति थी दोनों को एक सी ही शिक्षा दी गई दोनों ही अच्छे कवि थे दोनों एक साथ ही रहते थे आप अपने बड़े भाई के बड़े आज्ञाकारी थे एक वार आपको ज्वर आया ज्वर के साथ प्यास का तो चोली दामन का सा सङ्ग है ही। आपने बार बार कई दफ़े ठण्डा पानी पिया बड़े साहजी साहब ने सुना तब उनसे कहा कि "भाई ज्वर में पानी पीना ठीक नहीं है" तभी से आपने पानी पीना छोड़ दिया यह संध्या समय की बात है आप ने दूसरे दिन तक पानी नहीं पिया १४ घंटे में आपकी हालत बड़ी ख़राब होगई सवेरे साहजी साहब ने बड़े चिन्तित होकर इसका कारण पूछा आप चुप होगये आपके अनुचरों ने कहा कि जबसे आपने मना किया तबसे जल नहीं पिया सम्भवत: इसी से ग़फ़लत सी होगई है बड़े साहजी साहब ने उसी समय हकीम को बुलवाया हकीम ने देखकर कहा कोई चिन्ता की बात नहीं है केवल जल न पीने से ही यह अवस्था हुई है जल पिलाइये यदि ये तीन चार घण्टे और जल न पीते तो "पीलिया" रोग होजाता। आपका यह अग्रजाज्ञापालन सभी को अनुकरणीय है। आपकी भगवन्निष्ठा, साहस, निर्भयता भी प्रशंसनीय है जब आप वृन्दावन में थे तब आपके यहां रासलीला बड़ी मर्यादा और बड़े व्यय से होती थी आपके बड़े भ्राता लीलाओं की रचना करते थे आप उनका प्रबन्ध करते थे एक दिन आपके यहां से यमुनाजी के घाटों पर जल केलि के लिये रासलीला रवाना हुई आगे आगे श्रीराधाकृष्ण नृत्य करते जाते थे पीछे समाज था उनके पीछे दर्शकों की भीड़ थी श्री राधारमणजी के मन्दिर के सामने तिराये पर जब पहुंचे तो भौंरा घाट की गली से दो सांड़ लड़ते लड़ते स्वरूपों पर झपटे पीछे के दर्शक सब हाय हाय करने लगे श्री राधाकृष्ण नृत्य में ऐसे लीन थे कि उनको इस बात का पता भी न था यह देखकर श्री ललितमाधुरी जी झट आगे दौड़ आये दोनों सांड़ों के माथे पर हाथ फेर कर पुचकारने लगे और दोनों के सींग पकड़ कर दूसरी ओर लेगये आपका यह कार्य देखकर सभी चकित होगये, हम आपके गुणों का कहां तक वर्णन करें, आपका संपूर्ण जीवन श्री बड़े साहजी साहब की सेवा ही में व्यतीत हुआ आपमें बड़े साहजी साहब के सब गुण मौजूद थे रहन सहन स्वभाव चरित्र सब उनका जैसा ही था इसलिये हम आपका पृथक चरित्र नहीं लिख रहे हैं बड़े साहजी साहब के जीवन की प्रधान प्रधान घटनाओं के साथ आपका पर्याप्त सबन्ध है आप बड़ी सुन्दर कविता करते थे आपका उपनाम "ललितमाधुरी" था इस ग्रन्थ के साथ भी आपके कई एक पद्य सयुक्त किये हुये हैं संवत् १९३० से १९४२ तक इन १२ वर्षों में आपको श्री ललित

किशोरी जी के पद और लीलायें संग्रह कीं उनमें से कुछ पुस्तकें आपने छपाई भी थीं वे सब बहुत शीघ्र वितरित होगई हमारे पास भी एक एक कापियां हीं बची हैं। संवत् १९४२ जेष्ठ शु० ५ को प्रातःकाल आपने अकस्मात रज का चबूतरा तयार करने की आज्ञा दी आप पूर्णतया नीरोग थे अतः इस आज्ञा से आपके अनुचरों को बड़ा आश्चर्य हुआ तथापि चबूतरा श्रीयमुनाजी की रज का तयार कराकर आपसे प्रार्थना की आपने कहा कि ले चेलो (आपको कई वर्ष से पक्षाघात था अतः स्वयं नहीं चल सकते थे) आपकी कुर्सी चबूतरा के समीप ले जाई गई आप उसपर बैठकर कीर्त्तन करने लगे हमारे पितृ-चरण साह माधुरी-शरणजी दिल्ली गये थे उनको तार देकर बुलवाया गया उनके आने पर उनसे कुछ आवश्यकीय निर्देश कर आप संकीर्तन करते करते नित्य सेवा में प्रविष्ट हुये उनकें ९ वर्ष बाद सं० १९५१ में पूज्य पितृचरण श्री साह माधुरीशरण जी साहब का भी देहावसान होगया तब से पूजनीय माताजी श्रीरामदेवीजी के ऊपर सब कार्य भार आपड़ा ३७ वर्षों से आप बड़ी योग्यता और नियम के साथ श्रीजी की सेवा और सम्पत्ति का प्रबंध कर रही हैं नाना प्रकार के मानसिक शारीरिक श्रमों के और वार्द्धक्य के कारण आपका शरीर सम्प्रति प्रायः अस्वस्थ रहता है आपकी बहुत दिनों से इच्छा थी कि साहजी साहब के ग्रन्थ फिर छपाये जांय किन्तु तबसे विविध प्रकार के झंझटों के कारण आपकी अभिलाष पूर्ण नहीं हुई। इधर बहुत से मित्रों के अनुरोध और माताजी की आज्ञा से उन्ही की अभिलषित "अभिलाष माधुरी" को पुनर्मुद्रित कराकर हम प्रकाशित कर रहे हैं यह कार्य हमको प्रथम ही करना पड़ा है अतः बहुत सी त्रुटियां रह जाना अत्यन्त स्वाभाविक है रसज्ञ महानुभाव त्रुटियां क्षमाकर इसे अपनायेंगे।

श्री ललित निकुञ्ज
मि० व्यास पूर्णिमा १९८८.

निवेदक—
साह गौरशरण गुप्त।
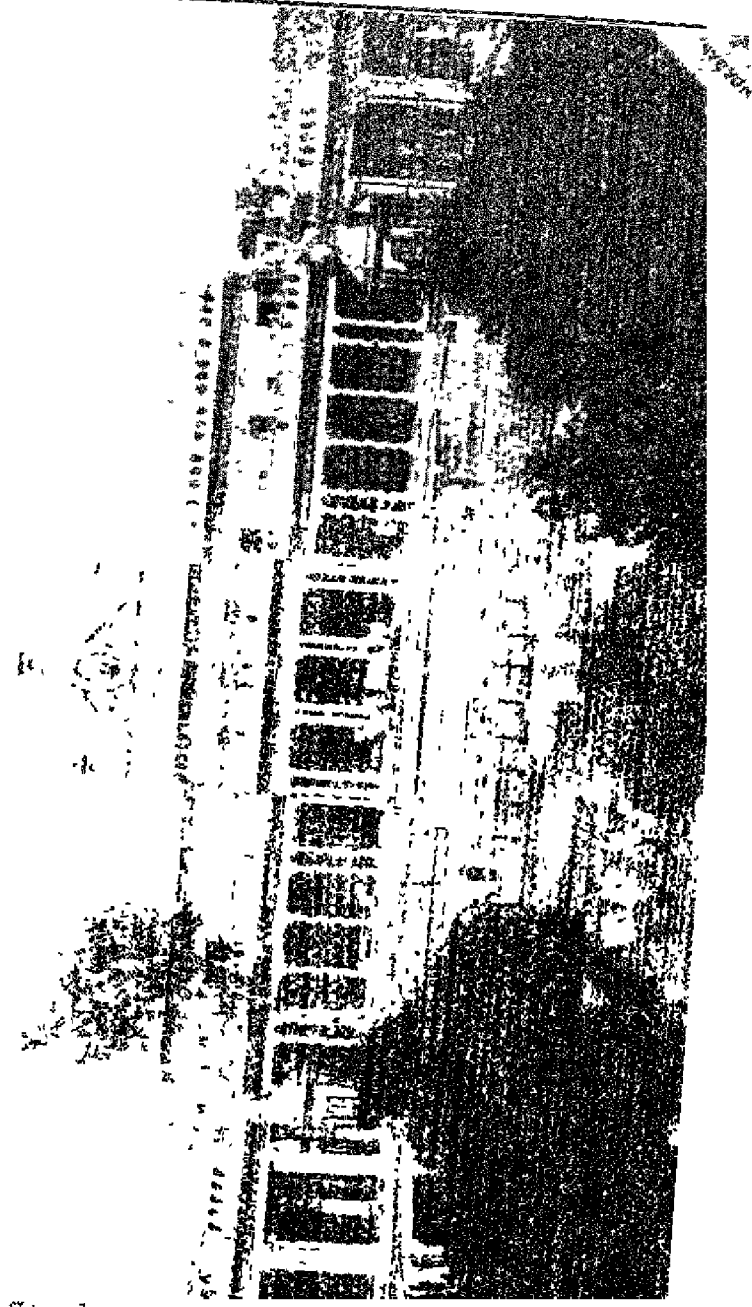
* श्री श्रीराधारमणो जयति *

॥ जयगौर ॥

अभिलाष माधुरी ।

राधारमणचरणकमलेभ्यो नमः । श्री कृष्णचैतन्यपादपद्मेभ्यो नमः ।
अभिलाष माधुरी ललितकिशोरी विरचिता प्रारभ्यते ।

अथ विनय श्रृंगार शतक ।

दोहा ।

करुणालय गौराङ्ग के, पदसरोज सुखरास ।
दीजै इन अँखियांन को, सेवाकुंज निवास ॥ १ ॥
राधागोविंद प्राण हैं, चरणपद्म सुखधाम ।
करुणाकरि मुहि दीजिये, निधुबन में विश्राम ॥ २
पद पंकज तुव दरस को, अँखियां भईं बिहाल ।
डरी रहौं वन कुंज में, राधावल्लभलाल ॥ ३ ॥
जुगल चंद्र मुख लखन को, नैना भये चकोर ।
ललित किशोरी बोलिये, वृन्दावन की ओर ॥ ४
अति अज्ञान अयान हौं, ना जानौं विधि सेव ।
चूक किशोरी माफ करि, श्रीवन मारग देव ॥ ५
जुगलबिहारी दरस को, रहि रहि जिय अकुलाय
कृपा कोर दृग हेरिये, श्रीबन बेगि बुलाय ॥ ६ ॥
व्रजरज अंग परसाइये, ललितकिशोरी श्याम ।
नैनन रँग सरसाइये श्रीवृन्दावन धाम ॥ ७ ॥
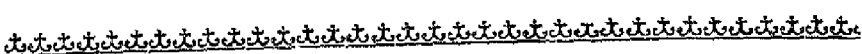
वृन्दाविपन सुहावनो, यकरस बारौमास ।
ललितकिशोरी भांवते दीजे तहीं निवास ॥ ८ ॥
जुगलबिहारी दीजिये, श्रीवृन्दावन वास ।
रूपसुधारस पियन को, लोचन मरत पियास ॥ ९ ॥
नैना के जुग खंज हैं, उड़ि मिलिवे अकुलाहिं ।
जुगल बेगि अब बोलिये, श्रीवृन्दावन माहिं ॥ १० ॥
मेरी जीवनमूरि है, रज वृन्दावन अैन ।
जुगललाल करुणानिधे, दरसैये इन नैन ॥ ११ ॥
राधावल्लभ नाम को, रटहुँ जमुन के कूल ।
रचि रचि माल बनावहूँ, चुनि चुनि श्रीवन फूल ॥१२॥
वृन्दावन कुंजन लहौं, श्यामा श्याम प्रवीन ।
नैना अति अकुलात हैं, जैसे जलबिन मीन ॥ १३ ॥
राधावल्लभ नाम को, रटत रहौं दिन रैन ।
बिचरौं गहिवर गलिन में, श्रीवृन्दावन अैन ॥ १४ ॥
श्रीवन कुंज बिहारिनी, कुंज बिहारीलाल ।
श्रीवन बेगि बुलाइये, करुणाअयन कृपाल ॥ १५ ॥
प्रियकर फूल गुलाब को, फिरकत द्वै अँगुरीन ।
लखौं ललितवन कुंज में, मोहत श्याम प्रवीन ॥१६॥
दधि मंडित मुख चंद्र सौं, चोरी पकरे श्याम ।
कुंज भवन श्री राधिका, निरखौं कीरति धाम ॥१७॥
सघन कुंज बन घेरहूँ, भजत बिहारीलाल ।
स्वामिनि टेरौं कूक दै, सुन्दर नैन विशाल ॥ १८ ॥
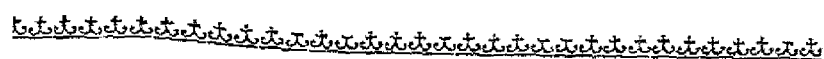
पिकसम दृग अकुलात हैं, दरस जुगल छबि बुंद ।
मोरकुटी मगरंध्र तें, निरखहुँ आनन इन्द ॥ १६ ॥
नवल प्रिये नव श्याम घन, श्रीवृन्दावन मांहिं ।
गलबांहीं दियँ दुहुन कौं, लखौं कदम की छांहिं ॥२
ललितकिशोरी लाड़िली, रसिक नवल छविपुंज ।
भुज मेलें दृग जोरिकैं, निरखहुं श्रीवनकुंज ॥ २१ ।
वंशीबट छबि सोहनी, कूजत कोकिल कीर ।
मनमोहन मनमोहनी, निरखौं कुंज कुटीर ॥ २२ ॥
लखि दोऊ मुख मुकर में, बिहँसत मेलि कपोल ।
कालीदह नवकुंज में, निरखौं करत कलोल ॥२३॥
गोवर्द्धन की छांह में, जुगल बिहारीलाल ।
सुरझावत ठाड़े लखौं, बेसरसों बनमाल ॥ २४ ॥
उरझे रस बतियान में, ठड़े छबीली छैल ।
नैना सैनी ह्वै रही, निरखौं गोकुल गैल ॥ २५ ॥
जोरि कोर नैनान की, फूँकत वेणु रसाल ।
कालिंदी के कूल में, लखौं रंगीली लाल ॥ २६ ॥
जुगललाल कर कमल लै, भंवर निवारत कुंज ।
श्रीवन वंशीबट तरें, लखौं रूप के पुंज ॥ २७ ॥
भुकन चंद्रिका मुकट सों, दृगन विलोकन बंक ।
राधाबल्लभ लाड़िले, श्रीवन लहौं निसंक ॥ २८ ॥
हंस चलन श्रीस्वामिनी, गतिगयंद नंदलाल ।
लखौं सुनों बनकुंज में, वंशीरणित रसाल ॥ २६ ॥

अरत लाल दधि दान को, ललितकिशोरी संग।
बरसाने की खोरि में, लखि लखि पुलकें अंग ॥३०॥
श्रीवृन्दावन कुंज में, निरखौं छविहि अपार।
लालन कर झारी गहें, प्रियहि पिवावत वार ॥३१॥
प्यारी पग मग रज लगी, झारत पटहि गुविंद।
निरखहुँ गहवर कुंज में, उदय जुगल सरदिंद ॥३२॥
अलक सँवारत लाड़िलो, निरखत पलकन बाल।
हेरौं श्रीवन भवन में, ललितकिशोरी लाल ॥ ३३ ॥
संग चलत पग जोरिकें, छली छबीली छैल।
झुकी लतन बन माधुरी, निकसत निरखहुं गैल ॥३४
झीन वसन अंग लाड़िली, लालन दृग रिझवार।
कोकिलबन विहरत लखौं, कुंजन लता निवार ॥३५॥
सुरझावत लट मुकुट सों, उरझत चट दृग लाल।
रसिक जुगल बन कुंज में, निरखहुँ तरे तमाल ॥३६॥
झकझोरत झिगरत दोऊ, बिथुरत मुक्तामाल।
कुसुम सरोवर तट लखौं, राधा मदनगुपाल ॥ ३७ ॥
दृग आंजत प्रिय सांवरो, कोमल कर अंगुरीन।
दुरि मुरि हेरों द्रुमन तें, गहिवर कुंज नवीन ॥ ३८
छली छबीली उमग सों, विहरत वट संकेत।
निरखौं दोऊ परसपर, अधर मधुर रस लेत ॥ ३९ ॥

होरी ।

नागर नट पिचकारि लै, कुमकुम केशर रंग ।
वृन्दावन खेलत लखौं, ललित किशोरी संग ॥ ४० ।
बरसाने की गयल में, छयल छबीले संग ।
अंग अंग श्रीराधिका, छिरकत देखौं रंग ॥ ४१ ॥
पीतंबर लै मुरलिका, नवल बधू सजि रूप ।
वंशीवट नचवत प्रिया, निरखहुं छबी अनूप ॥ ४२ ॥
मंडित गंड गुलालसों, जुगल मनोहर गात ।
निरखहुं नव बन कुंज में, भरि भरि भुज इतरात ॥४३
निरखहुँ श्रीवन सांवरो, छिरकत केशर रंग ।
ललितकिशोरी चमकिकै, झमकि मरोरत अंग ॥४४॥
कहत छबीली छैलसों, सँभरि खेलिये फाग ।
लखौं लतन की ओट है, लाल बचावत पाग ॥४५॥

उनींदे नेत्र ।

नैन उनींदे भोरहीं, राधा नंदकिशोर ।
उठि बैठे बन कुंज में, चितवहिं मेरी ओर ॥ ४६ ॥
सेज सँवारी सुमनसों, रचि रचि सेवा कुंज ।
जुगल रसिक विहरत लखौं, अली करत मधु गुंज ॥४
उनमीलित दृग कुंज में, जगे लड़ैतीलाल ।
आरति अली उतारहीं, निरखहुँ रूप विशाल ॥४८॥

निरखहुं सोवत स्वामिनी, बिजन दुरावत लाल ।
झीने पट बन कुंज में, देखत वदन विशाल ॥४६॥
चौंकि चौंकि निशि लाडिली, गरे लगत नंदलाल ।
लखौं कुंज झिझकत हियें, चुभत सुमन बनमाल ॥८०
चन्द्रमुखी सोवत लखौं, जुरी चकोरिन भीर ।
लाल निबारत कुंज में, ढोरि छोरि अँग चीर ॥८१॥
झीनेपट प्रिय अँग लखौं, नैना श्याम अनूप ।
सरद रैन कुंजन लहौं, छानि पियत रस रूप ॥८२॥
पग सहरावत साँवरो, गात गुलगुलत बाल ।
भौंह सकोरत स्वामिनी, निरखहुं कुंज विशाल ॥८३॥
नैंन उनींदे सैनकों, चले जुगल बन कुंज ।
धरनि परत पग लटपरे, निरखहुं आनँद पुंज ॥८४॥

नेत्रोन्मीलन ।

दृग मूँदत छलि लाड़िलो, कहत प्रिया हँसि छैल ।
आंखि मिचौला खेल को, निरखौं गाहिवर गैल ॥८८॥
दुरादुरी मिस अलिन ते, दुके जुगल बन बेलि ।
रंध्रजाल मग कुंज है, निरखहुं अद्भुत केलि ॥८६॥
छुवाछुई छाझ आंगुरी, खेलत छैला संग ।
श्रीजमुना की पुलिन में, नैनन बरसै रंग ॥ ८७ ॥
छुइकर श्यामा श्याम को, भजत कुंज की ओर ।

निरखहुं सोवत स्वामिनी, विजन दुरावत लाल ।
झीने पट बन कुंज में, देखत वदन विशाल ॥४६॥
चौंकि चौंकि निशि लाडिली, गरे लगत नंदलाल ।
लखौं कुंज झिझकत हियें, चुभत सुमन बनमाल ॥८०
चन्द्रमुखी सोवत लखौं, जुरी चकोरिन भीर ।
लाल निबारत कुंज में, ढोरि छोरि अँग चीर ॥८१॥
झीनेपट प्रिय अँग लखौं, नैना श्याम अनूप ।
सरद रैन कुंजन लहौं, छानि पियत रस रूप ॥८२॥
पग सहरावत साँवरो, गात गुलगुलत बाल ।
भौंह सकोरत स्वामिनी, निरखहुं कुंज विशाल ॥८३॥
नैंन उनींदे सैनकों, चले जुगल बन कुंज ।
धरनि परत पग लटपटे, निरखहुं आनँद पुंज ॥८४॥

नेत्रोन्मीलन ।

दृग मूँदत छलि लाड़िली, कहत प्रिया हँसि छैल ।
आंखि मिचौला खेल को, निरखौं गह्वर गैल ॥८५॥
दुरादुरी मिस अलिन ते, दुके जुगल बन बेलि ।
रंध्रजाल मग कुंज है, निरखहुं अद्भुत केलि ॥८६॥
छुवाछुई बुझि आंगुरी, खेलत छैला संग ।
श्रीजमुना की पुलिन में, नैनन बरसै रंग ॥ ८७ ॥
छुइकर श्यामा श्याम को, भजत कुंज की ओर

निरखहुं सोवत स्वामिनी, विजन दुरावत लाल ।
झीने पट बन कुंज में, देखत वदन विशाल ।।४६।।
चौंकि चौंकि निशि लाडिली, गरे लगत नंदलाल ।
लखौं कुंज झिझकत हियें, चुभत सुमन बनमाल ।।८०
चन्द्रमुखी सोवत लखौं, जुरी चकोरिन भीर ।
लाल निवारत कुंज में, ढोरि छोरि अँग चीर ।।८१।।
झीनेपट प्रिय अँग लखौं, नैना श्याम अनूप ।
सरद रैन कुंजन लहौं, छानि पियत रस रूप ।।८२।।
पग सहरावत साँवरो, गात गुलगुलत बाल ।
भौंह सकोरत स्वामिनी, निरखहुं कुंज विशाल ।।८३।
नैंन उनींदे सैनकों, चले जुगल बन कुंज ।
धरनि परत पग लटपटे, निरखहुं आनँद पुंज ।।८४।।

नेत्रोन्मिलन ।

दृग मूँदत छलि लाड़िलो, कहत प्रिया हँसि छैल ।
आँखि मिचौला खेल को, निरखौं गहिवर गैल ।।८५।।
दुरादुरी मिस अलिन ते, दुके जुगल बन बेलि ।
रंध्रजाल मग कुंज है, निरखहुं अद्भुत केलि ।।८६।।
छुवाछुई छुझि आंगुरी, खेलत छैला संग ।
श्रीजमुना की पुलिन में, नैनन बरसै रंग ।। ८७ ।।
छुइकर श्यामा श्याम को, भजत कुंज की ओर

बीनत सुमनन स्वामिनी, मोहन लता निवारि।
सघन कुंज गहिवर लखौं, भरिभेंटत अँकवारि ॥५९॥
औचक चितवत श्याम घन, श्यामा गई सकुचाय।
ललितकिशोरी गहिवरै, निरखत हियो सिराय ॥६०॥
छुइकर भाजत लाड़िलो, उरझत अलक लतान।
झपटि गहत नव लाडिली, निरखहुँ बन अैनान ॥६१॥
छुवाछुई करि खेलके, मिसकर रसिया छैल।
छुवत कुचन छबिआगरी, निरखहुँ श्रीबन गैल ॥६२॥
निरखहुँ निधुबन कुंज में, श्यामा बीनत फूल।
छली छैल द्रुम कुंज है, झटकत आनि दुकूल ॥६३॥
नैन तरेरत स्वामिनी, छुवत उरोजन लाल।
बरसाने संकेत में, लखौं लतन के जाल ॥ ६४ ॥
अधर दशन खंडित लली, लाल करत उतपात।
निरखहुँ बट संकेत में, अलिजन हिये सिहात ॥ ६५ ॥

नृत्य।

श्रीबन बेनु बजाय के, निरतहिं जुगलकिशोर।
निरखहिं अति अतुराय कें, अनमिष नैना मोर ॥६६॥
नाचैं दोऊ कर जोरिकें, मंडलदै सखिवृन्द।
वृन्दावन पुलिनन लखौं, खिली रैन शरदिंद ॥६७॥
वंशी फूँकत मोहिनी, मोहत नव ब्रजबाल।
करत कुंज कौतुक लखौं, मन भायो नँदलाल ॥६८॥

ज्यों ज्यों अँगुरी लाल की, फिरत वेणु रंध्रान ।
त्यों त्यों थिरकत लाडिली, निरखहुं कुंजलतान ॥६
वशीकरन बंशी बजै, मंडलदै ब्रजबाल ।
बंशीवट निरतत लखौं, बीच लाडिलीलाल ॥७० ॥
होडा होडी निरतहीं, गौर श्याम सुकुमार ।
नवलकुञ्ज वन माधवी, हरषों छबिहि निहार ॥७१॥
लै मोहनकी मुरलिका, प्रिया धरी अधरान ।
मंद बजावत निधुवनै, निरखौं इन नैनान ॥७२॥
नचत श्याम बन कुंज में, गावत प्रिया मलार ।
पवन झकोरन लतन सों, अँखियां छकैं निहार ॥७३

झूला ।

झूलत श्यामा सांवरो, झोटा अलिगन देत ।
पुलकि पुलकि विहरत लखौं, वंशीवट संकेत ॥७४॥
पीतंबर मिलि चूनरी, फुहरत झोंटा मांहिं ।
बरसाने दोउ भामते, झूलत नैन लखांहिं ॥७५ ॥
सेवाकुंज हिंडोरने, भुज भरि बाहु विशाल ।
ललितादिक झुलवत लखौं, रासिक लाड़िलीलाल ॥७६॥

बरषा ।

बरषत बूंदन भांमते, भीजत जमुना तीर ।
निरखहुँ कुंज लतान में, विहरत गहल गँभीर ॥७७॥

कृष्णराधिकाकुंड में, विहरत दोउ सुकमार।
जलसीकर मुखचंद्रपै, निरखहुं जुगुलविहार ॥७८॥
कोमल अँग नवनीत से, सरद चंद की रैन।
विहरत गोविंदकुंड में, यह छवि निरखहुँ नैन ॥७९॥
कुसुम सरोवर भामते, छिरकत जल मुखचंद।
निरखहुँ नव छवि लाड़िली, शोभा नव नँदनंद ॥८०
झिगरत रचि बीरी दोऊ, मेरो मुख अति लाल।
अवलोकत कर मुकुरलै, निरखहुँ कुंज विशाल ॥८१॥
नैन नुकीले मो अली, झिगरत कुँवरि किशोर।
मानसरोवर कुंज में, निरखौं दोउ चितचोर ॥८२॥

मान।

मुकुर बिलोकत लाड़िली, मान करत मुख मोर।
लाल मनावत कुंज में, लख तृण डारौं तोर ॥८३॥
कुँवरिकिशोरी मानिनी, चरन लुढत नँदलाल।
निरखहुँ इन नैनानते, श्रीवन कुंज रसाल ॥८४॥
करत मान ज्यों लाड़िली, लालन होत अधीर।
करजोरे मनवत लखौं, श्रीवन कुंज कुटीर ॥८५॥
मान मनावत मानिनी, मोहन दै गलबांह।
नवनिकुंज निधुवन लखौं, मुख मोरत कहि नांह ॥८६॥
तजत मान श्रीस्वामिनी, सुनि मोहन मधु बैन।
हँसि मेलत उर पुलकिकैं, निरखहुँ श्रीवन ऐन ॥८७॥

ज्यों ज्यों अँगुरी लाल की, फिरत बेणु रंध्रान ।
त्यों त्यों थिरकत लाडिली, निरखहुं कुंजलतान ॥६९

वशीकरन बंशी बजै, मंडलदै ब्रजबाल ।
बंशीवट निरतत लखौं, बीच लाडिलीलाल ॥७० ॥

होडा होडी निरतहीं, गौर श्याम सुकुमार ।
नवलकुञ्ज बन माधवी, हरषों छबिहि निहार ॥७१॥

लै मोहनकी मुरलिका, प्रिया धरी अधरान ।
मंद बजावत निधुबनै, निरखौं इन नैनान ॥७२॥

नचत श्याम बन कुंज में, गावत प्रिया मलार ।
पवन झकोरन लतन सों, अँखियां छकैं निहार ॥७३।

झूला ।

झूलत श्यामा सांवरो, झोटा अलिगन देत ।
पुलकि पुलकि विहरत लखौं, वंशीवट संकेत ॥७४॥

पीतंबर मिलि चूनरी, फुहरत झोंटा मांहिं ।
बरसाने दोउ भामते, झूलत नैन लखांहिं ॥७५ ॥

मेवाकुंज हिंडोरने, भुज भरि बाहु विशाल ।
ललितादिक झुलवत लखौं, रसिक लाड़िलीलाल ॥७६।

बरषा ।

बरषत बूंदन भांमते, भींजत जमुना तीर ।
निरखहुँ कुंज लतान में, विहरत गहल गँभीर ॥७७॥

उत्कण्ठा ।

जुगलरसिकके दरसको, नैना अति अतुरात ।
ज्यौं त्यौं श्रीवन बोलिये, अब नव वयस सिरात ॥८
ललितकिशोरी लालजू यही विनै तुम पांहिं ।
कूकर सूकर ह्वै रहौं, श्रीवृन्दावन मांहिं ॥ ८६ ॥
लतापता द्रुमबेलि हों, खार छार फल फूल ।
कैसेहुं जुगल बसाइये, कालिंदीके कूल ॥ ६० ॥
पशु पत्ती पाषाण हों, तृण अणु रज ब्रज गैल ।
कूप बावरी कीजिये, ललितकिशोरी छैल ॥६१॥
ललितकिशोरी यह विनै, जुगललाल सिरमौर ।
विचरौं श्रीवन पावहूँ, ब्रजवासिनके कौर ॥६२॥
जुगललाल तुव विरहमें, भये नैन जरि खेहु ।
श्रीवन दरस दिखायकैं, पथिक प्रान हरिलेहु ॥६३
मोर कोर दृग देखिये, ललितकिशोरी पांहिं ।
कौनकचौने डारिये, श्रीवृन्दावन मांहिं ॥६४॥
जुगल कृपा करि कीजिये, कदम करील पलास ।
कैसिहुँ कैमुहिं दीजिये, श्रीवृन्दावन वास ॥ ६५
रटौं रसन श्रीजुगलको, ब्रजरज धारौं अंग ।
अटत रहौं नटबटा सम, श्रीवन रासिकन संग ॥६
कीट पतंग पिपीलिका, मरकट भृंग मयूर ।
जुगुलबिहारी कीजिये, वृन्दावनकी धूर ६७

जुगलविहारी विरह में, नाहिंन अब अवकास ।
ललितकिशोरी दीजिये, श्रीवृन्दावन वास ॥९८॥
यही कर्म यहि धर्म है, यही उपासन ज्ञान ।
कै ब्रजसुख इन दृग लहौं, कै छुटि पहुंचैं प्रान ॥९९॥
मुकुट चंद्रिका शिरधरे, चंद्रहार बनमाल ।
वृन्दाविपिन बसाइये, ललितकिशोरी लाल ॥१००॥
वटशृंगार बसाइये, करुनासिंधु कृपाल ।
श्रीबन मंदिरवर लखौं, ललितकिशोरी लाल ॥१०१॥
इत्थं श्रीगुरु कृपातें, करी विनय विस्तार ।
श्रीश्रीराधारमणमय, विनय शतक शृंगार ॥ १०२ ॥

इति विनयशृंगार शतक सम्पूर्णम् ।

—o—

अथ वृन्दावन शतक प्रथम ।

दोहा ।

चिंतामणि गुरु चरण शुचि, श्रीराधागोविंद ।
सुमिरतहीं अंतस फुरयो, वृन्दावन आनंद ॥ १ ॥
पदसरोज गोपालभट, भजतैं भजत अनूप ।
हिये मांझ विकसित भयो, वृन्दावनको रूप ॥२॥
कनककमलसे चरन भजि, सचीसुवन चित चाह ।
वृन्दावनसत रचनको, उपज्यो हिये उमाह ॥ ३ ॥

वृन्दावन रसमाधुरी, दुर्लभ निगम पुरान ।
गौरचंद्र करि कृपा सो, पतितन कीनी दान ॥४॥
करुनाधन घरघर नगर, गौरचंद्र आवेश ।
वृन्दावन रसमाधुरी, बरसी देशविदेश ॥ ५ ॥
वृन्दाबन के वास में, उपजै प्रीतम प्रीत ।
रसिकसमागमसों सदा, बढ़त रहै रसरीत ॥ ६ ॥
वृन्दाबन को ध्यान धरि, सोयजाय जो वीर ।
जुगलकेलि देखोकरै, सबनिसि जमुनातीर ॥ ७ ॥
झुके जांय शिरजोरि कर, साधुमंडली जोय ।
श्रीवन श्रीबन सांझकों, वृन्दाबन धुनि होय ॥८॥
दंपति संपति सबन के, माते मृदुमुसिक्यान ।
केलिकथा मग मग सदन, वृन्दाबन रसखान ॥ ९
मैं लीयो ये आज सखि, पढ़्योपढ़ायो कीर ।
श्रीबनवृन्दाविपिन, श्री वृन्दाबन कहै वीर ॥१०॥
कब ऐसी मति होयगी, लता लता सों लाग ।
लोचन उमडै नीरनिधि, वृन्दाबन अनुराग ॥११॥
वृन्दाबन कब अटौंगी, रटि रटि श्यामा श्याम ।
विवस रेणु लुढ़िहौं कबै, तरु तरु तर विश्राम ॥१२॥
जिनै किशोरी कृपाकरि, दीनो श्रीबनवास ।
तिनकी पदतलरज परसि, उपजै हिये हुलास ॥१३॥
दूजे तीजे चना की, रूखीहू मिलिजाय ।

साही सब संसार पै, करिदीजै पिच पीक।
वृन्दावनकी गली की, अली गदाई नीक ॥ १५ ॥
आन देश की इमरती, सुनितिहु मुख करुवाय।
वृन्दावन की रज अजी, मिसिरिहु ते मिठियाय ॥ १६
वृन्दविपिन करील पै, कल्पद्रुम दे वार।
जिनकी ओझलसों सखी, लखियत जुगलविहार ॥ १७
ब्रह्मलोक वैकुंठ हू, वृन्दावन सम नांहिं।
रैनादिवस विहरत जुगल, जाकी तरवर छांहि ॥ १८ ॥
आन कह्यो पन्छी भलैं, वृन्दाविपिन मंझार।
धसिरहू लसिरहु लतातर, लखियो जुगुल विहार ॥१६
प्रीतिनगर अनुरागपथ, कछु दिन ठोकर खाय।
वृन्दावन रसमाधुरी, तब नैनन झलकाय ॥ २० ॥
खात पियत चितवत चलत, ठालें करतें काम।
वृन्दावन बसि अहरनिशि, भजिये श्यामा श्याम ॥ २१
आन नगरिया ग्राम घर, घुंघुची को ललचाय।
वृन्दावन हीरा हहा, करसों मती विहाय ॥ २२ ॥
वृन्दावनपै वारियां, पर्‌यो रहत यह सोर।
वीथिन वीथिन भवन वन, राधा नंदकिशोर ॥२३॥
पशू पखेरू होहु कछु, पाहन पानी घास।
मांगों अँचर पसारि नित, वृन्दावन को बास ॥२४॥
धनि धनि ते गदगद पुलक, कंपि कंपि कढ़ैं न बैन।
वृन्दावन को नाम सुनि, भरि भरि आवैं नैन ॥२५॥

भूली भूली फिरै का, रहु दंपति के संग।
वृन्दावन धूली लुटै, तवै सफल यह अंग॥ २६॥
जाके नैनन हिये में, दंपति छवि झलकाय।
श्री वृन्दावन बास को, ताको मन ललचाय॥ २७
वृन्दावन बीथिन परे, सीतप्रसादी पाय।
खीर खांड खावैं बहुरि, दूजे देश न जाय॥ २८॥
गलबाहीं दीने दोऊ, लखिये आठो जाम।
वृन्दावन कोने डरे, भखिये श्यामा श्याम॥ २९॥
वृन्दावन के बास में, उपजै उर उल्लास।
ब्रह्मलोक पर्य्यंत सो, ना बैकुंठ निवास॥ ३०॥
कहा धरो बैकुंठ में, कहा हमारो काम।
कुंज कुंज वृन्दाविपिन, विहरें श्यामा श्याम॥ ३१॥
वृन्दावन की रेनु कौ, दृग अंजन करलेहु।
वृन्दावनकी रेनुके, छापे अँग अँग देहु॥ ३२॥
गली गली जहँ जुगलको, चरनाचिन्ह दरसाय।
वृन्दावन की थली में लोटी फिरै सिहाय॥ ३३॥
आनदेश के गमन को, मतकर वीर विचार।
फेर कहां वृन्दाविपिन, कह यह जुगल बिहार॥३४॥
वृन्दावन बानी सुनत, ऐसो हिय हुलसाय।
रस वैरागी ह्वजिये, तन मन धनै लुटाय॥ ३५॥
जाके अंतस में उगै, वृन्दावन अनुराग।
ताको बढ़तोई रहै, दिन दिन वीर सुहाग। ३६॥

उरझिजात लोचन वहीं, लता रंध्र दरसात ।
तहीं श्रवन लगिजात जहँ, वृन्दावन की बात ॥३७
वृन्दावन छुट और टुक, बात न वीर सुहाय ।
वृन्दावन मोकों सखी, सपनिहुँ माहिं दिखाय ॥३८॥
आन देश के चतुरहू, वकैं बिपैं अठजाम ।
वृन्दावन को बावरो, रटै राधिका श्याम ॥३९॥
रसिकन के यह नेम है, प्राणहु जो कढ़िजांय ।
वृन्दावनकी सीमसों, बाहिर धरैं न पांय ॥४०॥
वृन्दावन महिमा अली, बरनि सकै सो कौन ।
दंपति भाव विभाव रति, रसिकन लीनो मौन ॥४१
और ठिकाने भांग पी, रोग पिशाची फेर ।
वृन्दावनमें बावरी, होय जुगल छविहेर ॥४२॥
वृन्दावनमें बसे जो, लसै लतन की ओट ।
छिपि छिपि देखै सोई, ललीलाल दृग चोट ॥ ४३ ॥
थिरमन तन सेवा रहै, गुरु अनुकूल सुभाय ।
वृन्दावन लीलाललित, ताही दृगन दिखाय ॥ ४४ ।
वृन्दावनरस पियो जिन, फीको परयो जहान ।
तेग भौंतरी सी लगे, सहि दंपति मुसक्यान ॥ ४५
श्रीवन श्रीवन रसिकजन, सोवत उठैं पुकार ।
सपनेही में लता द्रुम, आलि फलफूल निहार ॥ ४६ ॥
इतनी रसना मिलैं मुहिं, ज्यों अमिली में पात ।
वृन्दावन जस कछुक तो, गाऊँ कोमल गात ॥ ४७

ॐ

श्रीवृन्दावन माधुरी, झलकि जाय जा नैन।
श्रीबन श्रीबन रटै सौं, आनदेश ना चैन॥ ४८॥
कंचन की अवनी रुचिर, रतनमई द्रुम डार।
रस मुक्ताहल फले लख, वृन्दाविपिन बहार॥ ४६॥
पात पात द्रुमडारसों, उपजै मनासिज रूप।
बेलि बेलि सों केलि रस, वृन्दाविपिन अनूप॥ ५०
दूब खूब जल झलमलै, हरी हरी मृदुभूमि।
वृन्दावन की लता रहीं, घूमिघूमि झुकि झूमि॥ ५१
जलमें थलमें कमल शुचि, सेत पीत रतनार।
नीलसरोरुह बीच में, श्रीबन की बलिहार॥ ५२॥
श्रीबन की सरि को करै, खग मृग जमुनावार।
लता पता फल फूल सब, माते जुगुलबिहार॥ ५३॥
तरल पौन संध्या समै, जमुना की हिलकोर।
नीर विलोलित लता झुकि, वृन्दावन चितचोर॥ ५४
जुगल जुगल फूलैं सुमन, जुगल जुगल फल होंय।
जुगल जुगल द्रुम ऊपजैं, श्रीवृंदावन मोंय॥ ५५॥
नंदनबन कैलाश को, सुनियत शोभा सार।
पै पै ये कहँ सखी ये, वृन्दाविपिन बहार॥ ५६॥
झूमी झुकि फूली सघन, रमे जुगल रस पुंज।
[वृन्]दावन की बेलियै, केधौं केलि निकुंज॥ ५७॥
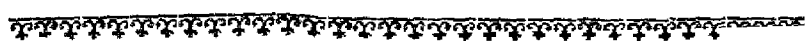
अलबेली बेली तरू, हेली सीतल छांह ।
वृन्दावन घनसों दुऊ, उझकत दै गलबांह ॥५८॥
द्रुमद्रुमसों लपटी चढीं, सुन्दर सरस नवेलि ।
वृन्दावनमें सखी सब, फल फूलन की बेलि ॥५९॥
फूलो कदम गुलाब कहुँ, रायबेल कचनार ।
वृन्दावनमें देखियत, यह विपरीत बहार ॥६०॥
जामुनद्रुम अंबा फरें, अंबा बेर निहार ।
अलटि पलटि तरु फलैं अलि, वृन्दा विपिनमंझार ॥
कहुँ कहुँ द्रुम मुतिया लगे, कहुँ चुन्नी रतनार ।
कहुँ कुंडल कहुँ झूमका, वृन्दावन तरुडार ॥६२॥
लगे लगाये घुंघरू, नूपुर कहूं लखाँय ।
वृन्दावन में द्रुमन द्रुम, भूषन सब कलियाँय ॥६३॥
दोना लगे बिलोकियत, कहूँ कदम की डार ।
वृन्दावन में कहुँ कहूँ, झारी फरीं निहार ॥६४॥
नाना नवल रसाल द्रुम, नवनवभांतिन फूल ।
वृन्दावन फूलें फरें, कालिंदीके कूल ॥ ६५ ॥
कालिंदीके कूल द्रुम, झुकि झुकि परसैं नीर ।
वृन्दावनही में लखी, रमकत त्रिबिध समीर ॥६६॥
टरत न पल देखत छबी, रहत नैन यक सोय ।
वृन्दावनमें रूप के, पत्र फूल फल होय ॥६७॥

करजोरे मंडल नचैं, दंपति संग ब्रजबाल
वृन्दाबन जापक मनौं, जपत रूप की माल ॥ ६८
वृन्दाबन शोभा जिती, सकै समाय न अंक।
लतापताकी छटापै, वारे कोटि मयंक ॥ ६६ ॥
पातपात फल फूल में, झलकै दंपति रूप।
जुगलनाम पच्छी रटैं, वृन्दाविपिन अनूप ॥७०॥
वृन्दाबन पटतर नहीं, त्रिभुवन में वन बाग।
दिन दूनो निशि चौगुनों, जहां जुगलअनुराग ॥७
जगमगात सब लता द्रुम, बिमल चांदनी जोय।
वृन्दाबन की पुलिन रज, झलमल झलमल होय ॥७
श्यामसुँदर अधरन मधुर, सुमिर सुमिर सुख दैन।
वृन्दाबनमें बाँसुरी, बज्यौ करै दिन रैन ॥७३॥
गौरश्यामछवि छई है, दश दिशि नितरि विलोय।
राधावल्लभमई सखि, सब वृन्दाबन होय ॥ ७४ ॥
नित्य नवल वृन्दाविपिनि, हंससुताके कूल।
गलबाहीं दीने जुगल, बीनत डोलत फूल ॥ ७५ ॥
वृन्दाबन की छवि कछू, यकमुख वरनि न जाय।
देखत देखत छिनकाछिन, औरै और लखाय ॥ ७६
मेरो मेरो कहैं दोऊ, राधा नन्दकिशोर।
झिगरे को घर ए सखी, वृन्दाबन की ठौर ॥ ७७ ॥
येककहैं ये कृष्णके, लतापता फल फूल।
एक राधिका को कहैं, वृन्दाबन रसमूल ॥ ७८ ॥

नवलबधूटी श्यामसों, बढ़ी दानमिस रार।
वृन्दाबन बीथिन बही, दही दूधकी धार ॥ ७६ ॥
मुरिमुरि फिर जमुना कढ़ी श्रीवन द्रुमन लतान।
विहरत श्यामाश्याम तहँ, हिलि मिलि जल छींटान ॥८०॥
डारडार झूला परे द्रुमकदम्ब सुखसार।
सखिन संग झूलत जुगल, श्रावनछटा निहार ॥ ८१ ॥
करौ मानको दान सखि, गलबहियां दै लाल।
वृन्दाबन सोभा लखी, नवल छबीली बाल ॥ ८२ ॥
मदन दुहाई दें अली, गली गली रसखान।
भूलि न कीजै लाड़िली, वृन्दावनमें मान ॥ ८३ ॥
दईजोग आई भटू, बिछुरे बलम तलास।
नीको बानिक बनि परो, कर वृन्दाबन वास ॥ ८४ ॥
कहँ तुम कहँ मोहन लली, वृन्दाबन घन पाय।
नदीनाव संजोग करि, करौ सफल सिजियाय ॥ ८५ ॥
कौन निकुंजन ये सखी, लली लाल विलसात।
कौन कचकच कहो कछु, वृन्दाबन की बात ॥ ८६ ॥
वृन्दाबन की गैल में, छैल लख्यो द्रुम तीर।
खोल कपाटन झांक हां, पलटजाव अब वीर ॥ ८७ ॥
चुपचुप कीने कहा अब, श्रीवन घरघर ग्राम।
ढोल दमामे बजिगयो, नेह राधिकाश्याम ॥ ८८ ॥
काको काको बरजिये सोर पर्यो गृह ग्राम।
वृन्दाविपिन विहंगलौं, रटत राधिका स्याम ॥ ८९ ॥

अजी सेजलौं चलौतौ, श्याम छाँहहूँ नांहिं ।
वृन्दावन घन रविकिरानि, परत न पलिका पांहिं ॥ ९०
बीनन फूलन जायहौं, श्रीबन सघन लतान ।
मोहिं मधुप डर रहै मन, वादिन सों थहरान ॥ ९१ ॥
रमौरमौ बस मुरौ ना, हिंयां न अलियन पुंज ।
बात न बदलौ लाड़िली, वृन्दावन घन कुंज ॥ ९२ ॥
पलटौ बात न लाडिली, रमौ लाल उरलाय ।
वृन्दावन घनकुंज अति, येक न रंध्र लखाय ॥ ९३ ॥
तरुनाई सुख लीजिये, कंठमेलि घनश्याम ।
वृंदावनमें दोष ना, मोहि भरोसो वाम ॥ ९४ ॥
मैं करनी सो करिचुकी, ल्याई पोटि लिवाय ।
वृन्दावनघन धंसौ ना, पीती कंठ लगाय ॥ ९५ ॥
वृन्दावनघन क्यों कंपौ, भृकुटी के मुरकाय ।
पाय अकेलि न छांडिये, पीतम मन कचियाय ॥९६॥
वृंदावनघन कुंजनव, धँसे लाडिलीलाल ।
अबलौं विहरत भोरसों, परे मदन के ख्याल ॥ ९७ ॥
वृन्दावन कुंजन अली, मधुप करैं गुंजार ।
लियें कमल कर कमलदल, दंपति दें निरवार ॥ ९८ ।
श्रीवन कुंज कुटीर सुनि, नाँहिंनाँहिं धुनि नाँहिं ।
ललितमाधुरी रंध्रमग, पीवत अलि न अघांहिं ॥ ९९ ।
श्रीवृन्दावन सतक ये, फुरयो दृगन मन माँहिं ।
ललितकिशोरी गायगुन, पायो रस रसनाँहिं ॥१००।

इति श्री वृन्दावन शतक संपूर्णम् ।

थ श्रीवृन्दावन शतक ॥ अंतपादध्रुवदास ॥

दोहा ।

राधागोविंद पद सुमिरि, सतक रचनकी आस ।
तीनि चरन नव वरनिकै, अंतपाद ध्रुवदास ॥ १ ॥
दुर्लभ गौर उपासना, ध्यान कंटीले नैन ।
मैन सूरसों समर नित, श्रीवृन्दावन ऐन ॥ २ ॥
लुटत लाल जबतें लखो, चरन मानिनी मांह ।
मेरोमन अटक्यो रहत, कदमकुंजकी छांह ॥ ३ ॥
नव दंपाति छवि छकन को, मो नैनन उत्साह ।
होत विहारनि कृपाते, नित्य निकुंज निवाह ॥ ४ ॥
रूमरूम रस रूपकी, उठत अनूप हिलोर ।
दंपति अँग छवि अगमनिधि, काहु न पायो ओर॥५॥
नैन रसीले मैनछवि, सैन करत मुखमौन ।
कहो सांच सँग ये लली, श्याम सलोनी कौन ॥ ६ ॥
जाहु लाज कुलकानिहूँ, और चरचो कनि कोय ।
अब लागे दृग लालसों, जो कछु होय सु होय ॥७॥
नवल नेह दंपति मिलन, छिन छिन चौगुन चाव ।
रैन अँधेरी अजनवन, सहिजहिं बन्यो बनाव ॥ ८ ॥
लपटाने लंपट लली लेत निकुंज उसास ।
यह रव सुनिहै तबै आलि, कर वृन्दावनवास ॥ ९ ॥
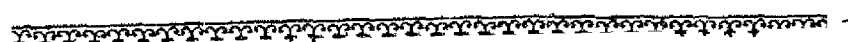
सरद रैन जमुना उभै, रसिक रूपकी रास ।
बैठि निवरिया निरखहीं, वृन्दाविपिन प्रकास ॥ १० ॥
मुकर विलोकत मानिनी, है भोली सुकमार ।
मृगनैनी वे राजहीं, तिनके चरण सम्हार ॥ ११ ॥
रूपसिंधु नाभी भँवर, जल पीयूष उमंग ।
पैरत प्यारी लाल लख, छविकी उठत तरंग ॥ १२ ॥
धुँघरारी अलकैं अली, दंपति वदन निहार ।
मधुपघटा घन व्याल कुल, ते सब डारे वार ॥ १३ ॥
मतवारे नैनानकी, उपमा को कछु नाहिं ।
अलिसुत खंजन कंजहू, तिहुँसम कहे न जांहि ॥ १४ ॥
विहरत प्यारी लाल लख, रूप वैस समतूल ।
लताकुंज जुगचंद्रमा, झलकत जमुनाकूल ॥ १५ ॥
निशिदिन रति घातन रहत, छिनछिन नूतन सैन ।
कुंजकुंज विहरत जुगल, श्रीवृन्दावन ऐन ॥ १६ ॥
विथुरी मुख अलकावली, जुगल रूप के पुंज ।
अलि अंबुज अवलोक मन, मधुप करत मधुगुंज ॥१७॥
लली लाल नवनेह बस, बिलसत अंगसुअंग ।
भीजत लतानिकुंजमें, पहिरे वसन सुरंग ॥ १८ ॥
निरखत सोभा विपिनकी, रसिक छबीलीलाल ।
नवघन नभ छाये अली, कुंजित मोर मराल ॥ १९ ॥
हीरहार प्यारी, हिये, निरखत प्यारो लाल

कस न दिपै नवकुंज निशि, अँधियारी लख ताहि।
अमितचंद दंपति छबी, तिहिकर पूरित आहि ॥२१॥
नेम नहीं रसखेल में, सांवल गौरसरूप।
रचै केलि जिहिंविधि दऊ, तिहिं विधि करैं अनूप॥२२॥
भीजत अंकम भरत पिय, बदत बिहारिन नेत।
एकहि वसन दुराय दुउ, सखि वृंदा सुखदेत ॥ २३ ॥
सुरतिसमर मोहन रसिक, गहे उरोजन बाल।
मनौं लगे अरविंद फल, अद्भुत परम रसाल ॥ २४ ॥
सुघराई सुकमारतन, कविपै वरनि न जाहि।
निशिदिन मोहन रसिकमणि, निज मुखवरनत ताहि॥२५॥
ललिताकिशोरी लाड़िली, जुवतिजूटमणि आहि।
सो मोहन अँग सँग लसीं, पवन न परसत ताहि॥२६॥
निशिदिन विहरत विपिन में, रसिक रासरस नित्त।
सपनिहुं अंक न छांडहीं, एक प्राण द्वै मित्त ॥ २७ ॥
झूलत सुरंग हिंडोरने, प्रीति रूप रसरास।
गलबांहीं दीने दोऊ, करत मंद मृदुहास ॥ २८ ॥
मदमाते राते सुरति आंधी, गिनत न मेह।
मुख चुंबत अंकम भरे, भीजे सरस सनेह ॥ २९ ॥
नहिं सँभार उरहारकी, उरझे भूषन वार।
तारतार पट है गये, अटके सरस विहार ॥ ३० ॥
फुलवारी निरखत हँसे, लसे कंठ अनुराग।
छविशोभा के सुमनद्वै, प्रीति लता रहे लाग ॥ ३१ ॥

करत असित पित कंजद्वै, कुंजसरोवर सैन ॥
रंध्ररंध्र मग रमि रहत, भृंग सखिनके नैन ॥ ३२ ॥
गलबाहीं दीने जुगल, झूमत झुकत प्रभात ।
आवत अलि बनकुंजते, आखियां निरखि सिरात ॥३३
मंडलद्वै सखिरास में, मध्य रसिकचितचोर ।
निरतत नचिनाचि रूपकी, नदी बहै चहुँ ओर ॥ ३४॥
मुकुर कपोलन प्रियाकी, उपमा कही न जाय ।
रसिक मुकुटमणि लाल सखि, जामें रहे लुभाय ॥३५॥
ललित वाग अनुराग में, अली लली नँदनंद ।
सुरति लता विव फूलसें, फूले रहत सुछन्द ॥ ३६ ॥
गौरश्याम विव लतानव, प्रीतिबगीची आंहिं ।
नैन कटार कटाक्षजल, तिहिं कर सींचे जाहिं ॥३७॥
यह चाहन अरु रसिकता, लखी न दूजी ठौर ।
लली चित्रचरनन चितै, ढुरत रसिक शिरमौर ॥ ३८ ॥
निशिदिन प्रफुलित्त रहत हैं, बदन निहार निहार ।
खानपान रसरूप सखि, सरवस प्राणअधार ॥ ३९ ॥
लता ओट होते दुऊ, दरसावत आलि अंग ।
चित्र छबीली लालकी, लिये रहत हैं संग ॥ ४० ॥
नैन रसीले वैन मृदु, श्याम सलोने गात ।
राधामोहन रूप सुनि, कमला हू ललचात ॥ ४१ ॥
कनककंजकोमल लली, मोहन दृग अलि आहिं ।
नखछवि सम ना ब्रजवधू, और लोक किहिं माहिं ॥४२॥
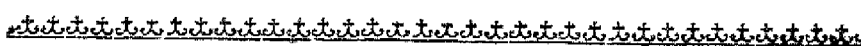
कहीं ललीमों अली यक, कदम कुंज सैनाथ।
आंखमीचनी खेल पिय, राख्यो दूरि दुराय ॥४३॥
श्याम सलोंना नववधू, गौर नवल पिय आहि।
ऐसे प्यारी लाल को, मन वचकै अवगाहि ॥४४॥
प्यारी पग अंकित चितै, अवनि प्रफुल्लित चित्त।
नैनन आंजो करत पिय, वृन्दावन रज नित्त ॥४५॥
सारीशिर वेशर फवी, नचत भामिनी भाव।
चितै आज रंग लालको, औरै वन्यो वनाव ॥४६॥
छांड़ि निठुरता मानिनी, हाहा तनक निहार।
सजल नयन पिय पग परो, तनमन कै रहो हार ॥४७॥
तिल प्रसून सी नासिका, श्रीफल उरजसमेत।
कमलनयन मुख जुगल अँग, रसिकनको रसखेत ॥४८॥
सोवत श्यामा लतन लख, लंपट चुरि दुरि जात।
आजरंगीले लालकी, भली वनीहै घात ॥४९॥
कानि न काहूकी रही, कुल हू की तजि लाज।
नेह विवस दंपति रहे, वृन्दावन में गाज ॥५०॥
कुटिले दृग आई लली, वेश भामिनी वानि।
नंदसुवन छलिया लली, मनवच करि यह जानि ॥५१॥
दंपति नित अभिसारको, जिनके नाहिं हुलास।
गावै जुगुलविहार ना, तज भ्रू तिन को पास ॥५२॥
सहस चोंप चित्तचांपई, रसिया सुरति हुलास।
श्यामा पगअरविंदविच, सुख को सहज निवास ॥५३॥
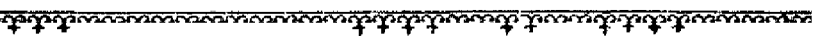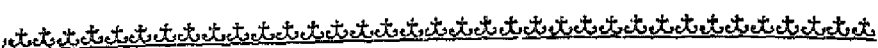
प्यारी रजनी विमलवन, लली लाल छवि जोय ।
भवन गवन भूलै अली, वृंदावन रहै सोय ॥८४॥
चलचल उतको मोहना, कहा रह्यो इत जोय ।
जुवातिन मुख निरखे किधौं, पीवे जमुना तोय ॥८५॥
नवनेही छवि आगरे, श्यामा श्याम निकेत ।
मदनछके झुकि झुकि परत, अली गोद भरि लेत ॥८६॥
जुगललाल छवि छके जे, परत जु तिन पर छांह ।
दरसत उर ललिा सरस, भजत फिरै गहे बांह ॥८७॥
वामा सहज सुभाव निज, मोहन सों अनखात ।
भजनि भवन रसनेह की, उलटि भजन व्है जात ॥८८॥
निशदिन गावत तुवगुनै, रहत दीठसों दीठ ।
ऐसे प्यारेलालको, कैसे दीजै पीठ ॥८९॥
अहो मानिनी मान तजि, पियसों कर रसघात ।
रसभीनी रजनी विमल, वृथा अकारथ जात ॥९०॥
रसिक छवीले लालसौं, नेह करो जनि कोय ।
लाज जाय जिय प्रीत को, तवही अंकुर होय ॥९१॥
रसिक लाल सेवत सदा, धोवत नित निज पाय ।
ऐसे स्यामा चरन की, सरन गही ध्रुव आय ॥९२॥
जाय लाज कुलकानहूँ, गांव चवाई होय ।
निवहै मोहननेह सखि, जतन कीजिये सोय ॥९३॥
हांहां हम जानी लली, तुमैं वडी कुलकान ।
रसरजनी मिल लालसों, अपनो छांडि सयान॥९४॥

कदमकुंज डवियाललित, रंध्रन जाली लोल ।
जुगुललाल तोमें रतन, निरखौ छवी अमोल ॥६५॥
गौरस्याम दोउ चंद्रमा, उडुगन जुवति अनेक ।
निरतत नित रासस्थली, गहि वृंदावन येक ॥६६॥
अद्भुत ललितानिकुंज वन, सघन छवीली छांहं ।
विहरत प्यारी लाल लख, वस वृंदावन मांहं ॥६७॥
लौटत जे घायल भई, मोहन मृदु मुसक्यान ।
तिनहीको है ये लली, वृंदावन पहिंचान ॥६८॥
हों तेरे तू प्रान मम, हियरे यह अभिलाष ।
उघरि मिलौंगी लाल तुहि, वात करौ कोउ लाख॥६९
ललितमाधुरी कुंजमें, विहरत प्यारीलाल ।
रंध्रन दृग दै तरुनतर, वसत रहौं सब काल ॥७०॥
रसिकछवीली सेजपै, विहरत सनेसनेह ।
तिहिं छिन चिंतत ये अली, या रजमें रहे देह ।७१
पानराचित दशनावली, दमकत घूंघट ओट ।
लाल निछावरि कीजिये, मुक्तआदि शतकोटि ॥७२॥
विहारौ ललितनिकुंजमें, लली रसिक सिरमौर ।
निरजन वन सुखसेजपै, कौन जानिहै और ॥७३॥
छली छवीली लतादुरि, विहरत माते मैन ।
रसिकनको रससदनहै, वृन्दावन सुखदैन ॥७४॥
रतनकुंजसज्या सुमन, जटित मदन मनिआहि ।
दंपति राजत मूढ़मन, काहे न चिंतत ताहि ॥७५॥

कुसुम रंगसों अंग तिय, वसन सहित रँगिजांहिं ।
जल विहार अभिलाष पिय, तव उपजै मनमांहिं ॥७६॥
फुरै छबीलीलालकी, मंद मधुर मुसक्यान ।
दरसै दंपति रूप अलि, वृन्दावन उर आन ॥७७॥
चंद चकोरीसे भये, प्रीति परस्पर देख ।
प्रीतम ललित निकुंज अस, वृन्दावन उर लेख ॥७८॥
कहूं केलि अवलोकिये, कहुं दंपति अलसान ।
कुंजकुंज रँग रस मई, वृन्दावन पहिचान ॥७९॥
सोवत श्यामा सांवरो, चहुँदिशि इरिफिरि जात ।
अली निवारत ठड़ी तहँ, मुख चुंवन ललचात ॥८०॥
ये कुटिली भृकुटी कहां, ये अँखियां अनियार ।
दंपतिरूप अनूप कहँ, मोह्यो लखि संसार ॥ ८१ ॥
वदन चंद्र नैना नलिन, मोती दशन अनूप ।
अली चकोरी हंसिनी, माती दंपति रूप ॥८२॥
कवन विलोकत रसिकमणि, मुतिया दै गलवांह ।
पहिरावत शुकनाशिका, कबहूँ श्रवनन मांह ॥८३॥
सुनत न नूपुर मधुरधुन, लहत न अंग सुवास ।
जुगल छैलछवि छकत ना, तज भ्रुव तिनको पास ॥८४॥
नैन कटारिन जूझिये, तजिये ना टुक पास ।
दंपति हलन बुलाकमें, सुखको सहज निवास ॥८५॥
पांय परौं हाहा करौं, लाल कठिन मुसक्यान ।
मान मनावन मानिनी, जानै सोई जान ॥८६॥
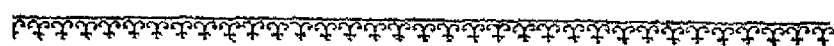
श्यामघटा सीरी पवन, रसिकलाल टुक जोय।
सुमनसेज सुख सोइये, इतउत विपिन न कोय ॥८७
भीनी परत फुहार अलि, पुलकि अंग लपटाय।
रसमाते विहरें दोऊ, रहे अधिक सुखपाय ॥८८॥
परसावत अति रसमसे, कदमलता गहि नीर।
ता ओझल लख को कवी, विहरें जमुनातीर ॥८९॥
कुसुमरंग अँग चूनरी, प्यारीके फहराय।
पिचकारी ताकि मार्यी, राखें मनै रंगाय ॥९०॥
नवनेही छकि जात छवि, बदन निहारि निहारि।
नवनेही झूमत छके, छवि अँग अंग निहारि ॥९१॥
नैन मिलत मुसक्यात मग, निलज नये अनुराग।
कढ़त उभय भिरि मदनमद, बढ़ियो जुगुल सुहाग ॥९२
दया न आवत मानिनी, तनक विहँसि उरलाय।
कोमल मोहनलालपी, परे धरनि घहराय ॥ ९३ ॥
ऐसी का वृषभानुजा, बोलत ना द्वै बैन।
हाय छवीलो चितै मुख, भरि भरि ढारै नैन ॥९४।
लीनो कंठ लगाय पी, ललितकिशोरी वीर।
सुरति सदन राजे अली, श्यामलगौरशरीर ॥९५॥
निरत गाय दोउ रसिकमणि, करि शृंगार सुदेश।
अब रंध्रन दृग देहु आलि, कियो निकुंज प्रवेश ॥९६
विथकित निरखत छवि अली, छिनछिन नवलविहार
जुगुलकेलि रसनिधि कुऊ, कबहुँ न पावै पार ॥९७॥

टुक झूला नीचें करो, मोहि झुलावन चाहि।
कनककुंभ ऊँचे लली, कैसे पैहों ताहि ॥६८॥
भामिनि बनिआवहु पिया, कुंजमाधवी मांहि
कनककुंभ तिय छुवनको, और जतन कछु नांहि
करत बनैती बैनसों, मोहन सैन चलाय।
तै चल उत इत याहितै, तै रहु मिलिहों आय

इति वृन्दावनशतक अंतपाद ध्रुवदास सम्पूर्णम।

अथ युगलविहार शतक।

दोहा।

मेरे मन ऐसी फुरी, गाउं जुगलविहार।
मतिमलीन गुनहीन पै, कैसिक पाऊँ पार ॥ १।
दुरलभ दुरगम सवनतें, आली जुगुलविहार।
कैसिक पैयत धसेविन, सुधासिंधु सिंगार ॥ २ ॥
सुधासिंधु सिंगारको, धसिबो सरल न होय।
गौरचंद्रपदकृपाबल, सिरूखेल सम सोय ॥ ३ ॥
सोउ कृपा अति सुगम नहिं, ताको कौन उपाय।
चरनसरन गोपलभट, सहजहिं बन्यो बनाय ॥ ४
कैसिक परसै यह अधम, सो शुचि पावनपायँ।
राधागोविंदगुरु कृपा, हस्तलीक ह्वैजायं ॥५॥
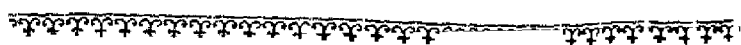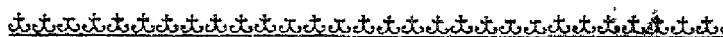
हेरी सतगुरुकृपामें, तनकहुनाहिं विचार ।
सुतह सुभूमि कुभूमिमें, वरखै जलद सुवार ॥६॥
कृपादृष्टिगुरु वादरी, वरस्यो रस सिंगार ।
तामें तन मन भीजिकै, गैये जुगुलविहार ॥७॥
रससिंगार अनूपहै, अगम अतोल अथाह ।
विना जोषिता पुरुष के, थिरै न हिये प्रवाह ॥८
प्रथम भामिनीभावना, पाछे रससिंगार ।
ता पाछे गावौ सुनौ, देखौ जुगुलविहार ॥९॥
जुगुल विहारके रूकमें, तुलै न ब्रह्मानंद ।
रेनु प्रकासानंद जग, सूरज सामुहिं मंद ॥१०॥
जुगुलविहार पियूष मधु, सखि पीवै जो कोय ।
ताकी कहा चलाइये, देखत वौरी होय ॥११॥
जुगुलविहार सुदामिनी, कौंधिजाय जा ऐन ।
आनकान टूटै तुरत, चौंधिजायें मति नैन ॥१२॥
प्यारी जुगुलविहारकी, वात चलै जा गेह ।
ताहीसों सखि कीजिये, प्रीतिसगाई नेह ॥१३॥
आली जुगुलविहाररस, जिनके सदा अहार ।
तिनकी दासी ह्वैरहो, तजिके सोच विचार ॥१४
जिनके जुगलविहार की, संचित संपति होय ।
तिनकी कीजै चाकरी, मान वडाई धोय ॥१५॥
जिनके नैनन सों चुवै, जुगुलविहारको रंग ।
तिनके पगकी पानहीं, लिये फिरै सँग संग ॥१६
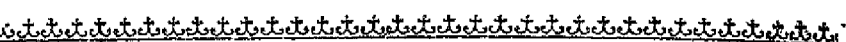
जिनके मुहडे सों कढै, जुगुलविहारकी बात ।
तिनके अरपन कीजिये, श्रवन नयन दिनरात ॥१७॥
लिख्यो न शास्त्र पुरान जिहिं, रोचक जुगुलविहार ।
दूरहितें करिदीजिये, नमस्कार सुकुमार ॥१८॥
जाके जुगुलविहारकी, छाप छपी उरमाल ।
ताकी पदरज लीजिये कामी कहा कुचाल ॥१९॥
लगिरहै निशिदिन जहां, जुगुलविहार दुकान ।
ता वीथिन वसिये सखी, खग मृग ह्वै पाखान ॥२०॥
जाकें जुगुलविहारको, चसको कहुं लगिजाय ।
ताको सुत पति गेह धन, काज न राज सुहाय ॥२१॥
जोई जुगुलविहारको, करै वनज वैपार ।
ताहीसों सखि वंजिये, नफैनफा नहिं हार ॥२२॥
जिनकेजुगुलविहारके, हीरा लाल विकांयं ।
प्रान वयाने दीजिये, तिनके परिपरि पांय ॥२३॥
जिनके जुगुलविहारको, फड़ लागै दिनरैन ।
तिनकी वस्तु विसाहिये, विना चुकाये चैन ॥२४॥
कागद कलम दुवातपै, वारवार बलिहार ।
बलिहारी उन हाथकी, लिखैं जु जुगुलविहार ॥२५॥
बतियां जुगुलविहारकी, मिसिरिहु तें मिठियांय ।
दाखैं जुगुलविहार विन, चाखतहीं करुवांय ॥ २६ ॥
ऐसी मति ह्वैहै कबौं, सुमन सुमन द्रुम डार ।
वृन्दावन बीथिन फिरों, गावत जुगुल विहार ॥२७॥

ऐसी गति ह्वैहै कबौं, मुख निकसत ना बैन ।
निरखत जुगलविहार छवि, भरि भरि आवैं नैन ॥२
निरखत जुगुलविहारको, जिनकी रैन विहात ।
चरनामृत तिनको सखी, पी पी लैये गात ॥२९॥
खानपान सोवन जगन, जिनके जुगुलविहार ।
तिनकी ह्वैहै भाँवरी, मोतिन थार उतार ॥३०॥
गलीगली वृन्दाविपिनि, रसिकनहीं की भीर ।
घरघर जुगुलविहारकी, पैठ लगी है बीर ॥३१॥
शोभाछवि मुसिक्यानको, ठाढो भट्ट निहार ।
चरचो जुगुलविहारको, रसिकन के व्योहार ॥३२॥
पहिरपहिर नौबत झरै, सांझ सबेर सितार ।
घरीघरी घरियाल मैं, बाजै जुगुल विहार ॥३३॥
कुंजकुंज द्रुमद्रुम लता, झींगुर की झनकार ।
सुकी सारिका फाखता, गावैं जुगुलविहार ॥३४॥
दान मान रसकेलिकी, कथा खोरही खोर ।
श्रीवन जुगुलविहारकी, नदी बहै चहुँओर ॥३५॥
बरनन जुगुलविहारकी, बानि परी रसनाहिं ।
श्रवनन जुगुलविहारकी, श्रवनकरनकी चाहिं ॥३
सपनिहुँ जुगुलविहारकी, श्रवन बातसुनिलेंह ।
रसबसह्वै ततछिन तहां, वारैं मनधन देह ॥३७॥
काहूके ब्रत नेम जप, जोग जग्य के ठाठ ।
मेरे जुगुलविहारही, संध्या पूजा पाठ ॥३८॥
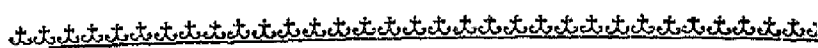
जिहिं निशि जुगुलविहारको, सोवत सुप्न लखाय ।
नाजानौं ताचैनमें, कित वह रैन विहाय ॥३६॥
हँसी मसखरी दंमहू, करै ठठोली आय ।
मोकों जुगुलविहारकी, झूंठिहु बात सुहाय ॥४०॥
या तनकी करि सारँगी, करै नसनके तार ।
वारवार सोंनी सरें, सुचि धुनि जुगुलविहार ॥४१॥
जुगुलविहार निहार सखि, वरनत वनै न वैन ।
ना नैनन के वैनहैं, ना वैननके नैन ॥४२॥
सखितव जुगुलविहारविन, और न तोहि दिखाय ।
चश्मा जुगुलविहार को, अंतस नैन लगाय ॥४३॥
आली जुगुलविहारसुख, कहनसुननको हैन ।
कै जानै दंपतिहियो, कै दंपतिके नैन ॥४४॥
नितनित जुगुलविहारकी, नईनई सी वात ।
रीतरीत विपरीत कहुं, औरै और दिखात ॥४५॥
भोरहिं जुगुलविहार में, गिरी मूँदरी लाय ।
मैं दंपति सामुहिं धरी, दंपति गये लजाय ॥ ४६ ॥
मेरी सरवर को करै, कालिंदी के तीर ।
सवानिशि जुगुलविहारमें, ढोरी विजनी वीर ॥४७॥
भोरहिं जुगुलविहारमें, गये अंग अलसाय ।
ओढि रजाई नेहनव, सोयरहे लपटाय ॥ ४८ ॥
देखो जुगुलविहारमें, थकित उनींदे आज ।
भानु प्रकासिहु तजत ना, सेजत जो कुललाज ॥४६

छिनछिन जुगुलविहारमें, मुखचुंवन ललचांय ।
इँडिइँडि पाछे अंकभरि, अधर चपालि मुसक्याँय ॥८०
पलपल जुगुलविहार में, भाजन अधर लगाय ।
मधुरमधुर मधुपियैं छवि, संगसंग हुलसाय ॥८१॥
मो मन जुगुलविहारमें, खंडित वैन सुहाँय ।
येकै बीडी उभै मुख, खंडत ना मुसक्याँय ॥८२॥
प्यासे जुगुलविहार में, सौराति सुधा अधीर ।
अधर पिया ले तजत ना, चांपि परस्पर वीर ॥८३॥
पीक कपोलन पलक पै, अंजन अधरन मांहि ।
अँगअँग जुगलविहारमें, फवि छवि कही न जाहिं ॥८
दशनन छाप कपोलपै, उर वनमाल के अंक ।
मोलत जुगुलविहारमों, हीरालाल निशंक ॥८५॥
भूपन जुगुलविहारमें, न्यारे करि हुलसांय ।
खोलिखोलि वँद कंचुकी, मसकि हिये लपटांय ॥८६॥
सैनाबैनी करि सखी, पुलकि पुलकि रहिजाँय ।
देखौ जुगुलविहारमें, नैनन हीं वतराय ॥ ८७ ॥
ज्योंज्यों मन नैनन हिये, चढै मदन को रंग ।
त्योंत्यों जुगुलविहार में, मसकि मिलावें अंग ॥८८॥
अधर खांडि गलवाँहदै, कसे अंक इतराय ।
दर्पन जुगुलविहारमें, वंक विलोकि सिहांय ॥८९॥
लस अंकम रसकेलि, राति, मदमाते न लजांय ।
वतियां जुगुलविहरमें, हँसिहँसिकै वतरांय ॥९०॥

* *

कवौं उठैं पौढैं कवौं, उरकटि जघन मिलाय ।
मसकि मरोरैं अंक भरि, जुगुलविहार सुहाय ॥६१॥
छके थके आमोदरस, अलियन उर सुखदैन ।
वलिवलि जुगुलविहारवलि, मूँदिमूँदिकै नैन ॥६२॥
मूँदैं यक खोलैं दृगन, अपनी अपनी पोत ।
औचक जुगुलविहारमें, मिलत नैन सुख होत ॥६३॥
हूंहूं हटकैं हां करैं, सिसकारी भरिजांय ।
भृकुटी जुगुलविहारमें, कसिकासिकैं मुसक्यांय ॥६४॥
परसि कपोलन चिवु छियैं, अलक संवार संवार ।
परसि उरोजन परसि पग, राते जुगुलविहार ॥६५॥
अधर कपोल छुवावहीं, पलकन पुट परसाय ।
प्रमुदित जुगुलविहारमें, अंजन नैन लगाय ॥६६॥
केलि कुतूहल नित नये, रसभीने मृदुवोल ।
राचैं जुगुलविहारमें, पत्रावली कपोल ॥६७॥
हरैंहरैं अंकम कसैं, पायन खुंपी लाय ।
विहरैं जुगुलविहारमें, जंघ दुकूल सरकाय ॥६८॥
दशन छाय अधरन करैं, नखछत उरू उरोज ।
छिनछिन जुगुलविहारमें, ग्रसित सरोजसरोज ॥६९॥
मरकतमनि खंजन शुभग, निरतत कंचन भूम ।
अनुदिन जुगुलविहारमें, केलि कलाकी धूम ॥७०॥
चरन अँगूठा परसपर, कटिनितंव परसाय ।
मनकी वात वतावहीं, जुगुलविहार हिताय ॥७१॥

मूक माककरि अंश धरि, अँगुरी अंग छुवाय ।
जुगुलविहार की बातनै, गुपचुप देहिं जनाय ॥७२॥
करधूननपगन्यास भ्रू, हियो विलोलन जोय ।
नवनव जुगुलविहारमैं, अद्भुत ही सुख होय ॥७३॥
कवौंकटाच्छनसों गिरैं, बोलिबोलि मृदुहाय ।
पैंनी जुगुलविहारमैं, अली नैन चुभिजाय ॥७४॥
लुकिलुकि लतानिकुंजमैं, कालिंदी के घाट ।
झुकिझुकि जुगुलविहाररत, पथिक विलोकैं बाट ॥७५
आरंभन परिरंभ करि, कछुकछु मृदु मुसिक्यान ।
झुकिझुकि जुगुलविहारकी, बात करैं कछु कान ॥७६
छिटके मुतिया भूमिपै, वैनी गुनगत हाल ।
बिथुरी जुगुलविहारमैं, टूटि टूटि उरमाल ॥७७॥
आज निकुंजतमालमहं, अद्भुत कौतुक कीन ।
पटकटि जुगुलविहारमैं, ऐंचि ग्रंथि देदीन ॥७८॥
अधअधअंग उतारि भू, अधअध सेज विराज ।
राते जुगुलविहारपै, भई वारने लाज ॥७९॥
परसि कपोल कपोलसौं, हरैं हरैं हरषायं ।
कछुकछु जुगुलविहारमैं, करि उपहास सिहायं ॥८०॥
झूमिझूमि पलका झुकैं, संभरत मदनतरंग ।
परसत जुगुलविहारमैं, फरकि उठत अंगअंग ॥८१॥
लसेकसे भूषन वसन, नाहिंन अंग संभार ।
माते मदनपुकारहीं, जुगुलविहार विहार ॥८२॥

* *

कुंजनवन लागी झरी, रस विनोद चितचांय ।
देखौ जुगुलविहारमें, घनदामिनि लपटांय ॥८३॥
वंधे वाहु गुनसेजपै, उरू फंद गंभीर ।
इतउत जुगुलविहारमें, टसक सकत ना वीर ॥८४॥
अधर अमी जाचनलगे, अधमूंदी अंषियान ।
माते जुगुलविहाररस, गुनकल केलि समान ॥८५॥
हरेंहरें विजनी करैं, सिथिलित नैन निहार ।
डुलै न पानी अंगगति, वलिवलि जुगुलविहार ॥८६॥
डुलै अधर दृग ना डुलैं, डुलैं तनक कटि भाग ।
जुगुलविहार विनोदवस, विथकित अति अनुराग ॥८७॥
छिटकिछिटकि केशावली, अंग उरोजिन ओर ।
विलुलित जुगुलविहारकी, शोभा को नहिं छोर ॥८८॥
चूमि कपोलन पोंछहीं, पोंछिपोंछि पुनि चूमि ।
रसिया जुगुलविहारके, अरसाने झुकिझूमि ॥८९॥
सुनौसुनौ कहि चपलि चट, लपकि लेहि मुख चूम ।
चपलत जुगुलविहारमें, परैं सेजपर घूम ॥९०॥
वह चंदा कहि धोखिहीं, चूमैं चपलि कपोल ।
मसकत जुगुल विहार में, सिसकत अंक विलोल ॥९१॥
मदनमत्त छुटिछुटि करैं, होडा होडी केलि ।
तनितनि जुगुल विहार में, कर नितंव कटि मेल ॥९२॥
करैं परस्पर केलि में, सौगंधा सौगंध ।
विलसैं जुगुल विहार मैं, करिकरिकै फरफंद ॥९३॥

झूठमूंठ रसरिस करैं, चुभै किंकिनीजाल।
करगहि जुगुलविहारमें, करैं रसीले ख्याल ॥९४॥
लपटालपटी करैं सखि, कुंडलसंग श्रुति फूल।
निरखैं जुगुलविहारमें, छवि फवि आनंद मूल ॥९५
पीवैं पय लीवैं कछू, पोषक सुरति निसंक।
उतरैं जुगुलविहार कृत्त, सेजतरे कसि अंक ॥९६॥
मसक अंग त्योंही चढ़ैं, सेज सिंहासन वीर।
लोलुप जुगुलविहारके, कामकलान अधीर। ९७॥
कवहूं थिर कवहूं चपल, लोटपोट किहुंकाल।
सेजासिंधुपैरत फिरैं, जुगुलविहार उताल ॥९८॥
केलिमध्य मृदुमानकरि, केलि मनावन जोय।
पदपद जुगुलविहारमें, मोद अलौकिक होय ॥९९॥
ललितकिशोरी रैनादिन, कहुसुन जुगुलविहार।
ललितमाधुरी कुंजनव, जुगुलविहार निहार ॥१००

अथ श्री जुगलविहार शतक।

दोहा।

श्रवन सुनैं चहुं ओरसों, राधानाम पुकार।
नैननमें छायोरहै, निशिदिन जुगुलविहार ॥ १ ॥
भोरहिं उठिउठि नेहनव, जुगुलनामको लेहिं।
जुगुलविहार वधाइयां, अली परस्पर देहिं ॥ २॥

सौसौ झगरे छुअत में, नीवी बंधन डोर ।
वारी जुगुलविहारकी, पलपल भौंह मरोर ॥ ३ ॥
वारौं जुगुलविहारकी, रिसपै सत मुसक्यान ।
सुधासने आवतहिये, वंकविलोकन वान ॥ ४ ॥
मोहिंमिलै ऐही टहल, रंगमहलके द्वार ।
देखिदेखि दृग रैनदिन, गाऊं जुगुलविहार ॥ ५ ॥
श्रवन सुनैं कैसे जलव, गिरा न वाहिर जाय ।
गावत जुगुलविहारमैं, मंद मधुर लपटाय ॥ ६ ॥
ऐसिइँ रहु हूँ सरकि हां, बोलैं भरि सिसकार ।
लेहिं फुरहरी परस्पर, लसिलसि जुगुलविहार ॥ ७ ॥
बूझै पीये का परसि, गुप्त अंग सुकुमार ।
लली नकुटिया लेहि कसि, रसवस जुगुलविहार ॥ ८
दोऊ मेरे गेंदुवा, तुमरे नाहिं अनार ।
कहीलाल सकुची लली, अद्भुत जुगुलविहार ॥ ९ ॥
मदनकृत्य जोजोकरैं, सोईसोई पर छांह ।
माते जुगुलविहारमें, वंकविलोकत जांह ॥ १० ॥
दीरघ दरपन सामुहें, चितै चितै अँगमेलि ।
कीजै जुगुलविहारमें, नई नई रसकेलि ॥ ११ ॥
दुरन मुरन उमगन मिलन सिमटन जुगुलविहार ।
चुंवनकी गोहन लगे करैं आपने वार ॥ १२ ॥
हिलैं डुलैं ना मूँदिदृग, सिथिल अंग अलसांय ।
विचविच जुगुलविहारमें, सोयसोय से जांय ॥ १३ ॥

कसौकसौ टुक अंकवलि, ऊँह ऊँह हूँ हाय।
छिन छिन जुगुलविहार में, अद्भुत रस सरसाय॥१४
बीतै मोद विनोदमें, जामों निशिदिन प्रीत।
गुइयां जुगुलविहारमें, यही भावना रीत॥ १५॥
जो जातीहौ पैंठको, लैन आभरन चीर।
मोकों जुगुलविहारको, चित्र लाइयो वीर॥ १६॥
ज्योंज्यों जुगुलविहारमें, नूपुर झुनझुन होय।
त्योंत्यों श्रवनवधाइयां, मुदित हियेसों गोय॥ १७॥
धरौ न नांउं कुनांउं, कुनु कौलौं कुलकी आन।
करिये जुगुलविहार अब, कहा निगोडी कान॥१८।
सेज सोहनी गुलगुली, आई अबै बिछाय।
करियें जुगुल विहार वलि, अलियन हियो सिराय॥१९।
जेजे जुगुलविहारकी, करैं गोष्टी आय।
तिनके पाय पखारिये, तकत दूरिसों धाय॥ २०॥
कायर कुटिल कुरूप सठ, उनसर वर जग हैन।
जिनके जुगुलविहारही, इष्टरहै दिनरैन॥ २१॥
देशदेश ना देखियत, जुगुलविहारको बीज।
श्रीवन जुगुलविहारावन, उगै न एकौं चीज॥ २२।
जेजन जुगुलविहाररस, माखन चाखैं नेम।
तिनउर अवनी ऊमगहै, छिनछिन सागर प्रेम॥२३।
ओढिं रजाई अंतरी, वरजत नव सुकमार।
नवनव जुगुलविहारपै, प्रान दीजिये वार॥ २४॥

पीतम पै पीवन कही, प्यारी धोखें आय ।
कंचुक पट खोलत लख्यो, जुगुलविहारको भाय ॥२५

नैनतरेरे पान कर, तनक छवीली पीय ।
नूतन जुगुलविहारसुख, हग जानैं कै हीय ॥ २६ ॥

पीतम पुनि आतुर सखी, चितै मृदुल मुसक्यान ।
तानी जुगुलविहार फिरि, प्यारी भौंहकमान ॥ २७ ।

बहुरौं ढंक मुख अंगअंग, कर धूनत सुकुमार ।
रंध्रन पावत सोर पी, वलि यह जुगुलविहार ॥ २८ ।

क्योंजी टुकपै प्याय पी, चाहतहौ रसकेलि ।
बोली जुगुलविहारमें, चिवुक आंगुरी मेलि ॥ २९ ॥

जो रस पीहौं कामिनी, तुमैं पिवाऊं सोय ।
प्यारी जुगुलविहारमें, वलित भांति ना होय ॥ ३० ॥

पीतम जुगुलविहारमिस, गात छुवायो हात ।
येजी येजी करि लली, रूकी मृदु मुसक्यात ॥ ३१ ॥

हांहां मेरी सौंहँ है, उदित भयो रंगलाल ।
तुरतहि जुगुलविहारमें, भृकुटी मोरी वाल ॥ ३२ ॥

छीछी पैयाँ दूरतें, पीतम मदन मरोर ।
विनवत जुगुलविहारमें, वांध वसन करजोर ॥ ३३ ॥

पीतांबर गल डारिकैं, विनवत पीकर जोरि ।
चितवत जुगुलविहारमें, लली रंध्र हगकोर ॥ ३४ ॥

वसनरंध्र पीतम अलक, परसत चिवुह स्वाय ।
मूँदत जुगुलविहारमें, कमलकली समनाय ॥ ३५ ॥

इतउत चहुँदिसि दाबि चट, सोयगई पट तान ।
प्रीतम जुगुलविहारमें, आकुल जदपि सुजान ॥ ३६

मुनियां सीपटपींजरा, रजी अवनि सुकमार ।
फरफरात पी लालसम, अनुपम जुगुलविहार ॥ ३७ ।

प्यारी पटतर झूमका, राख्यो ललितकपोल ।
चांपत जुगुलविहारमें, अधर खिसानो लोल ॥ ३८ ।

प्यारीपट अंतर धरयो, भूषन गेंद बनाय ।
चांपत जुगुलविहारमें, लालन गयो लजाय ॥ ३९ ॥

परसत चिबु चट पटतरें, दीनो बिछिया बाल ॥
परसत जुगुलविहारकटि, पाई बँसुरी लाल ॥ ४० ॥

छुवत जघन दै गेंदुवा, मगन हँसी किलकाय ।
पीतम जुगुलविहारमें, भाषत अरे खिसाय ॥ ४१ ॥

पीतम छलि बीडी बहुत, प्यारिहि दई पवाय ।
मुखछवि जुगुलविहारमें, चितैचितै मुसक्याय ॥ ४२

परसत अँग कूकत लली, लपकि लाल उरढांपि ।
वाढत जुगुलविहाररस, अधर मधुर मुखचांपि ॥ ४३

मोकोंतो जाडो लगै, ओढनदै सठ साल ।
पाछे जुगुलविहारके, पांच दुशाला बाल ॥ ४४ ॥

जाडो रुई न जाय कंहुँ, जाय तुही बरवाम ।
ओढौ जुगुलविहारमें, मोहींको सुपधाम ॥ ४५ ॥

ओढौ नवघनदामिनी, बरजोरी अतिलाज ।
दामिनि जुगुलविहारमें, ओढी नवघन आज ॥ ४

गरजै किंकिनि घूंघरू, वदरा सेजसिंगार ।
लागी जुगुलविहारमें, भुविझरि सुरति सुवार ॥ ४७
रैन घटी रसना घटो, जुगुलविहार बहार ।
सुरति नवीन भवीन दोउ, खेलैं सौ सौ वार ॥ ४८ ।
भृकुटी कासि हूं करि चमकि, नवलवधू सुकुमार ।
बोली जुगुलविहारमें, सिसकि चुभै उरहार ॥ ४९ ॥
बलिबलि जुगुलविहारकी, वैन चाटुले वोल ।
विहरत रसलंपट लपटि, चोलीके बंद खोल ॥ ५० ॥
कसिकसि विलसत रसिकमणि, अनुपम जुगुलविहार ।
चंद्रहार चिंतामणी, सतलर लली उतार ॥ ५१ ॥
भाषत जुगुलविहारमें, श्याम अरी सुकुमार ॥
मेरीसों कहिदीजिये, चुभै कहूं जिनहार ॥ ५२ ॥
लली नकुटियालै सकुचि, कटि तट सों पियहार ॥
सरकायो झुकि सिसकि कछु, बलि बलि जुगुलविहार ॥५३
आहा जुगुलविहार पी, अर्ध कंचुली खोल ॥
चांपे कुच कर दावि उर, मसके दशन कपोल ॥ ५४ ॥
भूषन गत नव नेहवस, शोभा रसकी खान ।
सजनी जुगुलविहारमें, सहत न पट विविधान ॥ ५५ ॥
वेनीकी गुन खोलि पी, केश कपोलन लाय ।
देखत जुगुलविहार झुकि, वामहि मुकुर दिखाय॥५६॥
चपलासी चमकत जवै, लखी नवेली वाल ।
धनि धनि जुगुलविहार चट, बांध्यो कटिपट लाल॥५७॥

अधमूँदी अँखियां लली, लाल उघारे नैन ।
निरखत जुगुल विहारछवि, सो छवि कहत वनै न॥५८
हाहा टुक मुसक्याइये, वदत लाल मुसक्याय ।
अद्भुत जुगुलविहारछवि, अंगुरी अधर छुवाय ॥५९
सैनकरत दृग चारकरि, गुप्तगात छीलाल ।
वारी जुगुलविहारपै, चमकि लजी वरवाल ॥ ६० ॥
सिसकिसिसकिकै अंकभरि, मसकिमसकि हँसि देंह ।
रस रिस जुगुलविहारमें, अलि अधरामृत लेंह ॥ ६१ ।
बोल्यो जुगुलविहारमें, पी भावै सो लेहु ।
मुखचुंवन यकवार जो, विन मांगे मुहिं देहु ॥ ६२ ॥
हँसिहँसि जुगुलविहारमें, कही लाल निजगौंह ।
नैन उघारौ तौ तनक, तुमैं हमारी सौंह ॥ ६३ ॥
मूंदे जुगुलविहारमें, नींद वहाने नैन ।
औचक खुलि दृगचारह्वै, सकुचि हँसे मुखसैन ॥ ६४ ॥
औंजिऔंजि पीपी मधू, वधू रसिक हुलसांय ।
फिरिफिरि जुगुलविहारमें, लस्तपस्तह्वै जांय ॥ ६५ ॥
चितैचितै सामुहिं मुकुर, अंकभरोरि सिहांय ।
रसवस जुगुलविहारमें, भांतिभांति लपटांय ॥ ६६ ॥
कसिकसि ओलीमें प्रियें, करै गुलगुली लाल ।
पलपल जुगुलविहारमें, रूप अनूपम वाल ॥ ६७ ॥
लाल कुलहिया ललीशिर, राखी भौंह छुवाय ।
परसि चिवुक चितवैं मुकुर, जुगुलविहार सुहाय ।।६८।

करनफूल कुंडल ललित, अलटि पलटि पटचीर ।
प्रफुलित जुगुलविहारमें, मुकुर विलोकैं वीर ॥ ६९ ॥
एक पान दावे दोऊ, दसन रसन इठिलाय ।
सजनी जुगुलविहारकी, रीत अनौखी आय ॥ ७० ॥
कीनी लली विसाल भुज, पीतम के गलमाल ।
कटिकिंकिनि करि रासिकभुज, जुगुलविहार विहाल॥७१॥
वलिवलि जुगुलविहार पी, वदत सकुच तजि देहु ।
पग परसन पलटे प्रिये, मुख चुंवन लै लेहुं ॥ ७२ ॥
वलिवलि तनक निवारिये, उरसों अंचल वाम ।
निरखौं जुगुलविहारछवि, कही परसि चिवु श्याम॥७३॥
दोऊ कर नीवी गहे, तजत न गुनगन वाम ।
काछवि जुगुलविहारकी, झकझोरी घनश्याम ॥ ७४ ॥
कर छीवेकी सौंह सखि, औ टूटन सौगंद ।
परिहैं जुगुलविहारमें, पगपग पै रसफंद ॥ ७५ ॥
नीर छीरसे मिलिरहे, सकै कौन निरवार ॥
भूषन कच उरझायकैं, राते जुगुलविहार ॥ ७६ ॥
झूमिझूमि झुकिझुकि लसे, तजैं न टुक अकवार ।
विहरैं जुगुलविहारमें, छवि छकि रति मतवार ॥ ७७ ॥
लली हथेलीपै लिखी, लाल कछू रतिवात ।
जैजै जुगुलविहारकी, लली समुझि सकुचात ॥ ७८ ॥
लाल पीठिपै लाडिली, गारी सी लिखदीन ।
जैजै जुगुलविहार पी, विहंसि अंक कसिलीन ॥ ७९ ॥

झिझकी नीवी छुवतहीं, करि कटाच्छ वरवाम ।
अद्भुत जुगुलविहार लखि, आलि अचेत घनश्याम॥८०।
अधरसुधारस दै लली, लालै चेत कराय ।
बोली क्यों कहि दाविउर, जुगुलविहार सुहाय ॥ ८१ ।
वलिवलि जुगुलविहारकमि, भेंटत श्याम कठोर ।
सरकि सकत ना लाडिली, उरझी किंकिनि डोर ॥८२॥
लखिलखि जुगुलविहारके, चित्र जुगुल ललचांय ।
त्योंहीं त्यों रसकेलि करि, फूले अंग न समांय ॥ ८३ ॥
लिखिलिखि जुगुलविहारके, चित्रन नवलकिशोर ।
गहिगहि चित्तु दरसावहीं, सकुचे तिय मुखमोर ॥ ८४ ।
फैलि सकैं ना अंग मृदु, सिजिया अल्प निहार ।
कुंज संकुचितमें रुचै, रचना जुगुलविहार ॥ ८५ ॥
बैठी साखा सारिका, बोलैं दंपति नांय ।
सुनि सुनि जुगुलविहारमें, चोंकि चिपटि रहिजांय ॥८६॥
अंगअंग उरझे हियें, बढ्यो केलिरस चाव ।
परिगो जुगुलविहारमें, पाग पेंच उरझाव ॥ ८७ ॥
आयपरी औचक ननंद, बन्यो न कछुक उपाव ।
परिगो जुगुलविहारमें, वेशर लट उरझाव ॥ ८८ ॥
उठिउठि अंध झूमत झुकत, तजत न टुक अँकवार ।
सेज लचमची पै सखी, जुगुलविहारनिहार ॥ ८९ ॥
विथकित जुगुलविहारमें, डुलत न प्रमथित मैन ।
पलही पलपै लगि रहीं, उघरा मूँदी नैन ॥ ९० ॥

औचक जुगुलविहार पी, तियपट दियो उघारि ।
मूंदे लंपट दृगन चट, लपकि नवेली नारि ॥ ६१ ॥
सजनी जुगुलविहारकी, बात बात उतसाह ।
लली लजावन लाल कहि, करिल्यो सोसंग ब्याह ॥६२॥
मतवारी रति सेजपै, गतिमति पति निरवार ।
सुख समूह शोभासदन, सुख निधि जुगुलविहार ॥६३॥
ढांपिढांपि देदीय ना, तिय पिय देय उघार ।
बरसत युगलविहार रस, अँधियारे उजियार ॥ ६४ ॥
तजत न घन अंकम लगत, चुसत अधर उर लाय ।
देखो युगलविहारमें, दामिनि हाहाखाय ॥ ६५ ॥
खोंखोंसों कसि लसैं अंग, डरपिडरपि रसठार ।
वृंदावनकी वानरी, पोषक युगलविहार ॥ ६६ ॥
दामिनि घन झिगरेखुआ, नीवी बँद गहिहाथ ।
झिगरौ जुगुलविहारमें, उठौ येकही साथ ॥ ६७ ॥
माते जुगुलविहारमें, हटैं नटें ना देय ।
चुंबनपै झिगरौ ठनो, हमहम पहिले लेय ॥ ६८ ॥
जोवनरूप तरंगअंग, दृगन निहारनिहार ।
रूमरूमसों जाचहीं, जुगुलविहार विहार ॥ ६९ ॥
ललितकिशोरी लीजिये, रसतरंगहिलकोर ।
लंपट जुगलविहारके, सिंधु धसे सरवोर ॥ १०० ॥
ललितमाधुरी गंगसो, सागर जुगुलविहार ।
गंगासागर न्हाइये, रशिक वधूटी नार ॥ १०१ ॥

इति युगलविहार शतकसम्पूर्ण ।

अथ अष्टयाम उत्कंठास्तवक लिख्यते ।

अहो प्रिये कवलों पछिताऊँ ॥ १ ॥
अवहूं नित्य निकुंज तिहारे, चाँपत चरन न पाऊं ॥ २ ॥
ना उठि भोर विभास रसीली, रँगभरी तान सुनाऊं ॥३॥
ना मुरली मुहचंग तँबूरी, नूपर झनक मिलाऊं ॥४॥
रजनी विगत ललित पलका छवि, ना नैनन दरसाऊं ॥५॥
ना अलसात जम्हात लाल सँग, आरति करि वलिजाऊं ॥६
ना नवनीत मिता मिश्रित रुचि, मुखअरविंद खवाऊं ॥७॥
ना पलटो पट पीतमसों झट, झपटि ताहि पलटाऊं ॥८॥
ना करपल्लव राखि अपुन कर, झुकि गोमे वतराऊं ॥९॥
ना नवलाल खीझिवे वतियाँ, हरवें सुरति कराऊं ॥१०॥

इति नवनिकुंज अलसान वर्णन प्रथम प्रकरण ।

अथ नवल निकुंजसों भवन गमन ।

चलत सदन निशि कुंजभवनसों, ना मग हाथ वताऊं ॥११॥
ना उरझत पट अरनी डरियां, लपकि लपकि सुरझाऊं ॥१२
वीचवीच चुंवन आलिंगन, चितवत ना सचुपाऊं ॥१३॥
निरखत गैल ग्राम जुवतिन ना, अंचर ओट छिपाऊं ॥१४॥
श्रमित कदंव वैठिवेको ना, चूनरि झपटि विछाऊं ॥१५॥
पाछूं जाय सिहाय भाग निज, ओली ना उठकाऊं ॥१६॥
झारत चरनसरोज पिया उत, ना इत विजन ढुराऊं ॥१७॥
ना झुकि वूझों अहो लडैती, सीतल जल लैआऊं ॥१८॥

पुनि उठि चलत लालपीतमसों, ना गलमाल जुराऊं ॥१९॥
ना रुरक्यौ मग करनझूमका, रजसों ढूंड़ि लैआऊं ॥२०॥
ना दूराहिते लखि जटिलाको, अँगुरी तानि वताऊं ॥२१॥
सघन लतन ना घूमि थामि पिय, दूजी मग लैआऊं ॥२२॥
श्यामतमाल तरें कुटिला उत, लखि ना तुम्हें डराऊं ॥२३॥
झलकत रंध्र रहै तनकौ ना, लता माधवी छाऊं ॥२४॥
तुम उरझौ रसकेलि तहां ना, हूं पहिरू वनिजाऊं ॥२५॥
छुनन छुनन नूंपुर रव कानन, ना तट वैठि सुनाऊं ॥२६॥
सासु नंनदसों ना अगवानी, सैनसेज पहुंचाऊं ॥२७॥
छिनईमें ना वातवनै पुनि, जमुना न्हान लैआऊं ॥२८॥

इति नवनिकुंजसों भवन गमन वर्णन द्वितीय प्रकरण ।

अथ भवनसों वनगमन गोचारणजमुनास्नान।

उतसों मोहन धेनु चरावन, जात न मग दरसाऊं ॥२९॥
ना सनकार छवीले तोसों, सघन निकुंज मिलाऊं ॥३०॥
ना मग चलत झकत रंध्रनसों, निरखत नैन सिराऊं ॥३१॥
ना जमुनातट जाइ चटपटी, पट भूषन उतराऊं ॥३२॥

इति भवनसों वन गमन गोचारण जमुनास्नानको तृतीय प्रकरण ।

अथ जमुना स्नान शृंगार कलेऊ आरतौ ।

ना पहिराय मिहीनी सारी, जुवतिन जूथ हसाऊं ॥३३॥
सारी पलटि निचोरि शीघ्र ना, आनंद उरै वढ़ाऊं ॥३४॥
ना भूषण पहिराय झीनपट, रसियै झलक दिखाऊं ॥३५॥

मंजुल घाट श्याम घटवारिन, ढिगै न तुहि बैठाऊं ॥३६॥
रचरँग चटक न ऐंचि कंचुकी, पीतम हित सिसकाऊं ॥३७॥
कसत जूट भ्रकुटी कसतैं ना, मोहन मन ललकाऊं ॥३८॥
रचत कपोल विलोकत मुख छवि, छापे नाहिं चुराऊं ॥३९॥
ढूंढत चकित इतै उतमैं ना, पट ओझल मुसकाऊं ॥४०॥
अवलोकत भुव सैन तिहारी, कंचुकी नाहिं बताऊं ॥४१॥
ढूंढ़त लपक सांवरो झिझकत, तुम ना दृग लखि पाऊं ॥४२॥
मोसों कहत बडी कुटिली तैं, भृकुटी मुरनि सिहाऊं ॥४३॥
हौं काननपै हाथ धारि ना, रसना चट चटकाऊं ॥४४॥
अति मनुहारि ललित तरवन ना, जावक चित्र रचाऊं ॥४५॥
कहूं लकुटकी रेख कहूं ना, मुरली मुकट बनाऊं ॥४६॥
ना झलि चूनरि छोर छवीली, सुमन सुगंध सुघाऊं ॥४७॥
मुकर दिखाइ हार घटवारी, करपल्लव न दिवाऊं ॥४८॥
न्यारी अजन निकुंज तासु संग, ततछिन ना लैजाऊं ॥४९॥
विंजन उष्ण जिंवावत ना रस, मधुरे बाज बजाऊं ॥५०॥
जमुना जलहि पिवाय न कंचन, झारीसों अँचवाऊं ॥५१॥
वीरी अधर रचाय आरतो, वारत ना हरषाऊं ॥५२॥
कुंज किंवार मूंदि इत अलियन, बातन ना उरझाऊं ॥५३॥
ना पुनि बोलि सहेलिन करिकरि, मसखरिया न हसाऊं ॥५४

इति यमुना स्नान शृंगार कलेऊ आरतो वर्णन चतुर्थ प्रकरण ।

अथ वनसों भवन गमन भोजन चौपरि ग्रीष्मविहार ।

चलो मुदितमन भवनन आगे, मारग सुमन बिछाऊं ॥ ५५ ॥
पदपद ना नवलाल सघनवन, रंध्रन सों दरसाऊं ॥ ५६ ॥
मगही ललितनिकुंजन पीसंग, नवल सेज बैठाऊं ॥ ५७ ॥
ना मनपाय बिछाय छबीली, चट चौसार खिलाऊं ॥ ५८ ॥
बिचबिच छील अनार नरंगी, ना रुचि लवन मिलाऊं ॥ ५९ ॥
अपने हाथ कमलमुखसोभा, निरखन आप पवाऊं ॥ ६० ॥
अलियन सैन निवारि किवारी, मूंदिन बाहिर आऊं ॥ ६१ ॥
तुम बूझत कित जात न भाषत, हों हँसि पानी लाऊं ॥ ६२ ॥
तुम अटकौ नटकेलि नवेली, रंध्रन कान लगाऊं ॥ ६३ ॥
हरें हरें बतरान तिहारी, सुनिसुनि ना हुलसाऊं ॥ ६४ ॥
रुनन झुननसुन नूपुर कलरव, रसना करन पिवाऊं ॥ ६५ ॥
मूंदि नैन पट उटकि केलिरंग, हियरे ना छिटकाऊं ॥ ६६ ॥
नवलनिकुंज जुवतिमंडलमें, सुमनन सेज बिछाऊं ॥ ६७ ॥
ना करजोर बिनयकरि तापर, पीतम संग पधराऊं ॥ ६८ ॥
सिखरन सेत न सीतल भोजन, भाजन रजत लगाऊं ॥ ६९ ॥
डाड़िमरसै निचोरि कपूरक, वेलामें ना लाऊं ॥ ७० ॥
वास्यो नीर मृत्तिका झारी, भरि ना पान कराऊं ॥ ७१ ॥
नील पीत पट तुव आयसु लै, ना खस अतर लगाऊं ॥ ७२ ॥
ना बीरी करपूर सुबासित, लहुरी ललित बनाऊं ॥ ७३ ॥
अर्द्ध पान की गिरी कीलदै, संपुट ला धरिलाऊं ॥ ७४ ॥

रुचि पहिचानि दूर हीते ना, विजनी हरैं ढुराऊं ॥ ७५ ॥
द्वार द्वार प्रति खसके परदा, छिरकि न नीर वंधाऊं ॥ ७६ ॥
केवणेनीरन पूरि फुहारे, सनमुख जाय छुडाऊं ॥ ७७ ॥
अवनी कुंजतरे वेलिनतट, ना गुलाव छिरकाऊं ॥ ७८ ॥
रचिरचि चहूंओर ना श्यामा, सुमन वितान तनाऊं ॥ ७९ ॥
जलतरंग मुहचंग तँबूरी, भेरी सुरन मिलाऊं ॥ ८० ॥
ता धिलांग ता थेईथेई, नचिनचि गति न रिझाऊं ॥ ८१ ॥
ना संगिन संग टीप सुरीली, लैलै सारँग गाऊं ॥ ८२ ॥
सीतलजल मिश्री मिश्रित ना, फटिक कटोरा लाऊं ॥ ८३ ॥
येला वुरकि मेलि खस रसना, पीतम हाथ पिवाऊं ॥ ८४ ॥
वीरी जुग्मजुग्म मुख दै ना, दरपनियें दिखराऊं ॥ ८५ ॥
वारत सुमन आरती नूपुर, गति ना वाज मिलाऊं ॥ ८६ ॥
गूथत वारन डोरि छवीलो, ना प्रसूनचुनिलाऊं ॥ ८७ ॥
फूलन मेलि विलोकत छवि ना, भूलत ताहि वताऊं ॥ ८८ ॥
गूतथ वार करत रसवतियां, निरखत ना हरपाऊं ॥ ८९ ॥
अंकम मसकि लाल मुख चूमत, चितै न हिये सिहाऊं ॥ ९० ॥
लालन सैन पाय अलियन संग, कुंज दुवारन आऊं ॥ ९१ ॥
हांहां गिरा तिहारी सुनि ना, सुनि अनसुनि करिजाऊं ॥ ९२
मूंदि निकुंजद्वार चौखटलागि, मरसगीत ना गाऊं ॥ ९३ ॥
ना टुक उठ कि उनींदी सपने, नवलकेलि रस पाऊं ॥ ९४ ॥
निदिया तजि रसकेलि करौ पुनि, मोखें ना दग लाऊं॥ ९५॥
आहट पायपियै वरजौ तुम, मैं ना चट झुकिजाऊं ॥९६॥

बीड़ा तुमैं खवाय छवीली, मुसकत ना लखिपाऊं ॥ ९७ ॥
आधी अधरन दाबिदेत पी, लेत न हेर सिहाऊं ॥ ९८ ॥
होत विलंब विलोकि भानु ना, सीटी मुखै बजाऊं ॥ ९९ ॥
ना तरपट खटकाय विहारिन, चट संकेत जनाऊं ॥१००॥

इति वनसों भवन गमन भोजन चौपर ग्रीष्मविहार वर्णन पंचमप्रकरण ।

अथ भवनसों वनगमन सूर्य्यपूजा मिस वा वंसी खोजन मिस मिलन

नीलकमल अरविंदमेल ना, चलत दृगन दिखराऊं ॥१०१॥
दृग मुसक्यान मसकि करपल्लव, बतराते न लखाऊं ॥१०२॥
परत मुकटपर छांह कपोलन, झलक कुँडल लखि पाऊं॥१०३
ना झूमककी छांह अंश पी, निरतत देखि सिहाऊं ॥१०४॥
ना लैजाय भवन जटिलाके, छिनकहि नैंन जुडाऊं ॥१०५॥
ना समुझाय भानुपूजा मिस, पलटे पांवं लेआऊं ॥१०६॥
ना टुक विमन हेरि मोहनकी, आवनकथा सुनाऊं ॥१०७॥
ना खोजत वंशी उत पीतम, चट नैनान दिखाऊं॥१०८॥
ना दै सैन नवल नागरनट, सघन लतान बुलाऊं ॥१०९॥
ना पुनि कंठ मिलाय कहत कित, ललिता उत कढिजाऊं॥११०।
चितवन चोंप केलि नूंतन ना, नैनन रंध्र मिलाऊं ॥१११॥
कहत लाल वंशीमिस आवन, कथा न कान सुनाऊं ॥११२॥

इति वंशी खोजन मिस मिलन वर्णन षष्ट प्रकरण ।

अथ होरी

पीत विचित्र कुंज मणिमय ना, रंग गुलाल खिलाऊं ॥११३॥
सराबोर भिजवाय छैल ना, तुमें निकुँज दुराऊं ॥११४॥
कौन निकुंज ललीलालनको, ना दै सैन बताऊं ॥११५॥
ना दै थार अबीर हजारो, रंग भरि हाथ गहाऊं ॥११६॥
झपटि घसै नट सुरति रंगीलो, हौं ना पट उठकाऊं ॥११७॥
ना तुम जानि विभेदिन मोहीं, खोटी कहत सिहाऊं ॥११८॥
ना उपहास रीति रंध्रनसौं, बिसफुट कूक मचाऊं ॥११९॥
लेहुलेहु पल्टो सबदिनको, मिलत दृगन मुसकाऊं ॥१२०॥
ना मसकै रंग लाल निहारत, सैनन चंग चढाऊं ॥१२१॥
चीर मसोसि न मूंदि झरोखे, आपुन इत हठिआऊं ॥१२२॥
भली बिदरदी हाथ गिरा तुम, ना इन कान सुनाऊं ॥१२३॥
चुचकारी कसि अधर पियाकी, सिसकत ना सुनिपाऊं॥१२४॥
पायल तनक उतार न दैना, सुनत हिये हुलसाऊं ॥१२५॥
लीजे बहुरि उतारि रंगीलो, कहत न सुनि उमगाऊं ॥१२६॥
चांपत चरन छबीली फिरकत, तैं ना लखि हुलसाऊं ॥१२७॥
ललितकेलि हुलरावत प्यारो, बैठिन ध्यान लगाऊं ॥१२८॥
ललितादिकसो मोलि झरोखे, नैनन सैन चलाऊं ॥ १२९ ॥
ललितमाधुरी कान लाग ना, बुदुरबुदुर बतराऊं ॥१३०॥

इति होरी वर्णन सप्तमप्रकरण ।

अथ अंगमर्दन जलविहार स्वल्पसिंगाररसपान

ललित सरोवर कदमछांहतर ना जलकेलि कराऊं ॥१३१॥
सौरभमिलित उवटनों श्रीअँग उवटन पीउ वटाऊं ॥१३२॥
कोमल अंग फुलेल तादिपट, ना नटकर मरदाऊं ॥१३३॥
मरदत अंगअंग रसिकन ना, चुंवन शब्द सुनाऊं ॥१३४॥
आधी आह संमिलित सिसकी, सुनिसुनि ना हुलसाऊं॥१३५
पूरन आहि प्रियारव मधुरे, सुनि ना हियो सिराऊं ॥१३६॥
रसिक उसास लेत मणिधरसम, सुनत न प्रान जुडाऊं ॥१३७॥
जमुहाई मिस लेत स्वास तुम, चुटकी नाहिं वजाऊं ॥१३८॥
उद्दीपन वतियान न छंदन, रचिरचि तान सुनाऊं ॥१३९॥
बीचबीच ना गुप्तविभेदन, पुट परिहास मिलाऊं ॥१४०॥
ना अन्हवाय वहुरि पोंछो अंग, ना सारी पलटाऊं ॥ १४१ ॥
ना करि स्वल्प सिंगार लालसंग, रसव्रतियान चुसाऊं ॥१४२॥
ना अचवाय अरुन मणिसंपुट, विरी पूरि लै आऊं ॥१४३॥
तुमैं पवाय न पीतमको पुनि, नवयुवतिन वरताऊं ॥१४४॥

इति अंगमर्दन जलविहार स्वल्पसिंगारवर्णन अष्टमप्रकरण ।

अथ वनसों भवन गमन फल तोरन फारौसिन गेहगमन ।

चलो लली अरविंन्द फिरावत, हौं ना चंवर दुराऊं ॥१४५॥
झुकिझुकि कहौं नवल नागरसंग, ना वढि लता उठाऊं ॥१४६॥

चढिचढि लता अली तोरैं फल, अचरा ना फैलाऊं ॥१४७॥
तुमैं चखाय चुलाय लाडिले, चीखे नाहिं चखाऊं ॥१४८॥
आवत सनमुख देखि ननदिया, ना कर दोखि लखाऊं ॥१४९॥
इतउत छिटकि निकसि वेलिनसों, लखत न हिय हुलसाऊं॥१५
रसवतियां वतरात पियासँग, तनकै भवन झकाऊं ॥१५१॥
जटिलै पुनि फुसिलाय न निवतें, पारौसिनके लाऊं ॥१५२॥

इति वनसों भवन गमन फूल तोरन पारौसिन गेह गमन वर्णन नवम प्रकरण ।

अथ माखन चोरी वर्णन ।

माखनचोर चुरावनि माखन, उझकत नाहिं झंकाऊं ॥१५३॥
ना सीटीदै नवल पतौवै, हग द्वै चार कराऊं ॥१५४॥
ना दिहरी चढि तुम्हें, छवीली पौरि कोन सैनाऊं ॥१५५॥
ना उतसों पट ओट झुकायें, पीतम लाय मिलाऊं ॥१५६॥
निकसत गैल वटोही हरखैं, ना संकेत जनाऊं ॥१५७॥
अन अवसर रसकेलि जानि ना, वाहिर ही विरमाऊं ॥१५८॥
नूपुर झनक जानि आवत, ना अरनीतल लैजाऊं ॥१५९॥
नूतन कौतुक एक विलोकौ, वातन ना भुठकाऊं ॥१६०॥
ललितमाधुरी को पौरीपै छांडि, न कुत समझाऊं ॥१६१॥
ना अंगरी भरमाय वटोहित, करन प्रसून गनाऊं ॥१६२॥

इति माखन चोरी वर्णन दशम प्रकरण ।

अथ फल पान वर्णन ।

ना आयसु लै पोटि परोसिन, निकट विपिन लैआऊं ॥१६३

कलविहंग जलजंत्र विभांती, वनसोभा न लखाऊं ॥१६४॥
नाना फलन संवारिलाय ना, रुचिसों दुहुन पवाऊं ॥१६५॥
पुनि ना लै मैं झमकि प्रसादी, चपल अलिन वरताऊं ॥१६६॥
कर अंचवाय लगाय न वीरी, अतिहित सामुहिं लाऊं ॥१६७॥
दुऊ दुहुंन मुख देत विहंसि लसि, मैं ना वलिवलि जाऊं॥१६८॥

इति फल पान वर्णन एकादश प्रकरण।

अथ फूल खेलन वर्णन।

प्रफुलित फूलन लाय लालसों, प्रमुदित गेंद खिलाऊं ॥१६९॥
मसकि हाथ लगिजात दूरि ना, गिरितैं दौरि उठाऊं ॥१७०॥

इति फूल खेलन वर्णन द्वादश प्रकरण।

अथ दुका दुकी वर्णन।

दुका दुकी के खेल तुमैं ना, सघन निकुंज दुकाऊं ॥१७१॥
ना जुवतिन विरमाहि नियारिहि, पीतम तहां पठाऊं ॥१७२॥
अपनें मनैं वनाय पौरिया, ना यह बुद्धि उपाऊं ॥१७३॥
दूजी और नागरिन धोखौ, दैदै जाय ढुंढाऊं ॥१७४॥
झलमलात झंझियाको घट ज्यौं, निरखि न कुंज सिहाऊं ॥१७५॥
दुति मयंक अनुमानि चकोरी, फरकत ना हुलसाऊं ॥१७६॥

इति दुकादुकी वर्णन त्रयोदश प्रकरण।

अथ झूला वर्णन।

कबहूं लता अरुन मणिमंदिर, ना पी संग झुलाऊं ॥१७७॥
झूलवत लाल सुवाल प्रसंशत, निरखि न उर उमगाऊं ॥१७८॥

इति झूला वर्णन चतुर्दश प्रकरण।
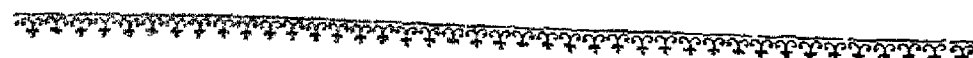
अथ फूल वीनन वर्णन

तुव रुचि जानि छवीले सों, नाना वनफूल विनाऊं ॥१७९॥
नानाभांति लालसंग वीनौं, देखि न दृग सियराऊं ॥१८०॥

इति फूल वीनन वर्णन पंचदश प्रकरण ।

अथ वनसों भवन गमन उत्तरगोष्ठ

गाय चराय गुपाल पलटिके, जाति न गैल लखाऊं ॥१८१॥
गोखुररेणु अंगअँग मंडित, अलकन लाल दिखाऊं ॥१८२॥
धौरी धूमरि कजरी श्यामा, हेरी वचन सुनाऊं ॥१८३॥
विजुकत वच्छ चपल चंचल नट, साधत ना दरसाऊं ॥१८४॥
चमचमात आभूषन रजपट, आयसु लै ना धाऊं ॥१८५॥
पीताम्बर उरझात सिंगौटी, झपटि न जाय छुटाऊं ॥१८६॥
व्हांईसों मुखचंद्र तिहारो, अंगुरी ना दरसाऊं ॥१८७॥
गहत पानसों ना चित चोरै, विवस भुकत हुलसाऊं ॥१८८॥
ना रसमत्त तरे खिरकीके, फिरकी लौं फिरकाऊं ॥१८९॥
मा मारग दृग जोर मँडलदै, मनहुँ मयूर नचाऊं ॥१९०॥
तो करकमल कुंदकलियां ना, पीतमपर वरषाऊं ॥१९१॥
आवत दीठ आन युवती ना, चटपट ओट दुराऊं ॥१९२॥
पट विविधान होत नटनागर, विवस न झुकि दरसाऊं ॥१९३॥
उघरत नूतन प्रीति जानि ना, तुम्हें पौरि पहुंचाऊं ॥१९४॥
आपन लपकि लकुट लै, मगमें ना गैयां सुसकाऊं ॥१९५॥
जबलगि दुचिती होई युवति ना, तिय तब कंठ मिलाऊं॥१९६॥

इति वनसों भवन गमन उत्तरगोष्ट षोडश प्रकरण ।

अथ नंद भवन गमन वर्णन

तुमें न वूझि परौसिन सों पुनि, पास सासके लाऊं ॥१९७॥
पीहर मिस करि धरी चारि ना, नंदभवन पहुंचाऊं ॥१९८॥
नवयुवती सव संग उरहिने, मिसि ना हंसि वतराऊं ॥१९९॥
नंदरानी ना ठढी पौरिपै, वारति आरति पाऊं ॥२००॥
कांधे लकुट मुकट लटकन, ना चटकत पटहि सराऊं ॥२०१॥
अलकन छिटकि पलक मंडितरज, विकसत मुख न लखाऊं॥२०२
लौंकत मुख चकचौंध आरती, रजकन ना दरसाऊं ॥२०३॥
वीचवीच वंशीधुनि वाजत, सो न सराहि सिहाऊं ॥२०४॥
वेसर हलन तिहारी पीको, सैन न हीन झंकाऊं ॥२०५॥
नाम सकेलै अंगन कुटिया, मोहनकी सिसकाऊं ॥२०६॥
ना रुचि जानि तिहारी पीको, सैनन हीं धमकाऊं ॥२०७॥
अवहीं कहें देत दिनवतियां, वुदवुदाय डरपाऊं ॥२०८॥
आडी करि करि हाथ गदोरी, ना पट ओठ वठाऊं ॥२०९॥
ना तटजाय मिलाय कान मुख, खुसुरफुसर कहिआऊं ॥२१०॥
अधर सरोष चढाय भौंह ना, दशनन दावि डराऊं ॥२११॥
चोरिचोरि चितचोर अवै नित, माखन खान वताऊं ॥२१२॥
गोधन मंडल विविधि भांति धन, अवनी पै न दिखाऊं॥२१३॥
राभत वच्छ चाटि नटवरअंग, चुचकारत न सुनाऊं ॥२१४॥
ललितमाधुरी कहत कान झुकि, हरखे सुनि न सिहाऊं॥२१५॥
रहती सही आज नटखटियां, कहि मैयाहि सुनाऊं ॥२१६॥
जोरत मुरकि हाथ तृण दांतन, दावत ना दरसाऊं ॥२१७॥

सांसत तुम मुसक्याय अंगुरिया, तानि न लखि हुलसाऊं ॥२१८॥
चांपि कपोल महरि मुखचूमत, डलरावति न दिखाऊं ॥२१९॥
अंगुरी पकरि न पौरि सांकरी, धसत तुम्हैं लैजाऊं ॥२२०॥
अरबराय, वृजयुवतिजूथ ना, चपल कढन नियराऊं ॥२२१॥
ना उमगानि घनघोर गौर अंग, पीतमसों परसाऊं ॥२२२॥

इति नंदभवन गमन वर्णन सप्तदश प्रकरण ।

अथ भवनसौं बन गमन शृंगार व्यारू वर्णन

ना पुनि पूंछि पलटि जटिलासों, विविधि सिंगार बनाऊं ॥२२३॥
ना लैजाय अटरियै टटकी, ललित सेज पधराऊं ॥२२४॥
ना कछु भनक वसुरिया, कैसी सुनत चटपटी धाऊं ॥२२५॥
भवन परोसिन जुरयो फंदावति, ना नट आन मिलाऊं ॥२२६॥
विंजन विविध सुलप सियरे ना, पीतम संग पवाऊं ॥२२७॥
ना अचवाय लालमुख पोंछत, अवलोकत वलिजाऊं ॥२२८॥
ना तंबोल पीतमनिभाजन, पीतम कर पधराऊं ॥२२९॥
आपुन हाथ उठाय देत मुख, पियै न नैंन सिराऊं ॥२३०॥
वैसिहिं पान प्रिये मुहिं दीजै, तौहू निधरक पाऊं ॥२३१॥
आपुन कुटक देत पुनि पिय मुख, निरखन नैन सिराऊं ॥२३२॥
लपकि लाल मुख लेत ललकि ना, मुटकावति लखिपाऊं॥२३३॥
ना पुनि विहसि खवावत हितके, अँखियां रंग रंगाऊं ॥२३४॥
ना वीरी मुखचंद तिहारे, चंचल हाथ खवाऊं ॥२३५॥
चुंवत चट न पानचरावित, मुख आरति वारत जाऊं ॥२३६॥

ना लखि नैंन मदनमदमाते, झिलमिलिया न लगाऊं ॥२३७॥
ना निरतन मिस पांय पाछिले, निरतत वाहिर आऊं ॥२३८॥
ना कौतुक रंभान लिहारत, देहदशा बिसराऊं ॥२३९॥
तनमन रूमरूम छवि आगर, ना वा छवि छकिजाऊं ॥२४०॥

इति शृंगार ब्यारू वर्णन अष्टादश प्रकरण ।

अथ रास वर्णन

पलक उघारि बिलोकि तुम्हें ना, विपिनिकुंज उठिधाऊं ॥२४१॥
झलकि चंद्रिका मुकुट हेरि ना, रंभन नैंन लखाऊं ॥२४२॥
तुव रुचिजानि विनै कर वंशी, लेत न लाल सिहाऊं ॥२४३॥
दै गलबांह राखि कर तुम्हरे, फूंकत ना हरषाऊं ॥२४४॥
आवत धाय जूथ नवयुवतिन, तिन संगना मिलि धाऊं ॥२४५॥
बूझत सोहन लाल किते ना, वंकवैन वतराऊं ॥२४६॥
जाहुजाहु नट कहत अलिनसों, वातन ना इतराऊं ॥२४७॥
तैं वोलै आई को कहि ना, गुलचा गाल लगाऊं ॥२४८॥
तुम्हरी सैन पाय सखि वैठैं, हूंना चंवर दुराऊं ॥२४९॥
ललितमाधुरी हाथ चँवरदै, झपटि न वीरी लाऊं ॥२५०॥
तुव आयसु निरतत सखि यकथक, चित ना नचनि लुभाऊं॥२५१॥
अपनी वार ललित चंचलगति, फिरकिन पाउं वजाऊं ॥२५२॥
निरतत नव रंग लालन के संग, झमकि न वीर उठाऊं ॥२५३॥
छूटत ललितमाधुरी सों ना, नूपुर पांव वंधाऊं ॥२५४॥
ब्रजनवतरुनियुवति मंडल मैं, हरुवें ना कहि आऊं ॥२५५॥

सिथिलित भये कंचुकी के बँद, मोहनलाल हंसाऊं ॥२५६॥
पीतम नचत मोर वन फिरकत, नैनन ना दरसाऊं ॥१५७॥
थिरकि लेत गति चुटकिनसों ना, हियरे रंग जमाऊं ॥२५८॥
विविधिभांति रस रास रंग मैं, आंखडियां न रंगाऊं ॥२५६॥
नाचत जोरि कपोल लालसंग, दरपन ना दिखराऊं ॥२६०॥
श्रमित स्वेदकन मुख अंबुज ना, झलि रूमाल सिराऊं ॥२६१॥
कबहुंक हरें सुहात विजानियां, नाचतहीं न डुराऊं ॥२६२॥
आवत ना वदनार विंदसों, भौंरी दौरि उडाऊं ॥२६३॥
झटपत चंदाजानि चकोरी, अंचर ना नियराऊं ॥२६४॥
झांही लता विलोकि झिझकि तुम, लपटत पी न सिहाऊं॥२६५॥
मसकिलेत रासियासम द्वै उर, लोचन छविन छकाऊं ॥२६६॥
ना चौकी नगजटित जावधट, लली तुम्हें पधराऊं ॥२६७॥
अंचर छोर छबीले करदै, ना पगरेनु झराऊं ॥२६८॥

इति रासवर्णन एकोनविंश प्रकरण ।

अथ आंख मींचनी का छुका छुकी खेल वर्णन

आंखमींचनी खेल दुहुंन ना, गुप्त लतान मिलाऊं ॥२६६॥
इति उति भ्रमत अलीन तुमै ना, हुलसत झंकि हुलसाऊं ॥२७०॥
छुवाछुवी ना खेल पियासंग, प्यारी तुमैं खिलाऊं ॥२७१॥
सरद रैन कत रैयाँदैना, विरह न चाक दिवाऊं ॥२७२॥
भाजे कितै जात निरजन वन, माधुरि ना पुकराऊं ॥२७३॥
निसिमें कीटपतंग फिरत वहु, ना हू कूकि सुनाऊं ॥२७४॥

झपटि छैल छू मसकि लता कुंज, ना लैनात सिहाऊ ॥२७५॥
रंघनसों लौंकत दामिनि सी, ना अलियान लखाऊं ॥२७६॥
नव तरुनिन लैजाय चहूंदिसि, ना वन कुंज घिराऊं ॥२७७॥
भीने मंद विहाग सुरन ना, राग समाज जमाऊं ॥२७८॥
ना किंकिनि नूपुररव पत्रन, खरभरानि सुनिपाऊं ॥२७६॥
हूं हूं रवना कान तिहारो, पीतम हांन सुनाऊं ॥ ८० ॥
वीचवीच दमकन आभूपन, ना नैनान वसाऊं ॥२८१॥
ना शशितार किरन मिलि झलकन, कर ऊरोज लखिपाऊं॥२८२॥
नील कमलको पत्र पीत ना, सरकावत हुलसाऊं ॥२८३॥
तांको नीलकमल गहि हटकत, हाय न हेरि सिहाऊं ॥२८४॥
विंव मयंक कपोलन झलकत, पीक लीक दरसाऊं ॥२८५॥
झूमक छांह परत अंखियन तल, ना नैनान अंजाऊं ॥२८६॥
हार हमेल हलकि चमकानि ना, जव तव हगन दिखाऊं॥२८७॥
निरतत सिखी कनकमंडलपै, सो छवि हिये न लाऊं ॥२८८॥
सासि सनमुख चपला निखंजनी, दुति ना उर सरसाऊं ॥२८९॥
पीतम नाल कमल चंपासों, उतरत भुवि न सिहाऊ ॥२९०॥
नील कमल विफुलित चकवाकै, झपटत नभन सिहाऊं ॥२९१॥
चंदा झलक झलमलत अंगन, ना नैनान मिलाऊं ॥२९२॥
लटकी अहिनिन पुच्छ विलोलित, चंद दमक लखिपाऊं॥२९३॥
ताही झलक मालगुंजा भुवि, लुढत न लखि पुलकाऊं ॥२९४॥
ना निकसत मकुचों हीं पीसंग, माधुरि पै सैनाऊं ॥२९५॥
ना सावास वोलि हंसकर गहि, पा चिवु हाथ लगाऊं ॥२९६॥

ना तुम नैन करत सनमुख टुक, ता सोंभा वलिजाऊं ॥२९८॥
पोंछि पोंछि ना पीक कपोलन, चीर दुनी सकुचाऊं ॥२९९॥
नट पटपीत काठि सरवट ना, चौगुन तुम्हैं लजाऊं ॥३००॥

इति आंख मींचनी व छुवाछुई खेल वर्णन विंशति प्रकरण।

अथ जल विहार।

ना तुम केलि करत पीतम संग, हों गहिरे धंसि जाऊं ॥३०१॥
येक येक पग थाह वतावत, अलपै तुम्हें न्हवाऊं॥३०२॥
ना तुम चिरकुटि छांह हेरि जल, कौतुक करत सिहाऊं ॥३०३॥
ना कवहुंक गहि लता कदमकी, झूलत अलिन लखाऊं ॥३०४॥
ना सारी पलटाय निचौरों, सो जल ना मुख लाऊं ॥३०५॥
ना आसन पधराय पियासों, विविधि सिंगार कराऊं ॥३०६॥

इति जल विहार वर्णन एकविंशति प्रकरण।

अथ करकमल श्रृंगार रस वचनामृत सहित।

पीतम रचै कपोल ओलि धरि, ना रचनाहिं वताऊं॥३०७॥
कुटिली अलक चिवुकपर लावत, चखसों ना नियराऊं ॥३०८॥
ना कस्तूरी भाल विंदुपै, सैंदुर विंदु दिवाऊं ॥३०९॥
ना मुख परत मुकट परछांहीं, मोहन कर नियराऊं ॥३१०॥
कहत लाल मुसक्याव छवीली, तव चिवुविंदु वनाऊं ॥३११॥
हंसत आप धरि अधर छगुनियां, रचत न हेरि हिराऊं॥३१२॥
पलकैं तनक छवीली मूंदो, तौ यक ख्याल रचाऊं ॥३१३॥

हांहां हम जानतहैं वैना, तुमरे ना सुनिपाऊं ॥३१४॥
गहि बुलाक तुव कहत छबीलो, अपनो मन मैं पाऊं ॥३१५॥
तैं मुसक्याय कहत कपटी ना, चितवत चित विसराऊं ॥३१६॥
लंगरैयाँ ना करैं रंगीले, तो अँखियाँन अँजाऊं ॥३१७॥
झिझक सीस कर रोंपि हटावत, कहि ना लखि हुलसाऊं ॥३१८॥
पुलकैं परसि अधर बिंबाफल, कहत न लाल सिहाऊं ॥३१९॥
जनि अरसाव छबीली मोसों, सुअनै चोंच बचाऊं ॥३२०॥
मो कर करपल्लव पहिरावौ, तौ मुंदरी पहिराऊं ॥३२१॥
बिनवत लाल विविध आभूषन, ना कर कमल सजाऊं ॥३२२॥
यक्कर जावक रचत छबीलो, दूजे हों न लगाऊं ॥३२३॥
पायल हरितनीलमणि बिछिया, पोर पोर ना लाऊं ॥३२४॥
कंठसिरी दुलरी तिलरी ना, पीसों ग्रीव बँधाऊं ॥३२५॥
लावत हाथ सकेल नाभिलों, सोछवि नैनन छाऊं ॥३२६॥
गलबाहियां पधराय न दोहूं, बीडी अधर रचाऊं ॥३२७॥
मृदु मुसक्यात कपोलन मेले, ना दरपन दिखराऊं ॥३२८॥
वे तुमको तुम उनहिं सराहत, ना ता छवि बलिजाऊं ॥३२९॥
ना झुकिझुकि अवलोकि मुकर छवि, पाछे चँवर ढुराऊं ॥३३०॥
कहत लाल चितचाव तिहारी, हों बुलाक बनिजाऊं ॥३३१॥
सुनों कहत ना तुमैं पियासों, अंजन ठौर लगाऊं ॥३३२॥
लटकन मुकट विलोकि प्रशंसत, चुटकी गहि न सिहाऊं ॥३३३॥
पीतम कंचुक कसन सराहत, ना मनबाहि पगाऊं ॥३३४॥
अवतौ सैन चलाय छबीली, कैसिकि बासि ह्वैजाऊं ॥३३५॥

तुम दृगकोर विलोकत प्यारो, थकित होत ना पाऊं ॥३३६॥
पदिक उरोज उठाय कहत पी, अपनो चित्र लिखाऊं ॥३३७॥
तुम कौस्तुभ वक्षोज लगावत, निरखि न नैन सिराऊं ॥३३८॥
झूमक छांह कपोलन झलकत, झकत न मुकुर सिहाऊं ॥३३६॥
करपल्लव ना गहत छवीलो, निरखत मन उमगाऊं ॥३४०॥
कवहुंक वंशी अधर धारि पी, बूझत तन कवजाऊं ॥३४१॥
सैनै आयसु देत तुमैं ना, इन नैंनान लखाऊं ॥३४२॥
कुंडल झलक कपोल फिरावत, तुमरे ना लखि पाऊं ॥३४३॥
मुकर विलोकत कर तिरछौहैं, रसिया ना हुलसाऊं ॥३४४॥

इति पी करकमल सिंगार रस वचनामृत सहित वर्णन द्वाविंशति प्रकरण ।

अथ मान ।

निज विंबै अवलोकि मुकर तुम, कहत लेउ मैं जाऊं ॥३४५॥
दूजी तिय अनुमानि मानकर, ना नैनान दिखाऊं ॥३४६॥
पठवत लाल मनावत मोहीं, ना परिपांउं मनाऊं ॥३४७॥
पलटि कथा गुरु मान तिहारी, ना रंगलाल सुनाऊं ॥३४८॥
कासिकासि वृषभानु किशोरी, उघटत ना अतुराऊं ॥३४६॥
देखि विहाल गुपाल दशा ना, अंतस धीर धराऊं ॥३५०॥
बूझत पशुन पखेरुन वोलन, तुमलौं ना लैआऊं ॥३५१॥
हा राधा ममप्राणपियारी, वदत न पांय डराऊं ॥३५२॥
पूरित जल लोचन कर जोरे, विथिति न तुमें दिखाऊं ॥३५३॥
विगत मुकट कर लकुट मुरलिका, ना सामुहिं निहराऊं ॥३५४॥

उठत अवनि पग अंक तिहारे, तुम्हें न सो दरसाऊं ॥३५५॥
परसत भाल कमल पगतल ना, गहि चिबु चारु मनाऊं ॥३५६॥
निरतत ढिंगे चंहूंदिशि तुमसों, चूक न माफ कराऊं ॥३५७॥
पोटिपाटि अनुभांति भामिनी, ना पिय कंठ लगाऊं ॥३५८॥

इति मान वर्णन त्रयोविंशति प्रकरण ।

अथ मेवा भोजन मधुपान वा अलसानयुत-निकुंज गमन ।

ना पिस्ता वादाम सलौने, कनककटोरा लाऊं ॥३५९॥
सौंधो वदन कराय पिया संग, ना मधुपान कराऊं ॥३६०॥
भरि भरि भाजन रजत पियासँग, ना मधुपान कराऊँ ॥३६१॥
विमल चांदनी छांह पखेरू, परत न ख्याल खिलाऊं ॥३६२॥
है अलमस्त करौ रसवतियां, निरखि न नैन छकाऊं ॥३६३॥
बातन में तुतरान परस्पर, सुनि ना चितै चुभाऊं ॥३६४॥
वीड़ी केसरि डारि वने ना, कील लवंग लगाऊं ॥३६५॥
अधरन ललित लालसों मिलि ना, वंगला पान रचाऊं ॥३६६॥
वे तुमको तुम वाहि आदराति, लपटि न नैन जुड़ाऊँ ॥३६७॥
ना पीतम दै अधर तिहारे, चूमत मुख लखिपाऊं ॥३६८॥
गलवाहीं दै चलत निकुंजे, ना फूलन बरषाऊं ॥ ३६९॥
झूमिझूमि झुकि परत भूमि पग, सँग न साधत जाऊं ॥३७०॥
कवहुंक कदमडार गहि ठिठुकत, लटकत पट न उठाऊं ॥३७१
कवहुंक लताछांह चंचलगति, हेरि न मति विसराऊं ॥३७२॥

टूटत माल अवनि मुक्ता हल, छिटकत झट न उठाऊं ॥३७३॥
दौरि दौरि चट चुनत हंसि ना, तिनसों रार मचाऊं ॥३७४॥
निबुआ तोरि उछारत ना, तुम गैल चलत सचुपाऊं ॥३७५॥
छीनाझपटी नट दुरकत भू, दौरि न लैलै आऊं ॥३७६॥
कबहुंक चन्द्रवदन चितवत ना, होत अचल हुलसाऊं ॥३७७॥
कबहुं कमलकर मोकरपर धर, चलत न रस उपजाऊं ॥३७८॥
झूमत झुकत नवलनागर सँग, ना निकुंज पहुंचाऊं ॥३७९॥
ललित सेज पधराय न आलियन, छवि अलसान दिखाऊं ॥३८०॥

इति मेवा भोजन मधुपान वा अलसानयुतनिकुंज गमन चतुर्विंशति प्रकरण ।

अथ क्षीरपान पर्यंक स्थिति आरतौ वर्णन ।

परी सोंठ पय सिता सामिलित, सौंधो हौंन पिवाऊं ॥३८१॥
अरसाते रंगलाल संग ना, तुम्हें लली दुलराऊं ॥३८२॥
गलवहियां दै जोर कोरदग, ना मुखपान रचाऊं ॥३८३॥
आरति चपल उतारति ललिता, तनमन ना बलिजाऊं ॥३८४॥
झुकी परत पलकैं विथकित अंग, अँखियन ना दरसाऊं ॥३८५॥
सिथिलित अंग अैंडान रसीली, ना मनभवन वसाऊं ॥३८६॥
चमचमान अंगन आभूषन, ना दग पैंडे लाऊं ॥३८७॥
झलमलाय चित नगर अंधेरे, त्रिविधि न ताप नसाऊं ॥३८८॥
विफुलित अँग ना जुवति संगलै, बोलि दुआरे आऊं ॥३८९॥
मन ना छांडि चरन चिंतामनि, नख दुति छवी छकाऊं ॥३९१॥

इति क्षीर पान पर्यंक स्थिति आरतौ वर्णन पंचाविंशति प्रकरण ।

अथ चरण पलोटन ।

मूंदि किवार मेलि रंध्रन दृग, कौतुक लखि न सिहाऊं ॥३९१
मैं चेरो नित रहत कहत पी, चांपत चरन जु पाऊं ॥३९२॥
तुम मुसक्याय देत करपल्लव, सो छवि नैन न लाऊं ॥३९३॥
लेत रसिक पुनि चूमि चाप पुनि, कहत चरन ललचाऊं ॥३९
ढोरत ग्रीव वरजि अँगुरीसों, माधुरियै न दिखाऊं ॥३९५॥
वरजोरी पिय पांय पलोटत, निरख न नैन छकाऊं ॥३९६॥
पोरपोर नट चटाकि अँगुरिया, वूझत हरें दवाऊं ॥३९७॥
निरखौं ना पी कहत न हटकौं, मैं तो ना अरसाऊं ॥३९८॥

इति चरण पलोटन वर्णन षट्विंशति प्रकरण ।

अथ शयन ।

तुम उरझौ रसकेलि कामिनी, मंद न वीन वजाऊं ॥३९९॥
प्रीतिरीतिके गीत सोहने, झीने सुर ना गाऊं ॥४००॥
चहुँदिशि पवन रोकि वेकारन, ना परदान छुडाऊं ॥४०१॥
अवनी मिलत झरोखे धोंकनि, ना पावक दमकाऊं ॥४०२॥
रसभीनी चुहचान विहंगन, सुनिसुनि ना पुलकाऊं ॥४०३॥
अपनी अपनी जात पखेरू, वोलत ना चितचाऊं ॥४०४॥
येकताल सुर कहत केलिगुन, निधुवन ना सुनिपाऊं ॥४०५॥
सौरभ सुमन अरगजा केशर, रंध्रन ना पहुचाऊं ॥४०६॥
चरचरान परियंक काज ना, संधिन कान लगाऊं ॥४०७॥
खुसफुसियन वतरान तिहारी, सुनत न उर उमगाऊं ॥४०८

अबकी और रसिक बोलत तब, नाहीं ना सुनिपाऊं ॥४०९
सोवनदे निशि परी परस्पर ना, बतरात सिहाऊं ॥४१०॥
किंकिन रव नूपुर सिसकारी, सुनत न मोद बढाऊं ॥४११॥
तुम सोये प्रिय आय दुलाई, मांगत दौरिन लाऊं॥४१२॥
ललितमाधुरी कहत कहानी, ना निंदियाहि बुलाऊं ॥४१३॥
ललितकिशोरी रहत न जहँ मन, रति मति तहाँ न पठाऊं॥४१४

इति शयन सप्तविंशति प्रकरण ।

अथ स्वप्न निरीक्षण ।

ना सपने चांपतचरनन तुव, तुम्हें पहेलि सुनाऊं ॥४१५॥
ना तुव स्वप्नकथा तुव मुखसों, सपनेहीं सुनिपाऊं ॥४१६॥

दोहा ।

सुनिलीजे मो वीनती, दीजे वास निकुंज ।
निशिदिन याही रससनों, स्वामिनि शोभा पुंज ॥१॥
विन या रसै उपासकै, देह समस्त जो और ।
तिहूं काल तिहुं लोक में, ताको टीक न ठौर ॥२॥

इति ललितकिशोरी विरचित अष्टयाम उत्कंठास्तवकसंपूर्णम ।

॥ अथछद्मषष्ठकं ॥

राग भैरवी ।

द्रुमवेलि लवंग लता सघनी, रहीं फूल सुरंग सुमंजु तहीं ।
तनयारवि ओर किशोर दोऊ, रसरंगभरे विहरें तितहीं ॥
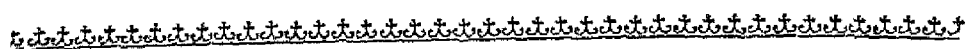
द्रगजोर मरोरकी कोर अनी, अधरामृत पान करैं हि तहीं ।
तिनकी छविहेरि हिये हुलसों, जुगचंद्र चकोर रहों नितहीं ॥१॥
वनकुज लख्यो यक कौतुक मैं, सखि भानु उदोत भये दुतहीं
वृषभानुलली अरु नंदलला, अरसात जम्हात ठड़े उतहीं ॥
अति मंद सुगंध समीर वहै लहरैं विहरैं जमुना कितहीं ।
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, जुगचंद्र चकोर रहों नितहीं ॥२॥
भुज भेरि गरैं मुख इदुं अली, अरविंद लियें कर फेरतहीं ।
गति मंद मराल चलैं विहरैं, अलि वृंद चकोर निवेरतहीं ॥
मृदु कुंजलतान मुके निकरैं सखिमोर किशोर न घेरतहीं ।
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, जुगचंद्र चकोरि रहों नितहीं ॥३॥
वनकुंज कुटीर वसे निशिमें, मग प्राणप्रिया हरि हेरतहीं ।
कहैं कासि कासि वृषभानुसुता, मन दीन भये मुख टेरतहीं ॥
ललितादि सखी प्रिय आनि मिलै, विरहाजनताप निवेरतहीं ।
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, युगचंद्र चकोरि रहों नितहीं ॥४॥
मुरली खुरली घनघोर बजै, हरि लेय सबै चपला चितहीं ।
ग्रह काज तजै वन ओर भजै, द्दग नाहिं लजै सुर सूनतहीं ॥
रसरास विलाल हुलास हिये, वनसों वट सूर सुता जितहीं ।
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, युगचंद्र चकोरि रहों नितहीं ॥५॥
प्रियकंठसिरी दुलरी तिलरी, उरचंद्रहरा विमली दुतहीं ।
वनमाल विशाल गुपाल हिये, कटिकिंकिनि हार जटा जुतहीं ॥
इत चंद्रकला उत मोरपखा, छवि गौर इतै दुति श्याम तहीं ।
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, जुगचंद्र चकोरि रहों नितहीं ॥६॥

दृग मंजुलरेख रली कजरा, मृग खंजनमीन लजै चितहीं ।
अलकै घुंघरी विथुरी मुखपै, बदरा घिरिआये विना ऋतुहीं ॥
श्रुतिभूषन लोल दियें दमकैं, अलकान तरागन शोभितहीं ।
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, जुगचंद्रचकोरि रहों नितहीं ॥७॥
हंसि बोलन लोल कपोल थली, दशनावलि जोति छवी अतिहीं ।
भृकुटी कुटली अलकैं चपली, त्रिवली अलबेलि सुशोभितहीं ॥
चिबु चारु किशोरि किशोर वनी, नसुनी नमनी कमनी कितहीं
तिनकी छवि हेरि हिये हुलसों, जुगचंद्रचकोरि रहों नितहीं ॥८॥

इति छव्यष्टक सम्पूर्ण ।

अथ माधुरी अष्टकम् ।

उनमीलित नैंन उठे पर्यंक, झुके रससार पियें मदमों ।
छुटि केशन फूल झरैं खसकैं, उरमालतिमाल मली अधिकों ॥
दुति अंगन हेरि रहे तिय पी, दृगलाज सुधार नहीं मनकों ।
यह माधुरी नैंन लहौं नितहीं, चितलाय रहौं पदहीं विवसों॥१॥
सिग रैन जगें रसकेलि पगे, न अघात कुऊ तऊ दोहन मों ।
प्रति अंगन चिन्ह लखैं निशिके, मुसक्याय लजै सु रहे जवसों॥
सु नई नई भांति नई चित चोंप, दिये चिबु हाथ लखैं मुखकों।
यह माधुरी नैंन लहौं नितहीं, चित लाय रहौं पदही विवसों ॥२॥
विथुरी सुथरी शिथिली अलकैं, हलकैं मुख चंद्र प्रिये छविसों ।
दृग चारु चकोरि भये पियके, तिहिं वार सवार रहे तवसों ॥
कह व्याजन लाल लली तियके, कर लोल कपोल धरैं ढवसों ।
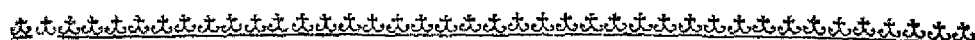
यह माधुरी नैन लहों नितहीं, चित लायरहों पदहीं विवसों ।।३।।
मृदु कोमल मंजुलता अतिहीं, विलसैं झुकिकैं तनयारावसों ।
कल कूकत मत्त मयूर घटा, घिरि दामिनि लौंकि रही नभसों ।।
तरुछांह दुऊ गलबांह दिये, बतरात खरे भर मैंन चखों ।
यह माधुरी नैन लहों नितहीं, चितलाय रहों पद ही विवसों ।।४।।
नवकुंज सरोवर में विहरैं दुउ होडन पैर गहैं द्रुम कों ।
वस भीज बढ़ी उमड़ी तनभा, जलसीकर की छविक्यों वरनों ।।
करछींटनकेलि मचावतहीं, लई अंकमलाल लली ललकों ।
यह माधुरी नैन लहों नितहीं, चितलाय रहों पदही विवसों ।।५।।
इत नैनन चाय मुरीहँसिकैं, उत ग्रीव नची अतिही छविसों ।
उर घायलई प्रिय मोहन, पी अधरामृत पान कियो ढवसों ।।
अति सीलरली दृग कोर मिली, लस वेशरमोति वडी फविसों ।
यह माधुरी नैन लहौं नितहीं, चितलाय रहौं पदही विवसों ।।६।।
अति आतुर कुंजविहार चले, भुजमेलि गले दृगजोर दृगों ।
पग लोल परैं भृकुटी फरकैं, सरमैं न चलैं चपली पलकों ।।
हँसबोलन धीर नहीं कितहू, चख चुंवतहीं रसके चसकों ।
यह माधुरी नैन लहों नितहीं, चितलाय रहों पदही विवसों ।।७।।
पिय चाहैं उरोज छुअें मिसकैं, तिय ढांपि लये पहिले पटसों ।
मनहीं मनमें समुझे मुसकैं, कुउ कोककलान घटी लवलों ।
कुच आन धरैं करतौ छवियों, कनकुंभ ढके जलजात दलों ।
यह माधुरी नैन लहों नितहीं, चितलाय रहौं पदही विवसों ।।८।।

इति माधुरी अष्टक संपूर्णम ।

अथ बारारवरी लिख्यते ।

श्रीचैतन्यउपासना, ज्यों खाँडे की धार ।
करियो हिये सियानमें, सजनी सोच विचार ॥१॥
कक्का कुंज कदंबकी, कमलदलनकी सेज ।
थकथक पखुरी सुमनकी, रस मनसिज आमेज ॥२
खखा खिरनी फालसा, लपटिलपटि वरवेलि ।
द्रुमनिद्रुमनि फैली लता, कृष्णा पीत चमेलि ॥३॥
गगा गुलमिहँदी खिली, और घोर बहुरंग ।
मल्ली चंपक मोतिया, मोन जुहीके संग ॥४॥
घघा घनी सुगंध मिलि, सीतल मंद समीर ।
लहिरदार वरहानमें, थिरकत डोलत नीर ॥५॥
नन्ना निसपति प्रभापरि, झलमलझलमल होय ।
पातपात जल पुलिनवन, होत प्रभातै जोय ॥६॥
चच्चा चातुरचंपिका, मिस कतिकी अस्नान ।
ल्याई पोटि लिवाय तहँ, राधे रूप निधान ॥७॥
छछ्छा छलवानि भामिनी, छली छैल नँदलाल ।
निकसि लतासौं जोरिकर, कही छबीली बाल ॥८
जज्जा जमुना न्हाइवे, जैये ना इतवास ।
इकली दुकली नववधू, निवहत नाडर स्याम ॥९॥
झझ्झा झकझोरी करत, झोरी भरि लपटाय ।
लटत पा तिव्रतधने, वा कदवतट आय १०

टटा टकीसी रहि लली, मुरकि चली घरघांहि ।
तनकदूर चालि सघन, वन डरपी तरवरछांहि ॥११॥
ठट्ठा ठग मगमें दुरयो, निनरें वोल्यो हाल ।
जानि छलावो कांपिकंपि, डरपि भजी वरवाल ॥१२॥
डड्डा डगरी मिली तिहिं, वहुरि सांवरी आय ।
भोरीवनि वूझी कथा, वोली धीर धराय ॥१३॥
ढढ्ढा ढरिये गांवकी, ढारन अमित उपाधि ।
रमिये मो फुलवारियै, नागर जत्त अवाधि ॥१४॥
तत्ता तौनीकी अली, प्यारी पाये प्रान ।
राजी फूलनसेजपै, श्याम सखी सनमान ॥१५॥
थथा थकीही गैलकी, पौढ़ि पलक गई लाग ।
चांपन लागी चरन चट, जगे सांवरी भाग ॥१६॥
ददा दीनी सैन चट, सखी संग ही जाये ।
जानि रसिकमणिको कपट, लुकी लता सुखहोय ॥१७
धध्धा धूधू करि धमंकि, धाई मनसिज फौज ।
आँनँदसिंधु हिलोरिकैं, उमगिउठी रति मौज ॥१८॥
पप्पा पीवत अधररस, चौंकि परी वरवाल ।
धकधक उरउठि भजत झुकि, श्रवन कहीमैं लाल॥१६।
फफ्फा फुस फुसकानमें, होन लगी वतरान ।
गुप्तगात लसि परसि हँसि, मोदभरी मुसक्यान ॥२०।
वव्वा वार विहाररस, उमग्यो सिंधु अपार ।
बूड्यो लाज जहाज भय, लखत न वारापार ॥२१॥

भम्भा भृकुटी के कसत, कसी अंक छुटिजात।
चांपत अधरहि बिसुध पी, प्यारीपै थहरात ॥२२॥
मम्मा मुचमोती चुभत, मुंचमुंच सठ नेक।
मुंचहुंगो तब योंहि कहि, बार एकसौ एक ॥२३॥
यया यया कहि जात ती, कहतन पूरो बोल।
मसकत पीतम उरू कटि, वत्त उरोज कपोल ॥२४॥
ररा रतिविपरीतकी, उठी मनैमन वेलि।
तिरसठ कैसो अंकचट, पलटि करन लगे केलि ॥२५॥
लल्ला लसि कसि पलटिहू, छुटै न केलि गँभीर।
अंक पहाडे नौजनौं, नौके नौरहें वीर ॥२६॥
वव्वा वा रसकेलिकी, वेलिबढौ दिनरैन।
जा सोभा लीने भये, रूमरूम तन नैन ॥२७॥
सस्सा सीरी पवन लागि, अलसाने अँगअंग।
अधर अधर धरि रहिगये, ज्योंके त्यों सँगसंग ॥२८॥
शश्शा शरवतमधुमिल्यो, सीतल ओस सिराय।
पियतसँगसँग अँग लसे, भाजन अधरलगाय ॥२९॥
हहा हुँहूँहाँहाँ सिसकि, करत किशोरी हाय।
त्रास न लावत वधिक पी, अधिक मसकि मुसक्याय ॥३०॥
अआ आरती फूलले, लुकीलुकी सुकमार।
भुकीभुकी वारैं मुदित, लखिलखि जुगुलविहार ॥३१॥
इई अआ करिकरि दुऊ, बोले खंडितवैन।
मदमाते कछु नींद के, मातेमाते मैन ॥३२॥

उऊ उरूविचि भींचि दृग, मींचि चूमि मुखचाय
ललिताकिशोरी तानि पट, दंपति रहे लपटाय ॥
एऐ केलिनिकुंजवन, लखी आजलौं मैं न ।
रघ्रनसों रहिये दियें, ललिताकिशोरी नैन ॥३४॥

इति बाराखरी संपूर्णम ।

अथ दूसरी बाराखरी लिख्यते ।

श्रीचैतन्य उपासना, ज्यों पैनी तरवार ।
करियो हिये मियानमें, सजनी सोचाविचार ॥१॥
कक्का करनो चाहिये, ज्ञानभक्ति वैराग ।
नामरूप लीलासहित, होय धाम अनुराग ॥२॥
खख्खा खीजि न जाइये, सुनत शक्ति उपदेश ।
का गृहस्त ब्रह्मचर्य का, का वैरागी वेश ॥३॥
गगा गई विहाय सब, झिगरे झांटे मांह ।
भजे न दंपति निसकपट, छिनहूं भरि चित चांह
घघा घरवैठे गढैं, रसिकाई की बात ।
जोकछु पूछौ मरमकी, शाखा मूल न पात ॥५॥
चच्चा चतुर उपासना, राखैं मन अभिमान ।
निगमागमकी विधि कहूं, सुनी न सपनिहुं कान
छछ्छा छलबल करि चहैं, रसिकन गनना होय ।
जानैं ना निजमंत्रको, रूपध्यानलौं जोय ॥७॥
जज्जा जान उपासना, निगमागम अनुसार ।

अनुराग का

श्री श्रीगौर नित्यानन्द
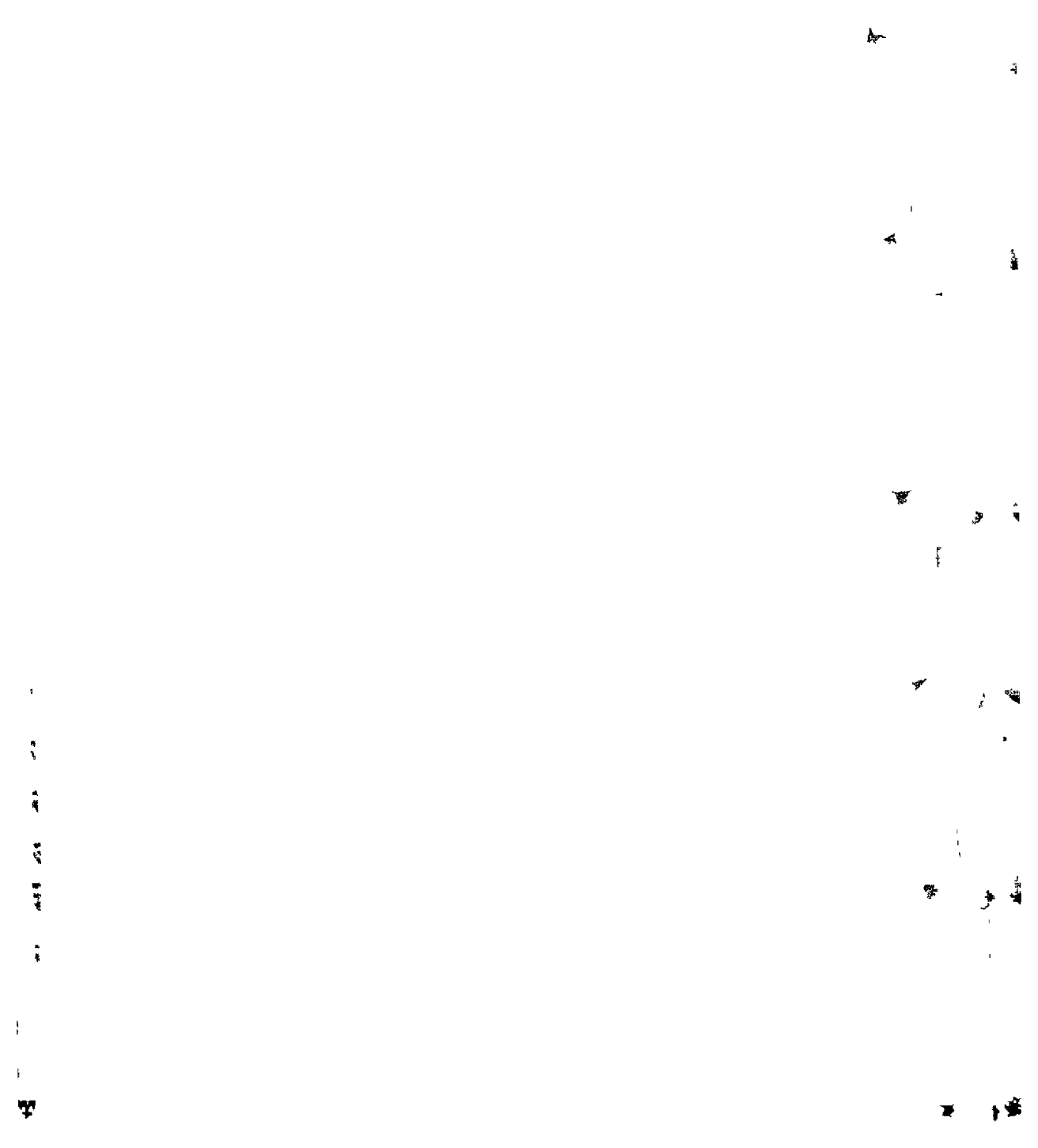
जाहीसों आचारियन, कीनों सब निरधार ॥८॥
झझ्झा झीनी बातहै, सहज नहीं बैराग ।
तामस ईर्षा मान मद, स्वाद प्रथमहीं त्याग ॥९॥
टट्टा टेढो अतिकह्यो, ताहूसों अनुराग ।
चतुरव्यूह कामादि तजि, रसझुनि दंपति लाग ॥१०
ठट्ठा ठाली क्यों भजौ, पढी जुगुलविहार ।
चोंचफारि रहिजाउगे, छिनमें पंचपसार ॥११॥
डंडा डगमग तन चरख, परी पुरानी माल ।
कातत बनै सु कातल्यो, पूनी भजन विशाल ॥१२॥
ढढा ढोल बजाय कें, मिले राधिका श्याम ।
चरचा चिह्ना करो कुछ, रहो चबाइग्राम ॥१३॥
तत्ता ताती पूरियां, तसीतत्ती खीर ।
फूंकिफूंकि जेवें जुगुल, गलगलबांहियां दै बीर ॥१४॥
थथ्था थारीमें करी, लली लीक मुसक्याय ।
लंपट मेरी ओर ना, परासि आंगुरी जाय ॥१५॥
दद्दा दैदीनी सपत, जेंवत छियो न लाल ।
तो जेंवो फिरि आपुही, नवल अछूती बाल ॥१६॥
धध्धा धर्म विचारकरि, योंयों खीर मिलाय ।
जेवों लै इठिलाव मत, दोनों मुख धमकाय ॥१७॥
नन्ना नाकेतिक करी, पै न विसाई एक ।
उरझेंइ राखें दपम्पताहि, सखियन के यह टेक ॥१८॥
पप्पा पै पीवें दुऊ, एक कटोरा मांहि ।

अचै पान करि पानधन, कुंज धंसे चित त्राँहिं ॥१६
फफा फिरकत फिरैं कहि, हम अनन्य जग माँहिं।
दूजैं दंपति मंदिरै, दरसन को नहिं जाहिं ॥२०॥
वव्वा वीतीविषैमें, अहंकार मम ताय।
दंपतिचरन न चित दियो हियरे कमल बसाय ॥२१॥
भभ्भा भूली ओरसों, अजौं संभारसंभार।
वृंदावन वस जुगुल भज, निशि दिन नाम अधार॥२
मम्मा मानस मानसव, आदर का अपमान।
तिहिं वैराग अनुराग में, सजनी पूरन जान ॥२३॥
यया यहीमाति राखिये, निशदिन मुख मुसक्यान।
ललिहीर हिये लालउर, लली न कीजै मान ॥२४॥
ररा रासविलासको, सुख लीजै दिनरैन।
रूपमाधुरी पियतरहैं, तबै सफल ये नैन ॥२५॥
लल्ला लीला जुगुलकी, नित्य नवीन दिखाय।
जो दीक्षाविधिसों चलै, सिक्षागुरु उरलाय ॥२६॥
वव्वा वारीजाइये, दंपतिकी रसतान।
अपने अपने ओसरे, वंसुरी को सनमान ॥२७॥
सस्सा संपति पायकें, दंपति के उत्साह।
खर्च न कीनी हर्ष तो, कहा रंक कह साह ॥२८॥
शश्शा स्यामास्यामको, हँसिहँसि कंठ लगाय।
सुमनसेज करकमलगहि, वरजोरी पधराय ॥ २६।
हहा हुंहूं हां लली की, एक न मोहन मान।

करनविहार उतारिदे, करसों भौंह कमान ॥३०॥
ईई इहां दूजीनहीं, मो सिवाय कोउ बाल।
देवालेई कीजिये, अधरामृत रस ख्याल ॥३१॥
ऊऊ उरलपटाय उर, मेलौ अधर कपोल।
लखौ आंख मूँदी महूँ, ले विहरौ दिल खोल ॥३२॥
एऐ केलि निकुंजवन, लखी आजलों मैंन।
रंभनसों रहिये दियें, ललितकिशोरी नैन ॥ ३३ ॥

इति दूसरी बाराखरी संपूर्णम्।

अथ बारामासी।

लगा असाढ बाढ जमुना अति, वरषा रितु आई।
रिमिझिमि रिमिझिमि मेहा वरसै, बूंदैं सुखदाई ॥
सुदामिनि दमक लगै प्यारी।
कोयल कूक मोरिला कुहकानि, पिकपुकार न्यारी ॥
वनैवन भीजत हुलसाहीं।
श्यामाश्याम रसिक रंगभीने, दीने गलवाहीं ॥ १ ॥
सावन मास सुहावन भावन, झींगुरवा वोलैं।
दादुर सोर मचावैं वनवन, इंद्रवधू डोलैं ॥
सखिन द्रुम डारिदियें झूला।
झमकिझमकि झूलैं झुकि गावैं, झोंटासमतूला ॥
सखीविच झीने सुरगाहीं।
श्यामाश्याम रसिक रँग भीने, दीने गलवाहीं ॥ २ ॥

भादौंरैन मैन उपजावन, घटा उठीं कारी ।
गरजघोरघन लरजत हियरा, आवत वौछारी ॥
चमकि चट पीतम गल लागी ।
सिसकारी भरि अंकवंक कल, केलिकलह जागी ॥
सुधारस पीवत अधराहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रंग भीने, दीने गलवाहीं ॥ ३ ॥
मासकुवार कुसुम वहु फूले, भांतिभांति वेली ।
सांझीकारन गई वीनिवे, नागरि अलवेली ॥
नवलनट नागरसों भेटी ।
जोटी वनी अनूप सुघरवर, कीराति की वेटी ॥
झमकि झुकि वीनैं फुलवाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रंग भीने, दीने गलवाहीं ॥ ४ ॥
कातिकमास पुनीतसवै जुरि, जमुना नित जाहीं ।
सजनी उठि सँगसंग कछुक वर, रजनीसों न्हाहीं ॥
सुघर मनि भामिनि वनि आली ।
घटवारिन घरामिल्यो कपटकरि, लंपट वनमाली ॥
निरखि छवि रविशसि सकुचाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रंगभीने, दीने गलवाहीं ॥ ५ ॥
मँगशिर रुचिर सीत सुखदायक, लोचन छवि आनी ।
राजे एकरजाई नेही, ज्यों राजारानी ॥
दुऊजन नूतन रसवेली ।
विलसत मेले ललितकपोलन, अंकम भरि हेली ॥

उठे दृग मीलित अलसाहीं ।
श्यामश्याम रसिक रंगभीने, दीने गलबाहीं ॥ ६
पूसमास पाला पतिखोवन, थरथर सिसकारी ।
लपटि गुपटि लपटी ही भावै, पीतम को प्यारी ॥
सनासन पवन चलै मीरी ।
कंपकंप उर लसै भांवते, मदन करै फेरी ॥
अरुणमणि मंदिर झठिलाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रँगभीने, दीने गलबाहीं ॥ ७
माहमहीना अतिरमभीना, छविवसंत छाई ।
द्रुम द्रुम पत्रन वीन प्रफुल्लित, सौरभ महिकाई ॥
सवन तन पीतवसन धारे ।
भोजन भवन पीत आभूषन, अँगअँग सिंगारे ॥
परसि मुखचुंवन ललताहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रंगभीने, दीने गलबाहीं ॥ ८
फागुनमास रंगीला, घरघर ढोलक डफ बाजैं ।
चपलि चपलि खेलैं चपलासी, अवला तजि लाजैं
चलैं रंग केशर पिचकारी ।
दुंद गुलाल घटा घिरिआई, भादौं अँधियारी ॥
मदन मदमाति विलसाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रँगभीने, दीने गलबाहीं ॥ ९
चैत गुलाव चटक चटकारी, भोरहिं हितकारी ।
सीतल मंद सुगंध सुहावन, मारुति रुचिकारी ॥

लता झुकि झूमिरही न्यारी ।
डोलत पवन मनौं, दंपतिपर होतीं बलिहारी ॥
उठे सुख सञ्जा जमुहांहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रंगभीने, दीने गलबाहीं ॥ १० ॥
ग्रीषमरितु वैशाख लाखगुन, रसिकन सुखदानी ।
मधुरगुलाबछिराकि खसखाने, सेज अतरसानी ॥
छुटैं जलजंत्रन फूहारी ।
त्रिविध समीर लगत झुकिआईं, अँखियां मतवारी ॥
भटू घनदामिनि लपटाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रँगभीने, दीने गलबाहीं ॥ ११ ॥
मासजेठ रसपैंठसनेहिन, रजनी हितकारी ।
सीतल ललित समीर मनोहर, चंदा उजियारी ॥
अटारी सुमनसेज राची ।
पौढे पीवत अधरअमीरस, केलिकलह माची ॥
मिलति रति नैनन मुसकाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रँगभीने, दीने गलबाहीं ॥ १२ ॥
रंध्रनजाल दियें द्दग आली, निरखैं रतिशोभा ।
रहीं चित्रसी लिखी सखीसब, तनमन छवि लोभा ॥
लसे कसे उरपिय प्यारी ।
ललितकिशोरी जुगुलचांदपै, झूमझूम वारी ॥
सु नलिवलि दामिनि घन जाहीं ।
श्यामाश्याम रसिक रंगभीने, दीने गलबाहीं ॥ १३ ॥

इति बारामासी समाप्तम् ।

अथ दूसरी बारामासी।

जुगुलविहरन कहानी मैं सुनाऊँ।
कि बारामास गुल वरें उडाऊँ॥ १॥
अली आसाढ का अब मास लागा।
कि यकयक पीतसों नृपकाम जागा॥ २
चहूं दिशि घोर दल बादलके छाये।
नगाड़े मेघ ने कड़के सुनाये॥ ३॥
लियें बिजुलीकी शमशेरैं व बरहिना।
सखी नवनेहके बखतर को पहना॥ ४॥
बनी रसरंग भूवनकुंज हेली।
जुगुलजोधा मिले भुजगलमें मेली॥ ५॥
छुरी मुसक्यान की सँग सैनकारी।
चलीं दुऊओरसे भृकुटी कटारी॥ ६॥
निरखि रसरँग बरसै अलिन अंखियां।
सु जैजै कार बोलै सकलसखियां॥ ७॥
लगी सावन सुहावन तीज आई।
उठी कारी घटा घनघोर छाई॥ १॥
लहिरिया चूनरी सूही सुरंगी।
कसे अंगअंग कंचुकि रंग बिरंगी॥ २॥
रंगीली डार झूला झूलें खडियां।
भरे रचि मांगमें दुर मोती लडियां॥ ३।
झुलै घनश्याम सँगलै झोंट प्यारी।

चमक दामिन उडनअंवरकिनारी ॥ ४ ॥
रमक सीरीपवन फुसफुस फुहारी ।
परस अंगों मुदित अति पीयप्यारी ॥ ५
अली वकपांति वांकी घन सुहावैं ।
नफीरीसी झींगुर वनवन वजावैं ॥ ६ ॥
लगा सावन सुहावन रसवतासे ।
हरी भई भूमि तृन नूतन निकासे ॥ ७ ॥
पवन झकझोर हरियाली हिलोरै ।
चलै विचवीच वरषा नीर जोरै ॥ ८ ॥ २ ।
भरे भादों अंधेरी छवि अपारी ।
भई दिन दोपहरकी रैन कारी ॥ १ ॥
पखेरू उड वुसैं घर घोस मेंरी ।
जगी आतिश हिये चकवा चकेरी ॥ २ ॥
वहैं जल वुलवुल अति नीके लागैं ।
थिरक आंगनमें इतके उत सुभागैं ॥ ३ ॥
न सूझै हाथ झूमी झुकि घटारी
निहारैं छवि जुगुल ठाढ़े अटारी ॥ ४ ॥
गगन दमकै छटा इत रूप गोरी ।
नवल घनश्याम अंग दुरदुर किशोरी ॥ ५
उतै वकपांति नभ टुक भूल कि जावै ।
इतै वनमाल मुक्ता मन लुभावै ॥ ६ ॥
उतै जल इत सुरतिरसरंग वरसै ।
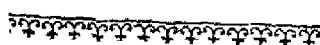
ललितकिशोरी लोचनकेलि सरसै ॥ ७ ।
महीना फागका सजनी सुहाया ।
सनेही श्यामके भागों से आया ॥ १ ॥
हुआ गुलनार वनवन फूलि आली ।
छई झमझुम पैक्या टेसूकी लाली ॥ २ ॥
कहीं कचनार गुलतुर्रा निवारी ।
कहीं गुलमेंहदी सब्बोकी क्यारी ॥ ३ ॥
कहीं गुलसेवती नरगिस दुपहिरी ।
कहीं सूरजमुखी फूली सुनहिरी ॥ ४ ॥
सवी द्रुमवल्लियां पन्ने के रंग हैं ।
नवेली कामिनी नायकके सँगहैं ॥ ५ ॥
पपीहा जोशमें पीपी पुकारै ।
रंगीली कोयली कस कूक मारै ॥ ६ ॥
सुरीली कोकिला रहिरहिक बोलैं ।
जहांतहां नाचत मग मोर डोलैं ॥ ७ ॥
घडी दिनचारिके रहिते विपिनमें ।
छिपा घनश्याम आके वन सघनमें ॥ ८
उसी जाना गहां राधाकिशोरी ।
पधारी तोडते फूलोंकी झोरी ॥ ९ ॥
निकट नवकुँजके जब प्यारी आई ।
झमाकि घनश्यामने झलकी दिखाई ॥ १
गई सब भूलि भामिनि सुरति तनकी ।

भई वेहाल लखि छवि श्यामघनकी ११
गहे द्रुमडारियां घूंघट निवारैं।
विलोकैं रूप यक टक पल न मारैं ॥१२॥
रंगीले श्यामने वंशी वजाई।
रंगीली तान गोरीमें सुनाई ॥१३॥
लखी जब झूमने वद हास प्यारी।
लगाई गल लपकि चंचल विहारी ॥१४॥
सघनवनकुँजमें रसकेलि कीनी।
ललितकिशोरि कस गलवांह दीनी ॥१५॥४॥
लगा रसभीना कातिकका महीना।
अँगूठी वारामासी का नगीना ॥ १ ॥
सुवह उठि नारिनर जमुना नहावैं।
औ सालिग्रामपर तुलसी चढ़ावैं ॥ २ ॥
कोई लै खंजरी खुमखुम वजावैं।
कोई भगवतको दै ताली रिझावैं ॥ ३ ॥
कोई जपजोग कोई नेम साधैं।
कोई तुलसीकी फेरीदै समाधैं ॥ ४ ॥
हमारे लाडिली लालन पधारैं।
घडीदोरातिसे वनमें विहारैं ॥ ५ ॥
कहूं मैं हे सखी तिनकी कहानी।
के जिनका रूप लखि अँखियां लुभानी ॥ ६ ।
किया घनश्यामने भामिनि का भेषा।

पहिरकर चुनरी चिकनाय केशा ॥ ७ ॥
सखी सँग साँवरी जाने ठिकाने ।
चली जमुना के न्हाने के बहाने ॥ ८ ॥
इतै अलियान सँग प्यारी पधारी ।
निशाकारी सहस शसिसों उजारी ॥ ९ ॥
सु जोरी श्यामसित चंदाकि हेली ।
तिहरामें अली हंस कंठ मेली ॥ १० ॥
रसीली सहचरी अंकम मिलाई ।
नवेली नारि गलवहियां दिवाई ॥ ११ ॥
निहारैं रूप अलि लैलैं वलैयां ।
चलैं झुकि झूमि झुम मग धरत पैयाँ ॥ १२
सघन वनकुंज यक मारग निहारी ।
मनौं रति कामने निजकर संवारी ॥ १३ ।
तहां सखियान गहि दंपति विराजे ।
विशदढ़ुंदुभि भवन मनमथ के बाजे ॥ १४
छिपे पत्रन झमन दोऊ विहारैं ।
ललितकिशोरि रंध्रन छवि निहारैं ॥ १५ ॥

॥ ५ ॥

लगा मँगशिर शिसर के घर वधाई ।
सबी नरनारियों ओढी दुलाई ॥ १ ॥
झमक करके गुलाबी जाडा आया ।

सनेही आँखियों में सुख समाया ॥ २ ॥
हमारे लाडिली लालन छबीले ।
दियें गलवाहियाँ सुंदर रंगीले ॥ ३ ॥
सुहाये ओढे येकी ही दुसाला ।
सु आये पहिन गल येकी ही माला ॥ ४
गुलाबी मणिमहल नूतन में राजे ।
रँगीली सेज कोमल पै विराजे ॥ ५ ॥
ललित कीशोरि लखि छवि ले वलाई ।
रँगीली मनमदन केली सुहाई ॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

लगा अव पूस हिम खम ठोक आया ।
हहाहा शोर सीसी का मचाया ॥ १ ॥
किशोरी श्याम घन जमुना नहावें ।
कँपाकँप नीर में दांती वजावें ॥ २ ॥
अँगोछे अंग पलटे पटन वीने ।
झलामल होंय भूषन वस्त्र झीने ॥ ३ ॥
छबीली कुंजमाणिकमणि पधारे ।
बिछे कोमल गलीचा गुदगुदारे ॥ ४ ॥
रँगीली गुदगुदी सेजा सुहाई ।
मनौं मनसिजने अपने कर बिछाई ॥ ५
अँगीठी नूरकी चहुँ ओर दमकें ।
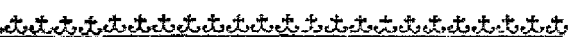
हरयक ताखोंमें नग मधुशीसे चमकें ॥
दोऊ पी प्याले वीडी चाबि मोये ।
दिये पट केलि रति कुलकानि धोये ॥

॥ ७ ॥

मकर सुखकर निकर शोभाका आया
वसंती ठाठ सबजगने बनाया ॥ १ ॥
गुलेदाऊद सरसों सँग फूली ।
विकस सूरजमुखी नवडार झूली ॥ २
बहार आई चमन कुसमित वहारी ।
कि बौरे अंब कू कोयल पुकारी ॥ ३
कहीं नीबू कहीं नारंज फूले ।
कहीं नारंगियों के गुच्छ झूले ॥ ४ ॥
विपन पीपी पपीहा आ पुकारे ।
सखी ये कामके हरवल पधारे ॥ ५ ॥
मदन पहुंचा धनुप भृकुटीन ताने ।
बचैगी पंचसरके को निसाने ॥ ६ ॥
अलीयोंने डफोंपर हाथ फेरे ।
उठी गुंकारदल मनसिजके घेरे ॥ ७ ॥
पहिर पोशाक जरतारी वसंती ।
चलीं व्रज नारियां पंती कि पंती ॥ ८
चपल नव दामिनी मैना सुहाई ।

करी कंदर्पपै मानौं चढाई ॥ ९ ॥
उधरसे श्यामघन सजि गर्जि आया ।
मदन दोहून वनवीथिन दवाया ॥ १० ॥
दुऊ दुउ ओर तेग अवरू संवारी ।
लगे दृगकोरकी मारन कटारी ॥ ११ ॥
जवी चहुंओर घन दामिन न घेरा ।
कदम की कुंजमें कीना वसेरा ॥ १२ ॥
वहां से वान सौरभके चलाये ।
जुगुल रसरोस हो हो करकै धाये ॥ १३ ॥
पकर मनसिजको छाती वीच चाँपा ।
सिसककर हाथ थरथर अंग काँपा ॥ १४ ॥
नजर दी जोर करि रति अपनी रानी ।
हुवा मन आनंद मन दोउनके मानी ॥ १९
पडा जव पांव फिर राजा वनाया ।
सरोपा केलि मनसिजको पिन्हाया ॥ १६ ।
नगाडे किंकिनी वज सोर सरसा ।
ललितकिशोरि कीजै रंग वरसा ॥ १७ ॥

॥ ८ ॥

लगा फागुन सगुन रसिकों को आया ।
हियेमें कामने ऊधम मचाया ॥ १ ॥
गँसीले नैंनका भाला सँभाला ।

पतिव्रतको दिया देश निकाला ॥ २ ॥
यही चहुं ओर गुँजारैं हैं भौंरी ।
न कुलकी कानि कोई अब करोरी ॥ ३
यही कोयल पिकी कोकिल पुकारी ।
ठँपो मति चाँदसे मुखडेको नारी ॥ ४ ॥
हमारीसौंहं सब घूंघट उघारो ।
रँगीली नैन भरि पीतम निहारौ ॥ ५ ॥
कहांकी लाज सब संकोच त्यागो ।
झमककर क्यों गले पीतम न लागो ॥ ६
यही मृदंग डफ मुरली पुकारै ।
धरम होलीमें परनारी निहारै ॥ ७ ॥
अचानक श्यामघन पिचकारि ताने ।
सो तक तियआया छतियों के निसाने ॥
अकेली ना लली सरबोर कीनी ।
सबीके येक दो पिचकारि दीनी ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

महीना चैत का चिंता हरन है ।
झरन छविचार वन शोभा करन है ॥ १
न गरमी ठंड मौसम रँग भीना ।
न थरथर अंग नहिं गातों पसीना ॥ २
विपिन फूला हैं टेसू रंग छाया ।

मदन सुखचैनका झंडा चढाया ॥ ३ ॥
सवेरे पौ न फूटे पौनसीरी ।
चलै खसबोइ लीये धीरी धीरी ॥ ४ ॥
चले उठि सेज से घरको छबीले ।
झुकी फिर नींद अरसाने रंगीले ॥ ५ ॥
परत पग डांवां डोली नैन झुपके ।
झुके लपटाय तरवरतर न टसके ॥ ६ ॥
सखी वीछाई तहँ तुरतै उपरनी ।
लडैती लाल छवि नहीं जात बरनी ॥ ७ ॥
जगैं सोवैं छिन करति रंग राते ।
ललिताकिशोरि वलिवलि नींद माते ॥ ८ ॥

॥ १० ॥

लगा वैशाख ग्रीषम ऋतु सुहाई ।
सु सीरी पौनने मांगी विदाई ॥ १ ॥
कली गुलाव चट चटकारी देवैं ।
भँवर फिराफिर बलैयां वीर लेवैं ॥ २ ॥
विपन फूला सुरँग टेसू सुहावै ।
पु लालालाल कोसोंलौंत दिखावै ॥ ३ ॥
सुई चोंचोमें टेसू फूल दावे ।
उडी फिरतीहैं मानौं लाल चावे ॥ ४ ॥
हेरनके छोटछोटे छौने डोलैं ।

मुदित आपसमें छूछूकर कलोलैं ॥ ५ ॥
लगे खसखाने रसखाने तखाने ।
छिडक गूलाब किवडा जल मिराने ॥ ६
छुटैं जलजंत्र नानाविधि फुहारे ।
चलैं तुके कहूं नूतन हजारे ॥ ७ ॥
भवन भीतर रतन नीहिंर बनाई ।
फटिकमणि जावजा चादर छुडाई ॥ ८ ॥
फटिक अखिनीवनी मृदुली सुहावै ।
जिसे मखमलभी लखते ही लजावै ॥ ९ ॥
छिड़क चंदन सुवासित नीर सजनी ।
बिछाई सेज तिसपर चित्तहरनी ॥१०॥
बिछौने फूल पंखीके बिछाये ।
मृदुल फूलोंके तकिये साजि लगाये ॥११॥
विराजे श्याम श्यामा रंगभीने ।
मिलाये कोरहग गलबांह दीने ॥१२॥
पवन टटियोंसे सीतल मंद आवै ।
पियारी लालका तनमन सिरावै ॥१३॥
पडै उड अंगअंग सीतल फुहारी ।
उठैं तन रूम मुख चूमैं विहारी ॥१४॥
मनौं हिम मास अति दंपति विहारैं ।
ललितकीशोरि छुकि शोभा निहारैं ॥१५॥
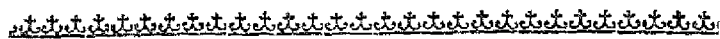
॥ ११ ॥

महीना जेठका सुखरंग भीना ।
रसिक दंपतिके चितको चैन दीना ॥ १ ॥
छबीली नीलमनकी कुंज आली ।
हरित मनिवर मनोहर द्वार जाली ॥ २ ॥
दरनदर हौद मनि जलजंत्र छूटैं ।
मिहीं धारन हजारे मनको लूटैं ॥ ३ ॥
फटिक गमलोंमें वेली छोटीछोटीं ।
फलीं फूलीं नवेली जलमें लोटीं ॥ ४ ॥
निरखि पायोंसे जल चादरकी छूटन ।
छिनौं मन मै न लहिरैं लेत नूतन ॥ ५ ॥
चिकैं दरदर कुसुम कलियोंकी महिकैं ।
सु थरथर बुलबुलैं उडिउडिके चहिकैं ॥ ६ ॥
लगी चहुं ओर खस टटियां सुझीनी ।
हजारोंकी परन तिनपर मिहीनी ॥ ७ ॥
कभी अलि केवडे जलके हजारे ।
कभी करपूर वासित जल फुहारे ॥ ८ ॥
कभी जलवर्फ पिचकारिनि सिंचारी ।
लगै जल झिलमिलन नैनों को प्यारी ॥ ९ ॥
भरी गंभीर चहुंदिशि नहिर ओरी ।
हजारोंकी झरी वरखासी होरी ॥१०॥

हरितमनि अति मृदुल अलि कुंज अवनी
अकथ सुखदेन अंग सीतल सु रमनी ॥११
रची किसलय कमल दल सेज आली ।
प्रिया प्रीतम विराजै अति खुसाली ॥१२॥
पवन झकझोरि मिलि टट्टियोंसे आवै ।
सुसीतल अति सुगंधित अंग सुहावै ॥१३॥
सखी साजि जलतरंग मुहचंग सितारी ।
बजावैं गति मधुर महुवर कि तारी ॥१४॥
झुकीं पलकें छई मनसिज खुमारी ।
भई छविपर ललितकिशोरी वारी ॥१५॥
बहाने से सबी सखियां सिधारीं ।
किवारीदे लगीं मोखों सुखारीं ॥१६॥
ललित माधुरि छके कलकामकेली ।
अली अँखियां छकीं लखि छवि नवेली ॥

इति दूसरी बारहमासी सम्पूर्णम् ।

अथ विनय ।

। सब भांति बिगारी ।
निगम मरजाद कान कुल सुख विराथ उरसे
कुंज निवास स्वामिनी करुणा करि बलि

ललिताकिशोरी त्रास नासिहै एक आस सरनागत प्यारी ॥ १॥

कबहुंक ऐसी बनानि बनैंगी ।
गोस्वामी श्री गल्लू जी सी मेरी मति रति रूप सनैंगी ॥
रुचिहै ना चित छांडि जुगुलजस ना रसना कछु और भनैंगी ।
ललितकिशोरी सुलभ जबैतैं पतित उधारन पनै पनैंगी ॥ २ ॥

हाहाहा अबछिमौ किशोरी ।
बहुत नसी यह वैस वृथाहीं बिन देखे सुंदरबरजोरी ॥
ऐसी करो कछु वेगि स्वामिनी कृपावलोकन लखि निज ओरी।
निरखत रहौं तुव ललितमाधुरी डरी नित नवकुंजन खोरी ॥ ३ ॥

श्रीवृन्दावन वास दीजिये आस यहै वृषभानदुलारी ।
वंशीवट तट नटनागर संग करत केलि अवलोकौं प्यारी ॥
ललितकिशोरी हूक उठत ही फूंकि वंसुरिया की दइ मारी ।
दरसन बिन चित विकल रहत अति राधा हरौ यह बाधा हमारी ॥४

श्री वृषभानकिशोरीजू कब जग उपहास मिटैहौ ।
इंद्रिन बसै जिन जानि हंस्यो मुहि तिन दृग सकुच करैहो ॥
ललितकिशोरी नित्त निकुंजन श्रीवन माहिं बसैहौ ।
करुनाचितवनि चितै स्वामिनी निजदासी न हँसैहौ ॥५॥

बनै न मो अघ स्वामिनि हेरे ।
रक्तबीज के बुंद बढत ज्यों त्यों ये छिनाछिन अमित घनेरे ॥
नासैं तुव दृक कृपा विलोकन हरैं न ये पल निज बल मेरे ॥
ललिताकिशोरी विपिन बसावो काटौ मोहफांस उरझेरे ॥६॥

भैरवी ।

अधमउधारन धांक तिहारी ।
पतितन वीच चक्रवर्तीहों पापिन मध्य तिलकधारी ॥
सहजहिं वन्यो बनाव भांति सब अब विलंबका क्यों प्यारी ॥
करुना करि वनवास दीजिये ललित किशोरी वलिहारी ॥७॥

भैरवी ।

अमित पतित यक ठौरे करिकर राच्यो विधि मम कुटिल शरीर।
पुलकित होत गात ना सुनिसुनि श्यामा श्याम नाम ओ वीर ॥
धिकधिक जनम जुगुलजसगायें बहत प्रवाह न नैनन नीर ।
निजपन सुमिरि वास मुहिं दीजै ललिताकिशोरी निधुवनतीर॥८

काफी ।

हौं पापिनमें भान सरन तुव चरनन ।
मोरे उदय होत सब अथये अधम पतित सामिहू तारागन ॥
तपत रहत नित विषय वासना सीतल करो छिरक करुना कन
ललितकिशोरी मान निहोरी दीजे वास वेगि वृंदावन ॥ ९ ॥

कलिंगड़ा ।

श्री चैतन्य वनैं निरवाहे ।
दीजै वास विपिन अवलोकों तुम छवि हित मेरे दृग दाहे ॥
ललितकिशोरी को दयाल सुन जो या पापिन को अवगाहे ।
तुवनखचंद्र दरस दुर्लभज्यों चूमनचंद्र चकोरी चाहे ॥१०॥

कलंगड़ा ।

नमोनमो श्री ललिता देवी ।
प्रघटी रसिकलाल मोहन हित प्यारी पदसरोज नित सेवी ॥
मनवांछित जाचक फल पैहैं सोना अंवर रतन जलेवी ।
यही वीनती ललितकिशोरी श्रीवनवास भीखमुहिं देवी ॥११॥

काफी ।

मो पापिनतें पुन्ती भाजैं ।
जिनि असपर्स होय अंग मेरो पाप नगारे नौवत वाजैं ॥
घसन न दें दरवार स्वामिनी निसदिन पातक सिरपर गाजैं
चरण सरण राधे मो उपजें पतितन आदि अजामिल लाजैं॥१२॥

झंझोटी ।

पतितन तारिवेकी घरी ।
रही न ठौर कुंजकी गलियन पापिन भीर भरी ॥
ललितकिशोरी नींदविवस सब निशितें द्वार अरी ।
पहिली नजर करौ मो मुजरा कलगी शीस धरी ॥
राधागोविंद पदसरोजराति लपटी धूरि परी ।
अब वकशीस इस मुहिं दीजे वृन्दावन डगरी ॥१३॥

काफी ।

कहियो वा वेपीरसों वीरा ।
मृदुमुसकानियां जालिम तेरी जी हरनेको होगई हीरा ॥

होतीहैं किरचैं हियराकी ललितकिशोरी वंध न धीरा ।
दै गलवांह दिखा प्यारी के ऑकी छवि अन्वासी चीरा

झंझोटी ।

श्रीराधारानी श्रीवन दृग दरसावो ।
अंकित पग मग धूरि विपिनकी मम अंगन परसावो ॥
ललितकिशोरी रसिकलाल संग सुरतिरंग वरसावो ।
उमहीं घटाविजुरिया लौंकत जीरा जिनि तरसावो ॥१८
तुव मुख देपि देपि हौं जीवी ।
निशिदिन आस वास वृंदावन रूप सुधारस पीवी ॥
ललितकिशोरी क्यौं तरसैये टुक मो हेरि गरीवी ।
दरसन दै नव वालविहारी मन मानै सो कीवी ॥१६॥

॥ झंझोटी ॥

राधारमण चरण जो पाऊं ।
सुक समान दृढ करगहि राखौ नलिनी सम दुलराऊं ॥
सौरभजुत मकरंद कमलवर सीतल हिये लगाऊं ।
विरहजनित दृग तपनि किशोरी सहजै निरपि नसाऊं ।

झंझोटी ।

जुगुल भजन विन आयु सिरानी ।
सोवत खात जात निशि वासर विपयिन संग नसानी ।

अव लागी अवसेर दरसकी मन मुसक्यान न समानी
ललिताकिशोरी श्रीवृंदावन देहु वास वनरानी॥१८॥

खम्माच ।

शोभा लालनकी विनदेखे रह्यो न जाय ।
जवसे सुनी मुरली धुनि आली घर अँगना न सुहाय
थहरिथहरि कँपै मो हियरा रहिरहि जिय अकुलाय ।
थिरकिथिरकि फिरकै री कन्हैया मुरकिमुरकि रहि जाय
गोपिन सँग जमुना तट विहरत नट वंशीवट जाय ।
सो छवि नैनन पैंड अलीरी हियरे रही समाय ॥१९॥

खम्माच ।

जुगुलविहारी के विन देखे अँखियां रोइ मरीं ।
रूपमाधुरी पान करे विन अंसुवन झरत झरीं ॥
रहौ प्रान के जाहु आली हठ दरशन काज अरीं ।
ललितकिशोरी निलज भईं अति मानत ना निदरीं ॥२०॥

राग झिंझोटी ।

श्री वृंदावनरज दरसावै सोई हितू हमारा है ।
राधा मोहन छवी छकावै सोई प्रीतम प्यारा है ॥
कालिंदी जल पान करावै सो उपकारी सारा है ।
ललितकिशोरी जुगुल मिलावै सो अँखियों का तारा है॥

झिंझौटी ।

श्रीवृंदावन वास दीजिये यही हमारी आशा है ।
जमुना कूलन छाँह माधुरी जहाँ रसिकों का वासा है ।
सेवाकुंज मनोहर सुंदर यक रस बारोमासा है ।
ललितकिशोरी का दिल वेकल जुगुल रूप रस प्यासा है

ईमन ।

राधामोहन मो तन हेरो ।
मति सकुचाव नैन मति मरमों चितवन चकित न फेरो
विसरी वतियन मुख नहिं धरिहौ वृथहिं करत अवसेरो
ललितकिशोरी देहु कृपाकरि श्रीवन माहि वसेरो ॥२३

ईमन चौताला ।

जमुनाके नीर तीर त्रिविध समीर वहै
बोलैं पिक कीर तहाँ लाडली गुनान गाऊं ।
नैन द्रुम कुंज लहों वैनन श्रीश्याम कहौं
वृंदावन वास चहौं सपने न आन जाऊं ॥
ललितकिशोरी वारि वारियों निहोरी कहै ।
कहैं कुँवरि किशोरी भोरी चित चरनान लाऊं ।
कैसे कर जीजै तन छीजै करलीजै निज
ये ही सुप्रसाद दीजै राधिका प्रसाद पाऊं ॥२४॥

देस उतरी

कौन चूक चित धरी स्वामिनी जो मम सुरति विसारी ।
निज सेवातें छेंकि दई हा श्रीवनतें करी न्यारी ॥
जद्यपि नहिं उचित कछु कहिवो दुख नहिं जात सहारी ।
ललितकिशोरी वेगि बुलावहु करौ टहल अधिकारी ॥२८॥

देस उतरी

अव विलंव जिनि करौ लाडली कृपा दृष्टि टुक हेरो ।
जमुनापुलिन गलिन गहिवरकी विचरौं सांझ सवेरो ॥
निशि दिन निरखौं जुगुलमाधुरी रसिकन तें भटभेरो ।
ललितकिशोरी तन मन अकुलित श्रीवन चहत वसेरो ॥२६

सोरठि ।

राधे बहुत भई अव माफ करो ।
श्री वृन्दावन सुख दरसावहु ऊक चूक उरमें ने धरो ॥
अपनो करि जन नाहिं निवारो ता प्रणतें अवहू न टरो ।
ललितकिशोरी गिनौ न औगुन निजकरुनाकी टरनि टरौ॥२

जै जै वंती ।

कालीदह कूल कुंजके माहीं भ्रमरी ह्वै घुमडारि रहौं ।
कीर कोकिला ह्वै निधुवनमें मधुरे राधानाम कहौं ॥

गुल्म लता गहिवर की ह्वैकै वृंदावन को वास चहौं।
ललितकिशोरी रेणु कीजिये जुगुलचरण उर आंक रहौं॥२

जैजैवंती।

मानस तन जब मैं पाऊं सेवत रहौं तुव संग अली।
पशु पच्छी तृण जोनि होहुं जो निशिदिन विचरौं कुंजगली
शाखा द्रुम फल फूल पता हौं मोकूं जहँ रहस थली।
ललितकिशोरी बसौं बरसाने विनय यही वृषभानुलली॥२

बिहाग।

नाचौं जुगुलबिहारी आगे अंग मोरिकै भाव बताऊं।
पंचम राग बिहाग अलापौं मधुर मधुर बीन बजाऊं॥
बंशीवट तट राधा मोहन ललित किशोरी जो लखि पाऊं
मोट बांधि कुलकानि लाजकी कालिंदी मंझधार बहाऊं॥

परज।

जमुनापुलिन जुगुलवर बिहरन
हंसन खेलन उन संग उरझी रहौं।
वंशीकी धुनि सुनि रहत बनत नहिं
गुरजन लजौं न मन मुरझी रहौं॥
रूपके निहारिबे को जाऊं मैं निसंक होय कै
लोकलाज कानि कुल सुरझी रहौं।

ललितकिशोरी गोरी हरपि निरखि
श्यामाश्यामके सुभाय सुखपाय उरझी रहों ॥३१॥

जै जैवंती ।

प्रीति पगपगाय प्राण प्यारे भो प्यारीके
पीरिहू पराई पै खवरि नाहिं लेत हौ ।
गुंगगुरखाय ऐसे बैठे हो भुराये तैसे
सुनत न वात विसराये जैसे हेत हौ ॥
ललितकिशोरी रीति प्रीतिकी न जानौ कछू
करत अनीत ना जानत संकेत हौ ।
सुनेहे शयाने श्याम अयाने से लखे परौ
रूपरस लुभाने को वियोग घूटी देत हो ॥ ३२ ॥

राग जै जै वंती ।

चतुरशिरोमणि रसिकछयलवर वात नहीं विरमावो ।
छल वल करि ललितादि नागरी जिहिं चाहो तिहिं पंथ लगावं
ललितकिशोरी क्यों मति भोरी काहे मेरी सुरति भुरावो ।
ललित माधुरी शरण तिहारी अव कैसिहु स्वामिनि अपनावो॥

ईमन मारफत ।

गौर श्याम रंग अंग रंग्यो मम छिनछिन दुगुन होत उर ललं
नील दुकूल पीतपट ओढे निरखौं जुगुल परैं नहिं पलकैं ।

निठुर वानि तजि वेगि बुलैये करिये कृपाकोर भलि भलकें।
ललितकिशोरी कंजर नैनन गौरस्याम असुवा अति छलकें॥३

दोहा।

पीतम प्यारे लालजू, प्रिया प्रेम रसखान।
ललितकिशोरी बोलिये, श्रीवन अपनो जान॥३५॥

राग ईमन झूलना छंद।

सुभग चंद्रिका शीस स्वामिनी मोरमुकुट लालन शिर कैसे।
नीलवसन पीतांवर सोहैं विहरत कुंजन में रसमसे॥
गुरजन दुरजन लजे नेक ना ललितकिशोरी नैनन फंसे।
इकलाज खसे कह काज नसो छविराज जुगुलहग आनि वसे॥३६

सारंग।

वृंदावन कुंजनमें कवधों रचिराचि खसको वंगला छावौं।
सुमन नवेली अति अलवेली चहूंओर इतउत लपटावौं॥
छिडौं अतर अरगजा चंदन हरवेंहरवें विजन ढुरावौं।
गौरश्याम पौढे दोउ निरखौं ललितकिशोरी नैन सिरावौं॥३७

सारंग।

छूटिपरी वेनी वनवीथिन फूलन नवल किशोरी।
ढूंढन पठई रूपमंजरी मिसकरि श्रीनिधुवनकी खोरी॥

हरिसों कही हेरिलै आवहु गई खोइ यह बन सखि मोरी।
ललितकिशोरी रूपमंजरी हरिबेनी निरखौं यक ठोरी ॥३८॥

सारंग।

गोविंदकुंड गोवरधन खेडे जुगुलविहारी कुंजन हेरौं।
चरनन गिरौ शीस नहिं उनवौं गाढि गहौं दृगन जल गेरौं॥
पानि जोरि करुनामय विनवौं रसनहिं राधामोहन टेरौं।
ललितकिशोरी वदनचंद लखि अकुलित नैनन ताप निवेरौं॥३९।

सारंग।

चिन्हित पगतल जुगुल चरनतें निरखौं कब कालिंदी तीर।
स्वेदबिंद छवि श्यामगौर अंग ढोरि सिरावहुं विजानि समीर॥
मान निवारि मानिनी भामिनि ललितकिशोरी कुंजकुटीर।
मिलहु विहसि भरि अंकु रसिकवर नागर सुंदरश्याम अधीर॥४०।

काफी।

मिलना वे दिलदार सांवरे।
हुसन तुसांडे चूर हुवा दिल लीता तैनूं कवका दांवरे॥
बांकी अदाँ चस्मोंमें वसँदी दीठा परै न दूजा ठांवरे।
ललितकिशोरी नूंलख समुझावो एकनहीं मेरेमन भांवरे॥४१॥

काफी।

मिलनां वेमहिवूंब विहारी।
मोरमये वृंदावन कुंजों जाना होकर गली हमारी॥

मृदु मुसकन सानूदिलविच भौंदी झमक चलन नूपुर धुनि ।
ललिताकिशोरी सांवरी सूरति घुंघरीअलकों पर बलिहारी ।

विहाग ।

विन देखे वृंदावन राधे कबलौं याही भांति वितैहौं ।
पैहौं वास पास वंशीवट कबधौं चितवन कृपा चितैहौं ॥
गरवाहीं दै मोहनके संग मिलिहौं कब करि दया हितैहौं ।
ललिताकिशोरी प्राणपथिक उत चलनचहत युत पिया चितैहौं ॥

राग परज ।

ऐसी नाहि उचितही प्यारी ॥ १ ॥
काढि दई ज्यों दूधकी माखी वृंदावनतें कीनी न्यारी ॥२॥
जिहि रसना षटरस नहिं भावत जुगुलनाम रसकी अधिकारी ।
ताको काल कटत अब राधे निसिदिन बातें बकत लबारी ॥
ज़े आंखियां रस रूप माधुरी पीपी छकी रहत मतवारी ॥५॥
पगीं रहत निशिवासर ते जागि कागद कलम दवाति मंझारी ॥
जे कर पग अरविंद पलोटत भानकुंवरि नंदलाल विहारी ॥७॥
ते विमुखन के काज संभारत ललिताकिशोरी दुःख महारी ॥८॥
कृपादृष्टि देखो श्री स्वामिनि पुजवो प्यारी आस हमारी ॥९॥
अखंड वास वृंदावन पावौं परीरहौं हौं सरण तिहारी ॥१०॥४४॥

अलहिया ।

हौं न भई ब्रजमूर अलीरी ।

हरिसों कही हेरिलै आवहु गई खोइ यह वन सखि मोरी ।
ललिताकिशोरी रूपमंजरी हरिवेनी निरखौं यक ठोरी ॥३८॥

सारंग ।

गोविंदकुंड गोवरधन खेडे जुगुलविहारी कुंजन हेरौं ।
चरनन गिरौ शीस नहिं उनवौं गढि गहौं हगन जल गेरौं ॥
पानि जोरि करुनामय विनवौं रसनहिं राधामोहन टेरौं ।
ललितकिशोरी वदनचंद लखि अकुलित नैनन ताप निवेरौं॥३९

सारंग ।

चिन्हित पगतल जुगुल चरनतें निरखौं कब कालिंदी तीर ।
स्वेदबिंद छवि श्यामगौर अंग ढोरि सिरावहुं विजानि समीर ॥
मान निवारि मानिनी भामिनि ललिताकिशोरी कुंजकुटीर ।
मिलहु विहासि भरि अंकु रसिकवर नागर सुंदरश्याम अधीर ॥४०

काफी ।

मिलना वे दिलदार सांवरे ।
हुसन तुसाडे चूर हुवा दिल लीता तैंनू कवका दांवरे ॥
बांकी अदाँ चस्मोंमें वसँदी दीठा परे न दूजा ठांवरे ।
ललिताकिशोरी नूंलख समुझावो एकनहीं मेरेमन भांवरे ॥४१॥

काफी ।

मिलनां वेमहिवूव विहारी ।
भोरभये वृंदावन कुंजों जाना होकर गली हमारी ॥
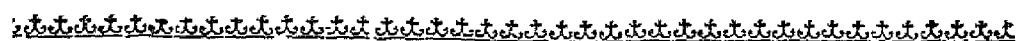
मृदु मुसकन सानूदिलविच भौंदी झमक चलन नूपुर धुनि प्यारी ।
ललितकिशोरी सांवरी सूरति घुंघरी अलकौं पर वलिहारी ॥४२॥

विहाग ।

विन देखे वृंदावन राधे कवलौं याही भांति वितैहौं ।
पैहौं वास पास वंशीवट कवधौं चितवन कृपा चितैहौं ॥
गरवाहीं दै मोहनके संग मिलिहौं कव करि दया हितैहौ ।
ललिताकिशोरी प्राणपथिक उत चलन चहत युत पिया चितैहौं॥४३॥

राग फरज ।

ऐसी नाहि उचितही प्यारी ॥ १ ॥
काढि दई ज्यों दूधकी माखी वृंदावनतें कीनी न्यारी ॥२॥
जिहि रसना षटरस नहिं भावत जुगुलनाम रसकी अधिकारी ॥३॥
ताको काल कटत अब राधे निसिदिन बातें वकत लवारी॥४॥
जे आंखियां रस रूप माधुरी पीपी छकी रहत मतवारी ॥५॥
पगीं रहत निशि वासर ते जागि कागद कलम दवाति मंझारी॥६॥
जे कर पग अरविंद पलोटत भानकुंवरि नंदलाल विहारी ॥७॥
ते विमुखन के काज संभारत ललितकिशोरी दुःख महारी ॥८॥
कृपादृष्टि देखो श्री स्वामिनि पुजवौ प्यारी आस हमारी ॥९॥
अखंड वास वृंदावन पावौं परीरहौं हौं सरण तिहारी॥१०॥४४॥

अलहिया ।

हौं न भई व्रजमूर अलीरी ।

गौरश्याम छवि दृग भरि लेती परती पायन धूरि गलीरी ॥
ललितकिशोरी श्यामनामधुनि सुनती कानन पूरि भलीरी ।
मुखपंकज चख रूपमाधुरी रहिती छक चकचूर अलीरी ॥४८

राग अलैया ।

करौ वेगि वृंदावनवासी ।
भालतिलककंठी के नाते कृपा विचारो करणारासी ॥
ललितकिशोरी दुःखन देखौ मिलवौ संतन कुंज निवासी ।
रूपमंजरी लाज तुमैं यह जानत जग चैतन्य उपासी ॥४६॥

अलैया ।

लगै नेह नव जुगुल लालसौं प्रीति पतंग ज्यौं दीपसौं आली
निरखे अनमिष नैन चकोरी चंदवदन राधा वनमाली ॥
विकसै कमल हियेको हेली लखि लखि किरन नखनकी लाली ।
ललितकिशोरी मीन सिंधु छवि छकि पीवहि पय रूपरसाली॥४७।

राग अलैया ।

खार छार फल फूल पत्र द्रुम कदम करिल करि ढांख पलासा ।
मरकट भृंग मयूर पतंग अलि सूकर खर करि जमुनके पासा ॥
कृपाभरी अंखियन अवलोकहु अपनावहु जनि करौ निरासा ।
ललितकिशोरी तृण अणु करिकै देहु विहारि निकुंज निवासा ॥४८

फरज ।

काँई रूठी लाडो म्हारी म्हांको तो आस तिहारी ।
म्हांको तो नाहीं दूजो ठीक ठिकानो छे
चरणकमल थारे प्राण अधारी ॥
कृपाकरो निज भवन बुलावो लाडो
वेगि बसावो वृंदावन फुलवारी ।
ऊक चूक ओरां नां कछु देखो प्यारी
ललितकिशोरी मानौ अरजी हमारी ॥ ४६ ॥

राग फरज ।

श्रीवृन्दावन कुंजलता क्यों नैनौं को दरसाइये ना ।
रास विलास रंग कनि मेरे हियरे में सरसाइये ना ॥
ललितकिशोरी लाल वीनती सुनिवे में अरसाइये ना
हाहा टुक मुसक्याय हेरिये जियरा को तरसाइये ना

दोहा ।

श्रीवनकुंजन कूकरी, ह्वैहों क्वरी वीर ।
चिभुर चिभुर रुचिसों पियों, रसिकन जूठो

फरज ।

श्रीवन वेगि वसाय स्वामिनी पदपंकज निज टहल
औटो दूध सुभग भाजनमें सोंधो अति मेरेकर पीजै

ललितकिशोरी मो औगुनगन सोच विचार न गनना की
नैन मूंदकै मो अर्जीपै जो दरखास हुकुम दैदीजै ॥ ९२

दोहा ।

कदम कुंज ह्वैहौं कबै, श्रीवृंदावनमांहिं ।
ललितकिशोरी लाडिले, विहरेंगे तिहिं छांहि ॥ ९३
कृष्णराधिका कुंडको, ह्वैहों कबहूं नीर ।
करिहैं केलि कलोलसों, श्यामल गौरशरीर ॥ ९४ ॥
कबधौं सेवाकुंजमें, ह्वैहों श्यामतमाल ।
लतिका करगहि विरमिहैं, ललित लडैतीलाल ॥ ९५
कालीदह कब कूलकी, ह्वैहों त्रिविध समीर ।
जुगुल अंगअंग लागिहौं उडिहैं नूतन चीर ॥ ९६ ॥
कब ह्वैहौं हों मोरिनी, श्री वृंदावन धाम ।
नचिहौं संग अंग मोरिकैं, सुंदर श्यामाश्याम ॥ ९७
कब गहिवर की गलिनमें, फिरिहौं होय चकोरि ।
जुगुलचंद मुख निरखिहौं, नागर नवलकिशोरि ॥ ९८
कब कालिंदीकूलकी ह्वैहों तरवर डारि ।
ललितकिशोरी लाडिले, झूले झूला डारि ॥ ९९ ॥
कब गोवर्द्धनखोरकी, ह्वैहों हों पाषान ।
चरनकमल धरिहैं दऊ, सागर छवि रसखान ॥ १०० ॥

टोडी जौनपुरी ।

किशोर चोर चितमेरे करुना तनक करौ ।

सुंदर वदन दिखाय दयानिधि नैनन ताप हरौ ॥
निरतत रुनुक झुनुक नूपुर धुनि हियरेमें विहरौ ।
ललितकिशोरी मैं वलिहारी टुक निज घर निढरौ ॥९२

भैरवी ।

गुण औगुणको लेखो म्हारो लाडिली निहारो ना ।
जाणेंगे महाजन सारे खोखी खोटी कोटी म्हांकी
जोपै थेजी हुंडी पै डारोगी सकारोना ॥
साही बीच बट्टो लागै दासी पगे हांसी थाकी
ललितकिशोरी भीणां राधे जो सम्हारो ना ।
खातो ब्योटो करि काढे जी ब्रजवसवा की मुहरां दीजै
हाहा म्हारी मानौ अरजी वाकीको विचारो ना ॥९३॥

चैती गौरी ।

गोखुररेणु रमणरेतीकी उडिउडि मम अँगअंग रुरैगी ।
शोभा कुंज कूल कालिंदी कालीदह इन नैन फुरैगी ॥
गहिवर छांह भजनको बैठों लता वेलि द्रुम शीस दुरैगी
ललितकिशोरी जुगुलरसिकवर निरखौं कब मम आस पुरैगी

चैती गौरी ।

जमुनापुलिन कुंज गहिवरकी कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचावौं
पदपंकज प्रिय लाल मधुप ह्वै मधुरी मधुरी गुंज सुनावौं

कूकरि ह्वै वनवीथिन डोलौं वचे सीथ रसिकनके पावौं
ललिताकिशोरी आस यहै मम व्रजरज ताजि छिन अनत न

दोहा ।

निधुवन द्रुम डारिन कवै, ह्वैहौं पच्छी कीर ।
राधारम्मनलाल को, रटिरटि होंहुं अधीर ॥ ६६

भैरों ।

नित्यानंद भक्ति रसदानी करिये वेगि निवेरो ।
श्रीवृंदावन कुंज दरस बिन अकुलित चित्त घनेरो ॥
टोटो परो वारकह मोरी ललिताकिशोरी हेरो ।
अधमउधारन सदावर्तते पापी विमुख न फेरो ॥ ६७ ॥

भैरवी ।

प्यारीजू कौन तिहारी खोट ।
मोसों वनी न कछु वै स्वामिनि हों औगुनकी मोट ॥
श्रीवन दरस दिखायके राधे मेटो जियकी चोट ।
ललिताकिशोरीकी अपनावहु गही तिहारी ओट ॥ ६८

राग भैरवी ।

बोलौ बन राधे सुखरासी ।
मेरे औगुन कितक लाडिली तुम अपार करुना की रास

ललितकिशोरी तजौ न मोकों चहूं ओर ह्वैहैं तुव
ह्वै दासी तोरी श्रीस्वामिनि होत नहीं अब आन।

दोहा।

भ्रमरी ह्वै कब डोलिहौं, श्री वृंदावन गैल।
पदपंकजमकरंदरस, पैहौं दोऊ छैल॥ ७०॥

कवित्त।

भानकी दुलारी घूंघरारी पांति केश अलि
सुंदर विहारी गलबांह लाय घेरियो।
वृंदावनक्यारी फुलवारी सुखकारी जहां
तहां मोहिं वास दैकै संकट निवेरियो॥
भईहौं भिखारी भीख मांगों यह दुखारी ह्वै
सुनियो हमारी टेर अरजी न फेरियो।
तोपै बलिहारी वारी ललितकिशोरी प्यारी
हाहा अबारी होत मेरी ओर हेरियो॥ ७१॥

कवित्त।

मेरी आस चित्त सांची कर दम्भ झूठकी गांठको
आधी रैन समै वृंदावन कुंजकुंज मगमग में डोलौं
श्रीचैतन्यनामधुनि सुनिकैं कालिंदी के कूल कलोर
ललितकिशोरी राधे राधे श्रीराधेश्रीराधे बोलौं॥

माल कोश ।

मोसों नाहिं कछुक वनिआई ।
हों सदैव औगुनकी भाजन कूटि कूटि करि भरी बुराई ॥
हाहा कृपाकरौ स्वामिनि अब तुव पदपंकज में शिर नाई ।
ललिताकिशोरी ब्रज दरसावो देखो निजगुन मानवडाई ॥७३॥

दोहा ।

मिलिहै कब अंग छार है, श्रीवनवीथिन धूर ।
परिहैं पदपंकज जुगुल, मेरी जीवनमूर ॥ ७४ ॥

माल कोश ।

मोकों आस स्वामिनी तेरी ।
करे पान विन जुगुलमाधुरी तलफत अंखियां मीनसी मेरी ॥
परवस प्राण परो नहिं निकसत श्रीवन दरस हिये उरझेरी ।
ललिताकिशोरी ढरनि ढरौ निज मिलौ वेगि जानि करौ अवेरी॥७५

जैजैवंती काजिला ।

मैं दासी तें स्वामिनि मेरी तुहि न वनै मोसों अनखाते ।
कुंजविहारिनि तुमहौ प्यारी कुंज विहार नैन मम माते ॥
तुव पदकंजमधुप मेरो मन टरै न छवि मकरंदसुधाते ।
ललिताकिशोरी दीनदयानिधि करिये कृपा वेगि यह नाते॥७६॥

जिला जैजैवंती ।

सासके बोल सुनै को नित उठि को ननदीनकतोरलहूटै ।
होत विहाल गोपाल विना मन निसदिन को विरहानल घूटै
ललितकिशोरी के संग दरसदै क्यों नहितें इतनो जस लूटै
वदन विलोकत जो मरिजाऊं लला वलिजाऊं महादुख छूटै ॥७

दोहा ।

सुमन वाटिकाविपिनमें, हैहौं कवहूं फूल ।
कोमलकर दोउ भामते, धरिहैं वीनि दुकूल ॥ ७८ ॥
सुनियो श्यामाश्यामजू, चितदै मेरी टेर ।
ललितकिशोरी लाडिले, अवजनि करहु अवेर ॥ ७६

जंगला ।

स्वामिनि मैं पतितन शिरमौर ।
समुझ बूझ तम कूप परतहौं मोसम नीच न और ॥
चरणकमलकी आस वासवन देत करौ जनि गौर ।
ललितकिशोरी वेगि निवाजौ विनतीलगमो दौर ॥ ८० ॥

जंगला ।

स्वामिनि हों पतितन शिरताज ।
तेरी जगतकहाय विमुख ज्यों डोलत लगत न लाज ॥

श्रीवन वेगि वसाय उवारो नाहिंन परम अकाज ।
ललितकिशोरी विषै सिंधुमहं बूडत वैसजहाज ॥ ८१ ॥

राग परज ।

अहो विहारिनि ललितलडैती मम अपराध न मनमें धारो ।
अपनी जानि मानि दासी वलि कृपाविलोकनि नेक निहारो ॥
श्रीवन कुंजकुटीरकोनमें ललितकिशोरी मोकों डारो ॥
करुनासिंधु अगाधे राधे विगरीको अव वेगि सम्हारो ॥८२॥

परज ।

अहो लडैती प्राणपियारी श्रीवन कवै वसावोगी ।
रसिकराय पीतम संग राधे मधुरी तान सुनावोगी ॥
दोना ललित कदमके माहीं दधि मेरे कर पावोगी ।
ललितकिशोरी लालन मुख दै जूठन मुहूं खवावोगी ॥ ८३ ॥

परज ।

ये हो स्वामिनि गजगामिनि मनभामिनि रसिया लाल तिहारो ।
करुनादीठ नीठ अवलोकौ दीनदसा मेरी निरवारो ॥
ललितकिशोरी श्रीवनवीथिन रेनु वनाय सीस पग धारो ।
तरसतहै वृज देखनको दृग यातें दुःख और कह भारो ॥८४॥

खंमाच चौताला ।

वृंदावनधाम नीको व्रजको विश्राम नीको
श्यामाश्याम नाम नीको मंदिर आनंदको ।

कालीदह न्हान नीको रेनुकाको खान नीको
जमुना पै पान नीको स्वाद मानों कंदको ॥
राधाकृष्ण कुंड नीको संतनको संग नीको
गौरश्याम रंग नीको अंग जुगचंद को ।
नील पीत पट नीको वंशीवट तट नीको
ललिताकिशोरी नीकी नटनी को नंद को ॥ ८६ ॥

जैजैवंती ।

बहुत दिवस देखे विन वीते ललितलडैती दरसन दीजे ।
जौन चूक लखि भई अनमनी सो अपराध छिमा अब क
कोमलकंज चरन नखशोभा जीवन दृगन विलोकन दीजे
ललिताकिशोरी विरहवियाकुल पथिक प्रान हाहा रखलीजे

जैजैवंती ।

येही मेरी विनय राधे लागै तू लगन ।
वृंदावनवास दीजै येहो श्रीलडैती जू
झारिवो करौं मैं तेरो भोरतें अंगन ॥
ललितकिशोरी तेरी चेरिनकी चेरी हौं
जूठनको पाय नित रहौं जू मगन ।
वसिरही लालमनभीनी नखचंद दुति
हेरिवो करौं री तेरे कंजसे पगन ॥ ८७ ॥

सहानौं ।

घिरि आति घटा छटा दामिनिकी घोर वादरनके
करिकै सुरति लाडिली लालन विरहिनि हूक हिं
ललिताकिशोरी गौरश्याम विन सावन रंग यहै ह
पहिले हलाहल पानकरैंगी पाछे करि शोर मोरिल

सहानौं ।

देखिकैं घटा की छटा ऊंचे अटान वीर
दामिनीदमक देखि देह मोहि दहैंगे ।
करिकै सुरति गौरश्याम अंगअंग और
रंग नीलपति पाट धीर नाहिं गहैंगे ॥
ललिताकिशोरी सुधि ललित लतान आये
वंशी सुरतान दुखकान नाहिं सहैंगे ।
कुहकैंगे मोर घनघोर शोर दादुरवा
राधिका किशोर विना प्राण कैसे रहैंगे ॥ ८६ ॥

जैजैवंती चौताला ।

रचिकै संवारे नाहिं अंगअंग श्यामाश्याम
एरी धिक्कार और नाना कर्म कीवे पै ।
पायनको धोय निज करतै न पान कियौ
आली अंगार परैं सीत पय पीवे पै ॥

विचरे ना वृंदावन कुंजन लतान तरे
गाजगिरे अन्य फुलवारी मुखलीवे पै ।
ललितकिशोरी बीते वरष अनेक दृग
देखे नाहिं प्राणप्यारे ऐसे जीवे पै ॥ ६० ॥

राग जंजैवंती ।

तापित ताप विरह अँखियां हुति आनन इंदु दिखाय जुडावहु
झरसत देह गेह सुधि नाहिंन नेहसुधा जल सींचि जिवावहु ।
चित अति तृषित लाडिली लालन रूपरमामृत पान करावहु
ललिताकिशोरी श्रीवृंदावन पकर बांह तट अंचि बुलावहु ॥६१॥

कुंडलिया ।

देवी वृंदाविपिनकी करुनासिंधु दयाल ।
ललितकिशोरी पूजिये मो मन आस कृपाल ॥
मो मन आस कृपाल बास वृंदावन पाऊं ।
गलीगली तुव नाम रटत उर विफुलित माऊँ ॥
रजमें रज ह्वै मिलै सुतन तट त्रिभुवन एवी ।
सेवै ललितानिकुंजद्वार छिन स्वामिनि देवी ॥ ६२ ॥

झिला ।

नेह निवरिया फंसी भंवर निधि रूप जलाजल जुगुलविहारी ।
गुरजनकान डांड नाहिं लागत पवन झकोरत विरहकी भारी ॥

वुद्धिको वादवान छूट्यो अलि टूटी डोरिधीर मंझधारी ।
वारवारलौं पूरिचुक्यो सखि ललितकिशोरी नाहिं संभारी॥९३

राग झंझोटि ।

जुगुल रूपरस चातक नैन ।
प्यासे रहत सदा अवलोकन भृकुटी कुटिल मनोहर सैन ॥
अधरनविंव कुंद दशनावलि मृदु मुसिक्यान चिवुक छवि ऐन
राधा नंदकिशोर मिले विन ललितकिशोरी परत न चैन ॥९४॥

जिला जैजैवंती ।

कुंजकुंज रँग श्रीवन आली पिचकारिन वौछारन वरसै ।
उमड गुलाल घुमड वादरमें झलक अवीर सरस रंग सरसै ॥
अवला चमकचमक चपलासी विलसैं तन घनश्याम सुँदरसैं ।
ललिताकिशोरी मारिमारि मन होरीमें अब कवलों तरसै ॥९५॥

गौड मलार ।

कुयलिया वैरिन वैर करै ।
जुई कूक सुनि मम जिय हूकै पुनिपुनि सोई कूक भरै ॥
ललितकिशोरी नवललाल विन नाहिंन मनुवां धीर धरै ।
परै तुसार डार जिहिं वैठे कुहूकुहू तिहिं मुखविसरै ॥ ९६ ॥

सहानौं ।

जयति जयति श्री सचीकिशोर ।

मृगलोचन मोचन दुखदारुन मृदुमुसकन थोरे थोर ॥
क्षीरमध्य धवलाई द्रव जिमि मिले जुगुल चित चोर ।
श्रीवनवास वेगि मुहिं दीजै ललिताकिशोरी मान निहोर॥६८

झिला ।

चूक परी सेवामाहिं स्वामिनी वियोग सह्यो
रहिरहि हिय हूकै सुधि श्रीवन अैनान की ।
अलकावलि घायकरैं मंदहंसन नोनझरै
तापै हनिदेन छुरी तीखी पलकानकी ॥
भृकुटीमटक चित्तहरै लटकमुकुट टुक न टरै
उरमें कटारी दई तिरछी सैनान की ।
ललिताकिशोरी जो नाहोती नेक टेढी लाल
देखती टिढाईथे नुकीलै नैनानकी ॥ ६८ ॥

झंझोटी ।

मो सम कौन अधम जगमाहीं ।
भ्रमत रहत नित विषयवासना ताजि निधुवन द्रुम वेलिन छांहीं
चिंतन करत न ललिताकिशोरी जुगुल लाल दीन्हें गरवांहीं
निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछांहीं॥६

झिला ।

श्रीराधे वृषभानदुलारी मुखम वसैं वरमानो तेरो ।

तैं लालन की अधिक पियारी लाल रहै तेरो नित चेरं
सफल फलै वटजाव तिहारो यही हुलास हियेमें मेरो ।
ललितकिशोरी जितहि राखिहौ गुनगन नाम गायहौं तेरो

देस ।

कमल नयन मन मोहन को कोई आनि मिलावै री ।
वीर की सौं दासी मैं वाकी तनकी तपत बुझावै री ॥
ललितकिशोरी के गरवाहीं वंशी मधुर बजावै री ।
श्रीवृंदावन सघनकुंज तर अँखियन सुख दरसावै री ॥ १

राग देस ।

कहो कभी उस मजलिस में मेरी भी याद होती है ।
जिसमें राधाकृष्ण विराजैं सखियन जगमग जोती है ॥
ललिताकिशोरी से कहियो कोई पड़ी दुवारे रोती है ।
कहतीहै वेदरस दासिकी मिट्टी वरबाद होती है ॥ १०२

राग देस ।

कैसिक धीर धरैं ये अंखियांजुगुल नवल श्रीबन बिन देखें
झरना झरन झरत निशिवासर अश्रु नीर दृग माहिं विसे
ललितकिशोरी जिन छवि हेरत कल न परत परती जु नि
तिन बिन वरस मास दिन वीते यह जीवन लेखौ जिन लेखैं

ईमन भारफत ।

जो पै नहिं वृंदावन दरसन ज्यों त्यों करिकै हियें निवैहों ।
जो कहुं प्राण वियोगें तनतें जहां जांउं तुव नाम को लैहों
जामें रुचि तुमरी सो करिहों वाही में निज मनहिं मनैहों ।
ललिताकिशोरी कृपा राखियो जहां रहौं तेरो गुन गैहों ॥१०

दोहा ।

जुगुल लखे जिहिं ठौर सो, तिनहूं विन तें मान ।
दृग पुतरिन के गहतहै, ज्यों चुंवक पाषान ॥ १०६ ॥

ईमन भारफत ।

तेगकी धारतरे शिर धरिकै घोटिकैं वेगि हलाहल पीजिये ।
फांसी लाय कंठमें कसिकै सांपके मुहंडे आंगुरी दीजिये ॥
गिरिये गिरितें येरी भटू जल गंगमें बूडि हिवारे सीजिये ।
ललिताकिशोरी लाल विरहमें कोटिजतन करि नाहिंने जीजिये ९

जिला ।

वहुत दिवस वीते विनदेखे अव वियोग कैसिहुं नहिं सहिहैं
भानुकुंवरि नँदलाल विना अलि कोटिजतन करि धीर न गहिहै
अति अकुलात उडनको वैठो कछुक दिनाजो और न लहिहै
ललितकिशोरी तन पिंजरातें पची प्रान न रोके रहिहैं ॥१०७
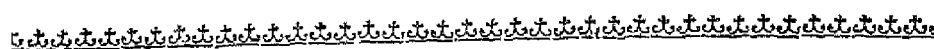
झिंझटी जिला पीलू।

रे निरमोही छवि दरसाइजा।
कान चातकी श्यामविरहघन मुरली मधुर सुनाइजा॥
ललितकिशोरी नैन चकोरिन दुतिमुखचंद दिखाइजा।
भयो चहत यह प्राण वटोही रूसे पथिक मनाइजा॥१०८॥

राग होली।

विरह विकल अनबोल सूल सखि कहत न आवै।
लगी इसक उर चोट अचक कुई मरम न पावै॥
ललितकिशोरी जो रोग होयतो वेद जतावै।
मनमोहन दृग कोर कसक कोइ रसिक बतावै॥ १०९॥

तिरछी चितवन की चाल।

सांचहु मान भईं ये अँखियां निज उपमा कवि वृथा कहीं।
विन अवलोके गौरश्याम छवि अँसुवन जल उतराय रहीं॥
लाज जाल नहिं फंसत अरबरी छविनिधि प्रेम प्रवाह बहीं।
ललितकिशोरी यहै अचंभो जल भीतर अकुलाय रहीं॥११०

खंमाच।

अंखियन की सखि तपत नसावो।
मूरख वैद मरम कहा जानै याको जमुना धार वहावौ॥
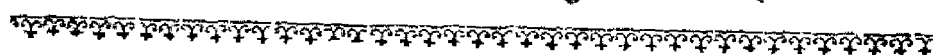
तवाखीर आदिक वतलावै ललितकिशोरी ख्याल न लावौ
इनको यही इलाज विहारिके रूप सुधारस प्याले प्यावौ॥१

दोहा।

चमकचमक अंगन करैं, कण वृन्दावन धूरि।
जीवन को फल ए सखी, तव जानहु भरिपूरि ॥ ११२

श्याम कल्यान।

जपौं जुगल नित नाम सु छिन पल वसौं सदा वृंदावन खोरि
छापौं छाप अंग व्रजरजकी भ्रमत रहौं कुंजन की ओरी ॥
आसरो आस वासना मेरे दृढ करि मन यह ललिताकिशोरी
रहौं चैतन्यचंद्रचिंतामणिचरणचारु नखचंद्र चकोरी ॥ ११३

हमीर चौताला।

वृंदावनधाम वहु रंगैया प्रवीन वसैं
हंस परमहंसन कौ रंगत हैं रंग खरे।
श्यामाश्याम नाम लेत भाषत कवित्त यह
येकयेक रसिकनके पांयनमें जा डरे॥
ललितकिशोरी जैसे सावनके अंधभये
वारौमास चहूंओर सूझतहैं रंग हरे।
एहो रँगरेज मेरे नैननको रंग ऐसो
श्यामाश्यामरंग विना रंग ना नजरि परे ॥ ११४ ॥

५

कल्यान यकताला ।

वृंदावन पुंज नित्य कुंज तरु तमाली ।
निरतैं नव जुगुललाल नाना धुनि गति रसाल
होवे भाव करि कटाक्ष बालहिये शाली ॥
छूट्यो फरफंद दुंद राधिकागुविंदइंदु
दाया नखचंदपाद पाइ गति उताली ।
लाग्यो मुसक्यान बान जानैं नहिं मुनैं आन
छिनछिन उर प्यास जुगुल माधुरी रसाली ॥
पीवैं मुसक्यान मधुर अधरामृत रैनदिवस
पत्रनकी ओट लतन रंध्रनकी जाली ।
जानै ना कंस वंस हमतो सररूप हंस
पानकरै छीर रहैं प्यासे के आली ॥ ११५ ॥

सिंधु काफी ।

भावै मोहिं श्यामाश्याम नाम रूप लीला धाम
नाहिं अभिलाष अन्य कर्म ज्ञान पुंजकी ।
सुनिवेकी आस रहै थेईथेई ताधिलांग
नूपुर झुनक वेद वंशिकाके गुंजकी ॥
जो पै भाव कथा यह तुमहूं गुनान करौ
ललितकिशोरी लालछवी रसपुंजकी ।
जानौ जो अवन कछु सौंहं इष्ट तोहि मुख
डारि दीजो धूरि मेरे वृंदावनकुंजकी ॥ ११६ ॥

सिंधु काफि ।

रटतरटत राधा मनमोहन रसना ना फलका झलकांई ।
लिखत लिखत लीला रस ढंढ्न अंगुरिन पोर जु ना घिसि ज
ललितकिशोरी धिक यह देही ऐसो जीवन जन्म वृथांई ।
जुगुलविहारीको मग जोवत जो न भई नैनन में झांई ॥१

दोहा ।

राधेराधे नामकी, जककागें पे वीर ।
वृंदावनवेलिन तरे, जैसे सीख्यो कीर ॥ ११८ ॥

लावनी ।

अष्टासिद्धि नवनिधि के सुखको वेपरवाहि लुटावेंगे ।
चौदौभवन त्रिलोकी संपति वायें हाथ वहावेंगे ॥
ललितकिशोरी जब श्रीवनमें कुंज वसेरो पावेंगे ।
हंसहंसके तब ब्रह्मानँदकी गलियों धूरि उडावेंगे ॥ ११९ ॥

दोहा ।

मो मन कब अनुरागिहै, जुगुल कमलपग तीर ।
ज्यों प्यासेकी लालसा, निरमल सीतल नीर ॥ १२

खंमाच ।

हों सबभांति विगारी प्यारी तुम निज विरद सँभारो ।

सोयसोय खोये जन्मांतर करुणादृष्टि निहारो ॥
अबहूं होंहु मधुप पदपंकज ऐसी मनै बिचारो ।
ललिताकिशोरी छवि मकरंदै मो अँखियन सुख ठारो ॥ १२१

खंमाच ।

हेस्वामिनि श्रीकुंजविहारिनि वेगि खबरि मेरी लीजै ।
सेवा रीति कछू नहिं जानौं चूक छिमा करि दीजै ॥
अति आधीन दीन रटि टेरौं चित्तदै यह सुनि लीजै ।
ललिताकिशोरी कुंज निकुंजन रज अधिकारी कीजै ॥ १२२ ॥

खंमाच ।

हेघनश्याम कुँवर सुंदरवर गौरांगी वृषभानकिशोरी ।
जा छवि निरखि नील नीरदवर विज्जुलता लज्जित मुख मोरी ।
हौं चातक तुव कृपा स्वाँतिबुंद पुरवहु आसा मानि निहोरी ।
श्रीवनवास बसै हियमाहीं गौरश्याम सुंदरवर जोरी ॥ १२३ ॥

खंमाच ।

कबधौं कृपा लाडिली ह्वै है श्रीवन माहिं बसौंरी ।
श्यामाश्याम महाछवि अनुपम इन नैनन निरखौंरी ॥
दै गलबांह जुगुलवर राजैं हौं यह सुखै लहौंरी ।
सुनियो टेर कृपानिधि राधे पुनिपुनि विनै कहौंरी ॥ १२४ ॥

खंमाच ।

अँखिया रूपसुधामद मातीं ।
बिनदेखे वह जुगलसुघरछवि बहुआतुर अकुलातीं ॥
वानिपरी रति चरनकमलकी अब कैसे सचुपातीं ।
ललितमाधुरी दरसन दीजे वाहीको ललमातीं ॥ १२९

राग धाटों ।

जुगुललाल तोरी पैयां परतहों मो तन नेक निहारो
श्रीवनवास दान किन दीजे छिनछिन होत खिसारो
औसर नहिं औसेर करनको कलो काल विस्तारो ।
ललितमाधुरी नित लहौं रस चरनकमल पिय प्यारो

राग काठों ।

अबतो बसी हदै मो माहीं ब्रजरज नेह लगैये ।
नाते नेह लोकके जेते ते मंझधार बहैये ॥
अहो किशोरी कहौं निहोरी मोहूतन चित लैये ।
ललितमाधुरी येही चाहत जुगुलचरण दरसैये ॥ १२८

ईमन चर्ही ।

कृपा करो मोपर ब्रजललना ।
मन अलि बिन अरविंदचरणरज धरत छिनहुँ कल न

मुहिं विसरे कहु कहा सरैगी अैसी न चित धरना ।
ललितमाधुरी आस दरस ब्रत कैसिहुँ ना टरना ॥ १२८ ॥

राग ईमन ।

प्यारीजू मोतन हूं टुक हेरो ।
श्रीवन द्रुमन लतन के नीचे रसमय चहौं गान गुन तेरो ॥
आन न जानों अन्य न मानों तोही कृपा पद साधन मेरो
ललितमाधुरी आस पुरावो अब जिन करौ हहा अवसेरो॥१२

झंझोटी ।

प्यारी लाल तुमपै मैं बलिजाऊं ।
श्रीवन माहिं निरंतर बसिकै तुमरो ई गुनगाऊँ ॥
चरन निहोरि कहों करजोरी यह मांगें हों पाऊँ ।
ललितमाधुरी निरखि जुगलछबि मनकी साध पुराऊँ ॥१३०॥

गुनकली ।

भानुकुंवरि अब जिनि बहिरैये ।
चूक अचूक परी जो जनतें तापर दृष्टि कहा ठहिरैये ॥
करुनाकरन सुन्योहै तुव प्रण सो मत आन बान बिसरैये ।
देहु कृपाकरि ललितमाधुरी श्रीवन आनंद लूटत रहिये ॥१३१॥

सोरठा ।

श्रीवृंदावन बोलि, राखौ छिन निज टहल में ।
कृपा पोटली खोलि, मो मन आसा पूजिये ॥ १३२ ॥

गुनकली ।

अजब छबीसों परयो है पाला ॥ १ ॥
चट मुरि हेरि मुसकि दुरि जाई हेसखि को वह नंदकोलाला ॥२।
मोरमुकट कछनी छवि कटितट पीतवसन जँघिया उरमाला॥३॥
लटपट पाग केश घुँघरारे चलत मटकती चाल मराला ॥४॥
वंक विलोकन वंकट भ्रुकुटी वंक अदा शुभनैन विशाला ॥५॥
उघटत तालअधर धर मुरली सप्तसुरन अटपट सुरताला ॥६।
चंचल लोल नाशिका मौक्तिक श्याम गात मृदु अधर रसाला॥७।
संग सुभग वृषभान नवेली कहा कहौं सखि उनके ख्याला ॥८॥
अनुमप अकथ बनी यह जोरी ललितकिशोरी नट गोपाला ॥९॥
तिरछी कोर गडी चितवनकी कसकत हिये कियो बेहाला॥१०॥१३३

काफी ।

यह विनती अर्जी करौं सुनौ कानदै जुगुलदुलारे ।
फागुनमास आय नियरायो कहो कहा अब मनैं तुमारे ॥
जो कछु भई चित्त मति दीजैं वृथहिं गये द्वै मास हमारे ।
ललितकिशोरी परै न अंतर मचै फाग यह श्रीवन प्यारे ॥१३४॥

राग काफी ।

श्रीवृंन्दावन वसौं निरंतर यही चित्त अभिलाषा है ।
जुगुलमाधुरी पान करौं नित छिनाछिन यही हुलासा है ॥

सदा वसंत जहां नव पल्लव इकरस बारौ मासा है ।
ललितमाधुरी ललितत्रिभंगी ललिताहि रास विलासा है ॥१३

काफी ।

राधारमण रंगीलो सुनियत होरीमें नव छयल बनैगो ।
संग नवेली प्रिय अलबेली श्रीवन नवरँग ख्याल ठनैगो ॥
अति चित चाय चोंप मन बाटी धूम मचैं मम कौन सुनैगो
वेगि कृपाकरि ललितमाधुरी बोलि लेहु रसरंग दुलैगो ॥१३६

काफी ।

वेगि कृपाकरि कुँवरि स्वामिनी वृंदाविपिन बसावो ॥ १ ॥
राधाकुंड निकुंज मनोहर तहां दुऊ सचुपावो ॥ २ ॥
प्रीति विवस रसरीति सो पूरन नूतन नेह उपावो ॥ ३ ॥
नेक अधर मुसकाय माधुरी मोहन चितहि चुरावो ॥ ४ ॥
लै बीरी प्रिय करहि आपने लालन मुखहि खवावो ॥ ५ ॥
दोउ भुज मेली मुकुर निहारो लोल कपोल मिलावो ॥ ६ ॥
अरस परस अधरामृत पीवत हासविलास बढावो ॥ ७ ॥
ललितमाधुरी करत खवासी यह छवि दृग दरसावो ॥८॥१३८

उत्तरी देस ।

प्रियनखचरनचन्द्रिका कबधौं इन नैनान निहारौंगी ।
सुंदर सुघर रुचिर रचि जीवक कब प्रिय पांय पखारौंगी ॥

पायजेब सजि नूपुर कबधौं पग त्रिछियान संवारौं
ललितमाधुरी चरनसरोजें चांपि कबै उरधारौंगी ।

ललित गौरी चौताला ।

कहिबो तो वाके आगे जानत न होय जो
काहेजू विलंब अब कहा कीजियत है ।
नवल किशोरी बालमाधुरी बिहारीलाल
वृंदावन कुंज बास किन दीजियत है ॥
मोतननहेरें सरैं देखिये अपनपौ
छिनोंछिन पलोंपल योंही छीजियत है ।
देह को जो मानो सेव प्रान हौं तो बोलिलेव
चरनटहल बिन वृथा जीजियत है ॥ १३६ ॥

ललित गौरी ।

प्यारी मुहिं दीजै श्री वृंदावन बास ।
छिन प्रति नव अनुराग बढ़त जहँ भक्त प्रेमरस रा
अटि वनवीथिन मगन रहौं मन मिलन जुगुल ह
ललितमाधुरी दरससुधाबिन मरतहैं लोचन प्यास

सोरठा ।

श्रीवन बोलि सराग, देहु कृपाकर जुगुलवर
पदरज कंजपराग, नितसेवैं मम मधुपदृग ॥

ललितमाधुरी लाल, कब चरनन विसमृत परों।
पगनख चंद्र, रसाल, दृगन चकोरिन लखिअरों ॥ १४

ललित गौरी।

राधे सुनो नहीं किन मोर ॥ १ ॥
वृथा जात यह काल स्वामिनी हेरो दयाकी कोर ॥ २ ॥
श्रीवृंदावन रज कणु अणु तृण खग मृग कीरी मोर ॥ ३ ॥
कीट पतंग स्वान खर सूकर मरकट भृंग चकोर ॥ ४ ॥
लता पता द्रुम पल्लव शाखा वेलि फूल फल वोर ॥ ५ ॥
वापी कूप सरोरुह पोखर या जो चाहो ओर ॥ ६ ॥
खार खार कछु होंहुं किशोरी पुनि पुनि यही निहोर ॥ ७
ज्यौंत्यों श्रीवन कोन कचोने परीरहों निशिभोर ॥ ८ ॥
जड जंगम चैतन्य सो भावन येही काम करोर ॥ ९ ॥
ललितमाधुरी पानकरौं नित निरखौं जुगुलकिशोर ॥१०॥१४

बिलावल चौताला।

सेश और सुरेश त्यों गणेश ईश आदि देव
गावत हैं ब्रह्मपद सर्वसुख देनुरी।
चिंतामनि पायेतें चिंतागन दूरिहोत
कामना हूं देत कल्पवृक्ष काम धेनुरी ॥
कोटिन अनेक पद गाये जे पुरान वेद
एरी सब भले वे मोको कहालेनुरी।

केलैं जहां प्रियालाल कुंजन रसमसे चूर
मेरी तो जीवन मूर वृंदावन रेनुरी ॥ १४४ ॥

जै जैवंती चौताला ।

उठे घनघोर घोर मोर सोर चहूं ओर
पवन झकोर ओर वीजी तरपै री ।
वादरके फंद चंद मंद दुख देत दंद
छिप उघरना वाकी जिय दरपैरी ॥
माधुरी ललन विन जीवन कठिन छिन
विरहा अनल तन अति झरपैरी ।
कहोरी निहोरी कर जोरी लट छोरी ओरी
अरज गरज मोरी गोरी हरिपैरी ॥ १४५ ॥

जै जैवंती ।

ऐसी कृपा कछु करो किशोरी चरन कमल ही रहों लपट
नित्तविहार निरंतर पेखौं सुनतहिं रहों प्रिय पी मृदुवानी
तुरत सचातुरी तहीं निरवारौं कहुं पायल नूपुर उरझानी
ललितकिशोरी वसौं अखंडित श्रीवृंदावन रज सुखदानी॥१

अलहिया ।

हों न भई वृंदावन भंग ।
पदरजतल मकरंद विहारिन दिनप्रति लहिती सुरस अभंग

वाही रस मदमाती भ्रमती फिरिफिरि परती पगन उमंग ॥
ललितमाधुरी कमलचरनसों लिपटी गुपटी करती उछंग ॥१४७॥

अलहिया ।

हौं न भई रज कुंजललितवन ।
पदपंकजप्रिय कुंजविहारी लसिरहिती अतिहीं सुमुदित मन ।
सजजोरी नवलाल किशोरी जब मुख मोलि निहारतीं दरपन ॥
ललितमाधुरी दीठि निवारन लै मुहिं वारि डारतीं सखिजन॥१४८

अलैया ।

हौं न भई वन मृदुल लतारी ।
ह्वै कर भजत परोसत अंगन झुकि झपटत लपटत पिय प्यारी ।
श्रमित भये विश्राम लेत दुउ दे भुज ग्रीव टेक मोडारी ॥
ललितमाधुरी श्रमकण निवरन लहकि सुपातन करत बयारी॥१४९

भैरवी ।

तबजानों वलिहार छबीली ऐसो खेल रचावो ।
नेह गुलाल मूंठ अँखियन में मार धमार मचावो ॥
रूमन रूम पाप पिचकारी भरै सुमान लचावो ।
ललिताकिशोरी वोरि प्रीतिरंग मो मन नटै नचावो ॥ १५० ॥

कजरी ।

अहै कोई ऐसी खिलवारिनि दंपति संग खिलावै मोकौ होरी ।

प्यारी लाल गुलाल रूपसों नैनन थार सुढंग भरै भरि झोरी ।
नीर मलीन सुंधाय माट मन वोरै मदछवि अंगकरै मुहिं चोरी ।
रूमरूम पिचकारी मोरी भरिदे पीतम रंगसु ललित किशोरी॥१८

किशोरी अब मोरी कुमति हरो ॥ १ ॥
निसदिन तुव चरनन अनुरागी ऐसी कृपा करो ॥ २ ॥
ऐसी जोत धरो नैनन मैं युगल युगल जगदीखै ॥ ३ ॥
रसनैसक्ति दीजिये सोई दंपति ही रस चीखै ॥ ४ ॥
काननको अधिपतितिहि कीजै मीठी आन न लागै ॥ ५ ॥
सोवत जगत चलत चितवतरसकेलि कथा अनुरागै ॥ ६ ॥
ऐसीयुगति होय नासामें लोककुवास न आवै ॥ ७ ॥
प्यारीलाल अंगरागन की सदा सुवास सुहावै ॥ ८ ॥
रूमरूमरसना दृगनासा श्रवन दीजिये प्यारी ॥ ९ ॥
भली भांति कीजे अधमाको सुरतिसुधा अधिकारी ॥ १० ॥
अतिमति हीन मलीन पतितहों विनयहूं करन न आवै ॥११॥
मानलीजिये अपनि ओरसों जो जैसी मन भावै ॥ १२ ॥
ऐसो पात्र वनै मन मेरो रूमन जो रसआवै ॥ १३ ॥
ललिताकिशोरी हिलन डुलन में तनकहु टरन न पावै॥१४॥१९

राग ।

रसना को द्वै अंखिया दीजै ।
देखि देखि छवि रूप तिहारो वरनैगुन असकीजै ।

ललितकिशोरी रैनादिवस तुवकेलिकथा रसभीजै
छिनछिन छंद रसीले राचै यह नजरातो लीजै ॥

राग देस ।

जुगुलविहार लागलगनी मति मोहि कृपाकरि दीजै ।
नवलनिकुंज विलास रंगमें जासों तनमन भीजै ॥
ललितकिशोरी उर ऊसरमें उपजैये छवि वीजै ।
तौ कछु कहौं सुनाय रैनरस जो अस करुना कीजै ॥

सोरठ ।

माफकरो जी राधे माफकरो गुनह किये थारे माफ करो
उभय भांतिकीने अनकीने गुनहगार मम दोष हरो ॥
मानस देह चूकको भांडो तुम कृपाल उर छिमा धरो ।
ललितकिशोरी प्राण पथिकहैं टुक करुणा की ढरनि ढरो

राग देस ।

किशोरी जी वृथाई कसौटी कसिये ।
निकसै सार न वहुविधि तायें मिथ्यहि मोकों तसिये ।
भूली पैज पतितपावन का दया करत पहिचानी ।
लीनी वान नवीन छवीली आजुहि छान विनानी ॥
धिकधिक दोष लगावत झूठहिं तुव विरदावलि प्यारी ।
ललितकिशोरी सवै भांति यह कुंदन नाम विगारी ॥ १

राग देस ।

प्यारीजू पीतर वृथा कसैये ।
मिथ्या कुंदन नाम प्रकृतिसों तायें सार न पैये ॥
नीरको नांउ छीर धरि भाजन किहिं माखन मथि काढो।
विविध बुद्धि वल विष सागरसों अमी काढिवो गाढो ॥
अच्छर आदि संग निशिवासर केलि नवेली कीजे ।
अच्छर अंत निकासि दयाकरि निज चरनन हठि दीजे ।
सुगत होय अधमा पीतरकी तवही ललितकिशोरी ॥
अच्छर अंत दीर्घ करि धायुत धरिये मो उरझोरी ॥ १९५

दोहा ।

गौरचंद्र नखचंद्रिका, मो उर करी प्रकास ।
तासु चांदनी में लखै, मन मूरतिरसरास ॥ १९६ ॥

राग झंझोटी ।

कब अब प्यारी लाल मिठै हो ॥ १ ॥
दाख छुहारे से कब रुचि हौ मिसरी से मन भैहो ॥ २ ॥
मीठी तान रसीली से कब कानन रंध्र समैहो ॥ ३ ॥
कब सीतल जल नीम छांहसे प्रानन तृषित जुडै हौ ॥ ४
धीर समीर सुगंधित सें कब वितपित गात सिरैहौ ॥ ५ ।

१-पीसंग, २-पीत-अर्थात प्रीति, ३-"र" को दीर्घ कर "धा" के संग से राधा होता है ।

महा छुधित को ज्यों लडुवासे कब बलिजांउ हितैहौ ॥ ६
बिछियन झनक कामिनी से कब रूमरूम धसिजैहौ ॥ ७
बूडत को तरनी से तिरि कब मेरे हाथै ऐहौ ॥ ८ ॥
कबधौं काग जहाज लौं प्यारे तुमहीं तुम दरसैहौ ॥ ९ ॥
मतवारेको मादकही गाति त्यों मति सकल भुलैहौ ॥ १०
ललितकिशोरी जगे बरातिन निंदिया से कब ऐहौ ॥ ११
कुलटाको ज्यों जार यार त्यों तन मन में रमि रैहौ ॥१२॥१

खंमाच ।

युगलछवि मेरी जीवनमूर ।
देखे बिन मन विकल रहतअति अँखियां भईंकचूर ॥
सुरतिमंजरी वारन लावहु हियरे उठत बिस्तूर ।
ललितकिशोरी लाल लखावहु अमल कमलपगधूर ॥ १६८

इति विनय सम्पूर्णम् ।

अथ विनय सिंगार लिख्यते ।

दोहा ।

कबै निकुंजचकोरिनी ह्वै हैं अंखियां मोर ।
जुगुलचंद्र अवलोकिहैं नवनव नित्त किशोर ॥ १६८

ईमन मारफत ।

कबै निकुंज विलोके अँखियां ।
चौपर खेल बैल छलबलसों प्यारी पलटत गोट परखियां ॥

मोरत भौंह छबीली छलिया धरसलि चकित चटपटी रखियां।
ललितकिशोरी रसझेली रहै केलि नवेली ज्यों मधु मखियां॥१५९॥

ईमन्न मारफत।

चाहतहौं अलिनीवनि पंकज पदमकरंद सुधारस चूसनि।
अभिलाषित नित नैन विलोकन लाल मनावनि ललना रूसनि॥
आरत हरनि शिरोमनि हेरो ललितकिशोरी गनौ न दूपनि।
लहरे पतित तरे करुणानिधि हाजिर पतितन वंशाविभूपनि॥१६०॥

ईमन्न मारफत।

कोयल कीर कोकिला कूजत नचत श्याम राधा ठकुरानी।
नूपुरधुनि कटि किंकिनि वाजत रणित मधुर मुरली की वानी॥
चातक दग देषन को मेरे दुति दामिनि घनश्याम सुहानी।
ललितकिशोरी अवके सावन वरसाने वरसाने पानी॥ १६१॥

ईमन्न मारफत।

कब इन दगन निकुंज नहेरौं।
सखियन जूथ लाडिली के संग नंदकिशोरै कुंजन घेरो॥
झटपट झपट लपट नागर नट देकर कूक स्वामिनी टेरौं।
ललिताकिशोरी तृणलालन मुख दै राधे के पायन गेरौं॥ १६२॥

लावनी ईमन।

नवल प्रिये नवलाल विहारी नव निकुंज कुंजनके महियां।

शरदइंदु आननद्युति विमली विहरत दोऊ दै गलवहि
अँखियां वीर चकोरि भईं अलि उडि मिलिवे आतिही अ
घूँघट पट मट्ट आरिन हीं कछु वरुनिन जाल परी फंसि रा

लावनी ।

कव ये नैन मधुप मिलिहैं चलि कमलनयन छवि आग
रूप सरोवर श्याम कलेवर सुकुमा सरिता नागरिसों
लताकुंज वृंदावन निरखौं अंग परसौं वृज वागरिसों
ललितकिशोरी पगौं जुगुलपग नागरि मन ज्यों नागार

खयाल चौताला ।

कवहूं पुनि वृंदावन कुंजन लतान तरे
लाडिलीके संग श्याम नाचत सिहायकै ।
थेई थेई ताधि लाग नूपुरको सोर होत
मोहि लेत गोपिकान नैनन नचायकै ॥
ललितकिशोरी लाल करिकै त्रिभंग अंग
धरि अधरान तान माधुरीसुनायकै ।
ऐसिही वितैहौ विन वंशीवट देखे दृग
फेरिकै रिझैहौ कवौं वांसुरी वजायकै ॥ १६८ ॥

गिरनारी खिमटा ।

वसाइये मो नैनन को नगरा ।

ललितकिशोरी फूलहार उर करसोहै कलियन को गजरा
ओटि नीलपट करौ सैन हग गौरस्याम जानैं सवकजरा।

मलार।

कबहुंक हगन देखिहों दोउ जन।
ललित लडैती दामिनि के संग सुंदरनवलकिशोरस्यामघन
गरवाहीं दीने मुख चूमत विविधि भांति विहरत वृंदावन
ललितकिशोरी सुरतिमंजरी अंचर उडत संभारत अंगन।

चक्रताला झंझोटी।

गोरीवर कमलनयन स्वामिनि सुन भोरी।
विहरत नित नवलकुंज अलिनी गुंजारकरैं
झूमिझूमि लता सुंज आईं चहुं ओरी॥
सुंदर नव तरुण श्याम चूडामणि कांति काम
नागर नट कंठ भुजा सुसकन सुख थोरी।
कंजसे पगन पास दीजिये निवास अली
करिकै उर आस यहै ललित नव किशोरी॥१६८॥

मलार।

निरखैं कबधौं नैना मोर।
कुहकत मोर घटा उनई लखि नाचत निन संग नवलकि॰
गावत राग मलार लडैती मोहन करत वंशिका घोर।
चटकन अंग नयनकी मटकन ललितकिशोरी की चितचो

मलार ।

पीरोपट नीलांवर ओढे चितवत लखौं हगन की कोरी ।
रसभीनी वतियां वतरावत सांवल गात अंग की गोरी ॥
ललिताकिशोरी ललित लतन तर वृंदावन कुंजन की खोरी ।
भुजंग रमे ले चलत जोरि मुख निरखौं कव वृजचंद चकोरी॥

रागधान्नि ।

मोरमुकुट आति शीस विराजै मंजुल कर मुरली उरमाला ।
पियरोपट मुरली काटि सोहै कज्जल रेखा नैन विशाला ॥
ललितकिशोरी दै गलवाहीं आलीरी गति मंद मराला ।
वसौ सदा यह वानिक मो मन नंदकिशोर विहारीलाला ॥१७

रागधान्नि ।

राधे रसिकविहारी हो टुक ढरौ नेहकी रीति ।
सावन तीज सुहाई आई मनभावन वदरन झरि लाई
घटा घेरि कारी झुकि छाई हों रसमाते गीत ॥
कुंजकुंज आलिनी अति गुंज मुंजमुंज द्रुमवेली पुंज
सीतल पवन झकोरन अंगन चमकि उठ्यौ है सीत ।
लतालता वृंदावन झूले झुलवैं मंद अली मन फूले
दरसन दै मेटो उरशूलै नेक निवाहौ प्रीत ॥ १७२ ॥

धान्नि ।

जैजै श्री वृषभान किशोरी ।

विलसो करौ कंठलागि निशिदिन रसिकलालसंग गोरी।
हों पच्छी परवस अति निरबल विषै बाज नित झपटैं।
नाहिंन कछू उराहिनो सुखसों बंदबंद पर कपटैं॥
इसतिह काक कछू नहिं दीखत जासों जोर जनाऊँ।
भालतिलक कंठी के नातैं यहवर मांगे पाऊँ॥
दुसकृत सुःकृत करन अहरानिशि का सोवत का जागे।
ललितकिशोरी रहौं लालसंग नैन हिये मन आगे॥ १८

झंझला।

प्यारीजू कवै निकुंज दिखै हौ।
अपने मोहन रसिकलालकी मृदु मुसिक्यान लखै हौ॥
चांपत चरन छबीलो छलसों तुम हूं करिअनखै हौ।
ललितकिशोरी सरदरैनमें वलि वा रसै चखै हौ॥ १७६

लावनी ख्यालकी।

जुगुलनामरस रसना पीवत छिन न अघाय किशोरीजू
नैनसुधारसरूप निरंतर छके रहैं रंगवोरी जू॥
सरसनामधुनि चाह भरे दिन रहैं श्रवन वलिगोरी जू।
हियो टूट तुव चरनन लागै आस मेड सब तोरी जू॥
आठौजाम वसै उर नैनन ललितमाधुरी जोरी जू।
अवतो यहै कृपा करिदीजै अहो स्वामिनी मोरी जू॥ १

राग पूरवी।

ऐसी कृपा करो स्वामिनि मुहिं जुगुल नाम अति हीं र्धी

कानन सुनत राधिका मोहन मन हितही वासो अनुरागै
सबही आन लालसा तजिकैपुलकि रूम सोई पग पागै।
राधेश्याम रटत नित मेरी रसना मुदित द्योसनिशि जागै॥१७

राग पूरवी।

नैनन कबै निकुंज देखिहौं।
यक पग जावक लाल लगावत दूजे पग हौं चित्र रेखिहौं॥
प्यारी अनखि झटकि प्यारेसों देत मोहि निज भाग पेखिहौं
ललिताकिशोरी चरन चूमि हरिचिरियां करि करि लेत लेखिहौं॥१७

राग पूरवी।

हाहा कृपा किशोरी करिये।
निरमल करि अंतसपुर प्यारी मो दुरमति परिहरिये॥
विषैमलीन छीन छिनछिन मन विपति पर्यो ना मसकै।
देहु दंड दृगवंक अनीसों लोटपोट ह्वै सिसकै॥
मृदु मुसक्यान सुधा दै पोषौ वलि वरदानै पावै।
ललिताकिशोरी लालरसिक गुन अधमा वरनि सुनावै॥१७८॥

राग पूरवी।

ये अभिलाष लडैती मोरी।
तुम लालन संग मुदित विराजौ मोहिं करौ मुखचंद चकोरी॥
देहु कृपाकरि वेगि छबीली ललिताकिशोरी मान निहोरी।
निशिदिन नित्त निकुंजभवनमें हाजिर रहौं वृषभानकिशोरी॥१७९।

रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चांद मे मुखपै
छुटे बिखरे मे वालों को संभालोगे तो क्या होगा।
नहीं कुछ हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसर
जरा टुक नैन ऊंचे कर निहारोगे तो क्या होगा।'
धरी सिर जलभरी गगरी छुटी सखि संगकी सगरी
हमनग्रीवा लचक मिहरी उतारोगे तो क्या होगा।
हमनघर दूरि जाना है झुकी घनघोर अँधियारी
डगर डावर भरे जलसों जो तारोगे तो क्या होगा।

खमाच चौताला ।

श्यामहीं निकुंज है मृदुल वहु हगन कोसु
विहरो निसंक होय थारी पिया यामें है।
श्यामहीं है सेज पुतरीन वीच ताराकी औ
श्याम पुतरीन पट ओटवे को जामें है॥
काजरकी रेख प्यारे श्यामहीं लगत शुभ
श्याम चारु भीत चहूंओर मनों तामें है।
कैसिहूं ना लखेपरो गौरश्याम छैलवर
श्यामहीं पलक चिक डारराखी वामें है॥ १८१॥

तिरछी चितवन की चाल ।

कौन सकै गुन गाय तिहारन कुंजविहारनि लालवि

रूप विलास सनेहकी सीव पगे रस रंग सु केलि महारी ॥
मांगत हौं करजोरि निहोरिजू माधुरी और न जाचन हारी ।
श्रीवनवास वसै रस रास उर नैननमें छवि नित्त तिहारी॥१८२॥

तिरछी चितवन की चाल ।

कुंजनकुंज भ्रमौ सुखपुंज रंगीली रंगीले रंगे रंग रासा ।
नेक चितै हितसों इत लाडिली मेरे तो येक है तेरिही आसा
जाचत और न बात कछू रसप्रेममई बन देहु निवासा ।
माधुरी नैन निहारि दुहूंचित चायरहीं पदकंज सुपासा ॥१८३॥

तिरछी चितवन की चाल ।

वह नूपुरधुनि कवै सुनै हो ।
पीतम संग भुनन भुनि वाजत सिसकन विषम ताल मिलै हो ॥
मेरे मनैनि कुंज वासको ललितकिशोरी जो अरसै हो ।
ऐसो निमक हराम चकारिहा सांचहु स्वामिनि बहुरिन पैहो॥१८४॥

राग फरज ।

जुगल छवि स्वांति चातकी अँखियां ।
वृंदाविपिन वदरिया तै सखि वरषन कृपा परखियां ॥
गौरश्याम छविरूप वुंदाहित आतुर त्रषित विलखियां ।
ललित किशोरी फरफरात नित आकुलपंख निमिखियां ॥१८५॥

फरज ।

श्रीवृन्दावन आनि छवीली मोहन छवि उर लेखत हौं ।

लतालता रसकुंजमाधुरी इन अँखियनमों पेखत हों ॥
कालिंदी पयपान करत रज नाम अंग अँग लेखत हों ॥
ललिताकिशोरी बनीमबे अब बाट रावरी देखत हों ॥१८६॥

इति विनय सिंगार संपूर्णम् ।

अथ पश्चात्ताप का त्रिज त्रिदा ।

बिहाग ।

लाज लगावत भालतिलकको ।
श्रीचैतन्य तुमारी तदपि सुमिरत ना नखचंद्र झलकको ॥
ललिताकिशोरी अलकफांस फँसि मालत ना डर नोकपलकको
धिकधिक जो निशिदिन इननैनन झालत नाहिं बुलाक हलकको।

बिहाग ।

कुलकलंक चैतन्य उपासिन ।
दुसकर्मी बदनामी टीको श्रीवृन्दावन कुंजनिसासिन ॥
रैनदिवस परदोष विचारत फँसत न हद अलकनकी फाँसिन ।
लाज लगावनहार किशोरी राधागोविंद ललितखवासिन ॥१८८॥

राग बिहाग ।

पढ़िपढ़ि सब पानीमें बोरो ।
जोपै जुगलकिशोर रूप रस चूरचूर कर चित्त ना घोरो ॥
चतुराई अति धूर कूर अलि जो निजप्रीतम नाहिं निहोरो
ललिताकिशोरी बिन दिलदारै वीर अकारथ जोवन जोरो ॥१८९

राग झंझौटी ।

जानत आप सहसजुग जीहैं ।
अवतो चाखि लेइं सुख लौकिक फेरि जुगुलछवि पीहैं ॥
मनौं वापकी धरी धरोहर जबचाहै लैलीहैं ।
ललिताकिशोरी तारतार जबहो तब अँगिया सीहैं ॥१८७॥

झंझोटी ।

मो सम कौन अधरमी वीर ।
मिहीं लालललनाकी बातें भनत विरहकी उठत न पीर ॥
अतिकठोर उर ललितकिशोरी नैन वैन जिमि लगत न तीर
श्रवन परत वृंदावनवानी धिकधिक पुनि सुधि रहत शरीर॥१८८

खम्माच ।

जुगुलकिशोर निकुंज निरंतर वसत न दृग उतपाते हैं ।
यासों कहा अधमता दंपति निरखत छवि अरसाते हैं ॥
ललित किशोरी मो पापोंके पवनझकोरे आते हैं ।
अजामेल आदिक भुनगा से पापी भागे जाते हैं ॥ १८९ ॥

खम्माच ।

जगमें कौन आलसी मोसी ।
विन सेवा मन साधु पुरावे करुनामय को तोसी ॥
सकुच न लागत पावत निशिदिन पातर नित्त परोसी ।
जनम बनमतें ललितकिशोरी पदमकरंद सों पोसी ॥ १९० ॥

॥ अथ शिक्षा ॥
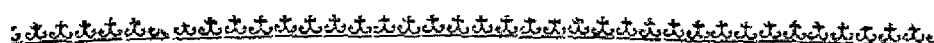
झिल्ला ।

श्रीवनवासकी आस करों विश्वास करों जुगनामके माहीं ।
संतनको सतसंग करों अँग रंग रँगों जिहिं जुगुल मिलाहीं
गौरश्याम मद मत्त रहों दृग छिन छिन दरशन को ललचाहीं
बालगुविंद छकों छवि सों तव ललितकिशोरी नैन सिराहीं॥१६

॥ दोहा ॥

श्री वृंदावन रेनु को मरम न पावै कोय ।
मिलैं रासिक युग चन्द्रमा दृढ़ कर खोजै जोय ॥१६२॥
श्री वृन्दावन रेनुका लुठत रहौ मुख मांह ।
चल सखि वेग वटोरिये यह सुख त्रिभुवन छांह ॥ १६३ ॥
श्री वृन्दावन बैठिकै करै भावना चित्त ।
सैंति सैंति मनमें धरै ज्यों दारिद्री वित्त ॥ १६४ ॥
श्री वृंदावन रेनुके छापे अंगन छाप ।
कदम कुंज तर बैठिकैं श्यामा श्याम अलाप ॥ १६५ ॥
श्रीवन श्रीवन कहु सखी श्रीवन श्रीवन बोल ।
श्रीवन श्रीवन सांच कहु श्रीवन रास ठठोल ॥ १६६ ॥
श्री वृन्दावन कुंज में राधा रमन लाल ॥
यक टक नैनन हेरिये ललित त्रिभंग गुपाल ॥ १६७ ॥
श्री वृंदावन राधिका वंक विहारी लाल ।
चल सखि लख नैना झुकै पूरे रेसम जाल ॥ १६८ ॥
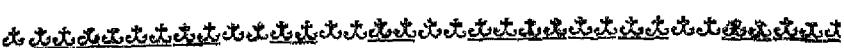
श्री वृंदावन वास की आस करत मन मांह
गहत गैल प्रतिकूल चित कठिन कुंज द्रुम छांह ॥ १६

रागदेस ।

राधा नामपै मैं वारी ।
मधुर मधुर मुरली में हित सों गावत रसिक विहारी ।
जा सुमरै अनुराग होत दृग जुगुल रूप हितकारी ।
ललिताकिशोरी छवि रस आगे षटरस लागत खारी ॥

रागदेस ।

राधा नामहीं सों काम ।
राधा नाम परम धन मेरे कल्पद्रुम अभिराम ॥
राधा नाम लिये सुख दरसै श्री वृंदावन धाम ।
ललितकिशोरी रटों निरंतर राधा राधा नाम ॥ २०१

रागदेस ।

राधा नाम सों चित रांच ।
राधा नाम रेख सुचि रुचिसों अंतस कागद खांच ॥
राधा नाम अंक आभूषन भूषित कर अँग नाच ।
राधा नाम लिखी पाटुलिया ललित किशोरी बाँच ॥ २

रागदेस ।

राधा नामही सों नातो ।
जाके नाम लेत प्रीतम सों परत प्रीत को खातो ॥

जो विश्वासै ललितकिशोरी पहिले तें मन लाती।
होतो कुंज निवास जगत क्यों जनम जनम भरमातो ॥२

देस।

राधा नाम को उर धार।
मिलिहै रसिक मुकुटमणि मोहन आपुहि कुंजन द्वार॥
आठो जाम छकेंगी अँखियां छवि निकुँज विहार।
ललितकिशोरी फीके परिहैं सरवस सुख संसार॥ २०४।

देस।

राधा नाम को आधार।
रसिक लालवर रटत निरंतर सरवस रसको सार॥
सब गुनहीन मलीन दीन अति पतितन में सरदार।
ललिताकिशोरी तासु भरोसे सोवत पांव पसार॥ २०६।

देस।

राधा नाम की गति न्यारी।
सपनेहूं रसना पर आवत होत विवस वन कुंज विहारी॥
सुंदर दिव्य किशोर वैसनव वानी मधुर रटत पक सारी
श्री वृंदावन वास निरंतर पावत ललितकिशोरी वारी ॥२

रागदेस।

राधानाम को आराध।
साधन अन्य त्यागिकै मनुवां याहीको हटसाध॥

मिलिहै ललितकिशोरी नागर शोभासिंधु अगाध ।
फलिहैं सकल मनोरथ ह्वैहै श्रीवनवास अवाध ॥ २०७ ॥

बिहाग ।

सींच रूपरस नवल नवेली ।
फिरि संताप कामना अैहै सूखिगये पर आयुहु वेली ॥
ललिताकिशोरी चतुराईसो फूलै फलै रहै अलवेली ।
जुगुलनामकी वार रोंपकै घर वृंदावनधूर सहेली ॥ २०८ ॥

बिहाग ।

क्यों न मूढमति वेग सँवारै ।
जुगुल नाम पतवार बावरी मानस हाथन दृढ़ करि धारै ॥
ललितकिशोरी सतगुरसों मिलि रहु जो बूडत आँनि उबारै ।
पानी चढत सीसतें सजनी फिरि को केवट नाव पुकारै ॥२०९॥

बिहाग ।

श्रीचैतन्य नाम गुनगोरी ।
गहिले या भवसिंधु अगममें कालहु कर्म सकै ना बोरी ॥
दिन कर सत गुरु कृपा प्रभासों प्रफुलित रहिहैं मान निहोरी ।
बाढै जल आकाश कमलवत उतरैहै तू ललितकिशोरी ॥२१०॥

बिहाग ।

दाडिम दशन रसन किम चाखै ।
मधुर अरुण दंपति अधरन की ललक लेत ना दाखै ॥
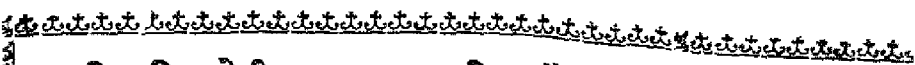
ललितकिशोरी रूपसुधा तजि लौकिक विष मन राखै ।
अमृतफल जिमि छांडि सूअना इंद्रायन अभिलाषै ॥ २११ ॥

बिहाग ।

नाहिंन हीरन खान भरे ।
लेलैहै जो जुगुलजवाहिर दौरदौर सबमें अगरे ॥
सतगुरपद नखचंद्र सुरुचिसों अति विश्वास न चितसुमिरे ।
ललितकिशोरी चेत मूढमति केवट बिन को सिंधु तरे ॥२१२॥

कैलीगौरी ।

कहा होत दौरे अगरे ।
जुगुलकिशोर उपासन हीरा नाहिन गलीगली बगरे ॥
ललितकिशोरी कठिन पंथ यह पगपगमें भवसिंधु भरे ।
सतगुरु उर विश्वास न लायें चढि सुमेर पुनि भूमिपरे ॥२१३॥

॥ दोहा ॥

राधागोविंद पद कमल, निशिदिन हिये सँवार ।
जिन करुना अवलोकिये, नवल निकुंजविहार ॥ २१४ ॥

कैलीगौरी ।

मेरो भलो बुरो ना मानो ।
जुगुल नाम छवि छकी वारुणी रोस हिये न आनो ॥
पी देखौ टुक प्रेम सुधा मद वाही में चित सानो ।
ललितकिशोरी रूप उपासन तब अंतस पहिचानो ॥२१५॥

रागदेस ।

राधा नाम अदभुत चंद ।
वरसत नित शृंगार सुधारस सरसत अमित अनंद ।
जासु प्रभा अंतसतम नासन जात सकल दुखदंद ॥
ललिताकिशोरी सदायेकरस क्यों न भजसि मतिमंद ॥ २१६

उत्तरी देस ।

गौर श्याम छवि रूप सुधाको दृगन पलन चित तोलोरी ।
कानन कथा केश भृकुटी चिवु नैन सैन रस घोलोरी ॥
ललिताकिशोरी मूकन बैठो कुँवरि ललन मुख बोलोरी ।
करनफूल वेशरकी वातैं फिरिफिरि गाठिगाठि छोलोरी ॥२१७।

आसावरी ।

पुलिन कलींदी दोउजन विहरैं ।
मृगनैनी इंदीवरलोचन रूपसरोवर छकिछकि पैरें ॥
ललिताकिशोरी याही मगव्है भुजभीरे औहैंरी सवेरैं ।
निशि वसिये वा कुंजलतनमें होत प्रात सखि चखसुख हेरैं॥२१८

टोडीजौनपुरी ।

पदरज तजि किम आस करतहो जोग जग्य जप साधाकी ।
सुमिरत होत सुखव आंनद अति जर न रहत दुख वाधाकी ।
ललिताकिशोरी शरण सदा रहु शोभासिंधु अगाधाकी ।
परब्रह्म गावत जाको जग झारत चरणरेणु राधाकी ॥ २१९ ।

उत्तरीकमाल ।

श्यामरंग नेहा जिन लगाय ।
लोकलाज कुलकान नसैहैं ब्रजजन हँसिहैं गाल बजाय ॥
ललितकिशोरीके हियरेमें श्यामछटा छवि गई समाय ।
वसन होयतौ पलटौं सजनी यही मन कहुँ पलटो जाय॥२

॥ दोहा ॥

भक्तमालमें यह कथा काहू कपट चलाय ।
वपु धारचो हो भक्त को तैसेइ रह्यो लजाय ॥ २२१ ॥
राधे राधेश्याम भज भज श्री श्यामाश्याम ।
वारस छिन मन मगन रहु निशिदिशि आठौजाम ॥ २२
श्रीगुरचरन सँवार मन चित दै मेरी मान ।
ललित लडैतीलाल छवि निश्चै हियरे आन ॥ २२३ ॥

कवित्त ।

माधुरी अधर विंव दामिनीदशन द्युत
गौरश्याम अंगकी तरंग मन लहु
वंशीवट तीर वीर शीतल समीर मंद
राधिका मुकुंद संग वृंदावन रहुरे
रेसमकी डोरि द्रुम डारि हिंडोर दोऊ
झोंकके वढायवेको डोर तुहू गहुरे
ललितकिशोरी सुन राधिकागुपाल धुनि
जो पै सुख लूटोचहे राधाकृष्ण कहुरे ॥२

॥ दोहा ॥

कृष्णचंद्रमा रूपको श्रीवृंदावन कुंज ।
द्दगन विलोकै किनि सखी चल छवि आनँद पुंज ।
कठिन कठिन अति कठिन है रंगभूमि रस प्रेम ।
परै न पग पाछे भटू सुमरि जात निज नेम ॥ २२६
गोपीवल्लभलालकी छिनछिन छवि द्दग देखि ।
श्रीवृंदावनकुंज उर मूरति मधुरी पेखि ॥ २२७ ॥

देस ।

गैल श्रीवृंदावनकी गहिये ।
सेवाकुंज कौनमें बैठे जुगुललाल छवि लहिये ॥
रसिकनके पग चांपि हुलसिये श्यामगौर मुख कहिये
ललिताकिशोरी जाविधि राखैं ताहीविधि मन रहिये ।

रागदेस उतरा ।

चांपनको करकंजपगनके कोमल अंग धरेई रहैं ।
कान कथारसपान करनको अति आतुर लवरेई रहैं ।
ललिताकिशोरी जुगुलछबिलि हियरे मांहिं अरेई रहैं ।
लाडिलीलालके नेह सदा दोउ भाजन नैन भरेई रहैं

दोहा

चिकनो घट मत हूजिये जुगुल रँग रस हेत ।
सराबोर रंगिये दगन यह रसिकन संकेत ॥ २३० ॥
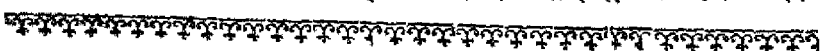
चेत अमोल चिंतामनी प्यारी पग परसाय।
श्रीवृंदावन धूर तजि नाहिंन आन गँवाय॥ २३१॥
ऊलचिकनिया छवि सखी धरे लटपटीपाग।
राधा संग वृन्दाविपिन उनसों कर अनुराग॥ २३२॥

जिला झंझोटी

जव श्री वनवास मिलो सजनी तव तीरथ आन गये न गये।
जव लाडिलीलाल को नाम लयो तव नाम न आन लये न लये
पदकंज किशोरीहि चित्त पग्यो तव पायन आन नये न नये।
जव नैन लगे मनमोहनसों तव औगुन आन भये न भये॥२३३॥

जिला झंझोटी।

जव कंठ लसी तुलसी गलमें तव मोतिन माल कहा करिवें
जव चंदन गोपीकी छाप छपी तव और सिंगार कहा भरिवें
जव लाडिलीलाल की ओर ढरे तव और की ओर कहा ढरिवें
जव नागरिनंदकिशोर धरे उर और को ध्यान कहा धरिवें।
जव गौरकिशोरकी आस भये तव हांसिन लोक कहा डरिवें
जव श्री वनवीथिन आय डरे तव प्रानहु जाँय कहा टरिवें॥२३४

जिल झंझोटी

जौ पै प्रतिवंध नांहिं स्वामिनि प्रतिवंध, कोइ
काहेको धोम वीरवृथा ही विताइये
तात मात भ्रातहू को जीति ही तिलअंजु दे,
चालै जो कोइ साथ ताको लै आइये

मान कुल कान लाज सुख्ख संपत्त हू,
वनै तो वनै नाहिं इनहूँ सिराइये ।
नेहकी तो रीति यह जानै जो गेह तजि,
देहू को छांडि धीर वृंदावन जाइये ॥ २३५ ॥

दोहा

जुगुललाल मिलिवो चहै गैल गहै प्रतिकूल ।
वावनकी अभिलाष ज्यों लपकै ऊँचे फूल ॥ २३६ ॥
जुगुललाल छवि अतिकठिन सपने हू न दिखाय ।
निश्चै मिलै सु तासु जो श्रीवृन्दावन जाय ॥ २३७ ॥

धनाश्री ।

दृगन दीठि दोउचंद रसिक गोविंद इंदु वृषभानदुलारी ।
रसनरंध्र रहै परि पूरित रसरसिया राधा वनवारी ।
कान सुनैं ना कथा आनि अलि छांडि सुधालीला पिय प्यारी
ललितकिशोरी पद अरपित मन
नित्यनेम दृढ जुगुल विहारी ॥२३८॥

दोहा

नाम धाम लीला अली जुगुलरूपसों प्रीति ।
गैये रस शृंगार को यह रसिकनकी रीति ॥ २३९ ॥
नाना फूलन तज सखी मन मधुकर यक ओर ।
करकै पद मकरंद लहु पंकज जुगुलकिशोर ॥ २४० ॥
पगनूपुरकी वजनमें धुनि ह्वै मिलिये जाय ।

अंगअंग लखि माधुरी रहिये विवस लुभाय ॥ :

छन्द मनोहर

लोचन निहार छवि स्यामास्याम रैनदिन.
स्यामास्याम बैन सुन स्यामास्याम भाखहीं ।
स्यामास्याम रंगरंग स्यामास्याम संग कर.
स्यामास्याम धूलि पग अंगबीच आखहीं ।
स्यामास्याम सेवा कर स्यामस्याम लख हीय
स्यामास्याम धाम बसि वाम रस चाखहीं ।
स्यामास्याम जोरी बसि ललितकिशोरी उर.
ऐसी बनिआव कहीं तोहि पास राखहीं ।

रागछाहीं

छांडि भटक मन त्याग चपलता गौरचंद्र चरनन
ऐसे दयासिंधु करुणाकर भक्तरत्न बिन हीं श्रम
दृढविश्वास कहीं सौंह दीन्हें श्रीवनवास व्याजहीं
ललितमाधुरी जुगुललालकी प्रेमजनित नवनव नि

जंगला

रे भज शचीनंद चैतन्य ।
दृढविश्वास प्रेमरस भजिन बस श्रीवृंदारण्य ॥
सेव चरन तल धूलि उभयरस रसिकन राम अन
ललितमाधुरी रूप छकी नित डोल मोदसंपन्य ॥

रागछाप्टौ

मानौ आन पितर देवीकी जुगुलमाधुरी लेहु निहारी ।
सुतसौगंधकी कानि जानिकै सुनौ कथा श्यामा वनवा
ललितकिशोरी लालसों नेहा करौ धरौ उर सीख हमारी
पली इष्टकी सोंह तुमैं श्रीराधाकृष्ण कहो यक वारी ॥

॥ दोहा ॥

वृंदावन वेलीसघन रमनहरनमन होय ।
चलै वेगि किन हेभट्ट लखैं दृगनकी लोय ॥
वृंदावन कुंजन सखी विहैरं श्यामाश्याम ।
चलचल नैनन हेरिये सुंदर छवि अभिराम ॥
वृंदावनकी खोरिमें ललित लडैतीलाल ।
जुरि मिलि चल हेरैं भट्ट लोचन ललित रसाल ॥
वृंदावन जूठन कहूं परे सीथ जो होय ।
हिलिमिलिकै हम तुम सखी चुनि चुनियावें सोय ॥
वृंदावनवीथिन अटैं हम तुम जुरि मिलि वीर ।
पुलकि पुलकि पुलिनन लुटै कालिन्द्री के तीर ॥
वृंदावन चल जाइये छांडि सकल जग व्याधि ।
राधे राधे गाइये श्रीराधे पल आधि ॥
वृंदावन रसिकन भट्ट भेटै चलमोमान ।
उन संगति तें पाइहैं राधेश्याम सुजान ॥
वृंदावन रेनी सखी मस्तक जगमग होय ।

लुटन लुटन रसिकन पगन जीवन को फल सोय ।
वृंदावन तजि सुख नहीं भजि चल भजि चल वीर
पैहैं मांगि मधूकरी पीहैं जमुना नीर ॥
वृंदावन की रेनु को घोरि लगाये अंग ।
ताविच अंकित कीजिये नाम प्रिया पिय संग ॥
वृंदावन में बहु वसें श्रीचैतन्य उपासि ।
तिन चरनन रज लोटिये चल सखि आनंद रासि
वृंदावन चल लख सखी राधा वल्लभलाल ।
सुकुमारे अँग तरुनवय भृकुटी वंक विसाल ॥
वृंदावन श्रीराधिका दामोदर छवि देख ।
कछनी कटि जाँघिया कसे केन्हे नटवर वेष ॥
वौरी है मग डोलिये श्रीवृन्दावन धाम ।
कुउ कछु बूझै ये भट्ट कहिये श्यामाश्याम ॥
भाल तिलक वन रेनुको रचि रचि भालल्गाय ।
नाच जुगुल वर आगुहीं अंगन भाव बनाय ॥
मान कही मेरी भट्ट चलिये वेग सवेर ।
श्रीवृंदावन वास में अब जिन करसि अवेर ॥
मोर मुकुट की लटक को चंद्रकला की ओर ।
गौर श्याम दामिन जलद लखिये रूप झकोर ॥
राधा मदन गुपाल को चल वृंदावन हेर ।
वयस अकारथ जात है काहे करै अवेर ॥
रसिक बिहारीलालजू श्रीवृंदावन मांहिं ।

चल सखि वेग बिलोकिये प्यारी के गलबाहिं ॥
राधे छैला स्याम की नैनन भरि छवि लेहु ।
श्रीवृंदावन मध्य में बिसरै छल संदेह ॥
सुंदर छवि श्रीराधिका मदनमुहन ब्रजचंद ।
वृंदावन चल लख सखी अद्भुत अमित अनंद ॥

झिल्ला

स्यामा स्याम रंग रैनी वृंदावन वसै वहु,
रंगैया प्रवीन वस जाइ उनहीं साज संग ।
जमुना पय वोर वोर घोर घोर रेनु वन,
देकर मसालो नाम वारवार फीच अंग ॥
मान उपदेश जोपे सांची है रंगान हारी,
देख किन नैन छवि गौर स्याम की तरंग ।
ललितकिशोरी जोपे होतो रंगरेज ऐसी,
रंगती आपुन पौन अंग स्यामा स्याम रंग ॥

दोहा ।

स्याया स्याम के रंग में रंग्यो चहत ये क्रूर ।
गुन गावत नित स्याम के कैसिक परिहैं पूर ॥
स्यामापग लवलीन हो उनहीं हाथ बिकाय,
तोहीं करमें येमद्द मोहन विकिहैं आय ।
स्यामा जुत घनस्याम को मनमें राखो ध्यान ॥
जुगुललाल छवि हगन धर यह रसिकन पहिचान
स्यामा पग हट गहु सखी मिलिहैं निश्चै स्याम ॥

ना मानैं दृग देखले श्यामाप्रद बिन श्याम ॥

इश्क मारफत

सगुन रसिक असगुन न बिचारैं ।
आतुर छवि अति ललितमाधुरी सीस ऐन पद्धति पचिहारैं ॥
काटैं मग मझार निगोड़ी बाँयें हाथमें काग पुकारैं ॥
ललितकिशोरी सून सांकरिन मनमतंग गति को निरवारैं ॥

दोहा ।

हाहाकरौं नैना रँगे गौर स्याम के रंग ।
जित हेरौं तित ही उठैं श्यामा श्याम तरंग ॥
आसर है वनवास की सब लालना त्याग ।
जैसे तैसे है भट्ट भागत बने तु साग ॥
अँग अँग माहीं जब लगैं श्रीवृंदावन रैन ।
नैनन ते असुवा ढरैं तब जीवन सुख चैन ॥

इश्क मारफत

साह भये धन जोरन को भये चोरन को कुतवाल कहाये ॥१
भूपति नीति के पालन को भये बांके टके अस्त्र सजाये ॥२॥
फील तुरंग चढ़े अभिमानी नट ह्वै नाना खेल जमाये ॥३॥
नैनन कपट मूंदि भावुक बन जोगी अँग अँग भस्म जमाये ॥४
पढि पढि शास्त्र पुरान बिवादे मुल्ला मजहब बहस बढाये ॥५
मंत्री जंत्री भये भूतिया चेटक नाटक जगत दिखाये ॥६॥
मुंसी दूत दिवान वैद ह्वै घरघर गलबल गाल बजाये ॥७॥

छली वली परपंच नियाई जगडवाल सागर भरमाये
इंद्र कुवेर भये ब्रह्मादिक ललिताकिशोरी जन्म न साये
फटा पुराना पहिन लियातो नहीं खिसारा ॥ १ ॥
जरी दुशाला ओठ फिरा तो नफा न यारा ॥ २ ॥
विसतर खाक वानय लिया तौ कौन विगारा ॥ ३ ॥
मखमल फरस विछाय कहो क्या काज संवारा ॥ ४ ॥
जंगल में विश्राम लिया क्या गिरह का डारा ॥ ५ ॥
कंचनभवन अराम किया कुछ पूर न पारा ॥ ६ ॥
तनहा गर सरगरदां तौ कुछ खतर न ख्वारा ॥ ७ ।
तोप तुफंग अभंग फौजसे काल न हारा ॥ ८ ॥
मरा नहीं विन मौत धूर अंगरमा विचारा ॥ ९ ॥
वचा न खोद जिरहवखतर तन साज करारा ॥ १० ॥
पाय पियादा हुआतो क्या दिल दरद गंवारा ॥ ११ ।
फील तुरंग शुतर चढि भवनिध नहीं उवारा ॥ १२ ॥
ललितकिशोरी सार यही मन खूब विचारा ॥ १३ ॥
युगलनाम भज राधाश्याम सु वारंवारा ॥ १४ ॥

रागजंगला

कर सखि वृंन्दवनसों हेत ।
तजि परपंच अरुन हरियारे कारे पीरे सेत ।
ललितकिशोरी लालरूप लख वननिकुंज संकेत ।
दारा सुत जो संग न छाँडै वसिये कुटुमसमेत ।
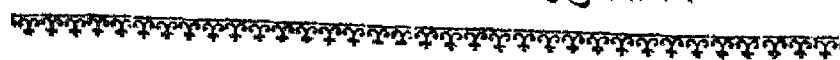
जंगला

वृन्दवनसों नेह लगैये ।
काम क्रोध आदिक जमदूतन मुख विदुकाय परमपद पैये
रटिरटि राधारमन ध्यानधरि तुरत पाप ततताप नसैये ।
ललितकिशोरी कुंजगलिन लुटि विगरी जन्म अनेक बनैं

जंगला

वृंन्दावनकी चाह करो ।
चाह कुचाह सकल वाहिर करि, अंतस दंपति नेहभरो ।
निधुवन निविडनिकुंज छांह छिन, मूंदिकैं नैन न ध्यान
देखो तो का होय परमसुख, देश देश क्यों भरम मरो ।
रटिरटि राधानाम रैनादिन, क्यो नाजी संताप हरो ।
ललित माधुरी पियो नैन भरि, मानों तो ना भारपरो ॥

फुट

हो दृग श्रीवन चंद्र चकोर ।
निरखत रहो लता किरननछवि राधा नंद किशोर ॥
चितवत मुख लावन्य माधुरी चितै न दूजी ओर ।
ललितकिशोरी भोर सांझ कर सांझमों करद भोर ॥

राग भैरों

मृदु मुसक्यान वान वींधे विन बांके नाम धरावैं ।
अलक कमंद फंद विन उरझै आंदू पायं डरावैं ॥

ललितकिशोरी रंग भूमि रस शूरन कुल सकुचावें ।
जुगुल कटाक्ष भयेविनघायल ढाली वंद कहावें ॥

राग पट

अब मत भूल मूढ मति ओरी ।
जुगुललाल छवि रूप वगीचै तजि जिन फँसै जाल भ्रम
उडि उडि सुमन सुगंध अंग लहु चाय रहसि मुख चंद
पाले परि दुसकर्म पारधी कढिवो दुसकर ललिताकिशोरी

॥ अथ मनः शिक्षा ॥

राग पट

मनुवां शीख हमारी है ।
चूर चूर है ब्रजरज मिलिये येही शोभा सारी है ॥
सोता है बेहोस पडा क्या चलने की तैयारी है ।
ललितकिशोरी चरण शरण रहु आखिर कुंज बिहारी है

जोगिया गौरी ।

मनुवां चलै मालती कुंजै ।
रूप सरोवर कमल लाडिली श्याम मधुप वनि गुंजै ॥
ललितकिशोरी निरखै दृग भरि आलींगन छविपुंजै ।
सोने में क्या नफा विचारा अट वृंदावन मुंजै ॥२४८

जोगिया गौरी ।

तुहि समुझावत मैं पचिहारी ।

प्रातहि तैं उठि भानुनंदिनी भजै न कुंजबिहारी ॥
ललितकिशोरी रस रंग भीनी पी विन निशा निवारी ।
मोकों कहा आपनी मनुवां सरवस बान विगारी ॥२४८॥

झूलना छंद ।

राधा कृष्ण नामकी गठरी बांधे कहु कहां उटाअडा ।
सत गुर संग निकस चल नातो लुटि जावेगा खडा खडा ।,
ललितकिशोरी श्री वृंदावन दरशन विन चित सोच बडा ।
धौंसा कूंच वजारे मनुआं सोता क्या अलमस्त पडा ॥२४९

खिमटासिंधुका ।

सोय सोय सबकाम विगारा ।
गौरश्यामरसरूप न चाखा जुगुललाल अस नाम विसारा ॥
ललितकिशोरी श्रीवृंदावनसोधनहूं नाचित्त सम्हारा ।
चेत चेत वे मूरख मनुआं जीती वाजी जाता हारा ॥२५०॥

खिमटा गिरनारी ।

मनुवां सोने से ना हारा ।
वाजी वैस हरी जो ललनहिं नंदलालहिं न सिंगारा ॥
अजहूं कहा मानिले मेरा तुरत होत निस्तारा ।
ललितकिशोरी चल वृंदावन पक्को हैं पैवारा ॥२५१॥

खिमटा गिरनारी ।

मनुआं सोने की तजि वातें ।
जुगुललाल गुनगाव निरंतर भोर भये क्या रातें ॥

ललितकिशोरी खावैगा जो वैस सदा अरसातैं ।
अंत समय वृंदावन घुस तैं खावैगा जमलातैं ॥२५२।

जोगिया कलंगड़ा ।

मनुवां सोने में चित राखै ।
श्रीवृंदावन जुगुलमनोह रैन दिना ना भाषै ॥
ललितकिशोरी सीख मानि मो आलस को धरि ताखै
गौर श्याम वदनारविंद रसरूप सदा किन चाखै ॥२५

जोगिया कलंगड़ा ।

जुगुल जपनकी वेला मनुआं काम क्रोध क्यों घेरा ।
अनत कहा भटकत तू डोलै वृंदावन कर फेरा ॥
ललितकिशोरी कुंज वास कर कहा मान ले मेरा ।
गौर श्याम वदनारविंद फसि अलकन का उरझेरा ॥

जोगिया कलंगड़ा ।

जुगुल भजन ना जाना मनुआं काहे पै इतराना ।
माता निशिदिन विषै वासना वरसाना पहिचाना ॥
सोता है गफलत में मूरख मायापटल पटाना ।
ललितकिशोरी लालनके रहु अलकों में उरझाना ॥२५

जोगिया कलंगड़ा ।

क्यों तैं जुगुल नाम ना गोवै ।
सोय सोय के निशिदिन मनुआं आयु अकारथ खोवै ।

इन वातों में नफा कहो क्या ललितकिशोरी
ब्रह्म मानि आपुनपो भ्रमहीं पथ सोये
जोगिया कलंगड़ा।

मनुआं मत कर निमक हरामी।
सेय निकुंजद्वार निशिवासर आलस तजि
विगरी वेग समार रसिक हो सतगुर
बहुत दिना लौं ललितकिशोरी पतितन में
सारंग।

कवलौं पतितन मुकुट कहै है।
पदसरोज भज निशिदिन अवहुं के मन
श्रीवृंन्दावन पाय मूढमन ललितकिशोरी
रतन अमोलक छांडि छली तो.
काचीगुंजा को
सारंग

मन विहंग वृंन्दवन वसियो।
जुगुललाल अलकन तजि दूजे आल जाल मन
लतालता नव फूल फूलवर पातपात मों
ललितकिशोरी लाल चखे फल सुफल
झंझोटी

मन मधुकर है यह व्रत राख।
श्रीवनसर दंपतिअंगअंबुज छविमकंदहि चाख।

ललितकिशोरी खोवैगा जो वैस सदां अरसातैं ।
अंत समय वृंदावन घुस तैं खावैगा जमलातैं ॥२५२॥

जोगिया कलंगड़ा ।

मनुवां सोने मैं चित राखै ।
श्रीवृंदावन जुगुलमनोह रैन दिना ना भाषै ॥
ललितकिशोरी सीख मानि मो आलस को धरि तारवै
गौर श्याम वदनारविंद रसरूप सदां किन चाखै ॥२५

जोगिया कलंगड़ा ।

जुगुल जपनकी वेला मनुआं काम क्रोध क्यों घेरा ।
अनत कहा भटकत तू डोलै वृंदावन कर फेरा ॥
ललितकिशोरी कुंज वास कर कहा मान ले मेरा ।
गौर श्याम वदनारविंद फसि अलकन का उरझेरा ॥

जोगिया कलंगड़ा ।

जुगुल भजन ना जाना मनुआं काहे पै इतराना ।
माता निशिदिन विषै वासना वरसाना पहिचाना ॥
सोता है गफलत में मूरख मायापटल पटाना ।
ललितकिशोरी लालनके रहु अलकों में उरझाना ॥२५

जोगिया कलंगड़ा ।

क्यों तैं जुगुल नाम ना गोवै ।
सोय सोय के निशिदिन मनुआं आयु अकारथ खोवै

इन वातों में नफा कहो क्या ललितकिशोरी होवै ।
ब्रह्म मानि आपुनपो भ्रमहीं पथ सोये रस जोवै ॥२५६॥

जोगिया कलंगड़ा ।

मनुआं मत कर निमक हरामी ।
सेय निकुंजद्वार निशिवासर आलस तजि खल कामी ॥
विगरी वेग समार रसिक हो सतगुर करस गुलामी ।
बहुत दिना लौं ललितकिशोरी पतितन में रहो नामी ॥२५

सारंग ।

कवलौं पतितन मुकुट कहै है ।
पदसरोज भज निशिदिन अवहुं कै मन याहू जन मनसै ।
श्रीवृन्दावन पाय मूढमन ललितकिशोरी जो भरमै है ।
रतन अमोलक छांडि छली तौ,
काचीगुंजा को ललचै है ॥ २५८

सारंग

मन विहंग वृंन्दवन वसियो ।
जुगुललाल अलकन तजि दूजे आल जाल मत फँसियो ।
लतालता नव फूल फूलवर पातपात सों लसियो ।
ललितकिशोरी लाल चखे फल सुफल सुचाखि हुलसियो ।

झंझोटी

मन मधुकुर ह्वै यह व्रत राख ।
श्रीवनसर दंपतिअंगअंवुज छविमकरंदहि चाख ।

नाना सुमन कुरंग कुगंधित जगसों मत अभिलाख ।
ललितकिशोरी मृदु धुनि राधा रसिकविहारी भाख ।

रागसारंग

मेरी मान सबै वनि जैहै ।
नित्त निकुंज द्वारवस मनुआं जुगुलरंग हियरे सरसै है ।
रात विरात कहूं काननमें रुनुनझुनुन नूपुर धुनि अैहै ।
ललित किशोरी चंदविलोकत गौरस्यामछवि नैन समैहै॥२५९

सारंग ।

कवलों पतितन पांति जैय है ।
अव मिल रसिकनजाति मूढ मन सरवस विमुखन संग खोयहै ।
मेरी मान जुगुलपग तलरज जो निकुंजके द्वार सेइहै ।
ललितकिशोरी नित्त झरोखे मोरमुकुटकी झलक जोयहै ॥२६०॥

राग सारंग ।

मेरी वात जु तोहि सुहै है ।
भलीभली सवभांति मूढ मन डरो निकुंज द्वार जो रै है ॥
रँगिजैहैं तैं लाल अटारी प्यारी पीक पिचक चलैहै ।
ललितकिशोरी निकसत कवहूँ चरनछाप मस्तक छपिजैहै ॥२६१

कलंगडा ।

मनुआँ करो निकुंजकी वात ।
जुगुलराल गुन गानकरौ किन जात रसीली रात ॥

परौ मधुपह्वै ललितकिशोरी दंपतिपग जलजात ।
छवि मकरंद सुधा पीवो चट नाहिं न वेस सिरात ॥१६२॥

केदारगिया चाल ।

सुन मन मूढ सिखावन मेरो ॥ १ ॥
वारवार मत धस मग भूलिहै अलकन निपट अँधेरो ॥ २
परसै मत कुंडल मंडलदुनि व्यालवलि सों घेरो ॥ ३ ॥
वंक विलोकन अनी कनी विधि कठिन निकामि निवेरो ।
देखदेख मैं कहे देतहौं अधरन तन जो हेरो ॥ ५ ॥
रेज पुर्जे करिदेहिगी मुसकन हियरा जियरा तेरो ॥ ६ ॥
ललितकिशोरी मनसुन कानन वानन में उरझेरो ॥ ७ ॥
व्रजमें श्याम वडो जादूगर होत स्वामि वनि चेरो ॥ ८ ॥

अथ मनउत्कण्ठा ।

भैरवी ।

प्यारीजू अपनी ओर चितैये ।
नित्य निकुंजविलास आपनो इन नैनन दरसैये ॥
ललितकिशोरी अगुननगौना हाहा मन परसैये ।
ज्यों तन वस्यो निरंतर श्रीवन त्यों मन वेगि वसैये ॥२६॥

भैरवी ।

छवीली मेरे मनकी आस ।
तन समान वलि मिलै निरंतर श्रीवन कुंज निवास ॥
चाहत ज्यों मतिमंद चकोरी चोखन चंद अकास ।
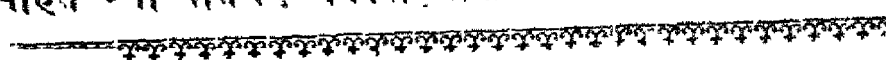
भैरवी

लली मो मनें निकुंज वसैये ।
चंचल अति खोटो कुटिलारो अलकन फंद फँसैये ॥
कटि न सकै उनमत्त हठीलो प्रीतिकी ग्रंथि लगैये ।
ललितकिशोरी चाल गयंदन पगपग पै रौंदैये ॥२६५

ईमन कल्यान

स्वामिन सुनिये मनकी टेर ।
या तनको हौं जनम संघाती करत हुकूमत जेर ॥
मत डुभाँत कर ललितकिशोरी करुना चितवन हेर ।
याको श्रीवन वास निरंतर मोकों कहा अवेर ॥२६६॥

ईमन कल्यान

करुना वेगि छवीली कीजै ।
ललितनिकुंज मंजुमंदिरसों छिन निकसन ना दीजै ॥
तनक तनक है ललितकिशोरी कामादिक वस छीजै ।
तनतो भलें वसायो श्रीवन मनहूंकी सुधि लीजै ॥२६

ईमन कल्यान

वह अपनायत कितै धरी ।
सुनियत गनिका सुकै पढावत सहजै सिंधु तरी ॥
देहु निकुंज निवास किशोरी मोमन आस खरी ।
अवहू शेष वची करुना के तवही परव परी ॥२६८॥
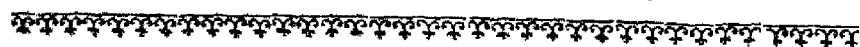
ईमन कल्यान ।

स्वामिनि पतितन तें हित छांडो ।
किते जाय कह करै हितू को मो मन पापन भांडो ॥
ललितकिशोरी विथित वियाकुल कामादिक ने काँडो ।
निजपन सुमिरि निकुंज डारिकैं चणर कमलसों माँडों ॥२६६॥

ईमन ।

ज्यों तन श्रीवन वास दियो ।
त्यों ही चितै चितै करुणा कर दीजे सीतल होय हियो ॥
ललितकिशोरी कलितनिकुंजै कीजे थिर विष बहुत पियो ।
काम क्रोध मद लोभ मोहने मन चौगान की गेंद कियो ॥२७०॥

ईमन ।

पतितन की ना पीर रही ।
कब कों हाय पुकारत मो मन काहू तनक न जाय कही ॥
विषै विवस डोलत दशदिशि कों ललितकिशोरी ओट गही ।
पतित उधारन विरद विदित है तुकिवेकों अवनाहिं सही ॥२७१॥

धिरनारी देस ।

स्वामिनि करुना क्यों विसरी ।
सुनत न नेक निकुंज द्वार पर कवसों टेर करी ॥
ललितकिशोरी मनै मनैये ज्यों तन आस पुरी ।
तारत जवे पुकारत आरत कै कुउ पुन्य घरी ॥२७२॥

गिरनारी देस ।

स्वामिनि यह अपनायत कैसी ।
श्रीवन गैल छांडिया मन की दिखियत चाल अनैसी ।
ललितकिशोरी हंसनसै फांसों देहु सजा जी जैसी ।
अलकन फांसि गांसि के राखौ याकी ऐसी तैसी ॥२७॰

गिरनारी देस ।

स्वामिनि मनुवें फैंट कसी ।
देशाटनको निपटि हठीलो वसत नतो उरवसी ॥
ललितकिशोरी विषै वासना फांसी गरे फसी ।
तासों छोरि वोर चिवकूपै सकै न छिन निकसी ॥२७४॥

घिरनारी देस ।

पतितन तें अब अरुचि भई ।
ताही सों दै लई किवरियां लखि लागत सकुचई ॥
मो मन पतित पुकारते द्वारे उचित नवाल अरसई ।
ललितकिशोरी कोन क्यौने डरो रहौ रसमई ॥२७८॥

घिरनारी देस

स्वामिनि कवलौं यह निठुराई ।
अवलौं ललित निकुंज निरंतर मोमन गति ना पाई ॥
सुनियत पतित उधारन प्यारी फिर क्यों दृष्टि चुराई ।
ललितकिशोरी हों चितपापी कितको गई सगाई ॥२७६
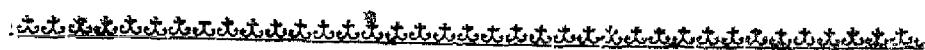
भैरवी

भाल तिलककी कानै मानो ।
पापी मनै निकुंज वासदै करिलीजै मुसक्यान निमानों ॥
जो कहुँ पापन पांव छिनक के करुनातजि गनना उर आनों
ललिताकिशोरी तो त्रिभुवन में तिहूँ कालना ठीक ठिकानों ॥२७

भैरवी

स्वामिनि ऐसीइं जनम नसो ।
मन ज्यों भीत की नीव निरंतर नाहिं निकुँज वसो ॥
रतनारी अँखियान निहारी ना फिरि गुलफ फँसो ।
ललिताकिशोरी चिबुक सुधानिधि नहिंन अजौंवंसों ॥२७८॥

॥ इति मनःशिक्षा संपूर्णम् ॥

॥ अथ विश्वासका उपासना अभिमान ॥

भैरवी

श्रीवन वीथिनके प्यादे हम दबते नहीं सवारों से ।
बिहतर हू से कमतर यद्यपि विहतर शाह हजारों से ॥
भौंह निशाने चढ़ि क्या डरना तरुआरों के वारों से ।
ललिताकिशोरी दरपरहाजिर खतरा क्या सरकारों से ॥२७९॥

भैरवी

दीने यह शोच कहा है कौन मेरी गति,
जो पै दीन बंधु हो तो आपुही उवारियो ।

हौंतो ऐज यान तुम रावरी सुजान मोहिं,
साधु हूं असाधु अंध कूप सों निकारिहौ
हौंतो निरंदुद भई जानि लई एकादिना,
ललितकिशोरी दयादृष्टि सों निहारिहौ।
द्वारे पै बुलायके तो तारेजी अनेक पर,
जानौंगी सनेह जबै गेह आय तारिहौ॥२८०

जैजैवंती

मेरे मन परतीत भई।
वृंदाविपिन वास मुहिं मिलिहै दया स्वामिनी संसै गई॥
कीनी कृपा कृपाल किशोरी निजछवि दृगन समायदई।
ललितकिशोरी हेरि कुचालिहु करुनाकरि अपनाय लई॥२८१।

जैजैवंती

मेरे मनहिं हुलास स्वामिनी श्रीवन सुख लहौंगी।
कोर कटाच्छ विहारिनि तेरे निधुवन कोन गहौंगी॥
कबहुँक सेवाकुंज कदमतर राधा नाम कहौंगी।
फिरिफिरि श्रीवन ललितकिशोरी अलि अरविंद रहौंगी॥२८२॥

झंझ

गोस्वामी आज यहां गल्लूजी आयेहैं,वाहवाहे अजी वाहवाहे।
स्वामिनी कृपासे भये मेरे मन भायेहैं,वाहवाहे अजी वाहवाहे॥
वृंदावन वास हैहै हियरा हुलसाये हैं,वाहवाहे अजी वाहवाहे।
ललितकिशोरी मानों वोलिवे पठायेहैं,वाहवाहे अजी वाहवाहे।२८३।

जिला

खौफ नहीं केहरिका हमको ध्यान छीनकटि धरतेहैं ।
चालगयंद जुगुल हियरेमें वसी मतंगन डरतेहैं ॥
ललितकिशोरी वीरसुरतिके पगपाछे नहिं परतेहैं ।
हम आशिक मुसकी अलकों के कालों से कब डरते है ॥

जिला ।

रहो प्रान कै जाउ सखी वृंन्दावन कुंजैं लेखैंगे ।
येक न मानैं कहा किसीका नाम रेख उर रेखैंगे ॥
छकेरहैं छवि ललितमाधुरी लीलागुनन विशेषैंगे ।
ललितकिशोरी नेम यही दृढ कुंजविहारी देखैंगे॥२८८॥

जिला

मैया श्रीकीरति औ वावा वृषभानु जू,
वंधु सकलवासी वरसानेकी ओरते ।
संगकी सहेलीजे प्यारी अलवेलीकी,
सोई निज भागिनी और काम ना करोर
मित्र सव रासिकजन शत्रुहैं विमुख जेते,
दुख सुख कौन गनै काम येक जोरते
ललिताकिशोरी येक स्वामिनी श्रीराधे जू,
नेह एक लागै श्रीनवलकिशोरते ॥२८६

झंझोटी

श्रीचैतन्य उपासन मोरे ।

पाय अभयपद राधागोविंद कालकर्म जमत्रास न मोरे ॥
श्रीवृन्दावनवास त्यागिकै ललिताकिशोरी आसन मोरे ।
भालतिलक तुलसीकंठीतें उत्तम निधिको उपास न मोरे॥२८७॥

झंझोटी

श्रीचैतन्य नाम धन मेरे कर्म धर्म दूजो नहिं जानौं ।
सपनिहुं आन देव नहिं अर्चौं गौरश्याम उरमें अनुमानौं ॥
नहिं अभिलाष मुक्तिकी मेरे आस वास श्रीवन हियआनौं ।
ललिताकिशोरी कृपा न भयकछु सांच कहौं झूठी न बखानौं ॥

जिला

वृंदावनको जाना हेली वृंदावन को जानाहै ।
रसिकरँगीले राधामोहन तिनसों दिल लहिरानाहै ॥
ललिताकिशोरीने दृढकर अब येही मनमें ठानाहै ।
ललितलता निधुबनके नीचे हाँईं ठीक ठिकानाहै ॥२८८॥

जिला

जानीजू अब जानी श्रीवन देहौ वास विहारिनिरानी ।
अनकरनी जो बनी दासिसों सो करनी निज हिये न आनी
दरसाई छवि ललिताकिशोरी भुज गलमेलि श्याम सुखदानी ।
ऐसी कौन कृपाकी सागर ऐसिहु पतित सुखदरससानी ॥
श्रीवृन्दावनवासकी आसा यही मनमानी ।
ललितमाधुरी लाल दरस तजि आन न चितआनी ॥
श्रीराधागोविंद कृपाबल दृढ जियमें ठानी ।
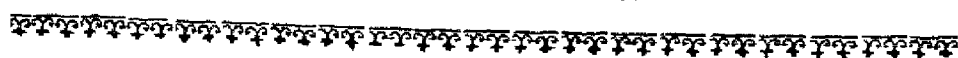
युगलविहारी लखौं दृगन छवि रूप सुरसखानी ॥

जिला

एक नहीं मानेंगे अव हम श्रीवृंदावन जावेंगे ।
रूखी सूखी घीकी चुपडी पावेंगे सो खावेंगे ॥
ललिताकिशोरी कौन कचौने परे कुंज गुन गावेंगे ।
अवलोकत छवि जुगुललालकी त्रिभुवन सुख विसरावें

झूलनाछंद

कुँवरिकिशोरि सों इसक लगे जब हिये पतंगके टूटेंगे
जुगुलमाधुरी पियें मस्त नित रसकों से जा जूटेंगे ॥
ललिताकिशोरी चरणकृपासे वृंदावनरस लूटेंगे ।
ललितमाधुरीरूपछकें हम नेक न अनरस घूटेंगे ॥२६०

लावनी इमनरागकी

हम वासी वरसाने के ।
श्रीचैतन्य उपासी खासी राधागोविंद वानेके ॥
ललिताकिशोरी गर्वभरे हम अन्यसों क्यों चित लानेके
ललितमाधुरी नित अवलोकैं अन तन मन भटकाने के

जैजैवंती ।

मैं दासी अपनी राधा की करत खवासी जो रुचि पाव
सूधे वचन न बोलत सपनेहु हरिहू को अँगुठा दिखराव
ब्रह्मानंद मगन सुख सिधि निधि श्रीवन गैल पांव ठुकर
मुसतगनी मगरूरी डोलत ललिताकिशोरी को गुन गा

॥ अथ विनय अस्तुति ॥

ईमन

ऐसी को करिहै श्रीराधा ।
मेट्यो तिमिर हिये दासी को कहत नाम निज आधा ॥
ललिताकिशोरी चरन उपासन जो काहू दृढ़ साधा ।
निश्चै जुगुल प्रकासैं ता उर मिटै त्रिविध जगवाधा ॥२६२॥

ईमन

जै राधा मन हरनी मोहन पद सरोज मम शीस धरे ।
सींच सुधा निज कृपा दासि के कीन्हे सूखे धान हरे ॥
प्यास दृगन रूप रस प्यारी अमी अंग छवि सानि भरे ।
ललिताकिशोरी हिये प्रकाशे अंजन जुत चख सानधरे ॥२६३॥

ईमन

जैजै कुँवरिकिशोरी नागरि मान आपनी कृपा करी ।
बूड़त सिंधु उबारि तिमिरितैं मो अभिलाष की गोद भरी ॥
मुरझी बेलि हिये पापन तैं करुना मृत सों भई हरी ।
ललिताकिशोरी पद सरोज छवि मो दृग कुंजन आय धरी ॥२६४॥

राग ईमन

जैजै राधा कुंजबिहारिनि भली भांति सुधि लीनी ।
तम उर नासि प्रकासी निज छवि छलीछैल गलबहियां दीनी ।
ऊक चूक कछु लखी न दासी सुरति कोलि रँग रसमें भीनी ।
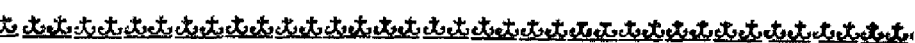
ललितकिशोरी जानि आपनी लई उबारि भाग की हीनी ॥२

रागगौरी ।

जैजै नवल नागरी श्यामा ।
कमनीअलक पलकचितरमनी मनहरनी मोहनसुखधामा ॥
केशरतिलक भाल मनरंजन अंजन दृग सुंदर अभिरामा ।
ललितकिशोरी लाल कंठलगि मोचखकुंज कियो विश्रामा ॥२९

रागगौरी ।

जैजै श्रीवृषभानकिशोरी ।
बूडत अंध अगमअघ ओघन सुरति करी जिन मोरी ॥
करुनाडोरी डार काढ़ निज दृगन प्रकासी जोरी ।
ललितकिशोरी अमित अगुन लखि तनक न भौंह मरोरी ॥२९

गौरी ।

जैजै मन रमनी सुखरासी ।
शोभानिकर सुरतिछविआगर वंकविलोक मंदमुस्कासी ॥
कीनी कृपादृष्टि नम नाशों मो उर आनि जानि निजदासी
ललितकिशोरी नैननिकुंजन सँग घनश्याम लसी चपलासी ।२९

रागगौरी ।

जैजै सुरति शिरोमणि गोरी ।
अरुननयन मोहनसँग राते मनहुं सखी खेलसी होरी ॥
कहि न सकत कवि थकित नैनछवि लसी लालसंग ललितकिशो
सो छवि धरी आनि मेरे उर साहिजाहिं कृपा कसोरी ढोरी ॥२९

रामकौरि ।

जै मृगसावकनैनी प्यारी ।
पिक वैनी टुक वंकविलोकन मोहे रसिक निकुंजविहारी ।
हरयो तिमिरउर प्रभा प्रकासी निजनख चंद पद्मपद वारी
मो सम दीन मलीन हीनपै ललितकिशोरी कृपा विचारी ॥३

॥ अथ शिक्षापत्रिका ॥

॥ जिज्ञासु शिक्षक संवाद ॥

जिज्ञासु वंदना--जय राधे जय राधे जय राधे.
जयजय राधे जय श्रीराधेश्याम ।
शिक्षक के सन्मुख--जय राधे जयजय श्रीराधे,
जय राधे जय श्रीश्यामाश्याम ॥ १ ॥

दोहा

जिज्ञासु--ललितकिशोरी टहलपग वानिक देहु वनाय ।
मतिमलीन गुनहीन हों महा अयान सुभाय ॥
शिक्षक--दुरलभ दुरगम सवनतें जुगल कमलपग चार ।
कैसिक पैयत धँसे विन सुधासिंधु सिंगार ॥
जिज्ञासु--सुधासिंधुसिंगारको धँसिवो सरल न होय ।
शिक्षक--गौरचंद्रपद कृपावल सिसू खेलसम सोय ॥४॥
जिज्ञासु--सोउ कृपा अति सुगम नाहिं ताको कौन उपाय ।
शिक्षक--चरन शरन गोपलभट सहजाहिं वन्यों वनाय ॥५॥
जिज्ञासु--कैसिक परसै यह अधम सो शुचिपावन पांयं ।

-राधागोविंद गुरु कृपा हम्लीक ह्वै जांयं ॥६॥
दु-सोउ कृपा अति सुलभ नहिं किहि विधि पाइहै पुर
हा न कृपाके जोग यह कपटी कायर कूर ॥७॥
क-हेरी सतगुरु कृपामें तनकहु नाहिं विचार ।
स्वतः सुभूमि कुभूमि में वरसै जलद सुवार ॥८॥
कृपादृष्टि गुरु वादरी वरस्यो रसशृंगार ।
तामें तनमन भीजि विधि मेवै चरन सुचार ॥९॥
रससिंगार अनूपहै अगम अतोल अथाह ।
विना योषिता पुरुषके थिरै न हिये प्रवाह ॥१०॥
प्रथम भामिनी भावना पाछे रससिंगार ।
ता पीछे सेवा सुखद जुगलचरण सुकुमार ॥११॥
पगसेवा सुखरूकमें तुलै न ब्रह्मानंद ।
रेनु प्रकाशानंद जग सूरजसामुहिं मंद ॥१२॥
थिरमनतन सेवा रहै गुर अनुकूल सुभाय ।
वृन्दावन लीला ललित नाही दृगन दिखाय ॥१
नाम धाम लीला अली जुगलचरनों प्रीति ।
गेये रसशृंगारको यह रसिकन की रीति ॥१४॥
कृपा विना कछु वनै ना कहों लीक भुलाय ।
निजवीती कछु कहों सो सुन हिय श्रवन लगाय ॥
चिंतामनि गुरुचरन शुचि श्रीराधे गोविंद ।
सुमिरतही अंतस फुर्यो वृन्दावन आनंद ॥१६
पदसरोज गोपालभट भजतिहंभजन अनूप ।

हियेमांझ विकसित भयो वृंदावनको रूप ॥ १७ ॥
कनक कमलसे चरन भजि सखीसुवन चितचाह ।
गाऊं जुगलविहारलखि छिनछिन हिये उमाह ॥१८॥
आसरो आस विश्वास सब भांति ।
श्रीराधिका पदकमल गति सु मेरी ॥ १९ ॥

जिज्ञासु–कोई दिलवरकी डगर बतादीजे ।
लोचन कंज कुटिल भृकुटी कच कानन कथा सुनादीजे ॥
ललितकिशोरी मेरी वाकी चितकी सॉट मिला दीजे ।
जाके रंग रँगा सब तन मन ताकी झलक दिखा दीजे ॥२०॥

॥ दोहा ॥

शिक्षक–चिंतामणि गुरुचरण शुच निश दिन हिये सँवार ।
जिन करुना अवलोकिये ललित निकुंजविहार ॥२१॥
श्रीगुरुचरन संवार मन चितदै मेरी मान ।
ललितकिशोरी लालछवि निश्चय हियरे आन ॥२२॥
सर्वकार्य्य आरंभमें श्रीगुरुचरन निहार ।
जुगलनाम वद मुखसहित सब सुख मंगलसार ॥२३॥
चितदै दंपतिनामले करहि सुवृत सुख पांच ।
श्रीगुरुचरन नम्रह्वै विवपग सेवा जांच ॥ २४ ॥
वृंदावन रहिना नितवास वन चहिना ॥ १ ॥
वृंदावनरहिना मुख राधेश्याम कहिना ॥ २ ॥
मुख राधेश्याम कहिना दृग रूपरस लहिना ॥ ३ ॥
दृग रूपरस लैना मन श्यामपग दैना ॥ ४ ॥

मन श्यामपगदैना छिन दुहू सुख चहिना ॥ ५
छिन दुहू सुख चहिना दिन सेवा माहिं रहिना ।
दिन सेवा माहिं रहिना फल जीवन को लहिना ।
फल जीवनको लहिना छिन राधेश्यामकहिना ॥
॥ वृंदावनराहिना नितवासवन चहिना ॥

॥ कुण्डलिया ॥

आली वनशोभा अमित ललितलता सुखपुंज ।
ललित विहंगम बोलहीं ललित मधुर अलि गुंज ।
ललित मधुर अलि गुंज कुंज प्रति सुमन सुहानि
ललित वेलि फल फूल कलीसौरभ महिकानी ॥
लहिकानी सरकूल दूब कलकेल मराली ।
वानी सरस मयूर मत्त निरतत वनआली ॥ २३

॥ कुण्डलिया ॥

हेली अति मुदु पुलिन रज हरित कहूं वनभूम ।
कहुं कंचन रतनन जटित रहीं लता झुक झूम ॥
रहीं लात झुक झूमि चूम जल पवनझकोरन ।
वही हंसजा तरल सरल गति मंद हिलोरन ॥
नौका नाना भांति ललित सरिता रसकेली ।
फूले कमल कुमोद कली अलवेली हेली ।

॥ कुण्डलिया ॥

।क-धन वृन्दावन सहजही ललितमाधुरी रूप ।

ललित त्रिभंगी भामिनी नित्यविहार अनूप ।।
नित्यविहार अनूप भाय वस प्रीति परस्पर ।
नित्य किशोर नवीनि सुकरि वर पान सुधा
उज्जलरस कलकेलि शुद्ध माधुर्य्य कुंजवन ।
नित्य मिलन अभिसार सखिन तन मन सेवा ध

कवित्त ।

शेष ओ सुरेश त्यों गणेश ईश आदि देव,
गावत हैं ब्रह्म पद सर्व सुख देनुरी
चिंतामणि पाये तें चिंतामणि दूर होत,
कामनाहूं देत कल्प वृक्ष काम धेनुरी
कोटिन अनेक पद गाये जे पुरान वेद,
एरी सब भले वे मोकों कहा लेनुरी
केलैं जहं प्रिया लाल कुंजों रसमसे चूर,
मेरी तो जीवन मूर वृंदावनरेनु री ।।२५।।
वृंदावन रहिना, मुख राधेश्याम कहना ।

दोहा ।

राधे राधे श्याम भज भज श्रीश्यामाश्याम ।
वार सखिन मन मगन रहु निशि दिशि आठो ज
खात पियत चितवत चलत ठालें करतें काम ।
वृंदावन वस अहरनिश भजिये राधेश्याम ।।२
मुख राधेश्याम कहिना, हग रूप रस लहिना

जुगुलचरन छविकंज विमोहन ।
अंगुरी मृदुल करनिका सोहन ॥२८
वलि वलि पगतल कल अरुनाई ।
नवल कमल दलदिल दलजाई ॥२९
निरखि निरखि नखचंद चांदनी ।
ससिसमूह सकुचात दामिनी ॥३०॥
गुलफैं गोल गुलावसीवरनी ।
शोभ समूह नैन पल हरनी ॥३१॥
कदली जंघ खंभ रतिपतिके ।
वने सुडौल काम संपति के ॥३२॥
पृथु नितंव मनमथ मनमथके ।
शोभा कहा कहै कोउ कथके ॥३३॥
कटि तट हीन वाल मनौं चीरा ।
सुघर उदर वरनाभि गंभीरा ॥३४॥
प्रियाउरोज सरोज रसीले ।
श्रीफल शोभा शिखर छवीले ॥३५॥
मोहन उरस उतंग मतंगा ।
औंडायो जंग जीत अनंगा ॥३६॥
वाहु मृनाल कमल कर फूले ।
भ्रमर तासु नख चंद्र विभूले ॥३७॥
कवुंक ग्रीव सीव सुक माकी ।
त्रिवली त्रासक जग उपमाकी ॥३८॥

चंद्र कूप चिबु चारु अनूपा ।
श्याम शशी तिल अतुलित रूपा ॥३९॥
मंडित गंड लटक लट आई ।
ससिमंडल अहिनी लहिराई ॥४०॥
चंद कपोल विनिंदित चंदा ।
अधर मधुर सरवर अरविंदा ॥४१॥
दशनपंक्ति नव कुंद लजाईं ।
सुमन भरैं जबहीं मुसकाईं ॥४२॥
तिल प्रसून नाशा पै वारे ।
मतवारे मृग दृग रतनारे ॥४२॥
लोचन कोर विमोचन जीरा ।
वंक विलोकन हियकन हीरा ॥४३॥
चपल दृगंचल चंचल चाली ।
अचपल खंजन की रखवाली ॥४४॥
हिय हरलैन निमेष मैनसर ।
भृकुटिभंग को दंड कामवर ॥४५॥
शोभा श्रवन निरख दृग भीरी ।
द्वैवापी छवि रस गंभीरी ॥४६॥
पटल ललाट सपाट सुहाई ।
पटतर मिलत न चंद्र लजाई ॥४७॥
शीस सुदेश केश छविछाई ।
त्रिभुवन की शोभा जुरि आई ॥४८॥
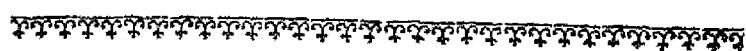
ललितकिशोरी सांवल गोरी।
छलकत छवि अँग अंगन ओरी ॥४९॥
शोभा सदन अंग अँग ताका।
ललितमाधुरी रूप पताका ॥५०॥
दृग रूप रस लैना, मन श्यामा पग दैना।

कोमल कंजन वीन विचित्रत सागर रूपसुधाके हैं
मोहनलाल रसिक उरअवनी सरिता छवि सुकुमाके हैं
ललितकिशोरी सकल आस तजि निज अंतस विच आँके हैं
चरण चारु चिंता मनिवर वृषभानु सुता के ताके हैं ॥५१

मन श्यामा पग दैना, छिन दुहुं सुख चहिना।

कुण्डलिया।

बस वृंदावनधाम मन रस शृंगार विभोय।
जिन जांचै निजहेत कछु ततसुख स्वसुख सोय।
तत सुख स्वसुख सोय सदां सेवा सुखलीयें।
अनुदित चाय विचार सुछिन अनुकंपा हीयें॥
संध्या पूजा पाठ धारना ध्यान सुजप रस।
ललितकिशोरी नाम रूप लीला सेवा वस ॥५२॥
छिन दुहुं सुख चहिना, दिन सेवामाहिं रहिना।
आन देवसों काज ना ना किहु निंदा गोय।
युगुल चरण विश्वास दृढ़ होनी होयसो होय ॥५३
निर आलस सेवा करै साहित सु रसिकन रीति।

सर्व सोहनी आदिलै करै टहिल अति प्रीति ॥५
कर्म धर्म वृत नेम सब सेवा दुऊ चितचोर ।
कुलदेवी वृषभानुजा देवत नंद किशोर ॥५५॥
श्रवन मनन ध्यासन कथन युगुलनाम यश रूप
अरचन सेवन रचन अंग दंपतिचरन अनूप ॥५
दिनसेवामाहिराहिना, फलजीवनकोलहिना ।
फलजीवन सेवा भजन तासु न फल कछु आन
सोइ साधन सोइ सिद्ध फल यह दृढ हियरे जान॥५
फलजीवनकोलहिना, छिनराधेश्यामकहिना ।
जयजय श्यामा श्यामा श्याम ।
जयराधे जयराधे श्याम ॥
जय चंपकतन श्यामतमाल ।
जय मनमोहनी मोहनलाल ॥
जय प्यारी प्रीतम गलमाल ।
जैजै राधा मदनगुपाल ॥
जै जीवन धन प्रान अधार ।
जैजै रसिक मुकुट रससार ॥
जैजै ललितकिशोरी श्याम ।
जैजै ललितमाधुरी वाम ॥ ५८ ॥

॥ अथ प्रथमवृत ॥

वंदना ।

जयराधे जयजय श्रीराधे जयराधे जय श्रीश्यामाश्याम

प्रार्थना ।

ऐसी कृपाकरो स्वामिनि मुहिं युगलनाम अतिहीप्रीलगै
कानन सुनत राधिकामोहन मनहिं तहींवासों अनुरागै
सवही आनलालसा तजिकैं पुलकि रूम सोइ पग पागै
राधेश्याम रटतानित मेरी रसना मुदित द्योसनिस जागै।१

॥ दोहा ॥

दीजे लीला रूप विवि नाम धाम अनुराग ।
ललितसोहनी आदिलै सबै टहल चित लाग ॥६०॥

युगलनामसंकीर्तन ।

श्रीराधारमन श्रीराधारमन ।
श्रीराधारमन श्रीराधारमन ॥
श्री राधे राधे राधारमन ।
श्री राधे राधे राधारमन ॥
श्री राधे राधे राधारमन ।
श्रीराधारमन श्रीराधारमन ॥
श्रीराधारमन श्रीराधारमन ।
श्री राधे राधे राधारमन ॥
श्री श्यामाराधे श्यामारमन ।
श्री कुंज विहारी राधारमन ॥

वृषभानु दुलारी राधारमन ।
प्रिय प्रीतमप्यारी राधारमन ॥
श्रीराधारमन श्रीराधारमन ।
श्री राधे श्यामा श्यामा रमन ॥
श्री श्यामा राधे राधारमन ।

॥ द्वितीयवृत्त ॥

वंदना ।

जिज्ञासु–जय श्रीराधा कुंजविहरनि ।
रस लंपट मनमोहन यारनि ॥६
जय प्रीतम मुख चंद्र चकोरी ।
दामिन छवि घनश्याम अकोरी ॥६
जय श्रीललितकिशोरी बामा ।
प्रीतम केलि कुशल कृतकामा ॥६
जय स्वामिन प्रिय प्रान पियारी ।
युगल केलिरस प्रान अधारी ॥६५

जिज्ञासु वचन ।

न सतगुर राधागोविंद ।
जिनके पद नख चंद्र छटासों मिल्यो सुधा वृंदावन इंद
सी द्युति उर ललितकिशोरी युगलनवीन वदनअरविं
न्यो नवल विहार छबीली छैला मोहन रसिक अलिं

प्रार्थना कुण्डलियां

कीजै करुना वेग निज कृपा सुभाय अनादि ।
दीजै ललित निकुंजकी टहल सोहनी आदि ॥
टहल सोहनी आदि सबै सेवा सुख पाऊं ।
ललितकिशोरी युगल चरण दृढ हिये वसाऊं ॥
युगल नाम विश्वास तासु रंग रसना भीजै ।
कृपा दृष्टि अवलोकि कृपाकरि करुना कीजै ॥६६॥

दोहा

नाम धाम लीला युगलरूप सुप्रीति सुभाय ।
देहु सोहनी आदि सब सेवा हित चित चाय ॥६७॥

युगलनामसंकीर्त्तन

कलंगड़ा

राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधेश्यामा राधेश्यामा श्यामा श्याम श्रीराधे
राधेश्यामा राधेश्यामा श्यामा श्याम श्रीराधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधेश्याम श्रीराधेश्याम श्रीराधेश्याम श्रीराधे
राधे राधे राधे राधे राधेश्याम श्रीराधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे

तृतीयवृत्त श्रीगोपालभट्ट गोस्वामि पूजन

वंदना

जिज्ञासु--जय गुण मंजरि गुनन सुखानी
अति प्यारी प्रीतम सुखदानी ॥६८॥
जय दंपति मुख चंद्र चकोरी
जय अलिनी पगकंज किशोरी ॥६९॥
जय जय प्यारी प्रान पियारी
तत रुचि छिन पल पालन हारी ॥७०॥
जय श्रीललितकिशोरी भामिनि
काम केलि रस मत्त सुनामिनि ॥७१॥

प्रार्थना

जिज्ञासु वचन

युगलनामरस रसना पीवत छिन न अघाय किशोरीजू॥१॥
नैन सुधारस रूप निरंतर छके रहें रंग वोरी जू ॥२॥
सरसनाम धुनि चाह भरें दिन रहें श्रवन वलि गोरीजू ॥३॥
हियो टूटि तुव चरनन लागै आस मेड सव तोरीजू ॥४॥
आठौ याम वसैं उर नैनन ललितमाधुरी जोरीजू ॥५॥
अवतो यैह कृपा करि दीजै अहो स्वामिनी मोरीजू ॥६॥

कुण्डलियां

जिज्ञासु--दीजै वास सराग नित श्रीवृंदावन धाम ।
अचल प्रीतिहित सहित चित श्यामा श्याम सुनाम ॥
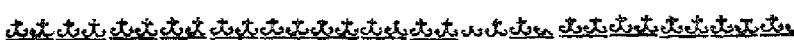
श्यामा श्याम सुनाम रटत छिन मन न अघाऊं
ललितकिशोरी लाल रूप लीला सुखपाऊं ॥
टहल सोहनी आदि सबै सेवा मैं लीजै
हाहा वलि वलि जाउं यहै करुना करि दीजै ॥९

युगलनामसंकीर्तन

श्रीराधे राधे राधेश्याम ॥
श्रीराधे राधे राधेश्याम ॥
राधे राधे राधिके राधे राधेश्याम ॥
श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा श्यामाश्याम
श्रीराधे राधे राधेश्याम ॥
श्रीराधे राधे राधेश्याम श्रीराधे राधे राधेश्याम ॥

चतुर्थकृत श्रीचैतन्यमहाप्रभु पूजन

वंदना

-जय श्रीराधा रसिकविहरी ॥
कामकेलिरस विवस खुमारी ॥
जय श्रीरासविलासनि प्यारी ॥
रासविलसी कुंजविहारी ॥
जय जय नवलनागरी श्यामा ॥
निजविट नवनागर सुखधामा ॥
जय नव ललितकिशोरी गोरी ॥
ललितनवल वर श्याम अकोरी ॥

प्रार्थना ।

श्रीचैतन्य कृपा यह कीजे निपट अयान कछू नहिं जानौं ।
युगलनाम सरवस हो मेरे कर्मधर्म दूजो नहिं मानौं
सपनिहुं और देव नहिं अरचौं गौरश्याम उरमें अनुमानौं
ललितकिशोरी नवलकमलपग दृढविस्वास हियेविच आ

कुंडलिया

एजी करुना कीजिये अपने सहज सुभाहु ।
युगलनाम रति दीजिये छिन पल हिये उमाहु ।
छिनपल हिये उमाहु रूप लील पिय प्यारी ।
अवलोकत मनमगन रहौं तुव कृपा अपारी ।
सवै सोहनी आदि टहल जाचौं पग थे जी ।
वन अनुराग सुदेहु दयाकरि ए वी एजी ।। ७७ ।।

युगलनामसंकीर्त्तन

श्रीराधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधे ।
श्रीराधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधे ।
श्रीराधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधे ।
श्रीराधेश्याम राधेश्याम श्यामाश्याम राधे ।
श्रीराधेश्याम श्यामाश्याम श्यामा राधे राधे ।
श्रीराधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधे ।। ७८ ।।

पंचमकृतश्रीनिकुंजद्वारपूजन

लासु—जय राधे जय जय राधे श्यामा जय राधे राधे ।
जय श्यामा श्री गुन अभिरामा जय राधे राधे ।

जय श्री कीरति भवन उजागर जय राधे राधे ।
कृपा सदन करुना की सागर जय राधे राधे ॥
जय जय श्री वृषभानुदुलारी जय राधे राधे ।
नंद सुवन पिय प्रीतम प्यारी जय राधे राधे ॥
जय श्रीललितानिकुंज विहारिन जय राधे राधे ।
ललितकिशोरी प्रान प्रानधन जय राधे राधे ॥७९

॥ प्रार्थना ॥

दोहा ।

—मो गरजी अरजी सुनहु टुक निज कृपा सुभाय ।
मंजूरी करि दीजिये जो कछु कहौं सुनाय ॥८०।

कुंडलिया ।

नित वृंदावन धाम तुव वसौं सहित अनुराग ।
रटौं सु राधेश्याम छिन छिन पल दूनी लाग ॥
छिन पल दूनी लाग रूप लीला अवलोकों ।
निज चरनन विश्वास देहु दृढ स्वामिनि मोकों ॥
मगरूरी मसरूर रहौं तुव कृपा जानि चित ।
ललितकिशोरी रुचि अनुसार करौं सेवा नित ॥८१

सेंधु कृपाल स्वामिनी पद कंज निज टहल में लीजै
वासिन करो खवासी ललित सोहनी सेवा दीजै

ललितकिशोरी मो औगुनगन सोच विचार न गनना कीजै
आंख मूदिकै मो अरजीपै जो दरखास हुकुम दै दीजै ॥८२॥

युगलनामसंकीर्तन ।

जिज्ञासु–ललितकिशोरी के जीवन धन श्री राधारमन
श्रीराधारमन श्रीराधारमन श्रीराधारमन ॥
ललितकिशोरी के जीवनधन श्री राधारमन।
श्रीराधारमन श्रीराधारमन श्रीराधारमन श्रीराधारमन॥
ललितकिशोरी के प्रान जिवन श्रीराधारमन ॥८३॥

॥ इति शिक्षा पत्रिका सम्पूर्णम् ॥

श्रीराधारमणो जयति । श्रीकृष्णचैतन्यचंद्रोजयति ।

फुटकर पद

चौताला खमाच ।

जा जा पथ प्यारि चलै ताही पथ प्यारो लाल,
छूटत सुपाट पीत बाट में सवारैना ।
नैनन सों नैन जोरि कुंजन लतान दुरि,
चंदसौं चकोर भयो कितहू निहारैना ॥
ललितकिशोरी गोरी देखि चितचोर दीठि,
रीझन जीजान गंड अलकैं निवारैना ।
भानुकी लडैती जोलों जमुना नहाय वीर,
तोलों नंदलाल नैन रग्रन सों टारैना ॥१॥

खमाच

तिहूंकाल संध्या हरि साधे ।
मूंदत नैन नाशिका कर तें जपत कंठ में राधे राधे ॥
धरत ध्यान बांकी भृकुटी को मोहन मुख मुसकन मृद
नित संकल्प मानसी मिलिये ललितकिशोरी रूप अग

विहाग

वन कुंजन जात लखी कुहु रैन मध्य-
मानों दामिनी नवल किशोरी ।
जाही जाही मग पग धरत प्यारीजू-
ताही ताही पथ प्यारो बिछावत फूलन भरी झोरी ॥
चंदमुखी मंद मंद चलत गयंद गति-
यक टक चितवत है मनों चकोरी ।
अंग अंग राधे कमल अरुण तरुण दल-
मोहन मन भृंग भयो ललितकिशोरी ॥३॥

विहाग

विहरत लाल प्रिया निशिमावस प्रमुदित हंससुता के कूल
ललितमाधुरी परत किरन जल उपजि झलक झूमक श्रुति
बातन बिच उठि बोलत लालन हित उपहास वचन सुर
निरखि नैंकप्यारी प्यारी छवि जौन्ह तरंगन बन रही फूल

ईमन मारफत

आज अचानक चंग चढी ।
ना जानैं किहि कही नंद सों तनक बात वह बहुत बढी ॥
ठढ़ी हुती वह छीवरवारी वाही घोलि बनाय गढी ।
ललिताकिशोरी गोरी भोरी देखत बढी कजाक कढी ॥५॥

ईमनमारफत ।

निरखौ नवलकिशोर किशोरी ।
जनमतरै न रजतचौकी पर राजे त्रिभुवन रूपवटोरी ॥
थिथकित सुरतिसमुद्र हिलोरै शिथिलित कमल नयन लखगोरी
भूल मीन तुरंग खंज गति सकुचौहैं अति ललिताकिशोरी । ६॥

अड़ानौं ।

कैसिक यासों छोरहि छोरौं ।
हँसि बोलौं तौ हारगरेको होत कान कुल तोरौं ॥
नैनन नीर भरत री सजनी जो रिस भौंह मरोरौं ।
ललिताकिशोरी बनि न परत कछु तोरौं प्रीति की जोरौं ॥७॥

झंझोटी ।

रहो मेरी आँखिनके आगे ।
छहियां कदम दिये गलिवहियां क्या सोवत क्या जागे ॥
मृदु मुसिक्यात गात अतिकोमल सुरतरंग अँग पागे ।
ललिताकिशोरी रसिकविहारी नवलनेह अनुरागे ॥ ८ ॥
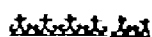
झूलना छंद ।

मनमोहनके कोमल करकी छली छबीली वंशी है ।
मधुरी तान न चित्ते चोरै रसपोषक अवतंसी है ॥
ललितकिशोरी अधरलडैती गोपीजनन प्रसंसी है ।
तरुनिन के मन हरनेको यह वंशी क्या कोई फंसी है ॥

देशराग ।

राधे तेरो रसिया सितम करै ।
भौंह कमान तान वरुनिनके बान सु सनमुख लरै ॥
अलक कमंद कटारी मुसकन चितवन प्रान हरै ।
ललिताकिशोरी सुरतिसमरमें विरला सूर अरै ॥ १० ॥

उत्तरीदेस ।

राधा नवलकिशोर मनोहर तिनके सँग नित रहिते हैं ।
चंद्र चकोर भये छवि निरखैं और नहीं कछु चहिते हैं ।
ललितकिशोरी करैं न ओटैं फरी नहीं कर गहिते हैं ।
चितवनि हँसनिदशनकी चोटैं निशिदिन हियेपर सहिते हैं

रागजंगला ।

श्यामसखी पुलकैं पहिरावत हरी हरी चुरियां ॥ १ ॥
अँगुरिन चांपि सकोरि दाव कर मिहीं २ वर वांके जुरिय
अँगुरी मूल न चढती मनिहर कदली पात धरत तातरियां
भृकुटी मोरि सकोरि भाल मुख मधुर २ भरती सिसकरिय
विसरिगई चुरियां पहिरावन मनहारिनि चित चपला चुरिय

यकटक रही विलोकि वदनतन ललितकिशोरी लिखी चितारियां॥६॥
वंठी चोंप चितहेरि प्रभाअँग मिसकरि सखि ललितादि अतुरियां॥७॥
नैन सैनकरि चहुंदिशि वगदीं कुंजभवन चटदई किवरियां ॥८॥१२॥

सहानौ ।

पगअरविंदन श्रीगल्लूजी गोस्वामी नित उरमें धारौं ।
जिन अधिकार निकुंज गवनको दीनो मुहिं छिन नाहिं विसारौं॥
ललितकिशोरी रंकके धन ज्यौं पलपल अंतस मांहि सँमारौं ।
मन चकोरह्वै अनमिष आली पुनिपुनि पद नखचंद निहारौं॥१३॥

चौताला जैजैवंती ।

पायल वजत नाहिं मंद मंद धरै पांय,
हेरैहरैं जात मनौं मोहत मरालको ।
चितवत इतै उतै देखत न होइ कोई,
कुहू रैनि चंदमुखी भैंटन गुपालको ॥
ललितकिशोरी ह्वकि चोरि ज्यों चकोर दृग,
कुंजन लतान अरै सुछवि रसाल को ।
देखिकै मुखारविंद छूट्यो छलछंद सब,
दौरि नँदनंद हियें लाइलई वाल को ॥ १४ ॥

जैजैवंती जन्मअष्टमी का पद

ानि वृषभानुसुतासौं नंदसुतहि नित प्रेम वढायवो ।
भाद्रशुक्ल कुंजनमैं गुंजत मधुप प्रीतिवसजायवो ॥

लगिवो कंठ विहासि चुंदन मुख अंग उमंग रंग सरसाइवो ।
ललितकिशोरी लालदुहुँनको वरसगांठिको नेम निवाहिवो॥१९

जैजैवंती

याही गैल छैल मनमोहन वीरा टुक मुसक्याय गयो है ।
गोरी सी नववाल छँगुनियां गहि हगसैन चलाय गयोहै ॥
ललितकिशोरी फूंक वंसुरिया मुहनी सी वगराय गयो है ।
कितकित इत उत मची डगरमें व्रज विनमोल विकाय गयो है॥१

ईमन मारफत

नंदनंदन नित कुंजविहारी ।
झारत रहत रेनु पदपंकज भानुसुता सेवा अधिकारी ॥
यदुवंशी वल मथुरा महिमां द्वारावती जिनहिं रुचिकारी ।
तिनसों वूझ वावरी मेरे ललितकिशोरी प्रानअधारी ॥ १७ ॥

राग देस

जानत कौन पराये मनकी ।
लोग कहैं सखि भई वावरी वह आशिक आनँदघनकी ॥
छिरकि गुलाव जगावैं मूरख हिय लगी चोट चितवनकी ।
ललितकिशोरी तजि कुलकानै अलि डोलत भई वनवन की॥१८

दादरा पीलू

बैठेबैठे पियारी सितारी गिनते तेरे काजे गुजरि गईं रातियां ।
याही कदमतर चीठा विलैयां लिखते चुन्ते पातियां ॥

ललितकिशोरी निठुर कियो चित आवतमें अरसातिय
भये भोर आई मन भामिनि सीतल कीनी छातियां।

झूलना छंद

अनियारी दृग मोर कोर हीरे में कसके।
वनेरहैं दिनरैन दरस दिलवरके चसके॥
कीनी हाल वेहाल लाल मन मेरे वसके।
ललितकिशोरी जाल अलक उर डाले कसके॥ २०॥

भैरवी

कोमल अंग दृग कोर गडैगी चंचल चाल तिहारी।
अरुगजाल पग नूपुर फँसिहै निरतहु समुझि संभारी॥
अतिसंकुचित कुंज जिन पारौ ऊधम कुंज विहारी।
ललिताकिशोरी नैनन निचले विहरौ सौंह हमारी॥ २१

भैरवी

चुरि दुरि दृगन कोरको कुंजन कुंजविहारी वसेइ वनेगो
जो कहुं छोर पीतपट फुहरै कृष्णवल्लभा नाम परेगो॥
ललितकिशोरी चरचा चालिहै चंदा चौथ कलंक लगैगो।
नैनन में न करौ मचलैयां उघरि परे व्रजलोग हँसैगो॥ :

दोहा

दुउ अँधियारी में चले, कुंज गली के मांहि।
वेरँग अंगन मिलिगये, वे नीलांवर छांहि॥ २३॥

मल्हार ।

कारी अँधियारी घनघोर घिरी भादों की सु,
आधी निशि जात कितै प्यारे नंदलाल हो ।
डोलें बहु जीव जंतु मारग अजन अति,
गोकुलको लौट जाउ सुन्दर गोपाल हो ॥
हों घर अकेली नाहिं बाखर में ठौर देती,
वाट वट पार लगे ढांक बनमाल हो ।
ललितकिशोरी तेरे भोरे भोरे बैन,
सुनि लागैहै परेखो मोहि लोचन विशाल हो ॥२

छप्पै श्री राधाष्टमीका ।

भादों शुक्ला अष्टमी मेरी जीवन मूर । १
वरस गांठि लखि स्वामिनी रहत नैन चक चूर ।
रहत नैन चकचूर भवन कीरति छवि देखे ॥
देख वनतरी नैन बनत नहिं करतें लेखे ॥
केला वंदन वार बाजने विविध सुहाये ॥
गावत मंगल चारु सहेलिन सुख उपजाये ॥
भई भवन अति भीर जुरी ब्रजनागरि हेली ॥
नागर नट नँद नंद लखी तहं छवि अलवेली ॥
अलवेली छवि अंगकी शोभा सुभग अनूप ॥
जरतारी सारी सुहै धर्‌यो भामिनी रूप ॥
धर्‌यो भामिनी रूप भेष मालिनको कीनो ॥

चली चपलि नव नारि कंज कर दोना लीनो ।
जुवतिन जूथ निवारि हरि ग्रीवा पहिरायो ।
कमलकलीपै कंज प्रफुल्लित कर परसायो ।
पुनि कपोल कर परसि दुऊ करलईं वलैयां ॥
विहसत रहैं तुव नैन कही हरि वाहि ललैयां ॥
मृदु मुसकन में अधर तुव भरे रहैं दिन रैन ॥
विधिना यह शोभा सुखहि लखत रहै मो नैन ॥
चतुर प्रिया छल जानि मीचि चख नीचे कीये ॥
निरखि सखी ललितादि विहसि मुखअंचल दीये ॥
ललितकिशोरी लालकी उघरी नूतन प्रीत ॥
जोरी सुंदर श्यामकी विहरौ याही रीत ॥ २५ ॥

दीपचंद्री ।

रसिक लाल रस निधि को राधे,
अधरसुधावर नित नित पीजै
जात वढ़ै प्रीति की वेली,
गांठ गांठ पै दीवो कीजै
वरस गांठि भादों सुदि आठैं,
को सुख सदां सर्वदा लीजै
ललिताकिशोरी यह उत्सव में,
श्रीवनवास वधाई दीजै ॥ २६

राग दीपचंदी ।

सारी सुरंग उपरनी धानी वनि ठनि पहिनि कंचुकी
श्याम सखी वनि रूप निहारन भान भवन मिलि भी.
ललितकिशोरी की चूनरिसों चूनरि काहू सां
बरस गांठि की गांठ आज सखि गठ जोरे की गांठ भई

अखैतीज का पद जिला ।

अखैतीज उत्सव री सजनी,
रसभीनी रजनी अतिप्यारी ॥१॥
फूल रही वनकुंजन वेली,
कली चमेली कुसुद निवारी ॥२॥
मंद समीर सुगंध भरी अति,
रमकि रमकि डोलत सुख सारी ॥३॥
कालिंदी जल लहर हिलोरत,
मधुर मधुर मधुकर गुँजारी ॥४॥
जूथ जूथ सावक मृग नैनी,
मुख अरविंद अंग सुकुमारी ॥५॥
चंद्र वदन चंदन तें चर चित,
चंद्र हार चंदन रंग सारी ॥६॥
ताके मध्य दुऊ भुज मेरें,
अहिनी मिली मलय की डारी ७

कनक बेलिकै मिली तमालहि,
गंग जमुन कै छवि विस्तारी ॥८॥
केशरि आड़ विंदु कस्तूरी,
उपमा अनुपम येक बिचारी ॥९॥
दश गुन प्रभा मनौं आलीरी,
इद्र धनुष तें भई अधिकारी ॥१०॥
अरुण अधर पर बेसर मुक्ता,
हलत पवन अति सुभग सुढारी ॥११॥
कमलपत्र पर निरतत नटुवा,
ओसबुंद कै कुंद मझारी ॥१२॥
करनफूल कुंडल सिलिदमकत,
चुंवत मकर चंद्र रस सारी ॥१३॥
कै पारस चंदा अलि बैठो,
कै छवि मकरचंद्र अनु हारी ॥१४॥
चंद कपोल मोलि मुख निरखत,
दरपन करवृषभान दुलारी ॥१५॥
ललितकिशोरी जुगलचंद लख,
विहरत राधा कुंजविहारी ॥१६॥२८

सारंग ।

ायत काछनी साजत कंचुकि डौलि मुकुटको रा
चित्र भीति पर लेखत अँगुरिन सूरति नटवर ख

तन मन वसी माधुरी मूरति निरखिरई दधि वंसुरीजांचै
ललितकिशोरी नैनन मोहन थिरकि फिरकि थेइथेई नांचै ॥२९

सारंग ।

जुगुलअंग रंग रंगी मेरी अँखियां ।
मंदहसन नैनन वतरावनि वंकविलोकनि जवतें लखियां ॥
मृदु वोलन डोलन वन विहरन अंशन भुज दोऊ जन रखियां ।
ललितकिशोरी निरखत हरषत संग सुघर सोहैं सव सखियां॥३०॥

सारंग ।

जवतें जुगुल छयल चित येरी ।
निशिवासर चित चाक चढारहै विसरो खान कित येरी ॥
उडी गुडी गति भई हमारी मनुवां डोरि जुगुल जित पेरी ।
ललितकिशोरी तनपंतग इव पिंडी प्रान रहत उत पेरी ॥३१॥

तिरछीचितवनकीधुनि ।

याही मग निकस्यो राधे सँग छवि आगर वह छैल छलीरी ।
औचक झलक लखी रंध्रन हिय तिरछी चितवन कोर गडीरी ।
ताही छिन यक लतामाधुरी मो नैनन पथ आन अरी री ॥
ललितकिशोरी पलक पींजरा अँखियां रहीं अफंदाय सखी री ॥३२

॥ तिरछीचितवनकीधुनि ॥

कोइ गुरजन कोटि उपाय करो मनमोहन पाग पगी सुपगीं ।
उस वांकी जुल्फों वाले ऊपर औचक जाय लगीं सो लगीं ॥
कहे ललितकिशोरी मृदुल हासपै अति ललचाय खगी सो खगीं ।

अब लाख करो घूँघट पट अँखियां सांवल रंग रँगी सो रँगीं ॥ ३३ ॥

रागदेस ।

पलकैं वैरि निवैर परीं ॥
श्रीश्यामा नवरंग विहारी निरखत नैनन आनि अरीं ।
यह विधि नै कछु भली न कीनी जो वरुनी द्दग लाय धरीं ॥
ललितकिशोरी माती अखियां जुगुलरंग अकुलात खरीं ॥ ३४ ॥

रागदेस ।

सखीरी अँखियां ढीठ भई ॥
परत दीठ मुखचंद जुगुल पर अलक जाल छवि उरझि गईं ।
ललितकिशोरी तोरि कान तृण गौरश्याम अंग रंग गईं ।
मिटी खरक अलि गई मरक पल मनभाई सो करी दईं ॥ ३५ ॥

रागभैरों ।

छिनछिन चौंकि परैं पलकापर सपने मिसि वहिरावे ।
संग सहेलिन कहन पहेली ऐसिहिं रैन भुरावे ॥
पुनिपुनि पलक मूंद खोलत अलि पलिकहुं नींद न आवे ।
ललितकिशोरी नैनन निशिदिन मोहनधूम मचावे ॥ ३६ ॥

परजकलंगड़ा ।

[illegible]ह वट जात चले वंशीवट नागर नट वृषभान लली ।
[illegible]जभरे द्दग कोरन जोरे भौंह तरेरे वरकवली ॥
[illegible]रि कानि कुल फारिकै घूंघट लखे न दंपति भांति भली ।

ह लाज वरै परै भार भट्ट दृग अंचल ओट रहेरी अली ॥ ३

परजकलंगड़ा ।

हिना जुगुलनाम जानैं नाहिं श्यामाश्याम,
नारीके गुलाम उठि भोरही तें पाय परैं
तनको संग नाहिं कोऊ रस रंग नाहिं,
हियेमें उमंग नाहिं वृंदावन कुंज डरैं
बहूं ना जांय चालि देखिवे को रूपवर,
भौंकवोई करै नित कूकरसे पौर अरैं
ललितकिशोरी प्रिय प्रसादहू न पावैं जे,
रामकरै सारे ऐसे सपनेन दृष्टि परैं ॥ ३८

परज ।

नेवहौ नेह नवल राधे सों ।
चेतचोरन सुखदेन विहारी कामकलाकृतसाधे सों ॥
ललितकिशोरी वंकविलोकन मोर कोर दृग आधे सों ।
छविकी खानि सांवरो रसिया सागररूप अगाधे सों ॥ ३९

जिलाफीलू ।

नेतानित नेह बढ़ैरी आली राधावर वनमाली सों ।
द्रकला सम दिन दिन विरधै रसिया रूप रसाली सों ॥
लै वेलि लपट लखि अंगनसुंदर श्याम तमाली सों ।
ललितकिशोरी उमडै निधिसम वदन इंदु उर साली सों ॥ ४

कवित्त ।

कानहूं सुन्यो नाहिं नैनन न लख्यो कहूं,
बैनन कहत बनै अद्भुत अनंद है
चंदतें दुचंदद्युति सुंदर जुन्हाइ छाई,
अधिक लुनाई तामें शोभित सुछंद है ।
करत अवार फेर मोहीकोजू दोस देहौ,
ललितकिशोरी चाल चलै मंदमंद है
येहो नँदनंद येक कौतुक बिलोकौ आय
कुहू रैन गहिवर, लतान उग्यो चंद है ॥ ४१ ।

दादरा झांझ

ना बिसरै छवि नागरनटकी ।
मोरमुकुट गुंजा अवंतसी पवन झकोरन पियरे पटकी ॥
रास बिलास करन बनविहरन सरद रैन तट बंशीवटकी ।
ललितकिशोरी मगमें घेरन झपट लपट छटकन घूंघटकी ॥४२

जिला

सांवरो सुजान छलीमंद मुसक्यान वान,
चंदसो वदन तान भृकुटी कमान को
ब्रजकी वधूटी पट घूंघट को खोलि देति,
ऐसी वीर नटखट रोकै मग जान को
ललितकिशोरी देख धोखेहू चवाय चलै,
दीखे री कठिन अब बास बरसानको

लोग नँदनंद कहैं भयो भट्ट मेरी जान,
कुलको कलंक चौथ चंद गोपिकान को

गौड मलार ।

गोरस को वेंचि लौटि घोषको मैं जात हुती,
वीचमैं वादरा वरसि पर्‌यो घरघर
अँगअँग कँपि उठे कारी अँधियारी झुकी,
लगीरी झकोर आन झंझा पौन झरझर
लेउँरी वलैयामैं वा धेनु के चरैया की,
वचाय लई दैया ओट पीतपाट करकर
ललितकिशोरी चौथचंद को कलंक भयो,
देखि सूखी चूनरी चवाव चल्यो घरघर

गौड मलार ।

मुख है मलीन क्यों गायन पगरेणु,
तेंसु अधरन लाली कहां तृषाहू सत
अंगअंग कंप क्यों वानर मग धाय पर्‌यो,
गंड चिन्ह.चोंचहू चकोरीने चलाई है
पलट्यो जो पीतपट प्यारी परतीत काज,
नैनन खुमारी क्यों नींदहू झुकि आईहै
हिये हुलसात कहा लालको मनाय लाई,
फाट्यो क्यों ये चीर अंग फूली ना समाः

बारामासी मलार जन्माष्टमी को पद ।

भादोंकृष्णा अष्टमी रसिकन को सुख दैन ॥१॥
ललितादिक लीला रची लखि सचु पावत नैन ॥२॥
नैन पावत सचु सखी छविरूप दंपति देखिकै ॥३॥
देखिकैं मानौं चकोरी ह्वै रहे मुख लेखिकैं ॥४॥
ललित ललिता लाडिलीको लैगई वन वोलिकै ॥५॥
वोलिकै मिस फूलवीनन कपटवतियां छोलिकै ॥६॥
फूलवारी परम सुंदरि सघन द्रुम वेली जहां ॥७॥
जहां जमुनाजल हिलोरै वोलैं पिक कोयल तहां ॥८॥
मंद सीतल सोंधे सांनी पवन पावन मन हरै ॥९॥
हरै मन दुति चमकि चपला मेघ नव वूंदन झरै ॥१०॥
कलित कोमल कदम लतिका श्यामसुंदर कर गहे ॥११।
गहे कर दूजे लकुटिया वाट श्यामा तकिर हे ॥१२॥
तहां गोरि लै मिलाई श्याम अंकम भरि लई ॥१३॥
लई भर अंकम रसीले केलि रति ठानी नई ॥१४॥
मनौं मरकत हेम जडियां दामिनी नवघन लसी ॥१५॥
लसी सु श्याम तमाल द्रुमसों चंपवेली रस मसी ॥१६॥
दृगनसों दृग लाल जोरत लाडिली सकुचत हिये ॥१७।
हिये सकुचत मिलन नूतन नैन निज नीचे किये ॥१८।
चिवुक गहिकर नवल रसिया अधररस चाखत अली ॥१
अली कमलपर कनक संपुट विंवछवि तापर भली ॥२०।

लजत श्याम अंग मोरत पानि पंकज मुखधरैं ॥२१॥
धरैं पंकज पानि दूजो कुचन अति जियरा डरैं ॥२२॥
चंदपै अरविंद ऊग्यो कंज ऊग्यो कुंभपै ॥२३॥
कुंभपै कै छत्र शोभा पत्र छवि कै चंदपै ॥२४॥
विविधि विलसत रसिकवर दोउ कामरति शोभा घनी ॥२५॥
घनी शोभा निरखि हुलसत लखि किशोरी दृग अनी॥२६॥

दीपचंदी

कलिजुग पंडित निरखि सखीरी ।
जुगुलदरसको जोग पाय मग जातहुते मंजारि लखीरी ॥
पलटे आप और संगिनकों पलटि चलो यह बात भखीरी ।
दूजेहू मग मिली बिलैया ललितकिशोरी बात रखीरी ॥४७॥

दीपचंदी

चंद खिलौना मांगै लाल ।
मैया आँगन जलै झकावत ना जानत लाला के ख्याल ॥
वे हैरहे चकोर निरखिकैं नैनन चंद्रानन व्रजवाल ।
ललितकिशोरी झूंठी बतियन कैसिक विरमत मदनगुपाल ॥

दीपचंदी

नंदकोलाल गुपाल माल उर भ्रमत रहत नववालके चायन
खंजननैन बैन मनरंजन अंजनरेख मैन सकुचायन ॥
ललिताकिशोरी हेरि इतै कित जाहि उतै निजसहज सुभाय
कदम्मकी कुंज कुटीर कहूँ वह हैहै पलोटत राधाके पायन ॥

दोहा

प्रगटी हितहरिवंस सखि, रसिकन मन हरिलीन ।
प्रीतमप्यारे प्रेमसों, अधरसुधारस दीन ॥५०॥

रागभैरौं

वृंदावन कुंजकुंज झूमिरहीं लतासुंज,
आली अलि गुंजकौं सुंदर मधुर है ।
विकसी कदम्ब कली सोंधे की सुगंध भली,
पूरो चहुँ ओर अली मुरली को सुर है ॥
प्यारी सुकुमारि पग नूपुरकी झनकार,
पिय रिझवार के सु वसी बीच उरहै ।
ललिताकिशोरी वनराज सब भोरी कहैं,
भोरी जान गोरी ये किशोरी वालमपुर है ॥५१॥

राग भैरौं

मोर मुकुट पटपीत लकुट कर कछनी कटितट भान पियारो ।
वांके नैन वैन अति लीने सैन मैन को मरदन हारो ॥
ललितकिशोरी अंगल गावत भरि उमंग अंग को कारो ।
जानत नवल नारि पर अपनो गोकुल गांव को पैडाइ न्यारो ।५२।

दादरा भैरवी

लाडिली लाल हमारे जिय वस गये ।
गौर वरन प्यारी पिय सांवल चटकि मटकि दृग लसि गये ॥

सोय गई में आनि जुगुलवर पाटीसों कच कसि ग
ललितकिशोरी उठी चटपटी दै गरवांह विहसि गये ॥८

राग भैरवी

लाज की मारी दृग पट ओटे जाती थी मैं आज वगर में
लखे आंख भर ना हेरी री राधा मोहन ठढे डगर में ॥
आगि लगै घूंघट पट आली ललितकिशोरी ऐसे अमर में
परै कूप कुलकानि वावरी जरै लाज होरी की झरमें ॥५

राग पीलू

सितम करै वसुरी दई मारी ।
वाजत जव वृंन्दावन कुंजन हरत लाज कुल कान हमारी
हरे वांस की तनक लकरिया छोलि बनाय धरी अधरारी
इतनी सी पतरी मोरि आली नौदश ठौरन छेद छिदारी
ऊपरतें सूधी सी लागत अंतस औगुन अमित महा री
ललितकिशोरी लगी लालमुख छोटी अति खोटी कुटिलारी

राग काफी

सखी यक देखी अजव वहार ।
पहिरि खोलि हरि चतुर शिरोमणि,
किया मनोहर शिव आकार ॥
प्रगट भये सूने मन्दिर विच,
ब्रज जुवतीं जन जुरीं अपार ।
सौभाग्य वर धन फल दाता,
देवत प्रगट्यो परी गुहार ५५

जटिला सों ललिता हित करि यह,
कही कथा रोचक विस्तार ।
आयसु लै लैगई तहांही,
सुंदरि श्री वृषभानु दुलार ॥
अरघ पाद्य चंदन चरचायो,
विविध उपासन सहित विचार ।
ललितकिशोरी आखि मूंदि वर,
वांछित मांगो हाथ पसार ॥
यह कहि निकसि आप बाहिर ह्वै,
चटपट झटपट दये किवार ।
अगम अगोचर निगम नेत तत,
गावत ऐरी जुगुल विहार ॥५६॥

पीलू

कसकत हियरे कोर चखनकी ।
पूरन ब्रह्म और नाहिं भाषत पूरित अंतर जोति नखनकी ॥
सुंदर जुगुलकिशोर चोर चित चंद्रकला छवि मोरपखनकी ।
ललितकिशोरी परत न पलकैं बानि परी अस रूप लखनकी ॥५

रागपीलू

करि सिंगार सोरह नव चूनरि पहिरि कंचुकी औंचि तनी ।
ललितकिशोरी दासी वनिकैं चलतीं श्रीवन वनी ठनी ॥
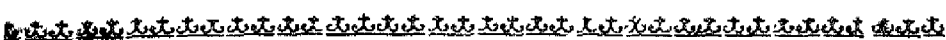
जातीं भूल अवधरसिया जग तजतीं संपति दिव्य वनी ।
नंदकिशोरके कंठ लागिके लेती सुख जो रामजनी ॥ ५८

॥ दोहा ॥

गौरश्याम अँग दृग लग्यो और न सूझै मोहि ।
जारँग अैनक नैनमें तारँग सूझै सोहि ॥ ५९ ॥

काफी

नैनन राधे वैनन राधे सैनन राधे कृतानित राधे ।
कानन राधे तानन राधे भानन राधे हितावित राधे ॥
दुखमें राधे सुखमें राधे मुखमें राधे उर चित राधे ।
ललितकिशोरी इत उत राधे जित देखौं मैं तित तित राधे ॥६

काफी

पदरज तजि किम आस करतहो जोग जग्य जप साधाकी ।
सुमिरत होत सुख्ख आनँद अति जर न रहत दुख वाधाकी
ललितकिशोरी शरण सदा रहु शोभा सिंधु अगाधाकी ।
परब्रह्म गावत जाको जग झारत चरनरेनु राधाकी ॥ ६१ ।

मालकोश

ललित कलित वनवेलीहै सघन द्रुम
सुमनरचितमञ्जुकुंजन वसेरोहै ।
फिरत न फेरे फंदो जाल वीच मीन मनौं,
वंशीवट रास नैन जवतेरी हेरोहै

पायंकी चलन देखि घूंघट वजन देखि,
लाडिली नचन देखि दाम विन चेरोहै।
ललितकिशोरि गोरी श्यामकी मुकुटमणि,
राधे पगपानकी नगीना मन मेरोहै ॥६२॥

जोगिया

आज सखी भोरैं गृह निकसी पीरेपटवारो मेरे मारग आयो ।
रुनुक झुनुक गति निरति भायसों अधर मुरलिधरि गायसुनायो ॥
आय निकट अति निपट चलाको भौंह मरोरत नैन दुरायो ।
ललितकिशोरी रह्यो पछितायो श्याम दृगनभरि देखि न पायो ।६३

जोगिया

सखि सुंदर श्याम सलोना ।
कोय न चितै विहसि मुसकान्यो चितवन में कछु करिगयो टोना।
जवतें देखी ललितमाधुरी अनरस लगत अलोना ।
मनतो अव चितचोरसों अटक्यो होनी होय सु होना ॥६४॥

जोगिया

नवलपिया तुहि वेगि वुलाई तूका करत सिंगार ।
अंजन एकहि आंखि अंज्यो भल छुटे रहन दे वार ॥
चुलियाके वंद खुलेही भलेहैं भूषन करसों डार ।
मतवारी सी अली चलीचल समय न वारंवार ॥
पीपी रटत पपीहासी अव आपुनपौ न निहार ।

ललितकिशोरी वीड़ी चढियो प्रीतम के दरबार ६६

अलहिया ।

श्रीवन वीछी वड़ी कृपाल ।
डंक मारि मुखसों उघटावत श्रीराधे ततकाल ॥
सिसकावत हो निठुर निरदई रीझत आति नंदलाल ।
ललितकिशोरी कीट पंतगहु विपिन निपुन रस ख्याल

राग भैरवी ।

नैनन पैनी कोर गडी ।
कहै सबै वीछी मारयो तुहि तरें तमाल ठढी ॥
कहि न सकौं कछु ऐरी सजनी हों कुल कानि मढी ।
ललितकिशोरी छैल निरदई ताकि हिये सूध जडी ॥६७

जौनपुरी टोडी ।

हमरी तुमरी बात करैये ।
सुनो सुनो इत सुनौं कानदै झूंठे दोपन जोरि धरैये ॥
इनसों डरिये ललितमाधुरी जीभ जरै दैयो न डरैये
हाय हाय हंसि कहत सैनदै इतै चितै नित अंक भरैये ।

राग झंझोटी ।

लगै जो पै वृन्दावन को रंग ।
सुध न रहै तिलभर या तनकी निरखत दंपति अंग ॥
नैनन नीर फुहारे छूटें मनमें उठत उमंग

हाय हाय पलपल निकसै उर कसक न भृकुटी भंग ॥
होय विगार धरम पति पति सों छुटै धीर सतसंग ।
हा राधा राधा भजि भटकै मानों खाये भंग ॥
गावै कवौं हंसै उठि भाजै मतवारन से ढंग ।
ललितकिशोरी मुदित वजावै मानस ताल मृदंग ॥६६

दोहा ।

ठकुराई प्यारी लई, सिवकाई पी वांट ।
प्रीति रीति यक सार सखि दई मनों यक सांट ॥
कर्म धर्म मेरे भटू, ये दोऊ चित चोर ।
कुल देवी वृषभानुजा देवत नंद किशोर ॥७०॥

राग झंझोटी

जो कोउ वृंदावन रस चाखै ।
भवन चतुर्दश तिहूं लोकलौं सपनिहुँ नहिं अभिलाखै ॥
ललितकिशोरी परे कोन में श्याम राधिका भाखै ।
जुगुल रूप अरि पलक न खोलैं लोभ दिखावो लाखै ।

राग झँझोटी

प्यारी लाल लगन जिहिं लागै ।
वृंदा विपिन विहाय येक छिन वहुरि न कहुँ अनुरागै ॥
कोस करोर होय तौहू तजि लाज पवनसों भागै ।
ललितकिशोरी खान पान कह को सोवै को जागै ॥७२

दोहा

दुरलभ जुगुलविहार सुख कहूं देखियत नाहिं ।
वृंदावन रसिकन हिये कै तिन वानी मांहिं ॥७३॥
हित हरिवंश प्रशंस जग, प्रेम सरोवर हंस ।
तिनकी रसवानी भई, रसिकन उर अवतंस ॥७४॥

गौरि कलंगड़ा ।

कुऊ चुरियां लेउरी चुरियाँ ।
पचँरग पीरी अरुन साँवरी हरीहरी जुरियाँ ॥
चमकदार चटकीली पतरी लहिरारी मुरियाँ ।
ललिताकिशोरी चढत अँगुरियन पीतम मन धुरियाँ ॥७

गौरि कलंगड़ा ।

उडराज वधू वनिआई री ।
सारी सुरंग कलंक कंचुकी पारस गोट लगाई री ॥
अमित तरैया संग सहेली शोभा जल थल छाई री ।
ललिताकिशोरी जुगुलचंदसँग निरतत नभ हरषाई री ॥

दोहा ।

मरकि रजाईमें लली, अलसानी पिय ओल ।
वतरातैं वतरात अलि, धरि करकमल कपोल ॥
चांपत पग पी चौंकि चट, चकित जगी वरवाल ।
ललितासों वोली लली, अदभुत वचन रसाल ॥

ललिता गौरी ।

औघट आनि परी अनजानैं फँसी फंद सुर मंद वसुरिया ।
कहा करौं कहाँ जाउँ दइरी अलिजन खेलत दूरि निवरिय
इत जमुना उत गाय मरखनी वैला शिर सूझै न डगरिया
इश्क चमन मोहन तकि मारत चितवनि सरहगकोर कटरिया :

झिला

मनमोहनको मनुवाँ देकर ठंडी सांसें भरना क्या वे ।
नोकदार पलकों दिल धरकर फिरि सूलीपर चढ़ना क्या वे
ललितकिशोरी रसके चसके आगे मरना जीना क्या वे ।
तिरछी अबरूके आशिकहो तलवारों से डरना क्या वे ॥८

राग कजरी

विहारिडासों नैना लागि गैलो हो ।
विसरि गैली डगरी भुलाय गैली वगरी,
वसियाकी तान सुनली साँझ भैलो हो ॥
ललिताकिशोरी गुरिया रूपमद छाकिलो,
आववाव वतियाँ उताल कहिलो हो ।
हिराय गैलो ककना उडाय गैली चुनरी,
वाँकी चितवनियां लुभाय रहिलो हो ॥८१॥

रागधानी

जवते लखेहैं राधाप्यारी लालविहारी नागर नटका ।
फहरत पवन कोर सारीकि उडत छोर सँग पीरे पटका
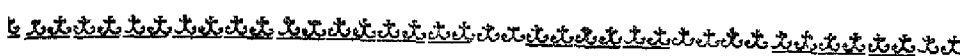
युगलविहारी मिलनेका सवरैन रहा दिल पर खटका।
ललितकिशोरी नींदगई चख रूप सलोना मनमें अटका ॥८२

रागकान्हरा

जबसे देखी माधुरी मूरत कुंवरि किशोरी नागर नटका।
नैनवान मुसक्यान माधुरी भौंह कमान मुकुटका लटका॥
ललिताकिशोरी बारबार मन पेंचदार अलकोंमें अटका।
नोकनुकीली अँखियोंका सवरैन रहा दिलपर खटका ॥८३॥

झूलना छंद

लगा इश्क जब गौर श्यामका अदा और नहिं भाती है।
छके रहैं छवि ललितमाधुरी फिरिफिरि वही सुहाती है॥
ललितकिशोरी अँखियों में वह वांकी छवि दरसाती है।
जुगुलरूप चकचूर हुवा दिल नैनों नींद न आती है ॥८४॥

राग काफी

श्रीवृन्दावनवास त्यागिकै परना कूपे बात सफा है।
जुगुललाल जुल्फोंमें रहिनों उरझाना दिल दुंद दफा है॥
ललिताकिशोरी इस जिंदडी विच आन काज सब जुल्म जफाहै
मनमोहन महबूब सनमदा अँखियों नूं दीदार नफा है॥८५॥

राग काफी

वरुनी वान जवको जोई ललिताकिशोरी झूठी माने
रेजपुर्ज ह्वैजाय जिगर टुक घारदेखे सोइ सैननिसाने

राग उत्तरदेस

जुगुललाल मैदानइश्कमें घूंघट पट क्या ओटें हैं।
वरुनीवान कमान भौंहसे हरदम चलती चोटें हैं॥
रहिना सखि हुसियार न जाना लुटती नहिं सुखमोटें
ललिताकिशोरी दरपर कितनी घायल हो हो लोटें हैं

उत्तरादेस।

इसकसमरमें विरला दिलको सिपर वनाये लड़ता है।
वंकविलोकन वानके आगे मुसकिलसे कुइ अड़ता है
ललिताकिशोरी घायल जिसकामन कटाक्षमें गड़ता है
मनमोहन मुसक्यानसैफका नहीं पार पट पड़ता है॥

कुंडलिया।

दानमानरसलौं अली उज्वल शुद्ध सिंगार।
धसि निकुंज पग सेज धरि अधरसुधा व्योहार॥
अधरसुधा व्योहार वहुरि रसनामृत चसके।
सजनी महत सिंगार अंककसि चुंवन मसके॥
ललिताकिशोरी भाव सदा निवहै निर आलस।
उज्वल शुद्ध सिंगार भेद नहिं दानमान रस॥ ८६॥

हाहुरादेस।

वाकी वात करो मति गोरी।
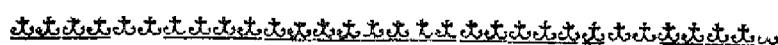
त उततें सुनि पासपरोसिन चरचैंगी मोरी मति थोरी ॥
ह लंपट वदनाम जगतको हों नववधुअन ललितकिशोरी
ोकों कहा मधुरमुरलीकी तानन वह अपने घरको री ॥९

जिला जैजैवंती का

यह वतिया सखि मोहिं न भावै ।
ारवार मोसों यों भाषै मोहनलाल वुलावै ॥
ोसों कौथ लालमोहनसों जोर सवाद चलावै ।
ललिताकिशोरी हों कुलवंती तोही जाय झुलावै ॥ ९१ ॥

जिला जैजैवंती वृजवासी धुनि

नि वाकी तैं कथा चलाई ।
टक्यो वारअनेक न मानत श्यामसुंदर गाथा लै आई ॥
कुलकानि तजी जिय अपने मानत सवही निज समताई
ोहिं कुसील निठुर करै हेली मोकों ना यह वात सुहाई ॥९

जिला जैजैवंती

ासों काम कहा मुहिं हेली ।
ोरमुकटकी झुनक कहा मुहिं काम कौन पागिया अलवेली
ुंदर गोल कपोलन ऊपर कहा परी अलकन उरझेली ।
ो चित चढ्यो किशोरी तौपै झूलै किन भुजसों भुजमेली ॥९

जिला जैजैवंती

ानी जी वाके दृग वांके ।
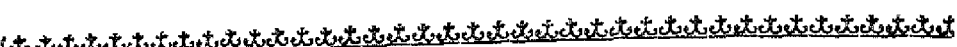
कजरारे कोयन वरछीले तिरछे कुटिल कजाके ॥
कुलवधुवन कह ललिताकिशोरी जद्यपि सिंधु सुधाके ।
जो चितचाह सील उर वाढो डोलत कत मुख ढाके ॥६४

जिला जैजैवंती वृजवासी धुनि

हां हां जी वह ललित त्रिभंगी ।
नवल किशोर रसिक मन मोहन नागर नट चंचल नवरंगी ।
चितवन में टोना सो डारत नंदढुढौना नवल उमंगी
ललिताकिशोरी मोहि टटोवत तू वाकी वह तेरौ संगी ॥६५।

रागपरज

मानीजी वह रूप गुमानी ।
विहसत फूल झरत वाके मुख सों छवि तेरे नैन समानी ॥
इतनों सो ऐंडाई डोलै तैं वीरा विनमोल विकानी ।
ललितकिशोरी रुचैं न मोकों कपट भरी वतियां, रससानी॥६६॥

रागपूरवी

सुनिलीनी वाकी लखुरैयां ।
वहमग छांड धूम याहा मग निकस्यो सँग लै गैयां ॥
चीन्ह चीन्ह मो चरनचिन्हसों परसत मुकुट ललैयां ।
ललिताकिशोरी करै माफ मुहिं तेरी लेंहु वलैयां ॥ ६७ ॥

रागपूरवी

मेरी वाकी कौन मिताई
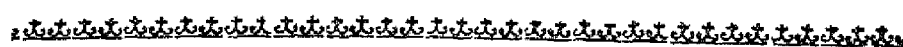
जा सँग खेलन चलौ वावरी विन समुझे दौरी तैं आई ।
कित वृषभान लडैती हौं कित नंदगोपसुत कुँवर कन्हाई
चल चल जिनि छलघात चलावै तो वातन मोमन अलसाई॥

राग पूरवी ।

वाके गांव न मोकों वसिवो ।
वेनी सुमन गुहै वो रचि रचि ना वा संग विलसिवो ॥
ललितकिशोरी मुखहिं दिखावै वासौं ना मुहिं हँसिवो ।
जा मग है वह कटै भूलिकै तामग नाहिं निकसिवो ॥९

राग पूरवी ।

भली भली वह वडो छली है ।
सैनन हीं नावकसो घालै नैनन कजरा रेख रली है ॥
ललितकिशोरी अधर विंव पै वेसर मुक्ता ओस ढली है ।
वा कढिवे की गैल नियारी मो चलिवे की जुदी गली है॥

श्याम कल्यान ।

समुझी हौं वाकी रस घातैं ।
अपनो स्वारथ होय कहो सो चरचत जो इतरातैं ॥
ललितकिशोरी मोहिं न नीकी लगैं तिहारी वातैं ।
भवन गवन कर वेगि भामिनी काज कहा परभातैं ॥१०

राग श्यामकल्यान ।

बूझ गई वाके मैं मनकी ।

देख्यो एक नजरि मुहि चाहत झूठी सब यह आनँद घनकी
ललितकिशोरी भोरि भई तैं वरनत शोभा सब गातनकी
क्यों वैठी वतियां नखरादे चाह नहीं मोकों दरसनकी॥१०

इयामकल्यान ।

हूँ जी वह छैल छवीलो ।
मुरली में मोही को टेरै मेरेइ रंग रंगीलो ।
चुप चुप अब वस ललितकिशोरी चितवनि चित्र हरीलो ।
कवको नातो नेह सँवारो मग मो काज अरीलो ॥१०३॥

खमाच ।

हूं वाकी चरचा न चलावै ।
रचिरचि चित्र विचित्र त्रिभंगी ललित लता तर लैलै आवै
परसित चरन मुकुट मम मूरति उरवसि तासु हिये पहिरावै
ललितकिशोरी या छलविधै तेरी को वीरा पतियावै ॥१०४

राग खमाच ।

को वाकी पलकन छवि हेरै ।
को निरखै मुसक्यान माधुरी अलक फंद विच को मन गेरै ।
मोहि कहा इन वातन वाकी वनवन मोर चकोरन घेरै ।
ललितकिशोरी लपकि लाग उर तोही को वंशीमें टेरै ॥१०५

दोहा ।

लख्यो झरोखें सुनत पी, प्यारी रसवतरान ।
औचक अंकम कसिलई, भरी वदन मुसकान ॥

राग ईमन्न कारफत ।

काहे न कल छिन लेत सेजपर यह तेरो कौन सुभाव परो
खनखन इतउत उठिउठि डोलत घर अँगना तें सीस धरो ॥
ललितकिशोरी पलक न मारत किहिं छैले तुवचित्त हरो ।
नूतन नेह कहत सकुचतहै नैनन में श्रीकृष्ण अरो ॥१०६॥

ईमन्न कारफत ।

मो कर रेख अहै कुछ ऐसी ।
मेरी लगन श्यामसों जैसी मोहूसों वाकी है तैसी ॥
वीडी चुरुल उठाये डोलैं ललितकिशोरी बात अनैसी ।
मेरे जियमें रहे धुकधुकी हाय सदा निवहेगी कैसी ॥१०७

झंझोटी ।

चितवन मेरी चितचोरसों अटकी ।
रूपठगौरी लागी गोरी जबतें लखी छवि नागरनटकी ॥
आई लहरि गई सब सुधिवुधि तन कंप्यो सिर मटकी पटक
ललितकिशोरी चितवनहीं कछुकरिगयो मोपै टोना टटकी ॥१

झंझोटी ।

वरजत नैनन नेक न मानो ।
अटकि रहे लखि लटक मुकुटकी हियमें सांवलरूप समानो
ललितकिशोरी मनमोहन विन कियो चहत अब प्रान पयान
प्रीतिकरी सुख जानि सखीरी पलटि शीस दुखअग्नि विसानो

मांझ देसका ।

सांवलिया करिगयो टोना री ।
फूँकि गयो वंशीमें पढि कछु जसुमतिनंद डुटोना री ॥
रैनजगी पल पलक न लागी नैनों लगा सलोना री ।
ललितकिशोरी मिलै सांवरो होनी होय सु होना री ॥११०।

राग जैजैवंती

काहेको वैद वैदकी स्याने,
टेरत वैरी कौन यहां काज है ।
दरद न अंगन डसी न कारे,
लग्यो न भूत लख्यो छविराजहै ॥
विरह हलाहल करी दिवानी,
अकुलत लहिरत छुटिगई लाजहै ।
लागै अचूक जो मानै मो सीख सखी,
वंशीकी फूक हियेहूककी इलाजहै ॥११

राग जैजैवंती

वेचन दधि कुउ जात उतै ना पनियां को पनिघट पनिहारी
छूटिगई मगवा ढँग लागें भयो कठिन ब्रजवास महा री ॥
चूमत मुख उरलाय सांवरो वरजोरी मसकत अकवारी ।
ललितकिशोरी छैलछवीलो गोकुलगैल करत वटपारी ॥११

राग देस

वरजें वाल न हेर भट्ट आकास उगो है चौथ को चंदा
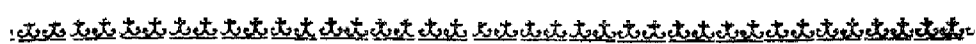
नीचे करि दृग बैठ अटा परिहैं गरनाहिं कलंकको फंदा ॥
भागवडाई कहा किशोरी करिये पैंडे पर्यो गुविंदा ।
मोहिं कलंक दईने दयो नभ चौथचंद अवनी व्रजचंदा ॥११३॥

राग देस

लगिहै कलंक निसंक होहुना चहूँओर यह सोर छ्यो है ।
चलैं मुखढांक तरैं अँखियांन करैं नव चौथको चंद उग्यो है ।
होत अकाज काज आज सव मारग कढिवो कठिन भयो है ।
ललितकिशोरी मेरे जियको चौथचंद व्रजचंद भयो है ॥११४॥

राग भैरवी

तिरछी चितवनवाला नंदका चित लैगया हमारा री ।
घूंघरवाली अलकैं झलकैं वांकामुकट संवारा री ॥
चटकमटक नागरनट सजनी नैनवान तकि मारारी ।
ललितकिशोरी निठुर निरदई तीखी अंखियों वारा री ॥११५

खिमटा भैरवी

छिनछिन कदम विलोक सखि भृकुटी नैन नचावती हौं ।
अंग मरोर तानि अँडाते चंपकी डार झुकावती हौ ॥
फूललै हाथ चमेलीको हेली अवनी लीक खचावती हौ ।
कहो सांच वलि ललितकिशोरी कौनसो रंग रचावती हौ ॥११६

भैरवी खिमटा

नट नागरवर पर रीझी हौं ।
नख शिख अँगअँग ललितमाधुरी वारहि वार उरीझी हौं ॥

गतिमति थकित भईरी आली मृदु मुसक्याय निहारी है
टूकटूक हिय भयो सराहत अद्भुत सरस कटारी है ॥
रूमरूमसों फवि छवि छलकै रूपरासि वनमाली री ।
विफरिपरे दृग घूंघटपटके हटके रहे न आली री ॥ ११

रागजौनपुरी टोडी

या मुहनासों तैं क्यों अटकीरी ।
याकी एक न मान लाखमें कौन प्रतीत करै नटकी री
तोसों गैल भवन वतरावत यह मारग वंशीवटकी री ।
ललितकिशोरीलाल कपट लखि भौंह सकोर हिये खटकीरी

राग अल्हैया ।

गई दधि वेंचन आप विकानी ।
भई भेंट गोवर्धनगैंडे श्यामसुंदर मुख देखि लुभानी ॥
भये नैन दृग मोरचंद्रिका चितवत छवि पलकैं नहुरानी
ललितकिशोरी चित्रलिखीसी मोल तोल दधिदूध भुलानी

राग अल्हैया ।

सखीरीवडोइ लँगर नँदलाल,
कहत वनैन रैन चांदनीकरत अनोखेख्याल ।
हों अपनी वह छात विराजी वैठो मोहन आय ॥
कारपरछांहीं चालि उरोजन गहत लपटी धाय ।
पायन परसि परसि ऊरूतट नीवी छांह छुवावै ॥
ललितकिशोरी रसनायकसों हेली कछु न वसावै ॥ ११

राग भैरवी ।

राधवल्लभ नैन अनी सों नैन हमारे अटके ।
अभिरिपरे हठि उमगि रहे ना रोकें घूंघट पटके ॥
फंसिगये फंदन ललितकिशोरी वारवार लट लटके ।
देखो वीर सूरता इनकी विधत नैक ना मटके ॥ १२०

रागपद ।

निसको कढिवो मोहि न भावै ॥ १ ॥
लकुटी परसि हहा हंसि औचक कपटी श्याम डरावै ॥
पाछेतें यक सिंही फुराहिरी लै ग्रीवाय छुवावै ॥ ३ ॥
मुखमोरौं तौ सोय कपोलै चपल उतै परसावै ॥ ४ ॥
कवहुंक फूल पांखुरी कोमल ऊंचे तें वरसावै ॥ ५ ॥
कवहूं डारि झुकाय कटीली मो चूनर अटकावै ॥ ६ ॥
कुंजन निकसि विहासि आतुर अति आपु नहीं सुरझावै
अंचर ढोरि जोरि करपल्लव नाना विनय सुनावै ॥ ८
मैंतो विना दामको चेरो मोसों मत सकुचावै ॥ ९ ॥
ललितकिशोरी कामकाजकछु लीजै जो मन भावै॥१०॥

छप्पय तेताला

कछु कुलको कलंक कुऊ चंद चौथ हू को,
कहैं आनंदनिकंद सुत जसुदाको है
मोरन मुकटवारो चोरन शिरोमनी
सुंदरता शिखरमें सो छविको पताकै

कुंजविहारी कुऊ लंपट लवारी कहैं
प्यारी पुतरनिको सुतारो ये निशां को है।
ललितकिशोरी गोरी जागे वृजभाग ओरी,
मेरेमन आवै अनुराग राधिकाको है ॥१२२॥

राग बिलावल

पियरे पट छोर झकोर पवनसों नैनहीं में फहरयो करै
लोलक ललितकिशोरी कानन मोतीमें मनमथहरयो करै ॥
भृकुटी मोर मरोर तिलक तिय गंड कपोलन विहरयो करै।
अलकैं तिहारी विहारी हिये नित नागिनिया सी लहरयो करै॥१२३

दोहा

लखि तिदवारी भानुजा, फैंकी दीठि कमंद।
तिहिं मग मनको पठै पी, चढ्यो चहत करि फंद ॥१२४॥

राग बिलावल

नंद पौरि ह्वै चंदमुखी गई जोवन जोर अनंद हिये।
देखन रूप मदनमोहन को चोरी गोरसको मिस किये॥
दीठि दुराय मात जसुमति की कहत नैन सों नैन दिये।
ललितकिशोरी कुचिहों गहिहों मोदक कर नँदलाल हिये॥१२५

राग जैजैवंती

तनमन ह्वारो सो तो सबही लडैती जूको,
जीवन हमारी वृषभानुजा दुलारी हैं।
अधर अमृत पान रसना ललचाई,

हाथ हू हमारे पद सेवा अधिकारी हैं
; पर ब्रह्म जगव्यापि निराकार कहो,
ललितकिशोरी वन कुंजन विहारी हैं
हूं हमारे मृगछौना हैं खिलौना वीर,
पलकैं हमारी मग प्यारी की बुहारी हैं ॥ १

राग जैजैवंती

त अति वृंदावन अवनी ।
मग मग दंपति पदतल अंकित,
कुसुमित लता ललित कल कमनी
ललितकिशोरी कुंज विहारिनि,
मोहनलाल रसिक की रमनी
अद्भुत काम धेनु मम जीवन,
सुख दैनी अति हीं दुख दमनी

दोहा ।

श्रीवृंदावन कुंज घन ललित लता रहीं झूम ।
नवल लडेती लालके परी नेहकी धूम ॥१२८॥
ने नूं जांदी हेली बरसाने नूं जांदियां ।
दघन जीवन श्यामने कीती मांडे शादियां ॥
तुसी हिलमिल वनवीथिन डोलैंगी उन मादियां
तकिशोरी ललित माधुरी राधाजीरी वांदियां ॥१

राग महानी ।

जैजै गौर किशोर मनोहर मृग लोचन भृकुटी कुटिलारी
जूरो सुभग फणिक गुंडलदैं बैठो लट लटकन छवि न्यारी
कुंडल जाति जगमगत गंडन चपला निरत करत मनुहारी
विहसन दशन दमक हिय रातें ललितकिशोरी टरतन टारी

दोहा

गौर चंद्र नख चंद्रिका मो उर करो प्रकाश ।
तासु चांदनी में लखै मन मूरत रस रास ॥१३१॥
विगरी भांति अनेक ही कहिवे में सकुचात ।
राधागोविंद गुरु कृपा सुधरि गई सब बात ॥१३२॥

कुण्डलिया

गोरी गौर सिंगार करि स्यामा स्याम सृँगार ।
राजे अरुन निकुंज तें कृत कृत देखन हार ॥
कृत कृत देखन हार कलित कल केलि नसेनी ।
सुंदर रूप प्रयाग वही छविकी तिरवेनी ॥
मकर मदन मदमास पर विरति ललितकिशोरी ।
रीमन वधू नहाव भलें नख सिख लौं गोरी ॥१३३॥

॥ अथ आरती सब समयकी ॥

॥ मंगला आरती राग पट ॥

मंगल आरति कीजे भोरै ॥१॥

मंगल श्रीवृषभान किशोरी मंगल नागर नंद किशोरै ॥२॥
मंगल लसन कसन गलवाहीं मंगल अंग अलसानी ॥३॥
अैंडि अैंडि लैलै जमुहाई मंगल मुख मुसक्यानी ॥४॥
मंगल पलकन झुकन अलक छवि विथुरि कपोल विलोलनि ॥५॥
खंडित बैन विवस आलस भरे मंगल माधुरी बोलनि ॥६॥
दशन दमक वसन वर मंगल ओढनि पलटि छबीले ॥७॥
मंगल नैन मुदित उघरत अलि जलसुत मध्य रसीले ॥८॥
मंगल ललितकिशोरी जोरी मंगल सखि सुकमारी ॥९॥
मंगल मो अंखियां यह शोभा प्रफुलित नित्त निहारी ॥१३४

॥ धूप आरती प्रातःकाल की ॥

राग जोगिया

वारत आरती नंदलाल ।
प्रफुलित सुमन अंजुली लीन्हे निरखि नवेली बाल ॥
जुवति जूथ संग चली भवनसों जात सघन वन खोरि ।
लता निवारि विलोकि छबीलो डारत भ्रू त्रिन तोरि ॥
ललितकिशोरी ठिठुकि चलत मग पगपग तीखी सैन ।
रसिक वाटसों जमुन घाटलों अँग अँग वारत नैन ॥१३५॥

सिंगार आरती

बिलावल

जय जय नवल निकुंज स्वामिनी ॥१॥
करि सिंगार पीतम सँग शोभित,
वारत आरति सुघर भामिनी ॥२॥

ईशत हास विलोकन बांकी,
दमकन दशन विकास दामिनी
बोलन मधुर विलोलन अधरन,
मुक्ता हल छवि नचत कामिनी
कसन कंचुकी वसन झीन अति,
पचरंग सतलरि हिये हालनी।
कुंचित केश लटकि लपटी लर,
इंद्र धनुष ज्यों ग्रस्यो व्यालिनी।
कुंडल झलक अलक आनन सों,
तारागन ज्यों दिपत जामिनी ॥
टकटोरन अंतरपट अंगन,
मुदित अलापत कुकबरागिनी ॥ ८
चुंवन चोंप कपोल पियाकों,
ग्रीवढुरावत मंद हासनी ॥ ९ ॥
ललिताकिशोरी लाल रसिकमणि,
प्रिया सुरतिनिधि रस विलासनी ॥१०

॥ राजभोग आरती ॥

राग सारंग ।

प्यारी प्रीतमपर तृण टूटतहैं री ॥१॥
हठि अठिलात परस्पर रसिक रूपरस घूंटत हैं री
सास कंचुकीके वंद तानि तानि चटचट टूटत गो

सुरतिसमर कुच मनौ कैदते द्वै अलमस्त मे छूटन ओरी॥४॥
खुले बंद चौतनी चारु दुति अंगअंग प्रति झलकत आली॥५॥
करअरविंद उदर निज फेरत वहुर विहारनि के वनमाली ॥६॥
सकुच दुरावत ललितकिशोरी कोमलगात वरजि गहिवाहीं ॥७
सारंग वेनु वजाय कहत पिय ओन मही तिय इतनी नाहीं।८॥१२

॥ धूप आरती तीसरे पहर की ॥

धनाश्री ।

फूले फूल आरति वरनवनागरि वीनि वारैं ।
रूपभरे प्यारीलाल डोलत फुलवारीमें कुसुमित लता निहारैं ॥
श्याम घटा छटा चमक मंदमंद पवन रमक पुष्पन पराग
प्रीति मूँदी उघारैं ।
ललितकिशोरी अनुभांतिन विपिनमग माते लगि कंठ विहारैं।१३

॥ संध्या आरती ॥

राग मांझ देश

करत आरती नवलकिशोरी ॥१॥
नवल निकुंज अंशभुज दीन्हे गौरश्याम सुंदरवर जोरी ॥२॥
संध्यासमय लतामंदिरमें गुंजत मधुप कंजपग घोरी ॥३॥
ढोरत चंवर निवारत अलिगन अलिगन ललितकिशोर किशोरी॥४
विथुरी अलक कपोलन विलुलित कलमलात नागिनि जुटजोरी ॥५
अद्भुत छवि अवलोकि सुधाकर श्रेणीमधुप लसी छविछोरी॥६
मिली अनीसों अनी दृगनकी मृदु मुसक्यान अधर थोरीथोरी । ७

मुख-

चंद्र वदन अवलोकि परस्पर पियत सुधा छवि मनहुं चकोरी॥८॥
आरति विंब अंग अरविंदन नख शिख दुरत श्यामतन गोरी॥९॥
अमितकलाजुत भानरूप लखि वारवार निज होत निछोरी॥१०॥
अँडत अंग गंग तनयारवि परसत कमल कपोलन ओरी॥११॥
छविनिधि मध्य मनों री सजनी रति अनंग मिलि लेत हिलोरी।१२।
वारवार जल वारि सखीजन पीवत प्रेम सुधा रसवोरी॥१३॥
शोभसदन वदन दंपतिके निरखि निरखि डारत तृणतोरी॥१४॥
वंशी रणित अरुण अधरन पर मधुर चपल गति अंगुरिनपोरी॥१५॥
देखी सुनी भनी नहिं कमनी रमनीजोरी ललितकिशोरी।१६।१३९

॥ शयनआरती रातकी ॥

रागविहार

अरसाने खंजनसे नैना कढत तोतरे मुख रसवैना,
दंपति छवि कछु कहत वनैना अली आरती वारैं॥१॥
तानि तानि पग अँडि सकोरैं जमुहाई लै अंग मरोरैं,
निरखि निरखि सहचरि तृण तोरैं मुखअरविंद निहारैं॥२॥
पुलकित तन दीने गलवाहीं पीतम करत मुकुट परछाहीं,
झुकीपरत पलकैं अलसाहीं आनन अलक निवारैं॥३॥
ललितकिशोरी रतिरंग राते सुमनसेज फूले न समाते,
नवलनेह कछु अक सकुंचाते मूंद निकुंज किवारैं॥४॥१४०

॥ अथ मुकरी ॥

फुलवारी में मुरलि वजावै ।

मीठी मधुरी तान सुनावै ॥
पीरो पट कटि सांवल अंग ।
ऐसखि मोहन ना सखि श्रंग ॥ १
श्यामल अंग बदरिया लाजै ।
पायन में पैंजनियां बाजैं ॥
मेरोई नाम रटै मृदु बैना ।
एसखि मोहन ना सखि मैना ॥ २
चटकमटक अतिहीं इठिलावै ।
बात बातपै भाव बतावै ॥
अतिहि कुटिल री तेरी सौंहँ ।
एसखि मोहन ना सखि भौंहँ ॥ ३
सुंदर कोमल छैल छबीला ।
रंगरंगीला औ चटकीला ॥
छुवै कपोलन कानन मूल ।
एसखि मोहन ना सखि फूल ॥ ४
परसि कपोलन हियरे लपटै
कदलिजंघसों हिरि फिरि चपटै ॥
लट घुंघरारी सांवल वेश ।
कहु सखि मोहन ना सखि केश ॥
सिगरी निशि मेरे संग जागै ।
लपटि उरोजन सों अनुरागै ॥
छिनछिनपै में करौं सँभार ।

एसखि मोहन ना सखि हार ॥ ६

रैनदिवस नैनन में राखौं ।

रूप सुधारस छिन छिन चाखौं ॥

श्यामवरन पुतरिन में उरमा ।

एसखि मोहन ना सखि सुरमा ॥

श्यामवरन अति सुभग सुहाना ।

अंग अंग मेरे लपटाना ॥

सबनिशि बस्यो जघन कुच वीर ।

एसखि मोहन ना सखि चीर ॥ ८

नीचे आवे ऊपर जाय ।

हिलै हिलावै हिय हुलसाय ॥

सकल रैन मनुवां सुख मूला ।

एसखि मोहन ना सखि झूला ॥ ९

रैन चांदनी मो संग डोलै ।

बैठे उठै संगसंग लोलै ॥

श्यामवरन सोवै मो पांहीं ।

एसखि मोहन ना सखि छांहीं ॥

करौं अन्न जल ना कछु भाखौं ।

वा मुख देख रैन में चाखो ॥

सुंदर रूप प्राण तैं प्यारा ।

ए सखि मोहन नां सखि तारा ॥

रैन दिना छतियन सों विलसै

कसत अंकभर तन मन हुलसै ॥
जग मग भूषन श्यामल रंगिया।
ए सखि मोहन ना सखि अंगिया ॥१४९।
लपटावत अंग हियो जुडाय।
रूम रूम सीतल ह्वै जाय ॥
रूप अनूप होय जग वंदन।
ए सखि मोहन ना सखि चंदन ॥१५०।
जमुना कूल झलक सी देखी।
श्रवनन सुनी न नैनन पेखी ॥
झलमलाय कंचन से उजली।
ए पी प्यारी ना जी बिजली ॥१५१।
गौरवरन शोभा फुलवारी।
फैलि रही दिशि दिशि उजियारी ॥
बिलसै श्याम हिये गति मंद।
ए सखि प्यारी ना सखि चंद ॥१५२।
श्याम वरन सुंदर चित चोर।
देखत हियरा हुलसत मोर ॥
मृदुल सरस सब जगमें आदर।
एसखि मोहन ना सखि बादर ॥१५३।
पीन नवीन अंक कसि राखौं।
लाज की बात न काहू भाखौं ॥
दाबदूब सोवौं दिन रतियां।

ए सखि मोहन ना सखि छतियां ॥१९४॥

निरतत मो अधरामृत लीनो ।

निज मुख सुधा मुदित चित दीनों॥

गौर वरन चंदा सी जोती ।

ए पी प्यारी नाजी मोती ॥१९५॥

मंद मंद गति गोरे अंग ।

मुख पल्लव विवि अरुण सुरंग ॥

मधुरवैन कलकुल अवतंसी ।

ए पी प्यारी नाजी हंसी ॥१९६॥

पैयां चांपि अधररस प्याऊं ।

अतहित पलकन विजन दुराऊं ॥

कोकिलवैनी गुनन प्रसंसी ।

ए पी प्यारी नाजी वंसी ॥१९७॥

करौ कंठ सो नेक न न्यारी ।

उरसों लसी रहै सुकुमारी ॥

हलकी फूल न वीन विशाला ।

ए पी प्यारी नाजी माला ॥१९८॥

॥ इति मुकरी संपूरणम् ॥

अथजम्मक जंत्री ।

सवरी सांच कहुं कवरी रात ।

नख नखचै चित कुच कपोल दरसात ॥ १ ॥ १९९ ॥

दीठि दुरावन के लिये दिठौना वाल ।
दीठि दीठि हगसी रमी पीठिन देत विहाल ॥ २ ॥ १६०
मनैं न नैन विकोपि कँपि निरतत भौंहत नैन ।
सैनन वीर विनै नकरि याह्निन वात वैन न ॥ ३ ॥ १६१
सौ सौ सौंहैं करो कनि भौंहैं नोक नचाय ।
हौं जानत गौहैं लला मूठगुलाल दिखाय ॥ ४ ॥ १६२ ॥
थिरकत फिरकी सो फिरकि फिरकी फिरकी धाय ।
कहत कवीरन मींजि मुख वीर अवीर लगाय ॥ ५ ॥ १६३
मांगे मिलत न मुक्त सखि सगुन श्याम उर आय ।
निरगुन है मुक्ता वली मुक्त भई पग जाय ॥ ६ ॥ १६४ ॥
तेरी वहुतेरी सुनी मेरी सुन अव श्याम ।
तोहि नागरी करैगी गुनन आगरी वाम ॥ ७ ॥ १६५ ॥
हार वार सुरझात नाहिं वारवार उरझाय ।
रोरी झोरीमें भरे होरी में उकताय ॥ ८ ॥ १६६ ॥
पिचकारी कारी लगी सिसकारी सुकमार ।
अकवारी धारी लँगर लपकि लेत वलिहार ॥ ९ ॥ १६७ ।
यारी प्यारी सफलकर प्यारीप्यारी रैन ।
अँधियारी उजयारियां कदमकुंज सुखदैन ॥ १० ॥ १६८ ।
रसकेली खेली लली आज अकेली कुंज ।
मुकुर विलोक कपोल छवि इद्रवधूटिन पुंज ॥ ११ ॥ १६९
आधिक वधिकके वानतें वंकाविलोकन लाल ।
वह परसत प्रानन हरत यह चितवत ततकाल ॥ १२ ॥ १७

रसन कसन कलकंचुकी कसन निकासै जीय ।
विकसन पट विकसन कुचन चितवन दरकै हीय ॥ १३ ॥१

ओढे राती चूनरी वतराती घनश्याम ।
इतराती राती लसी हिये सिराती वाम ॥ १४ ॥ १७२ ॥

वरवट वंशीवट निकट मोहि लैगई वाल ।
लंपट नटखट झपटि गहि कीनी निपटि कुचाल ॥१५॥१७३

श्याम वजावत वांसुरी भामिनी वीन नवीन ।
छवी न ऐसी जगतमें फवी न भुवी प्रवीन ॥ १६ ॥ १७४

छीनि अनूठी लेंहुगी आज अगूठी लाल ।
झूठी मूठी वात है मूठी में न गुलाल । १७ ॥ १७५ ॥

अहा कहा वानिक वनो मानिक रंग कपोल ।
श्याम फूनरी चूनरी अधरन अरुन अमोल ॥ १८ ॥ १७६

पनिघट जैयो तूनरी पीत चूनरी तोर ।
लाल लाल करिदेयगो रंग गुलाल झकोर ॥ १९ ॥ १७७ ॥

भीजे रंग अनंगसों अंगअंग सुकमार ।
तंग कंचुली वाल यों क्यों तानों पिचकार ॥ २० ॥ १७८

नीठनीठ करि पीठमें पाई मान मरोर ।
मोवसीठ यह धीठ वनि झटको मत कर मोर ।।२१॥१७९॥

आंजि आंजि दृग श्यामके वरजोरी तजि लाज ।
होहो होरी मसलि मुख कहो कहोरी आज ॥ २२ ॥ १८०

रंगराती मातीं सवै मातीं अंगन चीर ।
चुरियनकी चिरियां चितै चुरकन लागीं वीर २३ १८

चीत चीत मुख आजि हग सराबोर करि रंग।
रसमातीं करि ताल दै सखि न समातीं अंग॥ २४॥
होहो होरी करि उठी सब सितार तसवीर।
निरतन लागे मोरिला गनता ऊसी चीर॥ २५॥ १
वरवस करि करि कामिनी सरवस रस पीलीन।
वसवस अवन अलीन हंस श्यावस श्यामहिं दीन॥२६
मन मोदक मन मोदनी मोदक रसिक खवाय।
रसवस कीनी अंक कसि व्रजवाला बौराय॥ २७॥
धाई आई वानसी दई वधाई वाल।
धाईपै चलिये चपलि पकरि लियो गोपाल॥ २८॥
जमुना में होरी मची उठतीं रंग तरंग।
नस तरंग मुहं चंग डफ वाजत बीन मृदंग॥ २९॥
कानन में कानन सुनी में डफकी घनघोर।
टेरत आई सबनकों कर श्यामहिं सरबोर॥ ३०॥
दौरी वौरी जात कित पौरी दुबको श्याम।
रंग कमोरी ढोर धंस लौहिन होरी नाम॥ ३१॥
कहा ठढी बतरात अब रात भई वलवीर।
चोरी चोरी आत उत अरी चकोरी बीर॥ ३२॥
झोरी भरि झक झोरियां करत कदम की छांह।
तोरी तोरी सतलरी मोरी मोरी बांह॥ ३३॥
कोरी कोरी गई उत कोरी मोहिं बताय।
विन सखोरी या डगर गोरी निकरिन जाय॥ ३४।
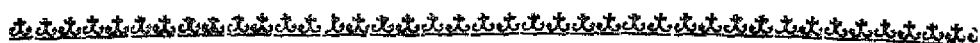
बरजोरी मोसों करत बरजोरी नंदलाल।
थोरी थोरी बातको मती मथोरी बाल॥ ३५॥ १९३॥
चोरी चोरी आय मुख मसलत लाल गुलाल।
लकुट मुकुट पट छोरहां गुलचोरी या गाल॥ ३६॥ १९४॥
सोती सोती उठिगई सोती अवहीं लाल।
धोती धौती कूप पै मसलौ जाय गुलाल॥ ३७॥ १९५॥
पिचकारी मारी मसकि नूतन वसन निहार।
सारी सारी श्यामरंग श्यामकरी गुलनार॥ ३८॥ १९६॥
तानी मुलतानी भवैं मारी तकि पिचकारि।
वेधी चूनरि कंचुकी हियरे वारंपार॥ ३९॥ १९७॥
पतरी पतरी बारतें अंकन लंक लखाय।
कहां गई चितवत चकित लाल वाल मुसक्याय॥४०॥१९८॥
रोरी मुख मसलौ अली बांह मरोरी मोर।
करो करोरी गहि लपटि लंपटको सरवोर॥ ४१॥ १९९॥
कहा बिगारी मैं भला गारी गावत आप।
वकत उघारी वातनैं तेरे हैं द्वै बाप॥ ४२॥ २००॥
नौवतियां झरवे लगीं चुकीं न वतियां लाल।
आवत मिलि मिलि कोकनद चितवत परी उताल॥४३॥२०१॥
पीत पिछौरी छैल की छोरी छलवल वाल।
छोरी कौ सिंगार करि नचवत दै दै ताल॥ ४४॥ २०२॥
धीर समीर के तीर लखि अति अधीर व्रजवाम।
छौना बाबा नंदकौ कै टोना घनश्याम॥ ४५॥ २०३॥

चली चलौ सूवी लली करौ निकुंज बिहार ।
मचली मचली बात क्यों मोही सों सुकुमार ॥ ४६ ॥ २०४
लुकि बैठो तुम चैन सों पिचाकिन श्याम वचै न ।
पचै न वाकी वाय सखि जोलों दुंदम चैन ॥ ४७ ॥ २०५
मैं ना मानोंगी बुरौ मैं ना सांच बताय ।
मो पीतम तन टुक चितै का मुख चंद लजाय ॥ ४८ ॥ २०६
लसी शसीसी श्याम उर कीनी सीसी हाय ।
मनौं सुधा सीसी भरी दई दई ढरकाय ॥ ४६ ॥ २०७
हरी हरी नव कंचुकी हरी हरी इत आय ।
धरी करीलकी डारनै देखो फैंट खुलाय ॥ ५० ॥ २०८
जमुना कूल दुकूल धरि गई संग संग न्हान ।
कदम लता लै चढिगयो करत मंद मुसक्यान ॥ ६१ ॥ २०६
अली न जैये या गली श्याम अली मडराय ।
कनक कंज काची कली मुगधा राख दवाय ॥ ५२ ॥ २१०
फूली फूली फिरत है कनक कली न सहमार ।
श्याम अली अमली गली अली न लेह निहार ॥५३॥ २१
तैं पहिरी चंपाकली अली श्याम के त्रास ।
पै कपोल लोचन अधर कंज पुंज तौ पास ॥ ५४ ॥ २१२
लोयन लोयन मिलतही भृकुटी नैनन चाय ।
चाय चाय मुख माधुरी चाय न रहे लपटाय ॥ ५५ ॥ २१३
ललिताकिशोरी छवि छटा घटा छटा घनश्याम ।
सुरति रीति बिपरीत रत प्रीत रीत कल काम ॥५६ ॥२१६

उर पिय प्यारी लगी लगीं झरोखन वाम
रे सुरति रति विगति पल हगन सु सुख विश्रा

॥ इति यमकयंत्री सम्पूर्णम् ॥

बौरानी के अमल छकी कछु,
बौलानी सी आवति
उचकि उचकि उझकत कानन दै,
कानन दिशि निशि धावति
ललितकिशोरी लाज संक तजि,
झूमक झुकि अँड़ावति
मान भौन के द्वार अड़ी अह,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ।

पान किये बिजियाबौ रानी,
कै कछु पीड़ा पावति
छूटै वार फुहारें नैनन,
वीर धीर नहिं लावति
फरफरात ज्यों फिरत पींजरा,
चिरी परी अकुलावति
ललितकिशोरी कहौ कहां क्यों,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ

सिसकारी लै भरति हुँकारी,
सिमिटत गात दुरावति हौ
घूंट न देत उरोज कपोलन,
दोनों हाथ दवावति हौ
झटकत पायन ललितकिशोरी,
नासा भौंह चढावति हैं
जगौ जगौ व्रजमान भवन मैं,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ ३
वार वार करवट लैलै हँसि,
वातैं सी वतरावति हौ
उतरि २ पाटी सों लगि लगि,
पलिका पै पुनि आवति हौ
छोरि छोरि नूपुर कटि किंकिन,
तकिया तरे दवावति हौ
सोवत हौ कै जगत कहौ क्यों,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ ४
कवकी खड़ी तुम्हारे लीन्हे,
दधि मटुकी नहिं लावति हौ
चढ़त घोस अति दूर नगरिया,
नाहक वैर लगावति हौ
वलिहारी या डोलनि वोलनि,
सखियन भले बुलावति हौ
द्वार द्वार पै ललितकिशोरी,

कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ ५
दीखत जगत सयानी सुन्दर,
जगनारी न लजावति हैं
बडे बाप की बेटी होजू,
व्रज कुलवति कहलावति हौ
करति सिंगार विलोकि मुकुर दृग,
मूंदत ध्यान लगावति हौ
चौंकि चौंकि उठि ललितकिशोरी,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ ६
कोहै कहां कौन या छिन सखि,
काको गरे लगावति हौ
ढोरत अंचर छोर कौन पै,
काहि हार पहिरावत हौ
खरकत पात वावरी सी भग,
ललितकिशोरी धावति हौ
खोलि कपाट उझकि मदमाती,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ ७
नाचत मोर हरे वन वीथिन,
आंधीसी उठि धावति हौ
लखि वक माल उडात गगन सखि,
यकटक नैन लगावति हौ
ललितकिशोरी कौन पदारथ,
नाहिंन भेद वतावति हौ

कारी कारी घटा विलोकत,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौं ॥ ८

काकी लेत वलइयां गुइयां,
काको जाग जगावति हौं

काके जोरत हाथ चरन छी,
कांपे अचर दुरावति हौं

हाहा खात बतात कौनसो,
घूंघट वदन छिपावति हौं

ललितकिशोरी मैं ही ललिता,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौं ॥ ९

लसत कपोलन नवल चूनरी,
पलकन छांपै पावति हौं

अधर उरोजन चन्द्र आभरन,
मांगि मांगि पहिरावत हौं

विन गुन मुक्ता माल हिये यह,
छीन नवीन सजावति हैं

ललितकिशोरी लालच के वस,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौं ॥ १०

अस रसरीति प्रीति ना देखी,
नव अनुराग बढ़ावति हैं

सुधि नहिं खान पान सोवत नहिं,
रूप छके सुख पावति हौं

ललितकिशोरी लपटे दोऊ,

देह दशा विसरावति हौ
राधा राधा रटत कान्ह तुम,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ ११
आवतहै तव मुख ना बोलति,
नाशा भौंह चढ़ावति हैं
जोरत दीठि न करत पीठि उति,
पग छीवत फहिरावति हौ
ललितकिशोरी मान न विनती,
मन मन मान वढ़ावति हौ
आपुहि दियो निसार द्वार अव,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ १२
अंगराग कसतूरी को करि,
सिरसौं मुकुट सजावति हौ
कछनी काछि ओढि पीताम्वर,
मुरली मधुर वजावति हौ
ललितकिशोरी मुकुर सामुहैं,
नागर वनि ठनि आवति हौ
वलिहारी या भूल भुरापन,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौ ॥ १३
मैं पठई वरसाने को तुम,
नंद गांव से आवति हौ
मैं मांगे मुक्ता वेसर तुम,

मोर चंद्रिका लावति हौं
ललितकिशोरी कौन रंग में,
रँगी न मोय जनावति हौं
मैं बोली ही ललिता को तुम,
कान्ह कान्ह गुहरावति हौं ॥१४

कुण्डलिया ।

कान्हू कान्हू रटत तिय भई एक गति चित्त ।
भरी अंक कढि लतन पी मिले रसिक दोऊ मित्त ॥
मिले रसिक दोऊ मित्त वित्तलज्या तजि नेही ।
ललितकिशोरी एक प्रान दोऊ द्वै देही ॥
विहरत नवल निकुंज कंजसज्या लसि जान्हू ।
उरसों उर कसि प्रीत कामवस राधा कान्हू ॥ १५

ग़ज़ल ।

ज़ुगल वर नौजवां सुन्दर रंगीले नैन अनियारे ।
कटीले कोर वरछीले तृछीले से कुरँग कारे ॥ १ ॥
कमाँभृकुटी अलक आनन मनौ नागिन लहरती है ।
नज़र ताऊंसे वेसर पर ज़ुजा पड़ती थहरती है ॥ २
करन तारंक कुंडल नग झलकते हैं सितारे से ।
सितारे आसमां के सव दिखाते हैं उतारे से ॥ ३ ॥
झुकी इत चंद्रिका तिरछी उधर पर मोर हिलते हैं ।
मिली हैं नौंक मोर हंसी मनो दाना वदलते हैं ॥ ४

(१) मोर की सी ।

वसन नीलो पिताम्बर क्या बनी छवि हेम कजली है ।
इधर बिजली पै बदली है उधर बदली पै बिजली है ॥
ज़मीने बिरज या कोई तिलस्माते[1] ज़माना है ।
फ़लक[2] पर एक मह[3] रोशन यहां खाना बखाना[4]है ॥६॥
नहीं कुछ चांद को कुदरतें जुगल मुख चंद्र के आगे ।
अकेला हमसरी[6] लावे सियह[7] रू[8] ढांपकर भागे ॥७॥
उठाया सिर[9] फ़लक[10] इससे विधे और बांधे रैयां है ।
यह शमसे[12] मोती हैं चोटी में या अक़दे सुरैयां[13] है ॥८॥
जड़ाऊ कर फबै कंकन शबीहे खुशं[14] यह पैदा है ।
मनो ज़रीं सिनानों[15] से तने खुरशैद[16] छेदा है ॥९॥
अंगूठी जो है उंगली में जड़ा नीलम नगीना है ।
वचै ऐनुलकमाल[17] उससे यहखुद मोहन नशीनां[18] है ॥१०
ललितकीशोरि की विनती सदा यह रूप दृग देखें ।
जुगल वर दीने गलबाहीं श्रीवृंदावन हिये लेखें ॥ ११

ग़ज़ल २०

न समझो चश्मों[19] पर अबरूको[20] मोड़ी,
है टेढ़े क़बज़ेकी खंजरकी जोड़ी ॥ १

---

(१) जादू का समय (२) आकाश (३) चंद्रमा (४) घर घर
अख़्तयार (६) बराबरी (७) काला (८) मुंह (९) सिर (१०) ३
(११) श्रीराधिकाजी–वंग भाषा में (राई) कहते है उसीका छांदस रूप
(१२) सूरज से चमकदार (१३) अकदे सुरैया तारों का, गुच्छा अथवा, पु
(१४) आनंद की मूर्ति (१५) सुनहरी भाला से (१६) सूर्य (१७
मजस्मा (१८) बैठा है (१९) आखों पर (२०) भौह वा भृकुटी

न दो चश्मों को ओ तसंबीहि आहू,
भंवर बैठे हैं नीलोफ़र की जोड़ी ॥
मुदव्वर खूब रुखसार आरसी से,
बयां रोशन महे अनवर की जोड़ी ॥
खुली रुखसार पर क्या दो कटोरी,
दरूने माह है अख़्तर की जोड़ी ॥
मुकुट और चन्द्रिका झुककर मिले हैं,
लड़ी क्या नोंक से गौहर की जोड़ी ॥
मुंती हो दिल नज़र पड़ते ही उनका,
लड़ैतीलाल जादूगर की जोड़ी ॥
लटें घुंघरी खुली हैं क्या जबीं पर,
लसी हैं जा बजा मधुकर की जोड़ी ॥
लटें लटकीं हैं क्या बल खाके भुज पर,
लहरती हैं फनी लागर की जोड़ी ॥
लब्बे आबे हैवां से जुगल लबैं,
वहमनोशी को है सागर की जोड़ी ॥
पेयह आंखों में पुतली के हैं तारे,
झलकती अब्र से अख़्तर की जोड़ी ॥

---

(१) उपमा (२) हिरण (३) कमोदनी (४) समान (५) (६) चमकते (७) पूर्ण चन्द्र की (८) चन्द्रमा में (९) सितारों की (१०) मोती (११) दास (१२) मस्तक पर (१३) सटकारी नागिन (१४) सुख मुका मुक्त-लवालब (१५) अमृत (१६) ओष्ठ (१७) परस (१८) पान पात्र-प्याला (१९) बादल ।

शरौं रैन दिन श्रीवन. की कुंजों,
ललितकीशोरि सामल वर की जो

ग़ज़ल ३.

जुगलवर पै ज़ेवर खुले कैसे कैसे।
कहो नैन में छवि तुले कैसे कैसे ॥
न आंखों से देखें न कानों सुनें हम ।
सुरंग गुल विपन में खिले कैसे कैसे ॥
ये देते हैं लाले के सीने में दाग़ ।
वह हाथों में मेंहदी मले कैसे कैसे ॥
निशानी हमनरंग की लेते जावो ।
छिड़क रंग सांवल चले कैसे कैसे ॥
मनाई जो गर मान से तुमने राधे ।
कहो टांके मोहन झलें कैसे कैसे ॥
जि वस तुमसे तो करती थी वह हिजाब[1] ।
कहो कुंज गोकुल मिले कैसे कैसे ॥ ६
तेरे हुस्न पर एक आलमें[2] सुकूते[3] ।
सियहमार काकुलें[4] हिले कैसे कैसे ॥ ७
बची ना कोई नारि होली में हरि से ।
विरज में सखी घर घले कैसे कैसे ॥ ८
नहीं तीर आहनें[5] जो इंचे जि कोई ।

---

(१) लज्जा (२) जगत् (३) चकित वा स्तब्ध (४) ।(५) लोहमय।

यह है इश्क नावक[1] टलै कैसे कैसे ॥
ढली आबरू[2] तो बला सेति मेरी ।
चढ़ा रंग सामल टलै कैसे कैसे ॥
न मैं ही हूं एक दिलरुबा[3] तुझपै शैदा ।
तेरे इश्क में घर रले कैसे कैसे ॥
सुराही को निस्बत न है कम्बु को
बने गोपियां के गले कैसे कैसे ॥
बजाई जो वंशी जमुन सांमरे ने ।
तो मन गोरियों के छले कैसे कैसे ॥
न अन्जुम[5] को है ताब होवै मुक़ाबिल ।
लगे सारी में बादले कैसे कैसे ॥ १४ ॥
रहें इश्क़ में तेरे अज़्मत[6] है हमको ।
जो पड़ते हैं पां आंवले कैसे कैसे ॥ १५ ॥
न होवै यक़ीं जिसको देखैं हमैं वह ।
सरन राधिका के फले कैसे कैसे ॥ १६ ॥
बसें वृन्दावन उनसे उत्तम न कोई ।
कहो होते हैं ओ भले कैसे कैसे ॥ १७ ॥
कहौ कब विपन में बुलाओगे हमको ।

---

(१) यह एक प्रकार का गुप्त तीर होता है जो बांस की पं चलाया जाता है (२) प्रतिष्ठा (३) प्रिय वा मनोहर वा न्यौछावर करना-लट्टू होना (५) तारा (६) गौरव (८) विश्वास ।

चले जाते हैं काफ़िले कैसे कैसे ॥ १८ ॥
ललितवर किशोरी से है इस्तदुआ[2] यह ।
हो जुगनू लतन में झिलमिलै कैसे कैसे ॥ १९

ग़ज़ल ४०

जुगल खेल में फेंके जिस जिसके फूल ।
थपेड़ों से गिरते हैं पिस पिस के फूल ॥ १ ॥
हुए चार चश्मों से जब खेल में ।
खजिलै[3] होके गिरते थे नरगिस के फूल ॥ २ ॥
करौ तुम मना सबको खेलो अकेली ।
अकेला मैं रोकूं जी किस किसके फूल ॥ ३ ॥
न करना गिला फेर नाज़ुकतनी[4] का ।
कसी कसके मारूंगा जिस तिसके फूल ॥ ४ ॥
हुए खेल में छैल दिल बाख़्तां ।
लगे आने सर पर चहूंदिस के फूल ॥ ५ ॥
हुआ हूं जभी से तुम्हारा मैं राम[6] ।
कहौ तुमने फेंके हैं किस मिस के फूल ॥ ६ ॥
गुलेख़ंदां बस काफ़ी है हमको तुम्हारा ।
न मारौ ज़रा मुझपै रिस रिस के फूल ॥ ७ ॥
लुभाने हैं मोहन निरखि छवि किशोरी ।

---

(१) दल-टांडे (२) प्रा[illegible]ना या विनती (३) लज्जित ([illegible]
(५) मन में हारामानी (६) [illegible]वेदार आधीन (७) खिला फू[illegible]

रुरकते हैं अंगों से खिस खिस के फूल ॥ ८ ॥
जनावे रमन राधिका वृन्दावन पै ।
सखी नाक अपनी को घिस घिस के फूल ॥ ९

गज़ल ५०

जुगलवर अक़ीक़ी लबां कैसे कैसे ।
फबे नीले पीले पटां कैसे कैसे ॥ १ ॥
कटीली ये आंखें हैं क्या श्याम वर की ।
रमे जाते हैं आहुवाँ कैसे कैसे ॥ २ ॥
खुमारी न समझो हैं बीमार चश्मे ।
झुके पड़ते हैं नातवां कैसे कैसे ॥ ३ ॥
सुनहरी से तनकी तिया की सुदमकन ।
उतरते हैं गुलज़ाफ़रां कैसे कैसे ॥ ४ ॥
जुगलवर की फुरक़त में देखे हैं हमने ।
ज़मीनों जमा आसमां कैसे कैसे ॥ ५ ॥
पलक अबरूओं से ही करते हैं घायल ।
बनाये हैं तीरो कमां कैसे कैसे ॥ ६ ॥
विपिन में विहारी लिये राधिका को ।
सुमन बीनते हैं चमां कैसे कैसे ॥ ७ ॥
जी आते ही याद उन जुगलवर की होते ।

---

(१) चौखट-देहली (२) लालमणि (३) ओष्ठ (४) फूल (६) जुदाई (७) भ्रकुटी ।
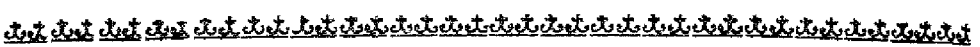
हैं आंखों से आसू रवां कैसे कैसे ॥ ८ ॥
विचरते हज़ारों हैं जिस जां[1] पै गुलरू[2] ।
विपिन में है आती खिज़ां[3] कैसे कैसे ॥ ९ ॥
न अफई[4] को रुतबा न है संबुला[5] को ।
छुटे चहरे पर गेसुवां[6] कैसे कैसे ॥ १० ॥
निरख संग किशोरी के घनश्याम वर को ।
खिले जाते हैं गुलिस्तां कैसे कैसे ॥ ११ ॥

ग़ज़ल ६.

छुटी हैं अलकें जबीं[8] के ऊपर मनों लहरती है काली नागिन ।
पिला पिलाकर चहे[9] ज़क्नं[10] ज़िज आवे हैवां है पालि नागिन ॥१॥
नजर पड़ा एक अजब तमाशा किनारे दर्या जमन के जलमें ।
जुगल नवलने नहांके मुखसे सम्हारा ज़ुल्फ़ों को टालि नागिन ॥२॥
जोखोला घूंघट सखी ने मुखसे तो छोटी छोटी सिजादें[11] मुश्की[12] ।
लगीं लहरने हवा से चटपट पिटारी सेती निकाली नागिन ॥३॥
न देखा होगा किसी ने ऐसा तमाशा रंगी व उम्र अपने ।
व खेल होली अबीरों रंगसे बनी है अलकें गुलालि नागिन ॥४॥
परेशां[13] बालों की गूंधि मेंडी लगाके याकूत[14] लालिरखशां[15] ।

---

(१) स्थान पर (२) फूल से मुख वाले अर्थात् कमल वदनी (३) पतझड (४) सर्प (५) एक वृक्ष जिसकी शाखा सांवली वलदार होती है (६) ज़ुल्फें (७) बाग़ (८) मस्तक (९) कूप-गर्त (१०) चिबुक (११) अलक (१२) काली (१३) बिखरे (१४) एक सुर्ख रंग का जवाहर (१५) चमकदारलाल ।

धरी मनी सिर मनों फनी पर वदस्न अपने बनाली नागिन ।
न काटै मुखसे भी छेड़ने से कभू वह अलकें जुगल रसिककी
न देखी होगी किसीने ऐसी ज़मीं पै भोली व भाली नागिन ॥६
हवा से अलकें लगीं बिखरने समेटी करसे दुपट्टे भीतर
ललिताकिशोरीने जादू करके जी अतिही कलही सम्हाली नागि

ग़ज़ल ७.

दाग़ देते हैं कमल आहू को कजरारे सियाह ।
नंदनंदन भानुजा के नैन रतनारे सियाह ॥१॥
माहरू पर काकुलें मुशकी की जो जुंबिशें हुईं ।
हैं लहरते वदरं में भी बच्चये मारे सियाहें ॥२॥
चांदसा मुखड़ा है उसका तिसमें एक जोड़ी ग़िज़ालें ।
तिनमें हैं दो मर दुमकें और उनमें दो तारे सियाह ॥३॥
चांद से अफ़ज़ूं है उसके हुस्न के आलम का रंग ।
अजबराये चश्मबदं है खालें[11] भी बारे सियाहें[12] ॥४॥
एक नज़र देखे से लहरें आवें दिल हो कारा कारों[13] ।
हैंगीं ये ज़हरीली नागिन अबरुवां[14] आरे सियाह ॥ ५ ॥
क्यों कर होवेगी निजातें[15] अब जुल्फ़ें[16] अबरू मिज़ंहें[17] से ।

---

(१) दग्ध करते हैं-लज्जित करते हैं (२) चन्द्र वदन (३) हि
(४) पूर्ण चन्द्रमा (५) काले सांप के बच्चे (६) हिरन के बच्चे (७) नेत्रों
तारे (८) अधिक (९) इस कारण से (१०) नज़र लगना बुरी निगाह व
(११) अंग का तिल (१२) हक़ीक़त-अर्थात् नज़र न लगने के लिये
हक़ीक़त में काला है (दिठौना है) (१३) हूक हूक (१४) सचमुच (१५)
र मुराद बचाव से है (१६) जुगल (१७) पलक ।

ज़ुल्फ़ मुश्की है मुआविन[1] हैं वहम[2] कारे सियाह ॥ ६ ।
करदिया कुर्बान कुन्दन वर्क़[3] को कीशोरि पर ।
श्याम सुन्दर रूप ऊपर जगत् के वारे सियाह ॥ ७ ॥

ग़ज़ल ८.

देखा है सुन्दर न ऐसा जो है राधे वाम रंग ।
संग वो जो हैं उन्हों के सामरो सरनाम रंग ॥ १ ॥
हंसती हो तुम हमको क्या दीवानगी[4] पर गोरियों ।
होते हैं योंही जिसी को लगता है हरिनाम रंग ॥ २ ॥
मत निचोड़ो ज़ुल्फ़ों को हातों को दो ना तसदियाँ[5] ।
छूटेगा हरगिज़ नहीं वालों से पुख्ता[6] श्याम रंग ॥ ३ ॥
पूछो क्या मुन्सिफ़ तुमी हो हरि से बोलीं राधिका ।
तेरा है जो श्याम रंग तो मेरा है गुलफ़ाम[8] रंग ॥ ४ ॥
जोकि तदबीरात[9] तुमने की हैं अजवस इस्तिजाव[10] ।
मख़फ़ी[11] हो मुमकिन[12] नहीं है ऐसे ही बदनाम रंग ॥ ५
गोरि दुत पड़ने से सामल का हुवा जो अंग रंग ।
बहुत सोचा पर न आया हैगा ये गुमनाम[13] रंग ॥ ६ ॥
है झलक अभरन की अंगों सामरे कीशोरि पर ।
फूली है मानो शफ़क़[14] क्या खिल रहे अक़साम[15] रंग ॥ ७

---

(१) मिले हुए (२) आपस में (३) बिजली (४) पागलपन (५
(६) पक्का (७) न्यायकर्ता-विचारक (८) गुलाब के फूल के समान
उपाय-जतन (१०) अत्यन्त आश्चर्य (११) गुप्त (१२) संभव (१३) अ
(१४) संध्या फूलना (१५) विविध-नाना प्रकार ।

ग़ज़ल ९.

यह आवेज़ये[1] दुर[2] है मोहन के कां पर ।
कि रौशन[3] सुहेल[4] है हुवा हुस्न कां पर ॥
अजब[5] है यह मुझको कि बन्दे[6] इज़ारश[7] ।
बंधे होंगे क्यों कर मियां बेनिशां[9] पर ॥
जंहां[10] जाता है ज़्यारते वृन्दावन[11] को ।
पढ़े हम यहां लान[12] है इस ज़मां[13] पर ॥
गुज़रती है औक़ात[14] लहवो लअब[15] में ।
न लेवें जो नामे जुगल तुफ़[16] ज़बां[17] पर ॥
हुए ब्रज में जबसे सामल हु वेदां[18] ।
दिया दाग़ दुनियां के गोरे बुतां[19] पर ॥
चुं[20] सीमाव[21] मुज़तर[22] हूं वे छवि निहारे ।
कहौ तौ किशोरी युगल है कहां पर ॥

ग़ज़ल १०.

न यह हुस्न हे मिहरो[23] मह[24] की ढलक पर ।
कि नख चन्द्र पाये जुगल की झलक पर ॥ १ ।

---

(१) लटकन (२) मोती (३) चमकता (४) तारा (५
ारा (७) इज़ार का–पायजामा का (८) कमर (९) अलक्ष्य
कटि तट की यहां तक क्षीणता वर्णन करते हैं कि उसे अलक्ष्य
संसार (११) वृन्दाबन की यात्रा को (१२) धिक्कार (१
समय (१५) खेल कूद में (१६) थू (१७) जिह्वा पर (१
प्रेम पात्रों पर अर्थात् जगत् में अब श्याम सुन्दर ही प्रेम पात्र
मानिन्द (२१) पारा (२२) चंचल (२३) सूर्य (२४) चन्द्रमा

तराशीदा[1] नाखून[2] गिरा जो ज़मीं पर ।
हुवा हो हिलाल[3] अक्स[4] रोशन फ़लक[5] पर ॥ २ ॥
भ्रमर सम्बुला नागनी बचगां को ।
हुवा है हसद[6] स्याह घुंघरी अलक पर ॥ ३ ॥
किया मिहर[7] को कुंडलों पर निछावर ।
उतारा सुरैया को झूमक झलक पर ॥ ४ ॥
क़मां[8] बस खजिल[9] लख हिलाली[10] भुवों को ।
हुवा रश्क[11] नावक को तीरे पलक पर ॥ ५ ॥
वह पीते हैं शर्बत[12] अनारे न लब[13] को ।
हुवा शर्मिंदा[14] कौस[15] सागर[16] झलक पर ॥ ६ ॥
हुवा जाहिरा[17] क़तरात[18] शबनम[19] का पानी ।
ख़ुशआब[20] दुर[21] आवेज़ा[22] बेसर झलक पर ॥ ७ ॥
ज़रा चन्द्रिका और मुकट छवि निहारो ।
लगाओ न दिल कोई परियों[23] मलक पर ॥ ८ ॥
किशोरी न बहिको जुगललाल छवि लख ।
दृगों को दो विश्राम बेसर थलक पर ॥ ९ ॥

---

(१) कतित (२) नख (३) द्वितीया का चन्द्रमा (४) [illegible] आकाश (६) सन्ताप (७) सूर्य्य (८) धनुष (९) लज्जि[illegible] [illegible] के चन्द्र के समान वक्र (११) मत्सर (१२) अनार शर्बत ([illegible] [illegible] लज्जित (१५) इन्द्र धनु (१६) प्याला (१७) शुक्र[illegible] [illegible] बूंद (१९) ओस (२०) आबदार (२१) मोती (२२) [illegible] (२३) अप्सरा ।

ग़ज़ल ११.

यह किस बुत[1] मांह पैकर[2] का मकां है।
कि जिसके गिर्द[3] ख़ंदक़[4] ला मकां[5] है ॥ १ ॥
तेरे तीरे निगह ने मुर्ग़ दिलको।
किया बिसमिल यह पहला इम्तिहां है ॥ २ ॥
खुदा[10] महफ़ूज़ बस अबरू[11] से रक्खै।
बनी क्या खूब बे ज़िह[12] की कमां है ॥ ३ ॥
अजब तीरे मिज़ह[13] है उस सनम[14] का।
बसै[15] दे आशिक़ां[16] बेपरवां[17] है ॥ ४ ॥
है मुशकी मूंय[18] में तासीर कशमीर[19]।
कि जिसके इश्क़ में रंग ज़ाफ़रां[20] है ॥ ५ ॥
सरेमू[21] से भी है कमतर[22] मियानश[23]।
यह ज़ेबा[24] है कहूं गर बेनिशां[25] है ॥ ६ ॥
नहीं है फ़र्क़ पर[26] मोती भरी मांग।
फ़लक[27] पर क्या ही रोशन कहिकशां[28] है ॥ ७ ॥

---

(१) मूर्ति-यह एक महावरा है। अर्थ इसका (प्रेम पात्र
(२) चन्द्रोयम (३) चहुं ओर (४) परिखा (५) असीम (
घायल (८) परीक्षा (९) ईश्वर (१०) बचाना (११) भौंह (१२) ि
) पलक (१४) मित्र (१५) वींधने को (१६) आशिक़ के (
चलने वाला-बाण पर के सहारे से चलते हैं पलकबाण विना पर
सी श्याम अलकन में (१९) केशर की (२०) केसरिया
) बाल की नोक से भी (२२) पतली (२३) कमर उसकी (
) अलक्ष (२६) सीसपर (२७) आकाश (२८) जिसको परावत
व आकाश गंगा कहते हैं यह छोटे छोटे तारों की पंक्ति।

तिले मुशकी जक़ने में है हुवैदा।
यह कौने[2] लाल लबकां पासबां है ॥ ८ ॥
नहीं बिखरीं जबीं पर घुंघरी अलकें।
लहर गंगा पै जमना की रवां हैं ॥ ६ ॥
खुले बाल हैं सुहाने गोरे तन पर।
अजब है बेर्क़[5] पर छिटका धुआं है ॥ १० ।
रची मिहंदी बदस्ते श्यामसुन्दर।
यह नाफ़रमां पै फूला इरावां है ॥ ११ ॥
कमल पर चांद को देखा किसी ने।
व पायशं[8] नाखुने रोशनं[9] अयां है ॥ १२ ॥
सदफ़[10] उम्मेद की पुरं[11] होती है आज।
तबस्सुम[12] में सुनम गौहर[13] फ़िशां[14] है ॥ १३ ॥
न समझो ज़ुल्फ़[15] काकुल बर रुख़े[16] ओ।
बचौ साहिब यह मारे[17] दोज़बां[18] है ॥ १४ ॥
बना रहता है हरदम आईना[19] पास।
कि खुदं[20] महवे[21] लक़ां[22] यह बेबसां[23] है ॥ १५ ॥
बनी वृषभानुजा क्या मिहर[24] पैकर[25]।
कि निलोफ़र[26] सा मोहन मिहरबां है ॥ १६ ॥

---

(१) चिबुक (२) खान (३) अधर (४) रखवाला (५) बि:
फूल (७) गुलेलाला (८) उनके चरण कमल पर (९) नख व
नीपी-आशा की (११) पूर्ण (१२) हंसने में (१३) मोती (१४) ·
मुख पर (१७) सर्प (१८) दो जिह्वा वाले (१९) दर्पन (२०) स्व·
मूर्ति (२३) अनुपम (२४) चन्द्रमा (२५) सूरज (२६) कुमुद।

नहीं कहते हैं हरफ़े बद भी दरख़्वाब।
चिजा दुशनाम शाहिद बेज़बां है ॥ १७ ॥
ज़ि सरतापा मुरस्सा गर है तसवीर।
शबीए यार का भी कुछ निशां है ॥ १८ ॥
रहे आजिज़ ज़िवस मानी व बिहिज़ाद।
शबी ऐ यार का नक़्शा कहां है ॥ १९ ॥
न हो हैरां तू बुलबुल गुल को देख कर।
शहीदे नाज़ का भी कुछ निशां है ॥ २० ॥
तड़प उठती है गाहे गोरे आशिक़।
शहीदे नाज़ का कुछ यह निशां है ॥ २१ ॥
ललितकीशोरि लालन वर की जोड़ी।
व वृन्दावन खिरामां जावेदां है ॥ २२ ॥

ग़ज़ल १२

नहीं उन भीगे बालों से पैयां पै बूंद झड़ते हैं।
लुआली अब्र ने सौनी से बौछारें बरसते हैं ॥ १ ।
दमक कुंडल की गालों पर झलक जो आन पड़ती
मह ओ खुरशैद तारों पर भी कौंधे आ लपकते हैं

(१) अक्षर (२) बुरा (३) स्वप्न में (४) गाली क्योंकि कटु वचन
ान पर (५) आशक़ जो प्राण समर्पण कर चुका (६) सुख-चुप (७) न
मई (९) चित्र लिखित मूर्ति (१०) छवि (११) चिन्ह अर्थात् समता (
३) स्वर्ग के चित्रकार (१४) छवि (१५) प्रतिफल (१६) फूल (१७) प्र
ने वाला (१८) विलास (१९) कभी कभी क़बर आशिक़ की (२०) वि
) चरणों पर (२२) मोती बरसने वाले (२३) स्वांति के मेघ से (२४)
ज की चमकन पर।

नहीं हिलती है काकुल खुश सदा ये बांसुरी सुनकर
यह काले सांप के बच्चे हैं सुन सुन वज्दे करते हैं ॥३
सुनी राधे हैं सब की ज्यों हमारी भी खबर लेना।
जहान् जाता है दर्शन को हमीं घर हाथ मलते हैं ॥४
पड़े डोरे खुमारी के चपलते नैन हैं दोनों।
मनों रेशम के जालों में पड़े आहू उछलते हैं ॥५॥
हंसी आती है हमको जब हंसी में नव रसिक मोहन।
खफ़ा हो भौं चढ़ा लेते हैं और त्यौरी बदलते हैं ॥६॥
छुटे हैं बाल पावों तक किशोरी गोरे तन ऊपर।
अजी बिजली की चादर पर भी क्या अफ़ई लहरते हैं

गजल १३.

जो खम तेरी काकुले पेंचाने में देखा।
संबुल न बेंनफ़से में न साबाने में देखा ॥ १ ॥
देखा न गुलिस्ताने में दुनियां के कहीं रंग।
जो आके श्रीबन्न के बियाबान में देखा ॥ २ ॥
मोती में नहीं आब न हीरे में सफ़ाई।
जो लुत्फ़ तेरे गौहरे दंदान में देखा ॥ ३ ॥
जमधर न कटारी में न बरछी की सिनों में।
जो काट तेरे खंजरे मिज़गाने में देखा ॥ ४ ॥

---

(१) लहराते हैं (२) बांक (३) घूंघरवाली अलकें (४) कश्मीर वालीएक औषधि (५) एक वृक्ष (६) वगीचा (७) आनन्द (८) मो) दन्त (१०) छुरी (११) नोंक (१२) खंजर से (१३) पलक।

पाया न तबस्सुम[1] न करश्मे[2] में किसी ने ।
जो लुत्फ़ कि नंदलाल तेरी आन[3] में देखा ॥ ८ ॥
क़ुर्बान किया मिहरो सुरैया व क़मर[4] को ।
कुंडल ओ करनफूल को जब कान में देखा ॥ ६ ॥
शैनाई न सुरबीन न अरग़ान[5] में किशोरी ।
अफ़सूं[6] जो तेरी बांसुरी की तान में देखा ॥ ७ ॥

ग़ज़ल १४.

ख़ाक हो पाओं पडूं प्यारी के यह अरमान है ।
हूं मुनक़्क़श[7] नक़्शे[8] पा, से[9] अपनी येही शान है ॥ १
है किसी को रौज़ंये[10] रिज़्वाँ[11] से फ़रहे[12] जानो दिल ।
मेरा तो शादाँ[13] बदायम[14] वृन्दावन बुस्ताँ[15] है ॥ २ ॥
क़द मुक़ाबिल हो सकै है पेश गुलचीने[16] विपन ।
गरचे हफ़्[17] इक़लीम[18] के शाहों[19] का भी सुलतान[20] है ॥ ३
होगया शायद[21] मुक़ाबिले[22] माहरू[23] नंदलाल से ।
देखो साहिब उस घड़ी से आइनों[24] हैरान है ॥ ४ ॥
है किसी को स्वर्ग और बैकुंठ की आज़ो[25] हवस[26] ।
आशियां[27] इस मुर्ग़ मुस्तग़नी[28] का ब्रज अस्थान है ॥ ५

(१) मुसक्यान (२) करामात (३) छवि (४) सूर्य्य-तारों का झुम[illegible]
(५) ये तीनों मधुर स्वर के बाजे हैं (६) जादू (७) अंकित (८) [illegible]
[illegible]वरण से (१०) उपवन (११) वैकुण्ठ का (१२) प्रसन्न (१३) प्रफु[illegible]
सर्वदा (१५) बाग़ (१६) माली (१७) सात (१८) विलायत (१[illegible]
[illegible] (२०) चक्रवर्ती (२१) कदाचित् (२२) सामना (२३) चन्द्र[illegible]
दर्पण (२५) इच्छा (२६) लालसा (२७) घोंसुआ (२८) स्वाधीन

हूं सगे[1] कूऐ[2] विपन श्री लाड़ली लालन का मैं ।
सन्त तू तू कर बुलावें अपना ये ही मान है ॥ ६ ॥
आबो[3] खुर[4] पसखुरदे[5]ये रसिकों का मेरा अक्लो शुर्ब[6]।
हो कबा[7] ब्रजरैन मेरे दिल का यह सामान है ॥ ७ ॥
बारिशे[8] नैसानि[9] करमें[10] राधिका से है हुसूल[11]।
कान मेरे हैं सदफ़[12] दुर[13] बांसुरी की तान है ॥ ८ ॥
कर चुके पहले तसद्दुक़[14] अक्लो[15] ईमां[16] सब्रो[17] होश[18]।
जानो दिल बाक़ी था सो क़दमों[19] पर अब कुर्बान[20] है ॥९॥
मत करौ दुर दुर[21] दुरे दिल मेरे को सुल्तान हुस्न[22] ।
ई[23] रिश्ते[24] इश्क[25] सुफ्ता[26] क़ाबिले[27] शाहान[28] है ॥१०॥
गंजहाये[29] जुर्म[30] तौ तुम कर चुकीं पहले मुआफ़[31] ।
अब जज़ाए[32] हिज्र[33] मुझ पर लाड़ली तावान[34] है ॥११॥
गर मुजसिम[35] जुर्म[36] हूं पर तुम भी हौ राधे करीम[37] ।
क्या वजह[38] फुरक़त[39] की मेरे दिल को यह खलजान[40] है ॥१२॥
गरचे अज़बस[41] अशकाले[42] है वास श्री वृन्दा विपन ।

---

(१) स्वान (२) गली–वीथी ३) जल (४) अन्न (५) प्रसादी (६ खान पान (७) परिधेयवस्त्र (८) वर्षा (९) स्वांति की बूंदों की (१०) कृप (११) प्राप्त (१२) सीपी (१३) मोती (१४) नोछावर (१५) बुद्धि (१६ धर्म (१७) धैर्य (१८) ज्ञान (२९) चरणों में (२०) समर्पण (२१) मोत (२२) सौंदर्य्य के चक्रवर्ती (२३) यह (२४) सूत्र (२५) प्रेम (२६) पुवाहुव (२७) योग्य (२८) बादशाहों के (२९) ढेड़ के ढेड़ (३०) अपराध (३१ क्षमा (३२) बदले (३३) वियोग (३४) दंड (३५) मूर्तिमान (३६) दो (३७) दयालु (३८) कारण (३९) विच्छेद (४०) चिन्ता (४१) अत्यन्त (४२) मुशकिल ।

टुक तवज्जेह[1] श्री किशोरी से बहुत आसान[2] है ॥१३॥

गजल १५

खींची क्या रश्के मसीहा[3] शक्ल[4] तसवीरों[5] के बीच ।
कुलबुलाहट[6] है मुसव्वर[7] बल्कि[8] नख्चीरों[9] के बीच ॥१॥
होगया एलान[10] शायद[11] आमदे[12] गुल[13] बुलबुले ।
थरथरा उट्ठी मुसव्वर देखो तसवीरों के बीच ॥२॥
क्योंकि मुमकिन[14] मुखलसी[15] है दिल की पेचां जुल्फ से ।
बांधा कस जंजीरों से ज़ंजीरें ज़ंजीरों के बीच ॥३॥
रास मंडल गोरियों में श्यामसुन्दर की झलक ।
क्या नगीं नीलम[16] है जेबाँ[17] हल्क़[18] ये हीरों के बीच ॥४॥
खानये दौलत[19] न पूछो महिवे[20] अबरू मिज़्ह[21] से ।
आज कल मसकन[22] है अपना खंजरों[23] तीरों के बीच ॥५॥
है झलक खाले[24] सियाह की तार गेसूओं मे जी ।
बच्चये कज़दुम[25] फँसा है लाखों ही मारों के बीच ॥६॥
जब कभी गुल गश्त[26] को जाता है वो गुलखुश खिराम ।
तड़फड़ा जाते हैं गुल भी छोड़ गुलज़ारों के बीच ॥७॥

---

(१) कृपा (२) सहज (३) मसीहा मृतक को जिलाता है । माशूक ... कर मृतक जी जाता है इससे उसे "रश्के मसीहा" कहते हैं। क्यों कि ... सीहा रश्क रखता है (४) छवि (५) चित्रों में (६) जीवन के पूर्व की ... (७) चित्रकार (८) कपोत (९) जो शिकार कर मारे गये हैं (१०) ... (११) संभवतः (१२) आना (१३) फूल (१४) संभव (१५) छुटकारा (... लमणि (१७) शोभित (१८) मंडल (१९) घर (२०) निकट (२१) भृ... ... (२२) निवास (२३) तलवार (२४) तिल (२५) बीछू का ... (२६) विचरने को विहरने को ।

जुल्फ़ पुरचीं[1] क़ौसे[2] अबरू[3] शोखे[4] चश्मों[5] माहे[6] रू[7] ।
है अजब बसते हों क्योंकर आंख के तारों के बीच
दरमियाने भौंह, श्यामा, श्याम रंग बैंदी नहीं ।
यह फ़री[8] काली धरी है दोनों तलवारों के बीच ॥९॥
है तअज्जुब बस किशोरी हुस्न के आलमे[9] से देख ।
चश्मये[10] हैवाँ[11] दहन[12] है माह रुख़सारों[13] के बीच ॥१०॥

ग़ज़ल १६

सरज़मीं[14] बरसाने में जो दुख़्तरे[15] वृषभान है ।
दिल में इस नाचीज़ के हरदम उसी का मान है ॥१॥
जाबजा दांतों में सुरखी पान की दौडी दहन[16] ।
दुर्रे[17] जके लाले[18] रुमां[19] या मोतियों की खान है ॥२॥
काकुले पुरचीं जबीं पर अबरू तक बिखरी हुई ।
चश्म बादामी[20] सियह[21] मरजाँ[22] लबे मरजान[23] है ॥३॥
नेन्हीं नेन्हीं बूंदें जो झड़ती हैं भीगे बालों से ।
दुरफ़िशानी[24] कर रही ये बदलिये[25] नैसान[26] है ॥४॥

---

(१) घुंघराली छल्लानदार (२) धनुष (३) भौंह (४) धृष्ट-ढी
त्र (६) चन्द्रमा (७) मुख (८) गदका खेल में गदका रोकने की ढ
(९) रूप के जगत् में (१०) प्रवाह या स्रोत (११) अमृत (१२) मु-
द्रमा के कपोलों के मध्य में (१४) उच्चभूमि (१५) पुत्री (१६) मु
स्फुट (१८) लाल (१९) अनार (२०) बादाम से नुकीले नेत्र फारसी
ओं को बादाम की उपमा दिया करते हैं (२१) श्याम (२२) अरुण
मा (२४) मुक्ता वृष्टि (२५ मेघ (२६) स्वाति की वर्षा

पढ़ते हैं वलशम्स[1] तेरा रूये[2] मुसहफ़[3] देखकर ।
हर बशर[4] अब हिन्द का भी हाफ़िज़े कुरआन[5] है ॥५॥
आह फिर करता नहीं टुक लगते ही बिस्मिल[6] हो दिल
है पयामे मौत ये या नाव के मिज़गान है ॥ ६ ॥
वर्क़ से चहरे पै छिटके बाल क्या देते हैं लुत्फ़ ।
आतशे बिजली की दूदअंदूद[7] की क्या शान है ॥७॥
ख़्वाब[8] अब आता नहीं औ ताम[9] है मानिंद सम[10] ।
याद में हर रोज़ तेरे ओ हमें रमज़ान[11] है ॥८॥
जिसके दिल में है किशोरी आरज़ूये[13] व्रज निवास ।
खुशतर[14] है मलिको[15] मलक[16] से गरचे वह शैतान[17] है ॥९॥

ग़ज़ल १७.

क्या मजाल है गर लिखूं शृंगार राधा कृष्ण का ।
मिहरो महसे खुश्तर है दीदार राधाकृष्ण का ॥१॥
गर तू चाहै वृन्दावन को होवै वो मसकन तेरा ।
रख अज़ीज़ हर वक्त दिल में प्यार राधाकृष्ण का ॥२॥
शर्मगी[18] क्या क्या किया है अन्जुमे सैयार[19] को ।
है जड़ा हीरों से हिलता हार राधाकृष्ण का ॥३॥

---

(१) कुरान की एक आयत जो सूर्य्य की तारीफ़ में है (२) मुख (
त्र (४) प्रत्येक पुरुष (५) कुरान कंठ रखने वाला (६) घायल (७) मं
) धूम्र धारा (९) नींद (१०) भोजन-खाना (११) विष (१२) लंघ
ना यह एक महीने का नाम है जिसमें मुसलमान लोग उपवास करते हैं
छा (१४) उत्तम (१५) देवता १६ बादशाह (१७) पलीत १८ लि
) आकाश में चलने वाला तारा ।

होता है हरआन[1] घायल जेबिँ[2] तेग़[3] अबरू से दिल ।
पट नहीं पड़ता है गोहेवार[4] राधाकृष्ण का ॥४॥
मिलके लट दोनों की लिपटीं ग़ाफ़िलो हुशियार हो
ज़ुल्फ़[6] नागिन से हुआ यह मार[5] राधाकृष्ण का ॥५॥

ग़ज़ल १८.

गुलबदन गुलगश्त[7] को गुलशन[8] में जाना चाहिये ।
हर रविश[9] पर बर्ग[10] गुल[11] अरज़ां[12] लुटाना चाहिये ॥१॥
अय गुलेरानों[13] चमन में मुसकिराना चाहिये ।
बाग़ को काने गुहर[14] जाना बनाना चाहिये ॥२॥
अय गुलेराना चमन में मुसकराना चाहिये ।
गुंचये[15] बावस्तों[16] मुंह को टुक खिलाना चाहिये ॥३॥
अये गुलेराना चमन में मुसकिराना चाहिये ।
बुलबुलों को अब गुलों के संग लड़ाना चाहिये ॥४॥
गेसुए मुश्की पलट कर मुंह पै लाना चाहिये ।
रात में खुरशैद को जाना दिखाना चाहिये ॥५॥
गुल को चाक[17] अबहर[18] को कर बीमार दे लाले को दा
ओफ़ते[19] जां हरकदम[20] आफ़त[21] उठाना चाहिये ॥६॥
देखकर उस गुलबदन को कहती हैं सब बुलबुलें ।

---

(१) छिनछिन में (२) चोट देने वाली (३) प्रहार (४) जोड़ा (५) मलाङ्गी (७) सुमन विहार (८)फुलवारी (९) रौस (१०) पत्र (११) पुष्प (१३) प्रिये (१४) मोती की खान (१५) कलिका (१६) बद (१७) विदीर्ण (का फूल (१९) प्राण रूप (२०) पद पर पर (२१) बगीचा में हलचल ।

चुटकियो से तायरे गुल को उड़ाना चाहिये ॥७॥
नाव के मिज़गां से तीर अंदाज़ ओ अबरू कमां ।
[२]नुक्तये दिल पर निशाने को लगाना चाहिये ॥८॥
तेरा गुलरू देख करके खाये हैं लाले ने दाग़ ।
सांपों को भी गेसुओं पर ज़हर खाना चाहिये ॥९॥
कर चुके बस चाक गुल को देखो ओ साहिब उधर ।
सीनये खुरशेंद को भी आज़मानां चाहिये ॥१०॥
आमदे गुल है चमन में दो खबर गुलचीं को आज ।
सीनये लाले पै अब सुर्खी कुटाना चाहिये ॥११॥
वर्क से दांतों पै मिस्सी के हैं क्या क्या खुश निगार[६]
बुत परस्तो अबतो कुछ अल्लह को माना चाहिये ॥१२
जौक़ मिस्सी का हुआ पैदा लबे याक़ूत[११] को ।
[१२]इंगवाँ पर सोसन[१३] अब गुलचीं जमाना चाहिये ॥१३॥
[१४]अबरूये खमदार के वायस हैं बिस्मिल यक जहां[१६] ।
मुफ्त में बदनाम तेग़ है कुछ बहाना चाहिये ॥१४॥
चंद्रिका पर बेंदिये संजर्फ[१७] दे ओ महज़बीं ।
[१८]मॉह नौ को नेयरे आज़में[१९] बनाना चाहिये ॥१५॥
पहिले तो मिस्सी लगाकर पान खाना चाहिये ।

---

(१) चिड़ियाँ को (२) हृदय की विन्दु पर (३) परीक्षा करना (४) पुष्पोद्गम
की छाती पर (६) रेख (७) मूर्ति पूजको (८) निराकार ईश्वर (९) सोख (
१) लाल (१२) लाल फूल पर (१३) नीला फूल (१४) भृकुटी (१५) टेढ़ी (
र (१७) सिन्दूर की बेंदी (१८) द्वितीया के चन्द्रमा का (१९) आकाश
र्न्म

फिर गुलेराना चमन में मुसकराना चाहिये ॥१६॥
करना है खुरशैद को भी दंग ओ रश्के क़मर ।
दिन दुपहरी में शफ़क़ जाना फुलाना चाहिये ॥१७॥
गुलशने रंगी, रविश गुलपर से होकर खुश खिराम
दी दये नरगिस ज़रा गुलरू झपाना चाहिये ॥१८॥
इंतिजारी में तेरी नरगिस हुई है ऐन चश्म ।
इक पलक वहरे खुदा आंखें मिलाना चाहिये ॥१९॥
सदकये उस गुल के गुल वेफ़स्ल लाना चाहिये ।
अब हतेली पर भला सरसों जमाना चाहिये ॥२०॥
है किशोरी आरज़ू ये वस्ल श्यामा श्याम गर ।
कूंच ये वृन्दा विपिन की खाक छाना चाहिये ॥२१॥
मुजतरिव अजवस किशोरी है तेरे दीदार को ।
विन्दवन की अबतो कुंजों में बुलाना चाहिये ॥२२॥

ग़ज़ल १९.

रंग मिस्सी दांतों पर जाना जमाकर रहगया ।
सूरते अल्लाह लाइल्ला बनाकर रह गया ॥१॥
कर चुके थे इश्क़ के मक़तल में हम सीना सिपर ।
तेग़ अबरू हाय ज़ालिम लपलपा कर रह गया ॥२॥
आगया कुछ रहम उसको आजवर राहे खुदा ।

(१) संध्या का फूलना (२) नरगिस के समान नेत्र । फ़ारसी के क
ंजिस की उपमा दिया करते हैं। (३) मिस्सी की रेखाओं को अरबी के क
। उपमा दीगई है (४) कतल करने के मौके पर (५) ढाल (६) ईश्वर
करते हैं।

तेग़ मिज़गां कौंस अबरू पर चढ़ाकर रह गया ॥३॥
कर दिया बेहोश उसने पढ़के कुछ जादू सा डाल ।
बांसुरी के बोल दो मोहन सुनाकर रहगया ॥४॥
गर किया बिस्मिल तो बिसमिल्लाहै फिर तीरे निगाह ।
मार दे दो चार क्या एकी चलाकर रह गया ॥५॥
बच गये अलहमदुलिल्लाहै[2] बच्चे हाये मारसे ।
काकुले मुशकी निपेचां को हिलाकर रहगया ॥ ६ ॥
पेशे[3] इश्क़े आफ़ताबम् ज़र्रएँ अहले जुनूनँ ।
चूं[8] चिराग़े सुबह दम बस झिलमिलाकर रहगया ॥ ७ ॥
बस कि चाहा पर न पहुंचा लाले[10] लवरखशाँ[11] तलक ।
तिल्फ़[12] दिल चाहे ज़क़न[13] में डबडबा कर रहगया ॥ ८ ॥
रफ्तगाने[14] वृन्दावन को देखकर यह मुर्ग़ दिल ।
तायरे क़िबलेनुमां[15] ज्यों तड़फड़ा कर रहगया ॥ ९ ॥
यह दिले मफ़तूनं[16] वक्ते[17] रफ़्तगाने[18] विन्दावन ।
होके बेबस दोनों आंखें डबडबा कर रहगया ॥ १० ॥
रफ़्तगाने वृन्दावन को देख दिल बेकल हो ज्यों ।
दानये[19] कुंजद व गिलखनं[20] चटपटा कर रहगया ॥ ११ ॥

यहां यह शब्द आश्चर्य-शोक-साहस और वीरोचित हर्ष का वाचक है
धन्यवाद है ईश्वर को कि उसकी कृपा से (३) आगे (४) इश्क के
सूर्य (६) तुच्छ (७) विक्षिप्त–पागल (८) समान (९) प्रभात के दीपक
) मानिक (११) चमकदार होंठ (१२) शिशु अर्थात् छोटा (१३)
के गर्त में (१४) यात्रि (१५) जिस यंत्र से दिशाओं का ज्ञान होता है
क़ुबलेनुमां" कहते हैं उसमें जो चिड़िया होती है वह हर वक्त घूम घाम कर
तरफ़ आजाती है (१६) अनुराग युक्त (१७) समय (१८) यात्रा करने
१९) तिल का दाना (२०) मगद मरमूज़ा का

है शरर[1] उस दम से दम में दम बेदम है इज़ाँ
संग किशोरी के मुहन झलकी दिखाकर रहगया

ग़ज़ल २०.

ज़ुगल रुख़ पै काकुल हिलें नागिनी सी ।
मुअत्तर[3] मनौ इत्र शोभा सनी सी ॥ १ ॥
लबे तिश्नां चाहैं ज़कन को ये ज़ुल्फ़ें ।
दुरु यह सिमानों लपकती फनी सी ॥ २ ॥
पयां में सघन गेसुए अंबरी[4] से ।
दमकती है कुंडल दमक दामिनी सी ॥ ३ ॥
लबे लाल पर क्या बुलाकें छबीली ।
थिरक नाचती है नवल कामिनी सी ॥ ४ ॥
पलट गेसुए अंबरी मुख पै आये ।
कि सूरज पै छाई घटा जामिनी सी ॥ ५ ॥
यह जुड़ती हैं झुकझुक के नैनों की कोरें ।
कि मिलती हैं तीरों की गोया अनी सी ॥ ६
यह करती हैं सरसार आंखें तुम्हारी ।
पिलाकर दुपट्टे से मुशकर्न छनी सी ॥ ७ ॥
लुभाती है दिल लाल लोलक ललौ की ।
ललौ कान में क्या ज़मर्रुद मनी सी ॥ ८ ॥

---

(१) हृदय का दाह (२) विकलता (३) सुगंधित (
ज़ुमुखी नागन सी (६) काल (७) मस्त वा निमग्न (८) म

ललितवर किशोरी निरख आज की छवि ।
बना क्या बना श्यामश्यामा बनी सी ॥ ९ ॥

गज़ल २१.

मन मोह लिया श्याम ने वंशी को बजाके ।
बेखुदं किया दिलदारं ने झलकी को दिखाके ॥
पटपीत मुकट मोर लकुट लटपटी पगिया ।
चलते हो लटक चाल से भृकुटी को नचाके ॥
अलमस्त किया दम में व्रजनारि को मोहन ।
मुरली के साथ किंकिणी नूपुर को बजाके ॥ ३
कुर्बान सनम सब्रो दिलो दीनं हमारा ।
लाये ललितकिशोरी को हो गलसे लगाके ॥ ४
येही दुआयें सहिरी इस फ़िदवियाँ की साहिब ।
बिहरौ बिहार कुंजलता माधुरी झुका के ॥ ५ ॥

गज़ल २२.

जो गाना हो तो राधा कृष्ण का हो ।
बजाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ १ ॥
कहानी हो तौ राधा कृष्ण की हो ।
कहाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ २ ॥
मेरे गुलज़ारे दिल रश्के इरमें में ।
जो आना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ३ ॥

---

(१) आत्म विस्मृत (२) प्रिय (३) धैर्य (४) धर्म (
भाव की (७) दासी (८) बाटिका (९) वैकुंठ से भी उत्तम

इमरती खजल औ ख़स्ता तिकौने ।
जिमाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ४ ॥
जो चाहे नाचे राधा कृष्ण आगे ।
नचाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ५ ॥
क़दम के नीचे उंगली तान करके ।
बताना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ६ ॥
यह बहुत ही खूब है चश्मों के अन्दर ।
छिपाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ७ ॥
कोई अशआर[1] पद या कोई दोहा ।
लिखाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ८ ॥
क़दम की डालियों में डाल झूला ।
झुलाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ९ ॥
सखी कर जोड़ औ पांवों में पड़के ।
मनाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ १० ॥
जो सुनना नाम राधा कृष्ण ही का ।
सुनाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ ११ ॥
मियाने[2] बुत परस्तां[3] अय जविल होशं[4] ।
जो बाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ १२ ॥
ललितकीशोरि दर[5] हर[6] हालो[7] हरदम[8] ।
मल्हाना हो तौ राधा कृष्ण का हो ॥ १३ ॥

---

(१) शैरें (२) मध्य में (३) मूर्त्ति पूजकों के (४) ज्ञान वा
हर एक (७) अवस्था में (८) हर समय ।

गज़ल २३.

मान कर भूतान तूतो घर सिधारी रात थी ।
हाय ज़ालिम लाल को क्या बेक़रारी रात थी ॥१॥
गिरताथा पी पावों ठुकरा देती थी तू पांव से ।
कुर्बान क्या सुबहान अल्लह ग़म गुसारी रात थी ॥२॥
हिज्रे में अय माह तेरे श्याम की आंखों में थी ।
पूनों की उजियारी है, है, कारी कारी रात थी ॥३॥
चांदनी थी बाग़ था आबे रवां पर आपको ।
फूलों की भी सेजपर अख़्तर शुमारी रात थी ॥४॥
छांह में पत्तों की दबके झुक्के यों यों श्याम से ।
छिपके बहुतेरी मिली तुमपै उजाली रात थी ॥५॥
क्यों मुकरती हो कहो तो केलि का दूं कुछ पता ।
चौंकी थीं मुख चूमते कोयल पुकारी रात थी ॥६॥
नाहीं नाहीं करके कुछ चुपकी हुई तब श्याम ने ।
चूमने को गाल के क्यों लट संम्हारी रात थी ॥७॥
एका एकी चौंकी थीं तुम सोते सोते सच कहो ।
छाती पर की श्यामने सारी उधारी रात थी ॥८॥
केल में ताजीलै की दिलबर के क्यों लूटो न रंग ।
पिछले पहरे ही चलीं उठ क्या उधारी रात थी ॥९॥
छांह पत्तों का पलंग पर चांदनी थी जाबजाँ ।

(१) ईश्वर का धन्यवाद आश्चर्य में (२) शोकभरी (३) वियोग (४) नदी (५) तारा गणना (६) शीघ्रता त्वरा (७) जगह जगह ।

तिसपै तुम दोनों थे क्या ही प्यारी प्यारी रातथी ॥१०॥
देखते ही श्याम घन बस लोट पोट हो गया ।
मान की रंगत थी चश्मों में खुमारी रात थी ॥११॥
श्याम तो थाही नहीं अच्छा वताओ आपही ।
जोरा ज़ोरी कंचुकी किसने उतारी रात थी ॥१२॥
मान तज सन्मान से तुम जेमि थीं संग श्याम के।
थाल था पन्ने का और मानिक की झारी रातथी ॥१३॥
करदू सखियों को ख़बर पर तरस खाकर रह गई ।
देके कुंडी बाहिरी मनमें विचारी रात थी ॥१४॥
लग लग गले जाते हिचक छू छोड़ देते नीवि बंद ।
बोसे को लहराते क्या सोचा विचारी रात थी ॥१५॥
ललताकिशोरी लाल के लिपटाने में यह सतलड़ी ।
चुभती नहीं सिसकारी भर तुमने उतारी रात थी ॥१६॥

ग़ज़ल २४.

जड़ाऊ सोने की बंसी बजाये जिसका जी चाहै ।
नहीं वह तान आनेकी वजाये जिसका जी चाहै ॥१॥
नहीं वह काट निकलेगा तोरि अबरू में जो क़ातिलै ।
बहक तेगे इमानी को लगाये जिसका जी चाहै ॥२॥
नहीं पैदा हुई तसवीहैं प्यारे तेरे मुखड़े की ।
वो नाहक चांद सूरजको लजाये जिसका जी चाहै ॥३॥

---

(१) चूर्णान (२) चुम्बन (३) कतल करने वाला (४) यमन की तलवा की है (५) उपमा

परी वशांके तबस्सुम में चमक जावेगी बिजली सी ।
उसी दम फूल बरसेंगे हंसाए जिसका जी चाहे ॥४॥
अगर है ज़ौक़ तो देखें ज़रा सफ़्फ़ा किये क़ातिलें ।
जिगर अपने को ला चौरंग बनाये जिसका जी चाहें ॥५॥
अभी हो जावेगा मक़तल अरे ज़ालिम को सोने दो ।
नहीं माने तो फ़ितने को जगाये जिसका जी चाहें ॥६॥
मुशाविहँ आंखों से कब है हिरन बादाम और नरगिस ।
अब सही अपने गालों को बजाये जिसका जी चाहें ॥७॥
भभूक चहरे पर ज़ुल्फ़ें कोई तमसील दे देकर ।
जी अंगारों पे सांपों को लुटाये जिसका जी चाहें ॥८॥
ललितकीशोरि कंघी कर न डर गेसूए जानां से ।
यह मार अफ़सूं हमीदा हैं खिलाये जिसका जी चाहें ॥९॥

ग़ज़ल २५.

जो जानें ज़ुगल ना तो धरमार जूती ।
जो लावै गुरेज़ उसके दो मार जूती ॥ १ ॥
वो होवें है राज़ी तभी जो विमुख है ।
बरसती हैं सरपर से बौछार जूती ॥ २ ॥
जो वृन्दाविपन की हो ज़्यारत से हारिजं ।
ताम्मुल बिना मार दो चार जूती ॥ ३ ॥

---

(१) परी के समान (२) सौख (३) प्रचंड (४) ढाल या निशाना ... ध्यभुमि (६) उतपाती (७) तुल्य-समान (८) उपमा (९) कीलेहुए ... उपराम (११) बाधक

रहै है जो चुपचाप भाखै न हरि को ।
पिन्हावो गले उनके में हार जूती ॥ ४ ॥
ललितवरकिशोरी को जोई भजे ना ।
हमारी तरफ़ से भी दो मार जूती ॥ ५ ॥

ग़ज़ल ३६.

व इश्के जुगल[1] कुश्तनम्[2] आरज़ूस्त[3] ।
व चाहे ज़कन्[4] उफ़्तनम्[5] आरज़ूस्त ॥ १ ॥
पये दर्शने[6] रूपलालन किशोरी ।
विन्दाविपन रफ़्तनम्[7] आरज़ूस्त ॥ २ ॥
अगर मुजरिम् हस्तम् वले दो सखुन[11] ।
हुजूरेजुगल[12] गुफ़्तनम्[13] आरज़ूस्त ॥ ३ ॥
नेमस्तूजिबे[14] आनम्[15] ईं हा व पायल[16][17] ।
दुर्दानेगुहर[18] सुफ़्तनम्[19] आरज़ूस्त ॥ ४ ॥
व वृन्दा विपन कुंज कूये व कूंये ।
लड़ैती नवल जुस्तनम्[21] आरज़ूस्त ॥ ५ ॥

---

(१) जुगल प्रेम में (२) दग्ध होकर भस्म होने की मुझे (...) चिबुक के गर्त में (५) पड़े रहने की (६) दर्शनार्थ (७) ... (९) अपराधी हूं (१०) तथापि (११) दो शब्द (१२) जुग... कहने की (१४) अयोग्य (१५) हां-मैं-हूं (१६) तबभी (... (१८) दो दाने मोती के (१९) पेनिफी (२०) गली गली ... है।

ग़ज़ल २७.

वृन्दा विपन की कुंजों जाती थी रस्ते रस्ते ।
वहां आगया अचानक जूड़े को कस्ते कस्ते ॥
चित छुट पड़ा बदन पर बालों में फस्ते फस्ते ।
मुशकिल से बची नागिन अलकों से डस्ते डस्ते
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ १ ॥

प्यारी के संग खड़ा था वह सांवला बिहारी ।
दृग कोर मोर मेरे सैनों जड़ी कटारी ॥
सुध बुध रही न तनकी सब भुल गई हमारी ।
जमना के तीर सुन्दर जहां फूलि फुलवारी ॥
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ २ ॥

कछनी कमर से काछै सुन्दर सलौना ढोटा ।
कस पीत वसन आछैं कटि बांध वह कछौटा ॥
गैयान हू के पाछैं दृग देखने में छोटा ।
चितवन के बान मारे सब भांत से है खोटा ॥
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ ३ ॥

गोकुल की गैल मुझ से हंस पूछि, आ बिहारी ।
थी संग उसके सुन्दर वृषभानुजा दुलारी ॥
क्या हंस की सी जोड़ी आंखों को लगी प्यारी ।
मैं होगई दिवानी जब से वह छवि निहारी ॥
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ ४
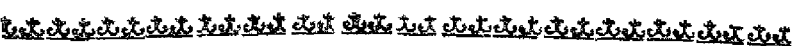
वृन्दा विपन की गलियो दो चांद से खड़े थे ।
मुसक्या के करते बातें नैनों से दृग लड़े थे ॥
मद रूप छवि छके से टलते नहीं अड़े थे ।
सखियों के यूथ कितने बेहोश हो पड़े थे ॥
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ ५ ॥
पट आरहा अँसन पर प्यारी के खस्ते खस्ते ।
कहिं आय निकसे मोहन कुंजों में बस्ते बस्ते ॥
तन मन सुरत विसारी बगिया में धसते धसते ।
मुसक्यान पर बिकाने क्या खूब सस्ते सस्ते ॥
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ ६ ॥
घुंघराली झूमें अलकें मधुकर से मस्ते मस्ते ।
पगिया से निकली नागिन डिबिया में बस्ते बस्ते
हुआ हिलाले देख के मुख बद्रे नस्ते नस्ते ।
झांका लतान रन्ध्रों से जब झुक के पस्ते पस्ते ।
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ ७ ॥
आई ललितकिशोरी ब्रज वाल हंस्ते हंस्ते ।
कुंजों में लेगया छल गोपाल हंस्ते हंस्ते ॥
कुछ जादू की सी पुड़िया पढ़ि डालि हंस्ते हंस्ते ।
वह कर गया वेदरदी बेहाल हंस्ते हंस्ते ॥
दिल लेगया हमारा नंदलाल हंस्ते हंस्ते ॥ ८ ॥

بیٹھ آرہا آسن پر پیاری کا کہتے کہتے
کہیں آتے نکسے موہن کنجون میں بستے بستے
تن من ترت پساری بگیا میں دہتے دہتے
مسکان پر بکانی گیا خوب ہنستے ہنستے

دل لے گیا ہمارا نند لال ہنستے ہنستے

انکھو نکھراری جوبنیں الکیں ٹہ پکر سے ستے ستے
کیا سے نکلی ناگن ڈبیا میں لیتے لیتے
ہوا ہلال دیکھ کے مکھ بدر ستے ستے
جیا نکالتا ان رندہر سے جب جھکا کے لپٹتے لپٹتے

دل لے گیا ہمارا نند لال ہنستے ہنستے

آئے للت کستوری برج بال ہنستے ہنستے
کنجون میں لے گیا چھل گوپال ہنستے ہنستے
تجھ پیا دھ کی سی پوڑیا پڑھ ڈال ہنستے ہنستے
وہ کر گیا بیدردی بے حال ہنستے ہنستے

دل لے گیا ہمارا نند لال ہنستے ہنستے

اگر محبم ہستم ولی دو حق — حسنوے چو گل گفتم آرزوست
نہ مستوجب آنم الا بپا پل — وو دانہ گر سفتم آرزوست
پربنداپن کنج کو سے بہ کوسے — لڑتی نول جستم آرزوست

مخمس نمبر ۲۷

برندابن کی کنجوں چالی تھی رستے رستے
ہاں آگیا اچانک جوڑی کو تکتے تکتے
چٹ چھٹ پڑا بدن پر بالوں میں چھنتے چھنتے
مشکل سے بچی ناگن الکوں سے ڈستے ڈستے
دل لے گیا ہمارا نندلال ہنستے ہنستے

پیاری کے سنگ کھڑا تھا وساکھا سہیاری
درگ کور مور میرے سینو جڑی کٹاری
اشدھ بدھ رہی نہ تن کی سب بسر گئی ہماری
جمنا کے تیر سندر جہاں پھولی پھلواری
دل لے گیا ہمارا نندلال ہنستے ہنستے

کچھنی کمر کے کاچھی سندر سلونا ڈھوٹا
کس بیٹ بسن آچھے کیٹ باندھے وہ کھوٹا
گیان ہون کے پاچھے درگ دیکھنے میں چھوٹا
چتون کے بان مارے سب بھانت سے ہی کھوٹا
دل لے گیا ہمارا نندلال ہنستے ہنستے

گوکل کی گلیں مجھے ہنس پوچھنے آ بہاری
تھی سنگ اوس کے سندر برشبھان جا دلاری
کیا ہنس کیسے جوڑی آنکھوں کو لگے پیاری
میں ہو گئی دوالی جب سے وہ چھب نہاری
دل لے گیا ہمارا نندلال ہنستے ہنستے

برندابن کی گلیوں وو چاند سے کھڑے تھے
مسکا کے کرتے باتیں نینوں سے درگ لڑے تھے
مدرو پہ چھب چھکے سے ٹلتے نہیں اڑے تھے
سکھیوں کے جو تھم کتنے بیہوش ہو پڑے تھے
دل لے گیا ہمارا نندلال ہنستے ہنستے

میانِ بت پرستاں اے ذوالہوش — جو پانا ہو تو رادہا کرشن کا ہو
للت کشوری دربہر حال وہرزم — ملنا ہو تو رادہا کرشن کا ہو

غزل دیگر نمبر ۲۳

مان کر بہر وتان تو تو گر سدہاری رات تھی — ہائے ظالم لال کو کیا بے قراری رات تھی
گر نا تمہاری پاؤں ٹھکرا دیتی تھی تو پاؤں سے — قربان کیا سبحان اللہ تمگساری رات تھی
ہجر میں اے ماہ تیرے شیام کی آنکھوں میں بی — پولوں کی اوجیاری ہے کاری کاری رات تھی
چاندنی تھی باغ تھا آبِ رواں پر آپ کو — پھولوں کی بھی سیج پر اختر شماری رات تھی
چاہنہ میں چوتکے دب کے چھکے یوں یو شیام سے — چھپ کے ہو تیرا لیں تم پے اوجاری رات تھی
کیوں مکرتی ہو کہو تو کیل کا دوں کچھ پتا — چونکی تھیں تکہ چومنے کویل پکاری رات تھی
ناہین ناہین کرکے کچھ چپکی ہوئیں تم شیام نے — چومنے کو گال کے کیوں لٹ سنواری رات تھی
الیکا ایکی چونکی تھیں تم سوتے سوتے سچ کہو — چھاتی پہ کس شیام نے ساری اوگھاری رات تھی
کیل میں تعجیل کے دل بھر کے کیوں لوٹا نہ رنگ — پچھلے پہر سے ہی چلیں اٹھ کیا او دہاری رات تھی
چاہنہ چتوں کی پلنگ پر چاندنی تھی جابجا — لیتی ہو تم دونوں تھے کیا ہی پیاری رات تھی
دیکھتے ہی شیام گہن بیں لوٹ پوٹ ہو گیا — بال کی رنگت تھی چشموں میں خماری رات تھی
شیام تو تھا ہی ہنس اچھا بتاؤ آپ ہی — چورا چوری کنچو کی کس نے اوتاری رات تھی
مان تج سنماں سے تم جس میں تھیں سنگ شیام کے — تہال تھا پے کا اور بائک کی چہاری رات تھی
کر دوں کھیونکو خبر پر ترس کہا کر رہ گئی — دے کے کنڈی باہر من میں بچاری رات تھی
لگ لگ گئے جاتی ہچک جو چھوڑ دیتی بیتی بند — بوسہ کو لہراتی کیا سوچا بچاری رات تھی
للتا کشوری لال کے لپٹانے میں پست لڑی — جو بہتی نہیں سسکاری ہر تمنی اوتاری رات تھی

ناوک مژگاں سے تیر ندزد بروکماں — نقطۂ دل پر نشانی کو لگانا چاہیئے

تیرا گلرو دیکھ کر کے کہاتے ہیں لالہ نے داغ — سانپوں کو بھی گیسوؤں پر زہر کہانا چاہیئے

کر چلے ہیں خاک گل کو دیکھوا و صاحب اودہر — سینۂ خورشید کو بھی آزمانا چاہیئے

آمد گل ہے چمن میں دو خبر گلچین کو آج — سینۂ لالہ پہ اب سرخی کو ٹانا چاہیئے

برق سے دانتوں پہ مستی کی ہیں کیا کیا خوش نگار — بت پرستو کچھ ثواب اللہ کو مانا چاہیئے

ذوق مستی کا ہوا پیدا لب یاقوت کو — ارغواں پر سوسن اب گلچیں جمانا چاہیئے

ابروئے خمدار کے باعث ہے بسمل یک جہاں — مفت میں بدنام تیغ ہے کچھ بہانا چاہیئے

چند کا پربند سے سنجرف دے اوسہ جبیں — ماہ نو کو نیر اعظم بنانا چاہیئے

پہلے تو مستی لگا کر پان کہانا چاہیئے — پھر گل رعنا چمن میں مسکرانا چاہیئے

کرتا ہے خورشید کو بھی دنگ او رشک قمر — دن دوپہری میں شفق جاناں پھولانا چاہیئے

گلشن رنگیں روش گل پر سے ہو کر خوشخرام — دیدۂ نرگس ذرا گل رو جھنپانا چاہیئے

انتظاری میں تیری نرگس ہوئی ہے عین چشم — یک پلک بہر خدا آنکھیں ملانا چاہیئے

صدقہ اوس گل کو گل بے فصل لانا چاہیئے — اب ہتھیلی پر پہلا سرسوں جمانا چاہیئے

ہے کشوری آرزوئے وصل شیاما شیام گر — کوچۂ برندابن کی خاک چھانا چاہیئے

مضطرب از بس کشوری ہے تیرے دیدار کو — برندابن کی اب تو کنجوں میں بلانا چاہیئے

غزل دیگر نمبر ۱۹

رنگ مستی دانتوں پر جاناں جما کر رہ گیا — صورت اللہ لا الہ بنا کر رہ گیا

کر چکے تھے عشق کے مقتل میں ہم سینہ سپر — تیغ ابروہائے ظالم لپلپا کر رہ گیا

آگیا کچھ رحم اوس کو آج بہر راہ خدا — تیر مژگاں قوس ابرو پہ چڑھا کر رہ گیا

آہ پھر کرتا نہیں ٹھک گئے ہی بسمل ہو دل
ہے پیام موت یہ یا ناوک مژگان ہے

برق سے چہرہ پہ جھکے بال کیا تیغ ہیں لطف
آتش بجلی کی دود مندونکی کیا شان ہے

خواب آتا نہیں اور طعام ہے مانند سم
یاد میں ہر روز تیرے او ہمیں رمضان ہے

جن کے دل میں ہے کشوری آرزوئے بج نواس
خوشتر ہے تلک ملک سے گرچہ وہ شیطان ہے

غزل دیگر نمبر ۱۷

کیا مجال ہے کہ کوئی ستمگار راداہا کرشن کا
ہووے سے خوشتر ہے دیدار راداہا کرشن کا

گر تو چاہے کہ مذہبی کڈ ہووے وہ مسکن تیرا
رکھ عزیزہ ہر وقت دل میں پیار راداہا کرشن کا

شرکین کیا کیا کیا ہے انجم سیار کو
ہے جڑا ہیروں سے ہلتا ہار راداہا کرشن کا

ہوتا ہے میرا آن لگا کل ضرب تیغ ابرو سے دل
پٹ نہیں پڑتا ہے گا ہے وار راداہا کرشن کا

لڑکے لٹ دونوں کے لپٹی غافلو ہوشیار ہو
جفت ناگن سے ہوا یہ مار راداہا کرشن کا

غزل دیگر نمبر ۱۸

گلبدن گلگشت کو گلشن میں جانا چاہیے
ہر روش پر برگ گل ارزاں لٹانا چاہیے

اے گل رعنا چمن میں مسکرانا چاہیے
باغ کو کان گہر جاناں بنانا چاہیے

اے گل رعنا چمن میں مسکرانا چاہیے
غنچۂ وابستہ منہ کو تک کھلانا چاہیے

اے گل رعنا چمن میں مسکرانا چاہیے
بلبلوں کو اب گلوں کے سنگ لڑانا چاہیے

گلبدن شکن بلیٹ کر منہ پہ لانا چاہیے
رات میں خورشید کو جاناں دکھانا چاہیے

گل کو چاہے عنبر کو کر پیار دے لالہ کو داغ
آفت جاں ہر قدم آفت اٹھانا چاہیے

دیکھ کر اس گلبدن کو کہتی ہیں سب بلبلیں
قلقلیوں سے طائر گل کو اڑانا چاہیے

[illegible] تقبیر کے شاہزادوں کا یہ سلطان ہے

ہو گیا تھا یہ مقابل ماہ رو نند لال سے

دیکھو صاحب اوس گھڑی سے آئینہ حیران ہے

ہے کسی کو سرگ اور بیکنٹھ کی آرزو ہوس

تشنہ دل اس مرغ مستغنی کا برج آستان ہے

ہوں سگ کوئے بہن سری لاڈلی لال کا میں

سنت تو تو کر بولا دین اپنا یہی مان ہے

[illegible] خوش بھیا خوردہ دسکوں کا میرا اکل و شرب

ہو گیا برج ریت میرے دل کا یہ سامان ہے

بارش نیسان کرم رادھکا سے ہے حصول

کان میرے ہیں صدف در بانسری کی تان ہے

[illegible] پہلے تصدق عقل و ایمان صبر و ہوش

[illegible] باقی تھا سو قدموں پر اب قربان ہے

مت کرو ڈر ڈر ڈرد دل میرے کو سلطان حسن

این برشتہ عشق سفتہ قابل شاہان ہے

[illegible] جرم تو تم کر چکیں پہلے معاف

[illegible] تیزا سے ہجر ہجر پر لاڈلی تاوان ہے

گو مجسم جرم ہوں پر تم بھی ہو راوے کریم

کیا وجہ فرقت کے میرے دل کو یہ خلجان ہے

گرچہ از بس آشکال ہے یاس سری برندا بین

سنی رادہے سب کی جیون ہماری بھی خبر لینا
جہاں جاتا ہے درشن کو ہمیں گھر ہاتھ ملتے ہیں

پڑے ڈورے خماری کے چپلتے نین ہیں دونوں
منوں ریشم کے جالوں میں پڑے آہو اوپٹتے ہیں

ہنسی آتی ہے ہمکو جب ہنسی میں نور سک موہن
خفا ہو ہوں چڑھا لیتے اور تیور بدلتے ہیں

چھوٹے ہیں بال پاؤں تک کشوری گورے تن اوپر
اجی بجلی کی چادر پہ بھی کیا افعی لہرتے ہیں

غزل نمبر ۱۳

جو خم کہ تیری کاکل پیچاں میں دیکھا
سنبل نہ بنفشہ میں نہ ریحاں میں دیکھا

دیکھا نہ گلستاں میں دنیا کے کہیں رنگ
جو آکے سری بن کے بیابان میں دیکھا

موتی میں نہیں آب نہ ہیرے میں صفائی
جو لطف تیرے گوہر دندان میں دیکھا

جمدہر نہ کٹاری میں نہ برچھی کی سنا میں
جو کاٹ تیرے خنجر مژگان میں دیکھا

پایا نہ تبسم نہ کرشمے میں کسی کے
جو لطف کرشمہ لال تیری آن میں دیکھا

قربان کیا مہر و ثریا و قمر کو
کنڈل و کرن پھول کو جب کان میں دیکھا

شہنائی نہ سرگین نہ ارگن میں کشوری
افسون جو تیری بانسری کی تان میں دیکھا

غزل دیگر نمبر ۱۴

خاک ہو پاؤں پڑوں پیاری کے یہ ارمان ہے
ہوں منقش نقش پا سے اپنی یہی شان ہے

ہے کسی کو روضۂ رضواں سے فرح جان و دل
میرا تو شاداب دایم برندابن بستان ہے

کد مقابل ہو سکے ہے پیش گلچین چمن ؛؛

تل مشکین زنخ میں ہے ہویدا — یہ کالا لعل لب کا پاسباں ہے
نہیں بکھرین جبین پر گھنگری الکیں — لہر جمنا کی گنگا پہ رواں ہے
کھلے بال ہیں سو ہائے گورے تن پر — عجب ہے برق پر چھکا دھواں ہے
رچی مہندی بدست شیام سندر — یہ تا قرباں ہے پھولا ارغواں ہے
کنول پر چاند کو دیکھا کسی نے — بپا ایش ناخن روشن عیاں ہے
صدف امید کی پر ہوتی ہے آج — تبسم میں صنم گوہر فشاں ہے
نہ سمجھو جفت کا تل بر رخ او — یہ کچھ صاحب یہ مار دو زباں ہے
بنا رہتا ہے ہردم آئینہ پاس — کہ خود محو لقائے بے نشاں ہے
بنی بر شبہان جا گیا مہر پیکر — کہ نیلو فر سا موہن مہرباں ہے
نہیں ہے کہتے ہیں حرف بد بھی در خواب — چہ جا دشنام شاہد بے زباں ہے
زسر تا پا مرصع گر ہے تصویر — شبیہ یار کا بھی کچھ نشاں ہے
رہے عاجز زبس مانی و بہزاد — شبیہ یار کا نقشہ کہاں ہے
سنو حیراں تو بلبل گل کو رکھ دے — شہید ناز کا بھی کچھ نشاں ہے
تڑپ اوٹھتی ہے گے گور عاشق — شہید ناز کا کچھ یہ نشاں ہے
للت کشوری لالن بر کی جوڑی — یہ برنداہن خراماں جاوداں ہے

غزل دیگر نمبر ۱۲

نہیں اون جھکے بالوں سے بہالے بوند جھڑتی ہیں — لالی ابر نیسانی سے یہ جھا رین برستے ہیں
دمک کنڈل کی گالوں پر بلک جو آن پڑتی ہے — سرو خورشید تاباں پر بھی کوندے آ لپکتے ہیں
نہیں ہلتی ہیں کاکل خوش صدائے بانسری سنکر — یہ کالی سانپ کے بچے ہیں سن سن وجد کرتے ہیں

غزل دیگر نمبر ۱

نہ یہ خشن ہے مہرومہ کی ڈلک پر
کہ کہہ چندر یانے جو گل کی جھلک پر

تراشیدہ ناخن گرا جو زمین پر
ہوا ہو ہلال عکس روشن فلک پر

بجور سنبلان ناگنی بچگان کو
ہوا ہے حسد سیاہ گھنگری الک پر

کیا ہے گو کنڈلوں پر نچھاور
اُڑتا را ثریا کو جو ملک جھلک پر

کمان لب خجل لکھہ ہلالے بہنوؤں کو
ہوا رشک ناوک کو تیر پلک پر

وہ پیتے ہیں شربت انارین لب کو
ہوا شرمگین قوس ساغر جھلک پر

ہوا زہرہ قطرات شبنم کا پانی
خوش آب دُر آویزاں بیسر جھلک پر

ذرا چندرکا اُو مکٹ چھب نہارو
لگاؤ نہ دل کوئی پیری و ملک پر

کشوری نہ بھکو جو گل لال چھب لکھہ
درگوت کو دو لبشرام بیسر ٹھٹک پر

غزل دیگر نمبر ۱۱

یہ کس بت ماہ پیکر کا مکان ہے
کہ جس کے گرد خندق لامکان ہے

تیری تیر نگہہ نے مرغ دل کو
کیا بسمل یہ پہلا امتحان ہے

خدا محفوظ بس ابرو سے رکھے
بنی کیا خوب بے زہ کی کمان ہے

عجب تیر مژہ ہے اوس صنم کا
لبصید عاشقان بے پروان ہے

ہے مشکین موئے میں تاثیر کشمیر
کہ جس کے عشق میں رنگ زعفران ہے

سر مو سے بھی ہے کمتر میان تش
یہ زیبا ہے کہوں گر بے نشان ہے

نہیں ہے فرق پر موتی بھری مانگ
فلک پر کیا ہی روشن کہکشان ہے

کیونکر ہووے گی نجات اب تیغ ابرو سے
زلف مشکیں سے معاذ ہیں ہم کار سیاہ

کردیا قربان کندن برق کو کشوری پر
شیام سندر روپ اوپر جگت کے بار سیاہ

غزل نمبر ۸

دیکھا ہے سندر ایسا جو ہے رادھے شیام رنگ
سنگ وہ جو ہے اُدھون کے سانور وسرنام رنگ

ہنستی ہو تم ہمکو کیا دیوانگی پہ گوریو
ہوتے ہیں یوں ہیں جبھی کو لگتا ہے ہرنام رنگ

مت بچھڑو زلفوں کو ہاتھوں کو دو نا تصدیع
چھوٹے گا ہرگز نہیں بالوں سے یہ شیام رنگ

پوچھو کیا منصف تمہیں ہو ہر سے بولیں راو ھکا
تیرا ہے جو شیام رنگ تو میرا ہے گلفام رنگ

گو کہ تدبیرات تم نے کی ہیں از بس استعجاب
تجھکو ممکن نہیں ہے ایسا ہی بدنام رنگ

گوری ذات پڑنے سے سانول کا ہو جوانا گلزار
بہت سوچا پر نہ آیا ہے گا یہ گمنام رنگ

ہے جھلک ابرت کے انگون سانول کشوری پہ
ہو دلی ہے سانول شفق کیا کہیں یہ اقسام رنگ

غزل دیگر نمبر ۹

یہ آویزہ در ہے موہن کے کان پر
کہ روشن سہیل ہے ہوا حسن کان پر

عجب ہے یہ مجھکو کہ سنداز ارشش
بند ہے ہونگے کیونکر بیان بے نشان پر

جہان جاتا ہے زیارت برندابن کو
پڑے ہم یہان لعن ہے ایس زمان پر

ہوئے بیچ میں جب سے سانول ہویدا
دیا داغ دنیا کے گورے بتان پر

گذرتی ہے اوقات لہو و لعب میں
نہ لیویں جو نام جوگل لُٹ زبان پہ

چھپا اب مضطر ہوں بے چھب تمہارے
کہو تو کشوری جوگل ہیں کہان پر

ہوا ہوں جبھی سے تمہارا میں رام
گل خندہ لب کا ہی ہمکو تمہارا
لو بہا نی ہیں موہن نہ کچھ بھب کشوری
جناب رمن رادھکا برندابن چلے

کہو تم نے پھینکے ہیں کس میں کے پھول
نہ مارو ذرا مجھ پہ رس رس کے پھول
تڑ رکھتے ہیں انگو نے گس گس کے پھول
سکھی ناک اپنی کو گس گس کے پھول

غزل دیگر نمبر ۵

جو گل بر عقیقی لبان کیسے کیسے
کیسی یہ آنکھیں ہیں کیا شیام برکی
تمہاری نہ سمجھو ہیں بیمار چشمین
سنہری سے تن کی تیا کی دمک
جو گل برکی فرقت میں دیکھے ہیں ہم نے
پلک ابروں سے ہی کرتے ہیں گھایل
بین میں بہاری لئے رادھکا کو
جی آتے ہی یاد ان جو گل برکی ہوتے
بچرتے ہزاروں ہیں جس جا پہ گلرد
نہ افعی کو رتبہ نہ ہے سنبلاں کو
نز گو سنگ کشوری کے گھنشیام بر کو

سپھیے نیلے پیلے پٹھان کیسے کیسے
رہے جاتے ہیں آہواں کیسے کیسے
جھو کی پڑتے ہیں ناتواں کیسے کیسے
اوترتے ہیں گل زعفران کیسے کیسے
زمین و زمان آسمان کیسے کیسے
بناتے ہیں تیر و کمان کیسے کیسے
سمن بنتی ہیں چمان کیسے کیسے
ہیں آنکھوں سے آنسو رواں کیسے کیسے
بین میں ہے آتی خزاں کیسے کیسے
چھوٹے چہرہ پر گیسواں کیسے کیسے
کھلے جاتے ہیں گلستاں کیسے کیسے

غزل دیگر نمبر ۶

چوٹیں ہیں الکیں جبین کے اوپر منون لہرتی ہیں کالی ناگن

رے حسن پر ایک عالم سکوت — سیہ مار کا کل ہلے کیسے کیسے
پی ناکوئی نار ہو لی میں ہر سے — برنج میں سکھی گھر گھلے کیسے کیسے
نیں تیر آہن جو اینچے جی کوئی — یہ ہے عشق ناوک سٹلے کیسے کیسے
ہلی آبرو تو بلا سیتی میں سکر — چڑھا رنگ سانول ڈھلے کیسے کیسے
ذمیں ہین ہوں یک دلربا تجھ پہ شیدا — تیرے عشق میں گھر رلے کیسے کیسے
مراجی کو نسبت نہ ہے کنب کو وا — سجنے گوپیوں کے سگلے کیسے کیسے
بجائی جو بنسی جمن سانورے نے — تو من گوریوں کے چلے کیسے کیسے
نہ انجم کو ہے تاب ہووے مقابل — لگے ساری من بادلے کیسے کیسے
رہِ عشق میں تیرے عظمت ہے ہمکو — جو پڑتے ہیں پا آبلے کیسے کیسے
نہ ہووے یقین جب کو دیکھے ہیں وہ — شتران راو صلاکے ہلے کیسے کیسے
بسین برندا بن آوتے او تم نہ کوئی — کہو ہوتے ہیں اور بیلے کیسے کیسے
کہوکب ہین میں بولاؤگی ہمکو — چلے جاتے ہیں قافلے کیسے کیسے
للت پر کشوری سے ہے اسعد عایہ — ہو جگنو لگن جل ملے کیسے کیسے

دیگر غزل نمبر ۲

جو گل کھیل میں پھینکیں جس جس کے پھول — تھپیڑوں سے گرتے ہیں لیس لیس کے پھول
ہوئے چار چشموں سے جب کھیل میں — خجل ہو کے گرتے تھے نرگس کے پھول
کرو تم منع سب کو کھیلو اکیلی — اکیلا میں ردکوں جی کس کس کے پھول
نہ کرنا گلہ بیسر نازک تتی کا — کسی کس کے مارونگا جس تس کے پھول
ہوئے کھیل میں جھیل دل باغت — لگے آنے سر پر جو غنچن کے پھول